सहायफ़े-हिकमत और ज़बूर

असल इबरानी मतन से नया उर्दू तरजुमा

उर्दू जियो वरज़न

The Wisdom Books and Psalms. Job-Song of Songs in Modern Urdu
Translated from the Original Hebrew
Urdu Geo Version (Hindi script)

© 2021 Urdu Geo Version
www.urdugeoversion.com

This work is licensed under a Creative Commons Attribution
- NonCommercial - NoDerivatives 4.0 International Public License.
https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/legalcode

For permissions & requests regarding printing & further formats
contact info@urdugeoversion.com.

सहायफ़े-हिकमत और ज़बूर

अय्यूब	**1**	**वाइज़**	**173**
ज़बूर	**38**	**ग़ज़लुल-ग़ज़लात**	**184**
अमसाल	**139**		

हरफ़े-आग़ाज़

अज़ीज़ क़ारी! आपके हाथ में किताबे-मुक़द्दस का नया उर्दू तरजुमा है। यह इलाही किताब इनसान के लिए अल्लाह तआला का कलाम है। इसमें इनसान के साथ अल्लाह की मुहब्बत और उसके लिए उस की मरज़ी और मनशा का इज़हार है।

किताबे-मुक़द्दस पुराने और नए अहदनामे का मजमुआ है। पुराना अहदनामा तौरेत, तारीख़ी सहायफ़, हिकमत और ज़बूर के सहायफ़, और अंबिया के सहायफ़ पर मुश्तमिल है। नया अहदनामा इंजीले-मुक़द्दस का पाक कलाम है।

पुराने अहदनामे की असल ज़बान इबरानी और अरामी और नए अहदनामे की यूनानी है। ज़ेरे-नज़र मतन इन ज़बानों का बराहे-रास्त तरजुमा है। मुतरजिम ने हर मुमकिन कोशिश की है कि असल ज़बानों का सहीह सहीह मफ़हूम अदा करे।

पाक कलाम के तमाम मुतरजिमीन को दो सवालों का सामना है : पहला यह कि असल मतन का सहीह सहीह तरजुमा किया जाए। दूसरा यह कि जिस ज़बान में तरजुमा करना मक़सूद हो उस की ख़ूबसूरती और चाशनी भी बरक़रार रहे और पाक मतन के साथ वफ़ादारी भी मुतअस्सिर न हो। चुनाँचे हर मुतरजिम को फ़ैसला करना होता है कि कहाँतक वुह लफ़्ज़ बलफ़्ज़ तरजुमा करे और कहाँतक उर्दू ज़बान की सेहत, ख़ूबसूरती और चाशनी को मद्दे-नज़र रखते हुए क़दरे आज़ादाना तरजुमा करे। मुख़्तलिफ़ तरजुमों में जो बाज़ औक़ात थोड़ा-बहत फ़रक़ नज़र आता है उसका यही सबब है कि एक मुतरजिम असल अलफ़ाज़ का ज़्यादा पाबंद रहा है जबकि दूसरे ने मफ़हूम को अदा करने में उर्दू ज़बान की रिआयत करके क़दरे आज़ाद तरीक़े से मतलब को अदा करने की कोशिश की है। इस तरजुमे में जहाँ तक हो सका असल ज़बान के क़रीब रहने की कोशिश की गई है। याद रहे कि सुर्ख़ियाँ और उनवानात मतन का हिस्सा नहीं हैं। उनको महज़ क़ारी की सहूलत की ख़ातिर दिया गया है।

चूँकि असल ज़बानों में अंबिया के लिए इज़्ज़त के वुह अलक़ाब इस्तेमाल नहीं किए गए जिनका आज-कल रिवाज है, इसलिए इलहामी मतन के एहतराम को मलहूज़े-ख़ातिर रखते हुए तरजुमे में अलक़ाब का इज़ाफ़ा करने से गुरेज़ किया गया है।

किताबे-मुक़द्दस में मज़कूर जवाहरात का तरजुमा जदीद साइंसी तहक़ीक़ात के मुताबिक़ किया गया है।

चूँकि वक़्त के साथ साथ नाप-तोल की मिक़दारें क़दरे बदल गईं इसलिए तरजुमे में उनकी अदायगी में ख़ास मुश्किल पेश आई।

जहाँ रूह का लफ़्ज़ सीग़ाए-मुज़क्कर में अदा किया गया है वहाँउससे मुराद रूहुल-क़ुद्स यानी ख़ुदा का रूह है। जब वुह और मानों में मुस्तामल है तब मामूल के मुताबिक़ सीग़ाए-मुअन्नस इस्तेमाल हुआ है।

इंजीले-मुक़द्दस में बपतिस्मा देने का लुग़वी मतलब ग़ोता देना है। जिस शख़्स को बपतिस्मा दिया जाता है उसे पानी में ग़ोता दिया जाता है।

बारी तआला के फ़ज़्ल से इंजीले-मुक़द्दस के कई उर्दू तरजुमे दस्तयाब हैं। इन सबका मक़सद यही है कि असल ज़बान का मफ़हूम अदा किया जाए। इनका आपस में मुक़ाबला नहीं है बल्कि मुख़्तलिफ़ तरजुमों का एक दूसरे के साथ मुवाज़ना करने से असली ज़बान के मफ़हूम की गहराई और वुसअत सामने आती है और यों मुख़्तलिफ़ तरजुमे मिलकर कलामे-मुक़द्दस की पूरी तफ़्हीम में मुअविन साबित होते हैं।

अल्लाह करे कि यह तरजुमा भी उसके ज़िंदा कलाम का मतलब और मक़सद और उस की वुसअत और गहराई को ज़्यादा सफ़ाई से समझने में मदद का बाइस बने।

नाशिरीन

अय्यूब

अय्यूब की दीनदारी

1 मुल्के-ऊज़ में एक बेइलज़ाम आदमी रहता
था जिसका नाम अय्यूब था। वह सीधी
राह पर चलता, अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और
हर बुराई से दूर रहता था। 2उसके सात बेटे और
तीन बेटियाँ पैदा हुईं। 3साथ साथ उसके बहुत
माल-मवेशी थे : 7,000 भेड़-बकरियाँ, 3,000
ऊँट, बैलों की 500 जोड़ियाँ और 500 गधियाँ।
उसके बेशुमार नौकर-नौकरानियाँ भी थे। ग़रज़
मशरिक़ के तमाम बाशिंदों में इस आदमी की
हैसियत सबसे बड़ी थी।

4उसके बेटों का दस्तूर था कि बारी बारी अपने
घरों में ज़ियाफ़त करें। इसके लिए वह अपनी
तीन बहनों को भी अपने साथ खाने और पीने
की दावत देते थे। 5हर दफ़ा जब ज़ियाफ़त के
दिन इख़्तिताम तक पहुँचते तो अय्यूब अपने बच्चों
को बुलाकर उन्हें पाक-साफ़ कर देता और सुबह-
सवेरे उठकर हर एक के लिए भस्म होनेवाली एक
एक क़ुरबानी पेश करता। क्योंकि वह कहता था,
“हो सकता है मेरे बच्चों ने गुनाह करके दिल में
अल्लाह पर लानत की हो।” चुनाँचे अय्यूब हर
ज़ियाफ़त के बाद ऐसा ही करता था।

अय्यूब के किरदार पर इलज़ाम

6एक दिन फ़रिश्ते[a] अपने आपको रब के हुज़ूर
पेश करने आए। इबलीस भी उनके दरमियान
मौजूद था। 7रब ने इबलीस से पूछा, “तू कहाँ से
आया है?” इबलीस ने जवाब दिया, “मैं दुनिया
में इधर-उधर घुमता-फिरता रहा।”

8रब बोला, “क्या तूने मेरे बंदे अय्यूब पर
तवज्जुह दी? दुनिया में उस जैसा कोई और
नहीं। क्योंकि वह बेइलज़ाम है, वह सीधी राह पर
चलता, अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और हर बुराई
से दूर रहता है।”

9इबलीस ने रब को जवाब दिया, “बेशक,
लेकिन क्या अय्यूब यों ही अल्लाह का ख़ौफ़
मानता है? 10तूने तो उस के, उसके घराने के और
उस की तमाम मिलकियत के इर्दगिर्द हिफ़ाज़ती
बाड़ लगाई है। और जो कुछ उसके हाथ ने किया
उस पर तूने बरकत दी, नतीजे में उस की भेड़-
बकरियाँ और गाय-बैल पूरे मुल्क में फैल गए हैं।
11लेकिन वह क्या करेगा अगर तू अपना हाथ
ज़रा बढ़ाकर सब कुछ तबाह करे जो उसे हासिल
है। तब वह तेरे मुँह पर ही तुझ पर लानत करेगा।”

12रब ने इबलीस से कहा, “ठीक है, जो कुछ
भी उसका है वह तेरे हाथ में है। लेकिन उसके
बदन को हाथ न लगाना।” इबलीस रब के हुज़ूर
से चला गया।

13एक दिन अय्यूब के बेटे-बेटियाँ मामूल के
मुताबिक़ ज़ियाफ़त कर रहे थे। वह बड़े भाई
के घर में खाना खा रहे और मै पी रहे थे।
14अचानक एक क़ासिद अय्यूब के पास पहुँचकर

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : अल्लाह के फ़रज़ंद।

कहने लगा, “बैल खेत में हल चला रहे थे और
गधियाँ साथवाली ज़मीन पर चर रही थीं 15कि
सबा के लोगों ने हम पर हमला करके सब कुछ
छीन लिया। उन्होंने तमाम मुलाज़िमों को तलवार
से मार डाला, सिर्फ़ मैं ही आपको यह बताने के
लिए बच निकला हूँ।”

16वह अभी बात कर ही रहा था कि
एक और क़ासिद पहुँचा जिसने इत्तला दी,
“अल्लाह की आग ने आसमान से गिर-
कर आपकी तमाम भेड़-बकरियों और मुलाज़िमों
को भस्म कर दिया। सिर्फ़ मैं ही आपको यह बताने
के लिए बच निकला हूँ।”

17वह अभी बात कर ही रहा था कि तीसरा
क़ासिद पहुँचा। वह बोला, “बाबल के कसदियों
ने तीन गुरोहों में तक़सीम होकर हमारे ऊँटों पर
हमला किया और सब कुछ छीन लिया। तमाम
मुलाज़िमों को उन्होंने तलवार से मार डाला, सिर्फ़
मैं ही आपको यह बताने के लिए बच निकला हूँ।”

18वह अभी बात कर ही रहा था कि चौथा
क़ासिद पहुँचा। उसने कहा, “आपके बेटे-बेटियाँ
अपने बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मै
पी रहे थे 19कि अचानक रेगिस्तान की जानिब से
एक ज़ोरदार आँधी आई जो घर के चारों कोनों से
यों टकराई कि वह जवानों पर गिर पड़ा। सबके
सब हलाक हो गए। सिर्फ़ मैं ही आपको यह बताने
के लिए बच निकला हूँ।”

20यह सब कुछ सुनकर अय्यूब उठा। अपना
लिबास फाड़कर उसने अपने सर के बाल
मुँडवाए। फिर उसने ज़मीन पर गिरकर औंधे मुँह
रब को सिजदा किया। 21वह बोला, “मैं नंगी
हालत में माँ के पेट से निकला और नंगी हालत में
कूच कर जाऊँगा। रब ने दिया, रब ने लिया, रब
का नाम मुबारक हो!”

22इस सारे मामले में अय्यूब ने न गुनाह किया,
न अल्लाह के बारे में कुफ़र बका।

अय्यूब पर बीमारी का हमला

2 एक दिन फ़रिश्ते[a] दुबारा अपने आप-
को रब के हुज़ूर पेश करने आए। इबलीस
भी उनके दरमियान मौजूद था। 2रब ने इबलीस से
पूछा, “तू कहाँ से आया है?” इबलीस ने जवाब
दिया, “मैं दुनिया में इधर-उधर घुमता-फिरता
रहा।” 3रब बोला, “क्या तूने मेरे बंदे अय्यूब पर
तवज्जुह दी? ज़मीन पर उस जैसा कोई और
नहीं। वह बेइलज़ाम है, वह सीधी राह पर चलता,
अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और हर बुराई से दूर
रहता है। अभी तक वह अपने बेइलज़ाम किरदार
पर क़ायम है हालाँकि तूने मुझे उसे बिलावजह
तबाह करने पर उकसाया।”

4इबलीस ने जवाब दिया, “खाल का बदला
खाल ही होता है! इनसान अपनी जान को बचाने
के लिए अपना सब कुछ दे देता है। 5लेकिन वह
क्या करेगा अगर तू अपना हाथ ज़रा बढ़ाकर
उसका जिस्म[b] छू दे? तब वह तेरे मुँह पर ही
तुझ पर लानत करेगा।”

6रब ने इबलीस से कहा, “ठीक है, वह तेरे
हाथ में है। लेकिन उस की जान को मत छेड़ना।”
7इबलीस रब के हुज़ूर से चला गया और अय्यूब
को सताने लगा। चाँद से लेकर तल्वे तक अय्यूब
के पूरे जिस्म पर बदतरीन क़िस्म के फोड़े निकल
आए। 8तब अय्यूब राख में बैठ गया और ठीकरे
से अपनी जिल्द को खुरचने लगा।

9उस की बीवी बोली, “क्या तू अब तक अपने
बेइलज़ाम किरदार पर क़ायम है? अल्लाह पर
लानत करके दम छोड़ दे!” 10लेकिन उसने
जवाब दिया, “तू अहमक़ औरत की-सी बातें कर
रही है। अल्लाह की तरफ़ से भलाई तो हम क़बूल
करते हैं, तो क्या मुनासिब नहीं कि उसके हाथ से
मुसीबत भी क़बूल करें?” इस सारे मामले में
अय्यूब ने अपने मुँह से गुनाह न किया।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : अल्लाह के फ़रज़ंद।

[b]लफ़्ज़ी तरजुमा : गोश्त-पोस्त और हड्डियाँ।

अय्यूब के तीन दोस्त

11अय्यूब के तीन दोस्त थे। उनके नाम
इलीफ़ज़ तेमानी, बिलदद सूख़ी और ज़ूफ़र
नामाती थे। जब उन्हें इत्तला मिली कि अय्यूब पर
यह तमाम आफ़त आ गई है तो हर एक अपने घर
से रवाना हुआ। उन्होंने मिलकर फ़ैसला किया कि
इकट्ठे अफ़सोस करने और अय्यूब को तसल्ली
देने जाएंगे। 12जब उन्होंने दूर से अपनी नज़र
उठाकर अय्यूब को देखा तो उस की इतनी बुरी
हालत थी कि वह पहचाना नहीं जाता था। तब
वह ज़ारो-क़तार रोने लगे। अपने कपड़े फाड़कर
उन्होंने अपने सरों पर ख़ाक डाली। 13फिर वह
उसके साथ ज़मीन पर बैठ गए। सात दिन और
सात रात वह इसी हालत में रहे। इस पूरे अरसे
में उन्होंने अय्यूब से एक भी बात न की, क्योंकि
उन्होंने देखा कि वह शदीद दर्द का शिकार है।

अय्यूब की आहो-ज़ारी

3 तब अय्यूब बोल उठा और अपने जन्म दिन
पर लानत करने लगा। 2उसने कहा,
3“वह दिन मिट जाए जब मैंने जन्म लिया,
वह रात जिसने कहा, ‘पेट में लड़का पैदा हुआ
है!’ 4वह दिन अंधेरा ही अंधेरा हो जाए, एक
किरण भी उसे रौशन न करे। अल्लाह भी जो
बुलंदियों पर है उसका ख़याल न करे। 5तारीकी
और घना अंधेरा उस पर क़ब्ज़ा करे, काले काले
बादल उस पर छाए रहें, हाँ वह रौशनी से महरूम
होकर सख़्त दहशतज़दा हो जाए। 6घना अंधेरा
उस रात को छीन ले जब मैं माँ के पेट में पैदा हुआ।
उसे न साल, न किसी महीने के दिनों में शुमार
किया जाए। 7वह रात बाँझ रहे, उसमें ख़ुशी का
नारा न लगाया जाए। 8जो दिनों पर लानत भेजते
और लिवियातान अज़दहे को तहरीक में लाने के
क़ाबिल होते हैं वही उस रात पर लानत करें।
9उस रात के धुँधलके में टिमटिमानेवाले सितारे
बुझ जाएँ, फ़जर का इंतज़ार करना बेफ़ायदा ही
रहे बल्कि वह रात तुलूए-सुबह की पलकें[a] भी न
देखे। 10क्योंकि उसने मेरी माँ को मुझे जन्म देने
से न रोका, वरना यह तमाम मुसीबत मेरी आँखों
से छुपी रहती।
11मैं पैदाइश के वक़्त क्यों मर न गया, माँ के
पेट से निकलते वक़्त जान क्यों न दे दी? 12माँ
के घुटनों ने मुझे ख़ुशआमदीद क्यों कहा, उस
की छातियों ने मुझे दूध क्यों पिलाया? 13अगर
यह न होता तो इस वक़्त मैं सुकून से लेटा
रहता, आराम से सोया होता। 14मैं उन्हीं के साथ
होता जो पहले बादशाह और दुनिया के मुशीर
थे, जिन्होंने खंडरात अज़ सरे-नौ तामीर किए।
15मैं उनके साथ होता जो पहले हुक्मरान थे और
अपने घरों को सोने-चाँदी से भर लेते थे। 16मुझे
ज़ाया हो जानेवाले बच्चे की तरह क्यों न ज़मीन
में दबा दिया गया? मुझे उस बच्चे की तरह क्यों
न दफ़नाया गया जिसने कभी रौशनी न देखी?
17उस जगह बेदीन अपनी बेलगाम हरकतों से
बाज़ आते और वह आराम करते हैं जो तगो-दौ
करते करते थक गए थे। 18वहाँ क़ैदी इतमीनान से
रहते हैं, उन्हें उस ज़ालिम की आवाज़ नहीं सुननी
पड़ती जो उन्हें जीते-जी हाँकता रहा। 19उस जगह
छोटे और बड़े सब बराबर होते हैं, ग़ुलाम अपने
मालिक से आज़ाद रहता है।
20अल्लाह मुसीबतज़दों को रौशनी और
शिकस्तादिलों को ज़िंदगी क्यों अता करता है?
21वह तो मौत के इंतज़ार में रहते हैं लेकिन
बेफ़ायदा। वह खोद खोदकर उसे यों तलाश करते
हैं जिस तरह किसी पोशीदा ख़ज़ाने को। 22अगर
उन्हें क़ब्र नसीब हो तो वह बाग़ बाग़ होकर
जशन मनाते हैं। 23अल्लाह उसको ज़िंदा क्यों
रखता जिसकी नज़रों से रास्ता ओझल हो गया
है और जिसके चारों तरफ़ उसने बाड़ लगाई है।
24क्योंकि जब मुझे रोटी खानी है तो हाय हाय
करता हूँ, मेरी आहें पानी की तरह मुँह से फूट
निकलती हैं। 25जिस चीज़ से मैं डरता था वह
मुझ पर आई, जिससे मैं ख़ौफ़ खाता था उससे

[a] पलकों से मुराद पहली किरणें है।

मेरा वास्ता पड़ा। 26न मुझे इतमीनान हुआ, न सुकून या आराम बल्कि मुझ पर बेचैनी ग़ालिब आई।"

इलीफ़ज़ का एतराज़ : इनसान अल्लाह के हुज़ूर रास्त नहीं ठहर सकता

4 यह कुछ सुनकर इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब दिया,

2"क्या तुझसे बात करने का कोई फ़ायदा है? तू तो यह बरदाश्त नहीं कर सकता। लेकिन दूसरी तरफ़ कौन अपने अलफ़ाज़ रोक सकता है? 3ज़रा सोच ले, तूने ख़ुद बहुतों को तरबियत दी, कई लोगों के थकेमाँदे हाथों को तक़वियत दी है। 4तेरे अलफ़ाज़ ने ठोकर खानेवाले को दुबारा खड़ा किया, डगमगाते हुए घुटने तूने मज़बूत किए। 5लेकिन अब जब मुसीबत तुझ पर आ गई तो तू उसे बरदाश्त नहीं कर सकता, अब जब ख़ुद उस की ज़द में आ गया तो तेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं। 6क्या तेरा एतमाद इस पर मुनहसिर नहीं है कि तू अल्लाह का ख़ौफ़ माने, तेरी उम्मीद इस पर नहीं कि तू बेइलज़ाम राहों पर चले?

7सोच ले, क्या कभी कोई बेगुनाह हलाक हुआ है? हरगिज़ नहीं! जो सीधी राह पर चलते हैं वह कभी रूए-ज़मीन पर से मिट नहीं गए। 8जहाँ तक मैंने देखा, जो नाइनसाफ़ी का हल चलाए और नुक़सान का बीज बोए वह इसकी फ़सल काटता है। 9ऐसे लोग अल्लाह की एक फूँक से तबाह, उसके क़हर के एक झोंके से हलाक हो जाते हैं। 10शेरबबर की दहाड़ें ख़ामोश हो गईं, जवान शेर के दाँत झड़ गए हैं। 11शिकार न मिलने की वजह से शेर हलाक हो जाता और शेरनी के बच्चे परागंदा हो जाते हैं।

12एक बार एक बात चोरी-छुपे मेरे पास पहुँची, उसके चंद अलफ़ाज़ मेरे कान तक पहुँच गए। 13रात को ऐसी रोयाएँ पेश आईं जो उस वक़्त देखी जाती हैं जब इनसान गहरी नींद सोया होता है। इनसे मैं परेशानकुन ख़यालात में मुब्तला हुआ। 14मुझ पर दहशत और थरथराहट ग़ालिब आई, मेरी तमाम हड्डियाँ लरज़ उठीं। 15फिर मेरे चेहरे के सामने से हवा का झोंका गुज़र गया और मेरे तमाम रोंगटे खड़े हो गए। 16एक हस्ती मेरे सामने खड़ी हुई जिसे मैं पहचान न सका, एक शक्ल मेरी आँखों के सामने दिखाई दी। ख़ामोशी थी, फिर एक आवाज़ ने फ़रमाया, 17'क्या इनसान अल्लाह के हुज़ूर रास्तबाज़ ठहर सकता है, क्या इनसान अपने ख़ालिक़ के सामने पाक-साफ़ ठहर सकता है?' 18देख, अल्लाह अपने ख़ादिमों पर भरोसा नहीं करता, अपने फ़रिश्तों को वह अहमक़ ठहराता है। 19तो फिर वह इनसान पर क्यों भरोसा रखे जो मिट्टी के घर में रहता, ऐसे मकान में जिसकी बुनियाद ख़ाक पर ही रखी गई है। उसे पतंगे की तरह कुचला जाता है। 20सुबह को वह ज़िंदा है लेकिन शाम तक पाश पाश हो जाता, अबद तक हलाक हो जाता है, और कोई भी ध्यान नहीं देता। 21उसके ख़ैमे के रस्से ढीले करो तो वह हिकमत हासिल किए बग़ैर इंतक़ाल कर जाता है।

अल्लाह की तादीब तसलीम कर

5 बेशक आवाज़ दे, लेकिन कौन जवाब देगा? कोई नहीं! मुक़द्दसीन में से तू किसकी तरफ़ रुजू कर सकता है? 2क्योंकि अहमक़ की रंजीदगी उसे मार डालती, सादालौह की सरगरमी उसे मौत के घाट उतार देती है। 3मैंने ख़ुद एक अहमक़ को जड़ पकड़ते देखा, लेकिन मैंने फ़ौरन ही उसके घर पर लानत भेजी। 4उसके फ़रज़ंद नजात से दूर रहते। उन्हें शहर के दरवाज़े में रौंदा जाता है, और बचानेवाला कोई नहीं। 5भूके उस की फ़सल खा जाते, काँटेदार बाड़ों में महफ़ूज़ माल भी छीन लेते हैं। प्यासे अफ़राद हाँपते हुए उस की दौलत के पीछे पड़ जाते हैं। 6क्योंकि बुराई ख़ाक से नहीं निकलती और दुख-दर्द मिट्टी से नहीं फूटता 7बल्कि इनसान ख़ुद इसका बाइस है, दुख-दर्द उस की विरासत में ही पाया जाता है। यह इतना यक़ीनी है जितना यह कि आग की चिंगारियाँ ऊपर की तरफ़ उड़ती हैं।

8लेकिन अगर मैं तेरी जगह होता तो अल्लाह
से दरियाफ़्त करता, उसे ही अपना मामला
पेश करता। 9वही इतने अज़ीम काम करता है
कि कोई उनकी तह तक नहीं पहुँच सकता,
इतने मोजिज़े कि कोई उन्हें गिन नहीं सकता।
10वही रूए-ज़मीन को बारिश अता करता, खुले
मैदान पर पानी बरसा देता है। 11पस्तहालों को
वह सरफ़राज़ करता और मातम करनेवालों को
उठाकर महफ़ूज़ मक़ाम पर रख देता है। 12वह
चालाकों के मनसूबे तोड़ देता है ताकि उनके हाथ
नाकाम रहें। 13वह दानिशमंदों को उनकी अपनी
चालाकी के फंदे में फँसा देता है तो होशियारों
की साज़िशें अचानक ही ख़त्म हो जाती हैं।
14दिन के वक़्त उन पर अंधेरा छा जाता, और
दोपहर के वक़्त भी वह टटोल टटोलकर फिरते हैं।
15अल्लाह ज़रूरतमंदों को उनके मुँह की तलवार
और ज़बरदस्त के क़ब्ज़े से बचा लेता है। 16यों
पस्तहालों को उम्मीद दी जाती और नाइनसाफ़ी
का मुँह बंद किया जाता है।

17मुबारक है वह इनसान जिसकी मलामत
अल्लाह करता है! चुनाँचे क़ादिरे-मुतलक़ की
तादीब को हक़ीर न जान। 18क्योंकि वह ज़ख़मी
करता लेकिन मरहम-पट्टी भी लगा देता है, वह
ज़रब लगाता लेकिन अपने हाथों से शफ़ा भी
बख़्शता है। 19वह तुझे छः मुसीबतों से छुड़ाएगा,
और अगर इसके बाद भी कोई आए तो तुझे
नुक़सान नहीं पहुँचेगा। 20अगर काल पड़े तो वह
फ़िद्या देकर तुझे मौत से बचाएगा, जंग में तुझे
तलवार की ज़द में आने नहीं देगा। 21तू ज़बान
के कोड़ों से महफ़ूज़ रहेगा, और जब तबाही आए
तो डरने की ज़रूरत नहीं होगी। 22तू तबाही और
काल की हँसी उड़ाएगा, ज़मीन के वहशी जानवरों
से ख़ौफ़ नहीं खाएगा। 23क्योंकि तेरा खुले मैदान
के पत्थरों के साथ अहद होगा, इसलिए उसके
जंगली जानवर तेरे साथ सलामती से ज़िंदगी
गुज़ारेंगे। 24तू जान लेगा कि तेरा ख़ैमा महफ़ूज़
है। जब तू अपने घर का मुआयना करे तो मालूम
होगा कि कुछ गुम नहीं हुआ। 25तू देखेगा कि
तेरी औलाद बढ़ती जाएगी, तेरे फ़रज़ंद ज़मीन
पर घास की तरह फैलते जाएंगे। 26तू वक़्त पर
जमाशुदा पूलों की तरह उम्ररसीदा होकर क़ब्र में
उतरेगा।

27हमने तहक़ीक़ करके मालूम किया है कि
ऐसा ही है। चुनाँचे हमारी बात सुनकर उसे अपना
ले!”

अय्यूब का जवाब : साबित करो कि मुझ से क्या ग़लती हुई है

6 तब अय्यूब ने जवाब देकर कहा,
2“काश मेरी रंजीदगी का वज़न किया जा
सके और मेरी मुसीबत तराज़ू में तोली जा सके!
3क्योंकि वह समुंदर की रेत से ज़्यादा भारी हो
गई है। इसी लिए मेरी बातें बेतुकी-सी लग रही हैं।
4क्योंकि क़ादिरे-मुतलक़ के तीर मुझमें गड़ गए
हैं, मेरी रूह उनका ज़हर पी रही है। हाँ, अल्लाह के
हौलनाक हमले मेरे ख़िलाफ़ सफ़आरा हैं। 5क्या
जंगली गधा ढीनचूँ ढीनचूँ करता है जब उसे घास
दस्तयाब हो? या क्या बैल डकराता है जब उसे
चारा हासिल हो? 6क्या फीका खाना नमक के
बग़ैर खाया जाता, या अंडे की सफेदी[a] में ज़ायक़ा
है? 7ऐसी चीज़ को मैं छूता भी नहीं, ऐसी ख़ुराक
से मुझे घिन ही आती है।

8काश मेरी गुज़ारिश पूरी हो जाए, अल्लाह मेरी
आरज़ू पूरी करे! 9काश वह मुझे कुचल देने के
लिए तैयार हो जाए, वह अपना हाथ बढ़ाकर मुझे
हलाक करे। 10फिर मुझे कम अज़ कम तसल्ली
होती बल्कि मैं मुस्तक़िल दर्द के मारे पेचो-ताब
खाने के बावुजूद ख़ुशी मनाता कि मैंने क़ुद्दूस ख़ुदा
के फ़रमानों का इनकार नहीं किया।

11मेरी इतनी ताक़त नहीं कि मज़ीद इंतज़ार
करूँ, मेरा क्या अच्छा अंजाम है कि सब्र करूँ?
12क्या मैं पत्थरों जैसा ताक़तवर हूँ? क्या मेरा
जिस्म पीतल जैसा मज़बूत है? 13नहीं, मुझसे हर

[a]या ख़त्मी का रस।

सहारा छीन लिया गया है, मेरे साथ ऐसा सुलूक हुआ है कि कामयाबी का इमकान ही नहीं रहा।

14जो अपने दोस्त पर मेहरबानी करने से इनकार करे वह अल्लाह का ख़ौफ़ तर्क करता है। 15मेरे भाइयों ने वादी की उन नदियों जैसी बेवफ़ाई की है जो बरसात के मौसम में अपने किनारों से बाहर आ जाती हैं। 16उस वक़्त वह बर्फ़ से भरकर गदली हो जाती हैं, 17लेकिन उरूज तक पहुँचते ही वह सूख जाती, तपती गरमी में ओझल हो जाती हैं। 18तब क़ाफ़िले अपनी राहों से हट जाते हैं ताकि पानी मिल जाए, लेकिन बेफ़ायदा। वह रेगिस्तान में पहुँचकर तबाह हो जाते हैं। 19तैमा के क़ाफ़िले इस पानी की तलाश में रहते, सबा के सफ़र करनेवाले ताजिर उस पर उम्मीद रखते हैं, 20लेकिन बेसूद। जिस पर उन्होंने एतमाद किया वह उन्हें मायूस कर देता है। जब वहाँ पहुँचते हैं तो शरमिंदा हो जाते हैं।

21तुम भी इतने ही बेकार साबित हुए हो। तुम हौलनाक बात देखकर दहशतज़दा हो गए हो। 22क्या मैंने कहा, 'मुझे तोहफ़ा दे दो, अपनी दौलत में से मेरी ख़ातिर रिश्वत दो, 23मुझे दुश्मन के हाथ से छुड़ाओ, फ़िद्या देकर ज़ालिम के क़ब्ज़े से बचाओ'?

24मुझे साफ़ हिदायत दो तो मैं मानकर ख़ामोश हो जाऊँगा। मुझे बताओ कि किस बात में मुझसे ग़लती हुई है। 25सीधी राह की बातें कितनी तकलीफ़देह हो सकती हैं! लेकिन तुम्हारी मलामत से मुझे किस क़िस्म की तरबियत हासिल होगी? 26क्या तुम समझते हो कि ख़ाली अलफ़ाज़ मामले को हल करेंगे, गो तुम मायूसी में मुब्तला आदमी की बात नज़रंदाज़ करते हो? 27क्या तुम यतीम के लिए भी क़ुरा डालते, अपने दोस्त के लिए भी सौदाबाज़ी करते हो?

28लेकिन अब ख़ुद फ़ैसला करो, मुझ पर नज़र डालकर सोच लो। अल्लाह की क़सम, मैं तुम्हारे रूबरू झूट नहीं बोलता। 29अपनी ग़लती तसलीम करो ताकि नाइनसाफ़ी न हो। अपनी ग़लती मान लो, क्योंकि अब तक मैं हक़ पर हूँ। 30क्या मेरी ज़बान झूट बोलती है? क्या मैं फ़रेबदेह बातें पहचान नहीं सकता?

अल्लाह मुझे क्यों नहीं छोड़ता?

7 इनसान दुनिया में सख़्त ख़िदमत करने पर मजबूर होता है, जीते-जी वह मज़दूर की-सी ज़िंदगी गुज़ारता है। 2ग़ुलाम की तरह वह शाम के साये का आरज़ूमंद होता, मज़दूर की तरह मज़दूरी के इंतज़ार में रहता है। 3मुझे भी बेमानी महीने और मुसीबत की रातें नसीब हुई हैं। 4जब बिस्तर पर लेट जाता तो सोचता हूँ कि कब उठ सकता हूँ? लेकिन लगता है कि रात कभी ख़त्म नहीं होगी, और मैं फ़जर तक बेचैनी से करवटें बदलता रहता हूँ। 5मेरे जिस्म की हर जगह कीड़े और खुरंड फैल गए हैं, मेरी सुकड़ी हुई जिल्द में पीप पड़ गई है। 6मेरे दिन जूलाहे की नाल[a] से कहीं ज़्यादा तेज़ी से गुज़र गए हैं। वह अपने अंजाम तक पहुँच गए हैं, धागा ख़त्म हो गया है।

7ऐ अल्लाह, ख़याल रख कि मेरी ज़िंदगी दम-भर की ही है! मेरी आँखें आइंदा कभी ख़ुशहाली नहीं देखेंगी। 8जो मुझे इस वक़्त देखे वह आइंदा मुझे नहीं देखेगा। तू मेरी तरफ़ देखेगा, लेकिन मैं हूँगा नहीं। 9जिस तरह बादल ओझल होकर ख़त्म हो जाता है उसी तरह पाताल में उतरनेवाला वापस नहीं आता। 10वह दुबारा अपने घर वापस नहीं आएगा, और उसका मक़ाम उसे नहीं जानता।

11चुनाँचे मैं वह कुछ रोक नहीं सकता जो मेरे मुँह से निकलना चाहता है। मैं रंजीदा हालत में बात करूँगा, अपने दिल की तलख़ी का इज़हार करके आहो-ज़ारी करूँगा। 12ऐ अल्लाह, क्या मैं समुंदर या समुंदरी अज़दहा हूँ कि तूने मुझे नज़रबंद कर रखा है? 13जब मैं कहता हूँ, 'मेरा बिस्तर मुझे तसल्ली दे, सोने से मेरा ग़म हलका हो जाए' 14तो तू मुझे हौलनाक ख़ाबों से हिम्मत

[a]यानी शटल।

हारने देता, रोयाओं से मुझे दहशत खिलाता है।
15मेरी इतनी बुरी हालत हो गई है कि सोचता हूँ,
काश कोई मेरा गला घूँटकर मुझे मार डाले, काश
मैं ज़िंदा न रहूँ बल्कि दम छोड़ूँ। 16मैंने ज़िंदगी को
रद्द कर दिया है, अब मैं ज़्यादा देर तक ज़िंदा नहीं
रहूँगा। मुझे छोड़, क्योंकि मेरे दिन दम-भर के ही
हैं।

17इनसान क्या है कि तू उस की इतनी क़दर
करे, उस पर इतना ध्यान दे? 18वह इतना अहम
तो नहीं है कि तू हर सुबह उसका मुआयना करे,
हर लमहा उस की जाँच-पड़ताल करे। 19क्या तू
मुझे तकने से कभी नहीं बाज़ आएगा? क्या तू
मुझे इतना सुकून भी नहीं देगा कि पल-भर के
लिए थूक निगलूँ? 20ऐ इनसान के पहरेदार,
अगर मुझसे ग़लती हुई भी तो इससे मैंने तेरा
क्या नुक़सान किया? तूने मुझे अपने ग़ज़ब का
निशाना क्यों बनाया? मैं तेरे लिए बोझ क्यों बन
गया हूँ? 21तू मेरा जुर्म मुआफ़ क्यों नहीं करता,
मेरा क़ुसूर दरगुज़र क्यों नहीं करता? क्योंकि
जल्द ही मैं ख़ाक हो जाऊँगा। अगर तू मुझे तलाश
भी करे तो नहीं मिलूँगा, क्योंकि मैं हूँगा नहीं।"

बिलदद का जवाब : अपने गुनाह से तौबा कर!

8 तब बिलदद सूख़ी ने जवाब देकर कहा,
2"तू कब तक इस क़िस्म की बातें करेगा?
कब तक तेरे मुँह से आँधी के झोंके निकलेंगे?
3क्या अल्लाह इनसाफ़ का ख़ून कर सकता,
क्या क़ादिरे-मुतलक़ रास्ती को आगे पीछे कर
सकता है? 4तेरे बेटों ने उसका गुनाह किया
है, इसलिए उसने उन्हें उनके जुर्म के क़ब्ज़े में
छोड़ दिया। 5अब तेरे लिए लाज़िम है कि तू
अल्लाह का तालिब हो और क़ादिरे-मुतलक़ से
इल्तिजा करे, 6कि तू पाक हो और सीधी राह
पर चले। फिर वह अब भी तेरी ख़ातिर जोश में
आकर तेरी रास्तबाज़ी की सुकूनतगाह को बहाल
करेगा। 7तब तेरा मुस्तक़बिल निहायत अज़ीम
होगा, ख़ाह तेरी इब्तिदाई हालत कितनी पस्त
क्यों न हो।

8गुज़श्ता नसल से ज़रा पूछ ले, उस पर ध्यान
दे जो उनके बापदादा ने तहक़ीक़ात के बाद मालूम
किया। 9क्योंकि हम ख़ुद कल ही पैदा हुए और
कुछ नहीं जानते, ज़मीन पर हमारे दिन साये जैसे
आरिज़ी हैं। 10लेकिन यह तुझे तालीम देकर बात
बता सकते हैं, यह तुझे अपने दिल में जमाशुदा
इल्म पेश कर सकते हैं। 11क्या आबी नरसल वहाँ
उगता है जहाँ दलदल नहीं? क्या सरकंडा वहाँ
फलता-फूलता है जहाँ पानी नहीं? 12उस की
कोंपलें अभी निकल रही हैं और उसे तोड़ा नहीं
गया कि अगर पानी न मिले तो बाक़ी हरियाली
से पहले ही सूख जाता है। 13यह है उनका
अंजाम जो अल्लाह को भूल जाते हैं, इसी तरह
बेदीन की उम्मीद जाती रहती है। 14जिस पर वह
एतमाद करता है वह निहायत ही नाज़ुक है, जिस
पर उसका भरोसा है वह मकड़ी के जाले जैसा
कमज़ोर है। 15जब वह जाले पर टेक लगाए तो
खड़ा नहीं रहता, जब उसे पकड़ ले तो क़ायम नहीं
रहता।

16बेदीन धूप में शादाब बेल की मानिंद है। उस
की कोंपलें चारों तरफ़ फैल जाती, 17उस की
जड़ें पत्थर के ढेर पर छाकर उनमें टिक जाती
हैं। 18लेकिन अगर उसे उखाड़ा जाए तो जिस
जगह पहले उग रही थी वह उसका इनकार करके
कहेगी, 'मैंने तुझे कभी देखा भी नहीं।' 19यह है
उस की राह की नाम-निहाद ख़ुशी! जहाँ पहले
था वहाँ दीगर पौदे ज़मीन से फूट निकलेंगे।

20यक़ीनन अल्लाह बेइलज़ाम आदमी को
मुस्तरद नहीं करता, यक़ीनन वह शरीर आदमी
के हाथ मज़बूत नहीं करता। 21वह एक बार फिर
तुझे ऐसी ख़ुशी बख़्शेगा कि तू हँस उठेगा और
शादमानी के नारे लगाएगा। 22जो तुझसे नफ़रत
करते हैं वह शर्म से मुलब्बस हो जाएंगे, और
बेदीनों के ख़ैमे नेस्तो-नाबूद होंगे।"

अय्यूब का जवाब : सालिस के बग़ैर मैं रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता

9 अय्यूब ने जवाब देकर कहा,
2 "मैं ख़ूब जानता हूँ कि तेरी बात दुरुस्त
है। लेकिन अल्लाह के हुज़ूर इनसान किस तरह
रास्तबाज़ ठहर सकता है? 3अगर वह अदालत
में अल्लाह के साथ लड़ना चाहे तो उसके हज़ार
सवालात पर एक का भी जवाब नहीं दे सकेगा।
4अल्लाह का दिल दानिशमंद और उस की क़ुदरत
अज़ीम है। कौन कभी उससे बहस-मुबाहसा
करके कामयाब रहा है?
5अल्लाह पहाड़ों को खिसका देता है, और उन्हें
पता ही नहीं चलता। वह ग़ुस्से में आकर उन्हें
उलटा देता है। 6वह ज़मीन को हिला देता है तो
वह लरज़कर अपनी जगह से हट जाती है, उसके
बुनियादी सतून काँप उठते हैं। 7वह सूरज को
हुक्म देता है तो तुलू नहीं होता, सितारों पर मुहर
लगाता है तो उनकी चमक-दमक बंद हो जाती है।
8अल्लाह ही आसमान को ख़ैमे की तरह तान
देता, वही समुंदरी अज़दहे की पीठ को पाँवों
तले कुचल देता है। 9वही दुब्बे-अकबर, जौज़े,
ख़ोशाए-परवीन और जुनूबी सितारों के झुरमुटों
का ख़ालिक़ है। 10वह इतने अज़ीम काम करता
है कि कोई उनकी तह तक नहीं पहुँच सकता,
इतने मोजिज़े करता है कि कोई उन्हें गिन नहीं
सकता। 11जब वह मेरे सामने से गुज़रे तो मैं उसे
नहीं देखता, जब वह मेरे क़रीब से फिरे तो मुझे
मालूम नहीं होता। 12अगर वह कुछ छीन ले तो
कौन उसे रोकेगा? कौन उससे कहेगा, 'तू क्या
कर रहा है?' 13अल्लाह तो अपना ग़ज़ब नाज़िल
करने से बाज़ नहीं आता। उसके रोब तले रहब
अज़दहे के मददगार भी दबक गए।
14तो फिर मैं किस तरह उसे जवाब दूँ, किस
तरह उससे बात करने के मुनासिब अलफ़ाज़ चुन
लूँ? 15अगर मैं हक़ पर होता भी तो अपना दिफ़ा
न कर सकता। इस मुख़ालिफ़ से मैं इल्तिजा करने
के अलावा और कुछ नहीं कर सकता। 16अगर
वह मेरी चीख़ों का जवाब देता भी तो मुझे यक़ीन
न आता कि वह मेरी बात पर ध्यान देगा।
17थोड़ी-सी ग़लती के जवाब में वह मुझे पाश
पाश करता, बिलावजह मुझे बार बार ज़ख़मी
करता है। 18वह मुझे साँस भी नहीं लेने देता
बल्कि कड़वे ज़हर से सेर कर देता है। 19जहाँ
ताक़त की बात है तो वही क़वी है, जहाँ इनसाफ़
की बात है तो कौन उसे पेशी के लिए बुला सकता
है? 20गो मैं बेगुनाह हूँ तो भी मेरा अपना मुँह मुझे
क़ुसूरवार ठहराएगा, गो बेइलज़ाम हूँ तो भी वह
मुझे मुजरिम क़रार देगा।
21जो कुछ भी हो, मैं बेइलज़ाम हूँ! मैं अपनी
जान की परवा ही नहीं करता, अपनी ज़िंदगी
हक़ीर जानता हूँ। 22ख़ैर, एक ही बात है, इसलिए
मैं कहता हूँ, 'अल्लाह बेइलज़ाम और बेदीन दोनों
को ही हलाक कर देता है।' 23जब कभी अचानक
कोई आफ़त इनसान को मौत के घाट उतारे
तो अल्लाह बेगुनाह की परेशानी पर हँसता है।
24अगर कोई मुल्क बेदीन के हवाले किया जाए
तो अल्लाह उसके क़ाज़ियों की आँखें बंद कर
देता है। अगर यह उस की तरफ़ से नहीं तो फिर
किसकी तरफ़ से है?
25मेरे दिन दौड़नेवाले आदमी से कहीं ज़्यादा
तेज़ी से बीत गए, ख़ुशी देखे बग़ैर भाग निकले
हैं। 26वह सरकंडे के बहरी जहाज़ों की तरह गुज़र
गए हैं, उस उक़ाब की तरह जो अपने शिकार
पर झपट्टा मारता है। 27अगर मैं कहूँ, 'आओ मैं
अपनी आहें भूल जाऊँ, अपने चेहरे की उदासी दूर
करके ख़ुशी का इज़हार करूँ' 28तो फिर भी मैं
उन तमाम तकालीफ़ से डरता हूँ जो मुझे बरदाश्त
करनी हैं। क्योंकि मैं जानता हूँ कि तू मुझे बेगुनाह
नहीं ठहराता।
29जो कुछ भी हो मुझे क़ुसूरवार ही क़रार दिया
गया है, चुनाँचे इसका क्या फ़ायदा कि मैं बेमानी
तगो-दौ में मसरूफ़ रहूँ? 30गो मैं साबुन से नहा

[a]लफ़्ज़ी मतलब : क़लियाब, लाई (lye)।

लूँ और अपने हाथ सोडे[a] से धो लूँ 31ताहम तू
मुझे गढ़े की कीचड़ में यों धँसने देता है कि मुझे
अपने कपड़ों से घिन आती है।
32अल्लाह तो मुझ जैसा इनसान नहीं कि मैं
जवाब में उससे कहूँ, 'आओ हम अदालत में
जाकर एक दूसरे का मुक़ाबला करें।' 33काश
हमारे दरमियान सालिस हो जो हम दोनों पर हाथ
रखे, 34जो मेरी पीठ पर से अल्लाह का डंडा
हटाए ताकि उसका ख़ौफ़ मुझे दहशतज़दा न करे।
35तब मैं अल्लाह से ख़ौफ़ खाए बग़ैर बोलता,
क्योंकि फ़ितरी तौर पर मैं ऐसा नहीं हूँ।

मुझे अपनी जान से घिन आती है

10 मुझे अपनी जान से घिन आती है। मैं
आज़ादी से आहो-ज़ारी करूँगा, खुले
तौर पर अपना दिली ग़म बयान करूँगा। 2मैं
अल्लाह से कहूँगा कि मुझे मुजरिम न ठहरा बल्कि
बता कि तेरा मुझ पर क्या इलज़ाम है। 3क्या तू
ज़ुल्म करके मुझे रद्द करने में ख़ुशी महसूस करता
है हालाँकि तेरे अपने ही हाथों ने मुझे बनाया?
साथ साथ तू बेदीनों के मनसूबों पर अपनी मंज़ूरी
का नूर चमकाता है। क्या यह तुझे अच्छा लगता
है? 4क्या तेरी आँखें इनसानी हैं? क्या तू सिर्फ़
इनसान की-सी नज़र से देखता है? 5क्या तेरे
दिन और साल फ़ानी इनसान जैसे महदूद हैं?
हरगिज़ नहीं! 6तो फिर क्या ज़रूरत है कि तू
मेरे क़ुसूर की तलाश और मेरे गुनाह की तहक़ीक़
करता रहे? 7तू तो जानता है कि मैं बेक़ुसूर हूँ
और कि तेरे हाथ से कोई बचा नहीं सकता।
8तेरे अपने हाथों ने मुझे तश्कील देकर बनाया।
और अब तूने मुड़कर मुझे तबाह कर दिया है।
9ज़रा इसका ख़याल रख कि तूने मुझे मिट्टी से
बनाया। अब तू मुझे दुबारा ख़ाक में तबदील कर
रहा है। 10तूने ख़ुद मुझे दूध की तरह उंडेलकर
पनीर की तरह जमने दिया। 11तू ही ने मुझे जिल्द
और गोश्त-पोस्त से मुलब्बस किया, हड्डियों और
नसों से तैयार किया। 12तू ही ने मुझे ज़िंदगी और
अपनी मेहरबानी से नवाज़ा, और तेरी देख-भाल
ने मेरी रूह को महफ़ूज़ रखा।
13लेकिन एक बात तूने अपने दिल में छुपाए
रखी, हाँ मुझे तेरा इरादा मालूम हो गया है। 14वह
यह है कि 'अगर अय्यूब गुनाह करे तो मैं उस की
पहरादारी करूँगा। मैं उसे उसके क़ुसूर से बरी नहीं
करूँगा।'
15अगर मैं क़ुसूरवार हूँ तो मुझ पर अफ़सोस!
और अगर मैं बेगुनाह भी हूँ ताहम मैं अपना सर
उठाने की जुर्रत नहीं करता, क्योंकि मैं शर्म खा
खाकर सेर हो गया हूँ। मुझे ख़ूब मुसीबत पिलाई
गई है। 16और अगर मैं खड़ा भी हो जाऊँ तो तू
शेरबबर की तरह मेरा शिकार करता और मुझ
पर दुबारा अपनी मोजिज़ाना क़ुदरत का इज़हार
करता है। 17तू मेरे ख़िलाफ़ नए गवाहों को खड़ा
करता और मुझ पर अपने ग़ज़ब में इज़ाफ़ा करता
है, तेरे लशकर सफ़-दर-सफ़ मुझ पर हमला करते
हैं। 18तू मुझे मेरी माँ के पेट से क्यों निकाल
लाया? बेहतर होता कि मैं उसी वक़्त मर जाता
और किसी को नज़र न आता। 19यों होता जैसा
मैं कभी ज़िंदा ही न था, मुझे सीधा माँ के पेट
से क़ब्र में पहुँचाया जाता। 20क्या मेरे दिन थोड़े
नहीं हैं? मुझे तनहा छोड़! मुझसे अपना मुँह
फेर ले ताकि मैं चंद एक लमहों के लिए ख़ुश
हो सकूँ, 21क्योंकि जल्द ही मुझे कूच करके वहाँ
जाना है जहाँ से कोई वापस नहीं आता, उस मुल्क
में जिसमें तारीकी और घने साये रहते हैं। 22वह
मुल्क अंधेरा ही अंधेरा और काला ही काला है,
उसमें घने साये और बेतरतीबी है। वहाँ रौशनी भी
अंधेरा ही है।"

ज़ूफ़र का जवाब : तौबा कर

11 फिर ज़ूफ़र नामाती ने जवाब देकर
कहा,
2"क्या इन तमाम बातों का जवाब नहीं देना
चाहिए? क्या यह आदमी अपनी ख़ाली बातों की
बिना पर ही रास्तबाज़ ठहरेगा? 3क्या तेरी बेमानी
बातें लोगों के मुँह यों बंद करेंगी कि तू आज़ादी से

लान-तान करता जाए और कोई तुझे शरमिंदा न
कर सके? 4अल्लाह से तू कहता है, 'मेरी तालीम
पाक है, और तेरी नज़र में मैं पाक-साफ़ हूँ।'
5काश अल्लाह ख़ुद तेरे साथ हमकलाम हो,
वह अपने होंटों को खोलकर तुझसे बात करे!
6काश वह तेरे लिए हिकमत के भेद खोले,
क्योंकि वह इनसान की समझ के नज़दीक
मोजिज़े से हैं। तब तू जान लेता कि अल्लाह तेरे
गुनाह का काफ़ी हिस्सा दरगुज़र कर रहा है।
7क्या तू अल्लाह का राज़ खोल सकता है?
क्या तू क़ादिरे-मुतलक़ के कामिल इल्म तक
पहुँच सकता है? 8वह तो आसमान से बुलंद है,
चुनाँचे तू क्या कर सकता है? वह पाताल से
गहरा है, चुनाँचे तू क्या जान सकता है? 9उस
की लंबाई ज़मीन से बड़ी और चौड़ाई समुंदर से
ज़्यादा है।
10अगर वह कहीं से गुज़रकर किसी को
गिरिफ़्तार करे या अदालत में उसका हिसाब करे
तो कौन उसे रोकेगा? 11क्योंकि वह फ़रेबदेह
आदमियों को जान लेता है, जब भी उसे बुराई
नज़र आए तो वह उस पर ख़ूब ध्यान देता है।
12अक़्ल से ख़ाली आदमी किस तरह समझ पा
सकता है? यह उतना ही नामुमकिन है जितना
यह कि जंगली गधे से इनसान पैदा हो।
13ऐ अय्यूब, अपना दिल पूरे ध्यान से अल्लाह
की तरफ़ मायल कर और अपने हाथ उस की
तरफ़ उठा! 14अगर तेरे हाथ गुनाह में मुलव्वस हों
तो उसे दूर कर और अपने ख़ैमे में बुराई बसने न दे!
15तब तू बेइलज़ाम हालत में अपना चेहरा उठा
सकेगा, तू मज़बूती से खड़ा रहेगा और डरेगा नहीं।
16तू अपना दुख-दर्द भूल जाएगा, और वह सिर्फ़
गुज़रे सैलाब की तरह याद रहेगा। 17तेरी ज़िंदगी
दोपहर की तरह चमकदार, तेरी तारीकी सुबह
की मानिंद रौशन हो जाएगी। 18चूँकि उम्मीद
होगी इसलिए तू महफ़ूज़ होगा और सलामती
से लेट जाएगा। 19तू आराम करेगा, और कोई
तुझे दहशतज़दा नहीं करेगा बल्कि बहुत लोग
तेरी नज़रे-इनायत हासिल करने की कोशिश
करेंगे। 20लेकिन बेदीनों की आँखें नाकाम हो
जाएँगी, और वह बच नहीं सकेंगे। उनकी उम्मीद
मायूसकुन होगी।"[a]

अय्यूब का जवाब : मैं मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ

12 अय्यूब ने जवाब देकर कहा,
2"लगता है कि तुम ही वाहिद
दानिशमंद हो, कि हिकमत तुम्हारे साथ ही मर
जाएगी। 3लेकिन मुझे समझ है, इस नाते से मैं
तुमसे अदना नहीं हूँ। वैसे भी कौन ऐसी बातें नहीं
जानता? 4मैं तो अपने दोस्तों के लिए मज़ाक़ का
निशाना बन गया हूँ, मैं जिसकी दुआएँ अल्लाह
सुनता था। हाँ, मैं जो बेगुनाह और बेइलज़ाम हूँ
दूसरों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ!
5जो सुकून से ज़िंदगी गुज़ारता है वह मुसीबतज़दा
को हक़ीर जानता है। वह कहता है, 'आओ, हम
उसे ठोकर मारें जिसके पाँव डगमगाने लगे हैं।'
6ग़ारतगरों के ख़ैमों में आरामो-सुकून है, और
अल्लाह को तैश दिलानेवाले हिफ़ाज़त से रहते
हैं, गो वह अल्लाह के हाथ में हैं।
7ताहम तुम कहते हो कि जानवरों से पूछ ले
तो वह तुझे सहीह बात सिखाएँगे। परिंदों से पता
कर तो वह तुझे दुरुस्त जवाब देंगे। 8ज़मीन से
बात कर तो वह तुझे तालीम देगी, बल्कि समुंदर
की मछलियाँ भी तुझे इसका मफ़हूम सुनाएँगी।
9इनमें से एक भी नहीं जो न जानता हो कि रब के
हाथ ने यह सब कुछ किया है। 10उसी के हाथ में
हर जानदार की जान, तमाम इनसानों का दम है।
11कान तो अलफ़ाज़ की यों जाँच-पड़ताल करता
है जिस तरह ज़बान खानों में इम्तियाज़ करती है।
12और हिकमत उनमें पाई जाती है जो उम्ररसीदा
हैं, समझ मुतअद्दिद दिन गुज़रने के बाद ही आती
है।

---

[a] या उनकी वाहिद उम्मीद इसमें होगी कि दम छोड़ें।

13हिकमत और क़ुदरत अल्लाह की है, वही
मसलहत और समझ का मालिक है। 14जो कुछ
वह ढा दे वह दुबारा तामीर नहीं होगा, जिसे वह
गिरिफ़्तार करे उसे आज़ाद नहीं किया जाएगा।
15जब वह पानी रोके तो काल पड़ता है, जब उसे
खुला छोड़े तो वह मुल्क में तबाही मचा देता है।
16उसके पास क़ुव्वत और दानाई है। भटकने
और भटकानेवाला दोनों ही उसके हाथ में हैं।
17मुशीरों को वह नंगे पाँव अपने साथ ले जाता
है, क़ाज़ियों को अहमक़ साबित करता है। 18वह
बादशाहों का पटका खोलकर उनकी कमरों में
रस्सा बाँधता है। 19इमामों को वह नंगे पाँव अपने
साथ ले जाता है, मज़बूती से खड़े आदमियों
को तबाह करता है। 20क़ाबिले-एतमाद अफ़राद
से वह बोलने की क़ाबिलियत और बुज़ुर्गों से
इम्तियाज़ करने की लियाक़त छीन लेता है।
21वह शुरफ़ा पर अपनी हिक़ारत का इज़हार
करके ज़ोरावरों का पटका खोल देता है।
22वह अंधेरे के पोशीदा भेद खोल देता और
गहरी तारीकी को रौशनी में लाता है। 23वह
क़ौमों को बड़ा भी बनाता और तबाह भी करता
है, उम्मतों को मुंतशिर भी करता और उनकी
क़ियादत भी करता है। 24वह मुल्क के राहनुमाओं
को अक़्ल से महरूम करके उन्हें ऐसे बयाबान में
आवारा फिरने देता है जहाँ रास्ता ही नहीं। 25तब
वह अंधेरे में रौशनी के बग़ैर टटोल टटोलकर घूमते
हैं। अल्लाह ही उन्हें नशे में धुत शराबियों की तरह
भटकने देता है।

13 यह सब कुछ मैंने अपनी आँखों से
देखा, अपने कानों से सुनकर समझ
लिया है। 2इल्म के लिहाज़ से मैं तुम्हारे बराबर
हूँ। इस नाते से मैं तुमसे कम नहीं हूँ। 3लेकिन
मैं क़ादिरे-मुतलक़ से ही बात करना चाहता हूँ,
अल्लाह के साथ ही मुबाहसा करने की आरज़ू
रखता हूँ।
4जहाँ तक तुम्हारा ताल्लुक़ है, तुम सब
फ़रेबदेह लेप लगानेवाले और बेकार डाक्टर हो।
5काश तुम सरासर ख़ामोश रहते! ऐसा करने
से तुम्हारी हिकमत कहीं ज़्यादा ज़ाहिर होती।
6मुबाहसे में ज़रा मेरा मौक़िफ़ सुनो, अदालत में
मेरे बयानात पर ग़ौर करो!
7क्या तुम अल्लाह की ख़ातिर कजरौ बातें पेश
करते हो, क्या उसी की ख़ातिर झूट बोलते हो?
8क्या तुम उस की जानिबदारी करना चाहते हो,
अल्लाह के हक़ में लड़ना चाहते हो? 9सोच लो,
अगर वह तुम्हारी जाँच करे तो क्या तुम्हारी बात
बनेगी? क्या तुम उसे यों धोका दे सकते हो जिस
तरह इनसान को धोका दिया जाता है?
10अगर तुम ख़ुफ़िया तौर पर भी जानिब-
दारी दिखाओ तो वह तुम्हें ज़रूर सख़्त सज़ा देगा।
11क्या उसका रोब तुम्हें ख़ौफ़ज़दा नहीं करेगा?
क्या तुम उससे सख़्त दहशत नहीं खाओगे?
12फिर जिन कहावतों की याद तुम दिलाते रहते
हो वह राख की अमसाल साबित होंगी, पता
चलेगा कि तुम्हारी बातें मिट्टी के अलफ़ाज़ हैं।
13ख़ामोश होकर मुझसे बाज़ आओ! जो कुछ
भी मेरे साथ हो जाए, मैं बात करना चाहता हूँ।
14मैं अपने आपको ख़तरे में डालने के लिए तैयार
हूँ, मैं अपनी जान पर खेलूँगा। 15शायद वह मुझे
मार डाले। कोई बात नहीं, क्योंकि मेरी उम्मीद
जाती रही है। जो कुछ भी हो में उसी के सामने
अपनी राहों का दिफ़ा करूँगा। 16और इसमें मैं
पनाह लेता हूँ कि बेदीन उसके हुज़ूर आने की
जुर्रत नहीं करता।
17ध्यान से मेरे अलफ़ाज़ सुनो, अपने कान मेरे
बयानात पर धरो। 18तुम्हें पता चलेगा कि मैंने
एहतियात और तरतीब से अपना मामला तैयार
किया है। मुझे साफ़ मालूम है कि मैं हक़ पर हूँ!
19अगर कोई मुझे मुजरिम साबित कर सके तो मैं
चुप हो जाऊँगा, दम छोड़ने तक ख़ामोश रहूँगा।

अय्यूब की मायूसी में दुआ

20ऐ अल्लाह, मेरी सिर्फ़ दो दरख़ास्तें मंज़ूर
कर ताकि मुझे तुझसे छुप जाने की ज़रूरत न हो।
21पहले, अपना हाथ मुझसे दूर कर ताकि तेरा
ख़ौफ़ मुझे दहशतज़दा न करे। 22दूसरे, इसके

बाद मुझे बुला ताकि मैं जवाब दूँ, या मुझे पहले
बोलने दे और तू ही इसका जवाब दे।
23मुझसे कितने गुनाह और ग़लतियाँ हुई हैं?
मुझ पर मेरा जुर्म और मेरा गुनाह ज़ाहिर कर!
24तू अपना चेहरा मुझसे छुपाए क्यों रखता है?
तू मुझे क्यों अपना दुश्मन समझता है? 25क्या
तू हवा के झोंकों के उड़ाए हुए पत्ते को दहशत
खिलाना चाहता, ख़ुश्क भूसे का ताक़्क़ुब करना
चाहता है?
26यह तेरा ही फ़ैसला है कि मैं तलख़ तजरबों
से गुज़रूँ, तेरी ही मरज़ी है कि मैं अपनी जवानी के
गुनाहों की सज़ा पाऊँ।[a] 27तू मेरे पाँवों को काठ
में ठोंककर मेरी तमाम राहों की पहरादारी करता
है। तू मेरे हर एक नक़्शे-क़दम पर ध्यान देता है,
28गो मैं मै की घिसी-फटी मशक और कीड़ों का
ख़राब किया हुआ लिबास हूँ।

14 औरत से पैदा हुआ इनसान चंद एक
दिन ज़िंदा रहता है, और उस की
ज़िंदगी बेचैनी से भरी रहती है। 2फूल की तरह
वह चंद लमहों के लिए फूट निकलता, फिर मुरझा
जाता है। साये की तरह वह थोड़ी देर के बाद
ओझल हो जाता और क़ायम नहीं रहता। 3क्या
तू वाक़ई एक ऐसी मख़लूक़ का इतने ग़ौर से
मुआयना करना चाहता है? मैं कौन हूँ कि तू मुझे
पेशी के लिए अपने हुज़ूर लाए?
4कौन नापाक चीज़ को पाक-साफ़ कर सकता
है? कोई नहीं! 5इनसान की उम्र तो मुक़र्रर हुई है,
उसके महीनों की तादाद तुझे मालूम है, क्योंकि
तू ही ने उसके दिनों की वह हद बाँधी है जिससे
आगे वह बढ़ नहीं सकता। 6चुनाँचे अपनी निगाह
उससे फेर ले और उसे छोड़ दे ताकि वह मज़दूर
की तरह अपने थोड़े दिनों से कुछ मज़ा ले सके।
7अगर दरख़्त को काटा जाए तो उसे थोड़ी-
बहुत उम्मीद बाक़ी रहती है, क्योंकि ऐन मुमकिन
है कि मुढ से कोंपलें फूट निकलें और उस की नई
शाख़ें उगती जाएँ। 8बेशक उस की जड़ें पुरानी
हो जाएँ और उसका मुढ मिट्टी में ख़त्म होने लगे,
9लेकिन पानी की ख़ुशबू सूँघते ही वह कोंपलें
निकालने लगेगा, और पनीरी की-सी टहनियाँ
उससे फूटने लगेंगी।
10लेकिन इनसान फ़रक़ है। मरते वक़्त उस
की हर तरह की ताक़त जाती रहती है, दम छोड़ते
वक़्त उसका नामो-निशान तक नहीं रहता। 11वह
उस झील की मानिंद है जिसका पानी ओझल हो
जाए, उस नदी की मानिंद जो सुकड़कर ख़ुश्क
हो जाए। 12वफ़ात पानेवाले का यही हाल है।
वह लेट जाता और कभी नहीं उठेगा। जब तक
आसमान क़ायम है न वह जाग उठेगा, न उसे
जगाया जाएगा।
13काश तू मुझे पाताल में छुपा देता, मुझे वहाँ
उस वक़्त तक पोशीदा रखता जब तक तेरा क़हर
ठंडा न हो जाता! काश तू एक वक़्त मुक़र्रर
करे जब तू मेरा दुबारा ख़याल करेगा। 14(क्योंकि
अगर इनसान मर जाए तो क्या वह दुबारा ज़िंदा
हो जाएगा?) फिर मैं अपनी सख़्त ख़िदमत
के तमाम दिन बरदाश्त करता, उस वक़्त तक
इंतज़ार करता जब तक मेरी सबुकदोशी न हो
जाती। 15तब तू मुझे आवाज़ देता और मैं जवाब
देता, तू अपने हाथों के काम का आरज़ूमंद होता।
16उस वक़्त भी तू मेरे हर क़दम का शुमार करता,
लेकिन न सिर्फ़ इस मक़सद से कि मेरे गुनाहों पर
ध्यान दे। 17तू मेरे जरायम थैले में बाँधकर उस
पर मुहर लगा देता, मेरी हर ग़लती को ढाँक देता।
18लेकिन अफ़सोस! जिस तरह पहाड़ गिरकर
चूर चूर हो जाता और चटान खिसक जाती है,
19जिस तरह बहता पानी पत्थर को रगड़ रगड़कर
ख़त्म करता और सैलाब मिट्टी को बहा ले जाता
है उसी तरह तू इनसान की उम्मीद ख़ाक में मिला
देता है। 20तू मुकम्मल तौर पर उस पर ग़ालिब आ
जाता तो वह कूच कर जाता है, तू उसका चेहरा
बिगाड़कर उसे फ़ारिग़ कर देता है। 21अगर उसके
बच्चों को सरफ़राज़ किया जाए तो उसे पता नहीं

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : मीरास में पाऊँ।

चलता, अगर उन्हें पस्त किया जाए तो यह भी
उसके इल्म में नहीं आता। 22वह सिर्फ़ अपने ही
जिस्म का दर्द महसूस करता और अपने लिए ही
मातम करता है।”

इलीफ़ज़ का जवाब : अय्यूब कुफ़र बक रहा है

15 तब इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब देकर
कहा,
2“क्या दानिशमंद को जवाब में बेहूदा
ख़यालात पेश करने चाहिएँ? क्या उसे अपना
पेट तपती मशरिक़ी हवा से भरना चाहिए? 3क्या
मुनासिब है कि वह फ़ज़ूल बहस-मुबाहसा करे,
ऐसी बातें करे जो बेफ़ायदा हैं? हरगिज़ नहीं!
4लेकिन तेरा रवैया इससे कहीं बुरा है। तू
अल्लाह का ख़ौफ़ छोड़कर उसके हुज़ूर ग़ौरो-
ख़ौज़ करने का फ़र्ज़ हक़ीर जानता है। 5तेरा क़ुसूर
ही तेरे मुँह को ऐसी बातें करने की तहरीक दे
रहा है, इसी लिए तूने चालाकों की ज़बान अपना
ली है। 6मुझे तुझे क़ुसूरवार ठहराने की ज़रूरत
ही नहीं, क्योंकि तेरा अपना ही मुँह तुझे मुजरिम
ठहराता है, तेरे अपने ही होंट तेरे ख़िलाफ़ गवाही
देते हैं।
7क्या तू सबसे पहले पैदा हुआ इनसान है?
क्या तूने पहाड़ों से पहले ही जन्म लिया? 8जब
अल्लाह की मजलिस मुनअक़िद हो जाए तो क्या
तू भी उनकी बातें सुनता है? क्या सिर्फ़ तुझे ही
हिकमत हासिल है? 9तू क्या जानता है जो हम
नहीं जानते? तुझे किस बात की समझ आई है
जिसका इल्म हम नहीं रखते? 10हमारे दरमियान
भी उम्ररसीदा बुज़ुर्ग हैं, ऐसे आदमी जो तेरे वालिद
से भी बूढ़े हैं।
11ऐ अय्यूब, क्या तेरी नज़र में अल्लाह की
तसल्ली देनेवाली बातों की कोई अहमियत नहीं?
क्या तू इसकी क़दर नहीं कर सकता कि नरमी
से तुझसे बात की जा रही है? 12तेरे दिल के
जज़बात तुझे यों उड़ाकर क्यों ले जाएँ, तेरी आँखें
क्यों इतनी चमक उठें 13कि आख़िरकार तू अपना
ग़ुस्सा अल्लाह पर उतारकर ऐसी बातें अपने मुँह
से उगल दे?
14भला इनसान क्या है कि पाक-साफ़ ठहरे?
औरत से पैदा हुई मख़लूक़ क्या है कि रास्तबाज़
साबित हो? कुछ भी नहीं! 15अल्लाह तो
अपने मुक़द्दस ख़ादिमों पर भी भरोसा नहीं रखता,
बल्कि आसमान भी उस की नज़र में पाक नहीं
है। 16तो फिर वह इनसान पर भरोसा क्यों रखे
जो क़ाबिले-घिन और बिगड़ा हुआ है, जो बुराई
को पानी की तरह पी लेता है।
17मेरी बात सुन, मैं तुझे कुछ सुनाना चाहता
हूँ। मैं तुझे वह कुछ बयान करूँगा जो मुझ पर
ज़ाहिर हुआ है, 18वह कुछ जो दानिशमंदों ने पेश
किया और जो उन्हें अपने बापदादा से मिला था।
उनसे कुछ छुपाया नहीं गया था। 19(बापदादा से
मुराद वह वाहिद लोग हैं जिन्हें उस वक़्त मुल्क
दिया गया जब कोई भी परदेसी उनमें नहीं फिरता
था)।
20वह कहते थे, बेदीन अपने तमाम दिन डर के
मारे तड़पता रहता, और जितने भी साल ज़ालिम
के लिए महफ़ूज़ रखे गए हैं उतने ही साल वह
पेचो-ताब खाता रहता है। 21दहशतनाक आवाज़ें
उसके कानों में गूँजती रहती हैं, और अमनो-
अमान के वक़्त ही तबाही मचानेवाला उस पर
टूट पड़ता है। 22उसे अंधेरे से बचने की उम्मीद
ही नहीं, क्योंकि उसे तलवार के लिए तैयार रखा
गया है।
23वह मारा मारा फिरता है, आख़िरकार वह
गिद्धों की ख़ोराक बनेगा। उसे ख़ुद इल्म है
कि तारीकी का दिन क़रीब ही है। 24तंगी
और मुसीबत उसे दहशत खिलाती, हमलाआवर
बादशाह की तरह उस पर ग़ालिब आती हैं।
25और वजह क्या है? यह कि उसने अपना हाथ
अल्लाह के ख़िलाफ़ उठाया, क़ादिरे-मुतलक़ के
सामने तकब्बुर दिखाया है। 26अपनी मोटी और
मज़बूत ढाल की पनाह में अकड़कर वह तेज़ी से
अल्लाह पर हमला करता है।

27गो इस वक़्त उसका चेहरा चरबी से चमकता
और उस की कमर मोटी है, 28लेकिन आइंदा वह
तबाहशुदा शहरों में बसेगा, ऐसे मकानों में जो
सबके छोड़े हुए हैं और जो जल्द ही पत्थर के
ढेर बन जाएंगे। 29वह अमीर नहीं होगा, उस की
दौलत क़ायम नहीं रहेगी, उस की जायदाद मुल्क
में फैली नहीं रहेगी।

30वह तारीकी से नहीं बचेगा। शोला उस की
कोंपलों को मुरझाने देगा, और अल्लाह उसे अपने
मुँह की एक फूँक से उड़ाकर तबाह कर देगा।
31वह धोके पर भरोसा न करे, वरना वह भटक
जाएगा और उसका अज्र धोका ही होगा। 32वक़्त
से पहले ही उसे इसका पूरा मुआवज़ा मिलेगा,
उस की कोंपल कभी नहीं फले-फूलेगी।

33वह अंगूर की उस बेल की मानिंद होगा
जिसका फल कच्ची हालत में ही गिर जाए, ज़ैतून
के उस दरख़्त की मानिंद जिसके तमाम फूल झड़
जाएँ। 34क्योंकि बेदीनों का जत्था बंजर रहेगा,
और आग रिश्वतख़ोरों के ख़ैमों को भस्म करेगी।
35उनके पाँव दुख-दर्द से भारी हो जाते, और वह
बुराई को जन्म देते हैं। उनका पेट धोका ही पैदा
करता है।”

अय्यूब का जवाब : मैं बेगुनाह हूँ

16 अय्यूब ने जवाब देकर कहा,
2“इस तरह की मैंने बहुत-सी बातें
सुनी हैं, तुम्हारी तसल्ली सिर्फ़ दुख-दर्द का बाइस
है। 3क्या तुम्हारी लफ़्फ़ाज़ी कभी ख़त्म नहीं
होगी? तुझे क्या चीज़ बेचैन कर रही है कि तू मुझे
जवाब देने पर मजबूर है? 4अगर मैं तुम्हारी जगह
होता तो मैं भी तुम्हारी जैसी बातें कर सकता।
फिर मैं भी तुम्हारे ख़िलाफ़ पुरअलफ़ाज़ तक़रीरें
पेश करके तौबा तौबा कह सकता। 5लेकिन मैं
ऐसा न करता। मैं तुम्हें अपनी बातों से तक़वियत
देता, अफ़सोस के इज़हार से तुम्हें तसकीन देता।
6लेकिन मेरे साथ ऐसा सुलूक नहीं हो रहा। अगर
मैं बोलूँ तो मुझे सुकून नहीं मिलता, अगर चुप रहूँ
तो मेरा दर्द दूर नहीं होता।

7लेकिन अब अल्लाह ने मुझे थका दिया है,
उसने मेरे पूरे घराने को तबाह कर दिया है।
8उसने मुझे सुकड़ने दिया है, और यह बात मेरे
ख़िलाफ़ गवाह बन गई है। मेरी दुबली-पतली
हालत खड़ी होकर मेरे ख़िलाफ़ गवाही देती है।
9अल्लाह का ग़ज़ब मुझे फाड़ रहा है, वह मेरा
दुश्मन और मेरा मुख़ालिफ़ बन गया है जो मेरे
ख़िलाफ़ दाँत पीस पीसकर मुझे अपनी आँखों से
छेद रहा है।[a] 10लोग गला फाड़कर मेरा मज़ाक़
उड़ाते, मेरे गाल पर थप्पड़ मारकर मेरी बेइज़्ज़ती
करते हैं। सबके सब मेरे ख़िलाफ़ मुत्तहिद हो
गए हैं। 11अल्लाह ने मुझे शरीरों के हवाले कर
दिया, मुझे बेदीनों के चंगुल में फँसा दिया है।
12मैं सुकून से ज़िंदगी गुज़ार रहा था कि उसने
मुझे पाश पाश कर दिया, मुझे गले से पकड़कर
ज़मीन पर पटख़ दिया। उसने मुझे अपना निशाना
बना लिया, 13फिर उसके तीरअंदाज़ों ने मुझे घेर
लिया। उसने बेरहमी से मेरे गुरदों को चीर डाला,
मेरा पित ज़मीन पर उंडेल दिया। 14बार बार वह
मेरी क़िलाबंदी में रख़ना डालता रहा, पहलवान
की तरह मुझ पर हमला करता रहा।

15मैंने टाँके लगाकर अपनी जिल्द के साथ टाट
का लिबास जोड़ लिया है, अपनी शानो-शौकत
ख़ाक में मिलाई है। 16रो रोकर मेरा चेहरा सूज
गया है, मेरी पलकों पर घना अंधेरा छा गया है।
17लेकिन वजह क्या है? मेरे हाथ तो ज़ुल्म से
बरी रहे, मेरी दुआ पाक-साफ़ रही है।

18ऐ ज़मीन, मेरे ख़ून को मत ढाँपना! मेरी
आहो-ज़ारी कभी आराम की जगह न पाए बल्कि
गूँजती रहे। 19अब भी मेरा गवाह आसमान पर
है, मेरे हक़ में गवाही देनेवाला बुलंदियों पर है।
20मेरी आहो-ज़ारी मेरा तरजुमान है, मैं बेख़ाबी
से अल्लाह के इंतज़ार में रहता हूँ। 21मेरी आहें
अल्लाह के सामने फ़ानी इनसान के हक़ में बात

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : अपनी आँखें मेरे ख़िलाफ़ तेज़ करता है।

करेंगी, उस तरह जिस तरह कोई अपने दोस्त के
हक़ में बात करे। 22क्योंकि थोड़े ही सालों के बाद
मैं उस रास्ते पर रवाना हो जाऊँगा जिससे वापस
नहीं आऊँगा।

अल्लाह से इल्तिजा

17 मेरी रूह शिकस्ता हो गई, मेरे दिन
बुझ गए हैं। क़ब्रिस्तान ही मेरे इंतज़ार
में है। 2मेरे चारों तरफ़ मज़ाक़ ही मज़ाक़ सुनाई
देता, मेरी आँखें लोगों का हटधर्म रवैया देखते
देखते थक गई हैं। 3ऐ अल्लाह, मेरी ज़मानत
मेरे अपने हाथों से क़बूल फ़रमा, क्योंकि और
कोई नहीं जो उसे दे। 4उनके ज़हनों को तूने बंद
कर दिया, इसलिए तो उनसे इज़्ज़त नहीं पाएगा।
5वह उस आदमी की मानिंद हैं जो अपने दोस्तों
को ज़ियाफ़त की दावत दे, हालाँकि उसके अपने
बच्चे भूके मर रहे हों।

6अल्लाह ने मुझे मज़ाक़ का यों निशाना बनाया
है कि मैं क़ौमों में इबरतअंगेज़ मिसाल बन गया
हूँ। मुझे देखते ही लोग मेरे मुँह पर थूकते हैं। 7मेरी
आँखें ग़म खा खाकर धुँधला गई हैं, मेरे आज़ा
यहाँ तक सूख गए कि साया ही रह गया है। 8यह
देखकर सीधी राह पर चलनेवालों के रोंगटे खड़े
हो जाते और बेगुनाह बेदीनों के ख़िलाफ़ मुश्तइल
हो जाते हैं। 9रास्तबाज़ अपनी राह पर क़ायम
रहते, और जिनके हाथ पाक हैं वह तक़वियत पाते
हैं। 10लेकिन जहाँ तक तुम सबका ताल्लुक़ है,
आओ दुबारा मुझ पर हमला करो! मुझे तुममें
एक भी दाना आदमी नहीं मिलेगा।

11मेरे दिन गुज़र गए हैं। मेरे वह मनसूबे और
दिल की आरज़ुएँ ख़ाक में मिल गई हैं 12जिनसे
रात दिन में बदल गई और रौशनी अंधेरे को दूर
करके क़रीब आई थी। 13अगर मैं सिर्फ़ इतनी ही
उम्मीद रखूँ कि पाताल मेरा घर होगा तो यह कैसी
उम्मीद होगी? अगर मैं अपना बिस्तर तारीकी में
बिछाकर 14क़ब्र से कहूँ, 'तू मेरा बाप है' और
कीड़े से, 'ऐ मेरी अम्मी, ऐ मेरी बहन' 15तो फिर
यह कैसी उम्मीद होगी? कौन कहेगा, 'मुझे तेरे
लिए उम्मीद नज़र आती है'? 16तब मेरी उम्मीद
मेरे साथ पाताल में उतरेगी, और हम मिलकर
ख़ाक में धँस जाएंगे।"

बिलदद : अल्लाह बेदीनों को सज़ा देता है

18 बिलदद सूख़ी ने जवाब देकर कहा,
2"तू कब तक ऐसी बातें करेगा?
इनसे बाज़ आकर होश में आ! तब ही हम सहीह
बात कर सकेंगे। 3तू हमें डंगर जैसे अहमक़ क्यों
समझता है? 4गो तू आग-बगूला होकर अपने
आपको फाड़ रहा है, लेकिन क्या तेरे बाइस
ज़मीन को वीरान होना चाहिए और चटानों को
अपनी जगह से खिसकना चाहिए? हरगिज़ नहीं!

5यक़ीनन बेदीन का चराग़ बुझ जाएगा, उस
की आग का शोला आइंदा नहीं चमकेगा। 6उसके
ख़ैमे में रौशनी अंधेरा हो जाएगी, उसके ऊपर
की शमा बुझ जाएगी। 7उसके लंबे क़दम रुक
रुककर आगे बढ़ेंगे, और उसका अपना मनसूबा
उसे पटख़ देगा।

8उसके अपने पाँव उसे जाल में फँसा देते हैं,
वह दाम पर ही चलता-फिरता है। 9फंदा उस की
एड़ी पकड़ लेता, कमंद उसे जकड़ लेती है। 10उसे
फँसाने का रस्सा ज़मीन में छुपा हुआ है, रास्ते में
फंदा बिछा है।

11वह ऐसी चीज़ों से घिरा रहता है जो उसे
क़दम बक़दम दहशत खिलाती और उस की नाक
में दम करती हैं। 12आफ़त उसे हड़प कर लेना
चाहती है, तबाही तैयार खड़ी है ताकि उसे गिरते
वक़्त ही पकड़ ले। 13बीमारी उस की जिल्द को
खा जाती, मौत का पहलौठा उसके आज़ा को
निगल लेता है। 14उसे उसके ख़ैमे की हिफ़ाज़त
से छीन लिया जाता और घसीटकर दहशतों के
बादशाह के सामने लाया जाता है।

15उसके ख़ैमे में आग बसती, उसके घर पर
गंधक बिखर जाती है। 16नीचे उस की जड़ें सूख
जाती, ऊपर उस की शाख़ें मुरझा जाती हैं।
17ज़मीन पर से उस की याद मिट जाती है, कहीं
भी उसका नामो-निशान नहीं रहता।

18उसे रौशनी से तारीकी में धकेला जाता,
दुनिया से भगाकर ख़ारिज किया जाता है।
19क़ौम में उस की न औलाद न नसल रहेगी, जहाँ
पहले रहता था वहाँ कोई नहीं बचेगा। 20उसका
अंजाम देखकर मग़रिब के बाशिंदों के रोंगटे खड़े
हो जाते और मशरिक़ के बाशिंदे दहशतज़दा हो
जाते हैं। 21यही है बेदीन के घर का अंजाम, उसी
के मक़ाम का जो अल्लाह को नहीं जानता।”

अय्यूब : मैं जानता हूँ कि मेरा नजातदहिंदा ज़िंदा है

19 तब अय्यूब ने जवाब में कहा,
2“तुम कब तक मुझ पर तशद्दुद
करना चाहते हो, कब तक मुझे अलफ़ाज़ से टुकड़े
टुकड़े करना चाहते हो? 3अब तुमने दस बार
मुझे मलामत की है, तुमने शर्म किए बग़ैर मेरे
साथ बदसुलूकी की है। 4अगर यह बात सहीह
भी हो कि मैं ग़लत राह पर आ गया हूँ तो मुझे
ही इसका नतीजा भुगतना है। 5लेकिन चूँकि तुम
मुझ पर अपनी सबक़त दिखाना चाहते और मेरी
रुसवाई मुझे डाँटने के लिए इस्तेमाल कर रहे हो
6तो फिर जान लो, अल्लाह ने ख़ुद मुझे ग़लत
राह पर लाकर अपने दाम से घेर लिया है।
7गो मैं चीख़कर कहूँ, ‘मुझ पर ज़ुल्म हो रहा है,’
लेकिन जवाब कोई नहीं मिलता। गो मैं मदद के
लिए पुकारूँ, लेकिन इनसाफ़ नहीं पाता। 8उसने
मेरे रास्ते में ऐसी दीवार खड़ी कर दी कि मैं गुज़र
नहीं सकता, उसने मेरी राहों पर अंधेरा ही छा
जाने दिया है। 9उसने मेरी इज़्ज़त मुझसे छीनकर
मेरे सर से ताज उतार दिया है। 10चारों तरफ़
से उसने मुझे ढा दिया तो मैं तबाह हुआ। उसने
मेरी उम्मीद को दरख़्त की तरह जड़ से उखाड़
दिया है। 11उसका क़हर मेरे ख़िलाफ़ भड़क उठा
है, और वह मुझे अपने दुश्मनों में शुमार करता
है। 12उसके दस्ते मिलकर मुझ पर हमला करने
आए हैं। उन्होंने मेरी फ़सील के साथ मिट्टी का ढेर
लगाया है ताकि उसमें रख़ना डालें। उन्होंने चारों
तरफ़ से मेरे ख़ैमे का मुहासरा किया है।
13मेरे भाइयों को उसने मुझसे दूर कर दिया,
और मेरे जाननेवालों ने मेरा हुक़्क़ा-पानी बंद
कर दिया है। 14मेरे रिश्तेदारों ने मुझे तर्क कर
दिया, मेरे क़रीबी दोस्त मुझे भूल गए हैं। 15मेरे
दामनगीर और नौकरानियाँ मुझे अजनबी समझते
हैं। उनकी नज़र में मैं अजनबी हूँ। 16मैं अपने
नौकर को बुलाता हूँ तो वह जवाब नहीं देता। गो
मैं अपने मुँह से उससे इल्तिजा करूँ तो भी वह
नहीं आता।
17मेरी बीवी मेरी जान से घिन खाती है, मेरे
सगे भाई मुझे मकरूह समझते हैं। 18यहाँ तक कि
छोटे बच्चे भी मुझे हक़ीर जानते हैं। अगर मैं उठने
की कोशिश करूँ तो वह अपना मुँह दूसरी तरफ़
फेर लेते हैं। 19मेरे दिली दोस्त मुझे कराहियत
की निगाह से देखते हैं, जो मुझे प्यारे थे वह मेरे
मुख़ालिफ़ हो गए हैं। 20मेरी जिल्द सुकड़कर मेरी
हड्डियों के साथ जा लगी है। मैं मौत से बाल बाल
बच गया हूँ।[a]
21मेरे दोस्तो, मुझ पर तरस खाओ, मुझ पर
तरस खाओ। क्योंकि अल्लाह ही के हाथ ने मुझे
मारा है। 22तुम क्यों अल्लाह की तरह मेरे पीछे
पड़ गए हो, क्यों मेरा गोश्त खा खाकर सेर नहीं
होते?
23काश मेरी बातें क़लमबंद हो जाएँ! काश वह
यादगार पर कंदा की जाएँ, 24लोहे की छैनी और
सीसे से हमेशा के लिए पत्थर में नक़्श की जाएँ!
25लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरा छुड़ानेवाला ज़िंदा
है और आख़िरकार मेरे हक़ में ज़मीन पर खड़ा
हो जाएगा, 26गो मेरी जिल्द यों उतारी भी गई
हो। लेकिन मेरी आरज़ू है कि जिस्म में होते हुए
अल्लाह को देखूँ, 27कि मैं ख़ुद ही उसे देखूँ, न
कि अजनबी बल्कि अपनी ही आँखों से उस पर
निगाह करूँ। इस आरज़ू की शिद्दत से मेरा दिल
तबाह हो रहा है।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : ‘मेरे दाँतों की जिल्द ही बच गई है।’
मतलब मुबहम-सा है।

28तुम कहते हो, 'हम कितनी सख़्ती से अय्यूब
का ताक़्क़ुब करेंगे' और 'मसले की जड़ तो उसी
में पिनहाँ है।' 29लेकिन तुम्हें ख़ुद तलवार से डरना
चाहिए, क्योंकि तुम्हारा ग़ुस्सा तलवार की सज़ा
के लायक़ है, तुम्हें जानना चाहिए कि अदालत
आनेवाली है।"

ज़ूफ़र : ग़लत काम की मुंसिफ़ाना सज़ा दी जाएगी

20 तब ज़ूफ़र नामाती ने जवाब देकर
कहा,

2"यक़ीनन मेरे मुज़तरिब ख़यालात और वह
एहसासात जो मेरे अंदर से उभर रहे हैं मुझे जवाब
देने पर मजबूर कर रहे हैं। 3मुझे ऐसी नसीहत
सुननी पड़ी जो मेरी बेइज़्ज़ती का बाइस थी,
लेकिन मेरी समझ मुझे जवाब देने की तहरीक
दे रही है।

4क्या तुझे मालूम नहीं कि क़दीम ज़माने से
यानी जब से इनसान को ज़मीन पर रखा गया
5शरीर का फ़तहमंद नारा आरिज़ी और बेदीन की
ख़ुशी पल-भर की साबित हुई है? 6गो उसका
क़दो-क़ामत आसमान तक पहुँचे और उसका सर
बादलों को छुए 7ताहम वह अपने फ़ुज़्ले की तरह
अबद तक तबाह हो जाएगा। जिन्होंने उसे पहले
देखा था वह पूछेंगे, 'अब वह कहाँ है?'

8वह ख़ाब की तरह उड़ जाता और आइंदा कहीं
नहीं पाया जाएगा, उसे रात की रोया की तरह
भुला दिया जाता है। 9जिस आँख ने उसे देखा वह
उसे आइंदा कभी नहीं देखेगी। उसका घर दुबारा
उसका मुशाहदा नहीं करेगा। 10उस की औलाद
को ग़रीबों से भीक माँगनी पड़ेगी, उसके अपने
हाथों को दौलत वापस देनी पड़ेगी। 11जवानी की
जिस ताक़त से उस की हड्डियाँ भरी हैं वह उसके
साथ ही ख़ाक में मिल जाएगी।

12बुराई बेदीन के मुँह में मीठी है। वह उसे
अपनी ज़बान तले छुपाए रखता, 13उसे महफ़ूज़
रखकर जाने नहीं देता। 14लेकिन उस की ख़ुराक
पेट में आकर ख़राब हो जाती बल्कि साँप का
ज़हर बन जाती है। 15जो दौलत उसने निगल ली
उसे वह उगल देगा, अल्लाह ही यह चीज़ें उसके
पेट से ख़ारिज करेगा। 16उसने साँप का ज़हर
चूस लिया, और साँप ही की ज़बान उसे मार
डालेगी। 17वह नदियों से लुत्फ़अंदोज़ नहीं होगा,
शहद और बालाई की नहरों से मज़ा नहीं लेगा।
18जो कुछ उसने हासिल किया उसे वह हज़म
नहीं करेगा बल्कि सब कुछ वापस करेगा। जो
दौलत उसने अपने कारोबार से कमाई उससे वह
लुत्फ़ नहीं उठाएगा। 19क्योंकि उसने पस्तहालों
पर ज़ुल्म करके उन्हें तर्क किया है, उसने ऐसे घरों
को छीन लिया है जिन्हें उसने तामीर नहीं किया
था। 20उसने पेट में कभी सुकून महसूस नहीं
किया बल्कि जो कुछ भी चाहता था उसे बचने
नहीं दिया। 21जब वह खाना खाता है तो कुछ नहीं
बचता, इसलिए उस की ख़ुशहाली क़ायम नहीं
रहेगी। 22ज्योंही उसे कसरत की चीज़ें हासिल
होंगी वह मुसीबत में फँस जाएगा। तब दुख-दर्द
का पूरा ज़ोर उस पर आएगा। 23काश अल्लाह
बेदीन का पेट भरकर अपना भड़कता क़हर उस
पर नाज़िल करे, काश वह अपना ग़ज़ब उस पर
बरसाए।

24गो वह लोहे के हथियार से भाग जाए,
लेकिन पीतल का तीर उसे चीर डालेगा। 25जब
वह उसे अपनी पीठ से निकाले तो तीर की नोक
उसके कलेजे में से निकलेगी। उसे दहशतनाक
वाक़ियात पेश आएँगे। 26गहरी तारीकी उसके
ख़ज़ानों की ताक में बैठी रहेगी। ऐसी आग
जो इनसानों ने नहीं लगाई उसे भस्म करेगी।
उसके ख़ैमे के जितने लोग बच निकले उन्हें वह
खा जाएगी। 27आसमान उसे मुजरिम ठहराएगा,
ज़मीन उसके ख़िलाफ़ गवाही देने के लिए खड़ी
हो जाएगी। 28सैलाब उसका घर उड़ा ले जाएगा,
ग़ज़ब के दिन शिद्दत से बहता हुआ पानी उस पर
से गुज़रेगा। 29यह है वह अज्र जो अल्लाह बेदीनों
को देगा, वह विरासत जिसे अल्लाह ने उनके लिए
मुक़र्रर की है।"

अय्यूब : बहुत दफ़ा बेदीनों को सज़ा नहीं मिलती

21 फिर अय्यूब ने जवाब में कहा,
2“ध्यान से मेरे अलफ़ाज़ सुनो! यही
करने से मुझे तसल्ली दो! 3जब तक मैं अपनी
बात पेश न करूँ मुझे बरदाश्त करो, इसके बाद
अगर चाहो तो मेरा मज़ाक़ उड़ाओ। 4क्या मैं
किसी इनसान से एहतजाज कर रहा हूँ? हरगिज़
नहीं! तो फिर क्या अजब कि मेरी रूह इतनी तंग
आ गई है। 5मुझ पर नज़र डालो तो तुम्हारे रोंगटे
खड़े हो जाएंगे और तुम हैरानी से अपना हाथ मुँह
पर रखोगे।

6जब कभी मुझे वह ख़याल याद आता है जो मैं
पेश करना चाहता हूँ तो मैं दहशतज़दा हो जाता
हूँ, मेरे जिस्म पर थरथराहट तारी हो जाती है।
7ख़याल यह है कि बेदीन क्यों जीते रहते हैं? न
सिर्फ़ वह उम्ररसीदा हो जाते बल्कि उनकी ताक़त
बढ़ती रहती है।

8उनके बच्चे उनके सामने क़ायम हो जाते,
उनकी औलाद उनकी आँखों के सामने मज़बूत हो
जाती है। 9उनके घर महफ़ूज़ हैं। न कोई चीज़ उन्हें
डराती, न अल्लाह की सज़ा उन पर नाज़िल होती
है। 10उनका साँड नसल बढ़ाने में कभी नाकाम
नहीं होता, उनकी गाय वक़्त पर जन्म देती, और
उसके बच्चे कभी ज़ाया नहीं होते।

11वह अपने बच्चों को बाहर खेलने के लिए
भेजते हैं तो वह भेड़-बकरियों के रेवड़ की
तरह घर से निकलते हैं। उनके लड़के कूदते
फाँदते नज़र आते हैं। 12वह दफ़ और सरोद
बजाकर गीत गाते और बाँसरी की सुरीली आवाज़
निकालकर अपना दिल बहलाते हैं। 13उनकी
ज़िंदगी ख़ुशहाल रहती है, वह हर दिन से पूरा
लुत्फ़ उठाते और आख़िरकार बड़े सुकून से
पाताल में उतर जाते हैं।

14और यह वह लोग हैं जो अल्लाह से कहते
हैं, ‘हमसे दूर हो जा, हम तेरी राहों को जानना
नहीं चाहते। 15क़ादिरे-मुतलक़ कौन है कि हम
उस की ख़िदमत करें? उससे दुआ करने से हमें
क्या फ़ायदा होगा?’ 16क्या उनकी ख़ुशहाली
उनके अपने हाथ में नहीं होती? क्या बेदीनों के
मनसूबे अल्लाह से दूर नहीं रहते?

17ऐसा लगता है कि बेदीनों का चराग़ कभी
नहीं बुझता। क्या उन पर कभी मुसीबत आती
है? क्या अल्लाह कभी क़हर में आकर उन पर
वह तबाही नाज़िल करता है जो उनका मुनासिब
हिस्सा है? 18क्या हवा के झोंके कभी उन्हें भूसे
की तरह और आँधी कभी उन्हें तूड़ी की तरह
उड़ा ले जाती है? अफ़सोस, ऐसा नहीं होता।
19शायद तुम कहो, ‘अल्लाह उन्हें सज़ा देने के
बजाए उनके बच्चों को सज़ा देगा।’ लेकिन मैं
कहता हूँ कि उसे बाप को ही सज़ा देनी चाहिए
ताकि वह अपने गुनाहों का नतीजा ख़ूब जान ले।
20उस की अपनी ही आँखें उस की तबाही देखें,
वह ख़ुद क़ादिरे-मुतलक़ के ग़ज़ब का प्याला पी
ले। 21क्योंकि जब उस की ज़िंदगी के मुक़र्ररा दिन
इख़्तिताम तक पहुँचें तो उसे क्या परवा होगी कि
मेरे बाद घरवालों के साथ क्या होगा।

22लेकिन कौन अल्लाह को इल्म सिखा सकता
है? वह तो बुलंदियों पर रहनेवालों की भी
अदालत करता है। 23एक शख़्स वफ़ात पाते
वक़्त ख़ूब तनदुरुस्त होता है। जीते-जी वह बड़े
सुकून और इतमीनान से ज़िंदगी गुज़ार सका।
24उसके बरतन दूध से भरे रहे, उस की हड्डियों
का गूदा तरो-ताज़ा रहा। 25दूसरा शख़्स शिकस्ता
हालत में मर जाता है और उसे कभी ख़ुशहाली
का लुत्फ़ नसीब नहीं हुआ। 26अब दोनों मिलकर
ख़ाक में पड़े रहते हैं, दोनों कीड़े-मकोड़ों से ढाँपे
रहते हैं।

27सुनो, मैं तुम्हारे ख़यालात और उन साज़िशों
से वाक़िफ़ हूँ जिनसे तुम मुझ पर ज़ुल्म करना
चाहते हो। 28क्योंकि तुम कहते हो, ‘रईस का
घर कहाँ है? वह ख़ैमा किधर गया जिसमें बेदीन
बसते थे? वह अपने गुनाहों के सबब से ही तबाह
हो गए हैं।’ 29लेकिन उनसे पूछ लो जो इधर-उधर
सफ़र करते रहते हैं। तुम्हें उनकी गवाही तसलीम

करनी चाहिए 30कि आफ़त के दिन शरीर को सहीह-सलामत छोड़ा जाता है, कि ग़ज़ब के दिन उसे रिहाई मिलती है।

31कौन उसके रूबरू उसके चाल-चलन की मलामत करता, कौन उसे उसके ग़लत काम का मुनासिब अज्र देता है? 32लोग उसके जनाज़े में शरीक होकर उसे क़ब्र तक ले जाते हैं। उस की क़ब्र पर चौकीदार लगाया जाता है। 33वादी की मिट्टी के ढेले उसे मीठे लगते हैं। जनाज़े के पीछे पीछे तमाम दुनिया, उसके आगे आगे अनगिनत हुजूम चलता है। 34चुनाँचे तुम मुझे अबस बातों से क्यों तसल्ली दे रहे हो? तुम्हारे जवाबों में तुम्हारी बेवफ़ाई ही नज़र आती है।"

इलीफ़ज़ : अय्यूब शरीर है

22 फिर इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब देकर कहा,

2"क्या अल्लाह इनसान से फ़ायदा उठा सकता है? हरगिज़ नहीं! उसके लिए दानिशमंद भी फ़ायदे का बाइस नहीं। 3अगर तू रास्तबाज़ हो भी तो क्या वह इससे अपने लिए नफ़ा उठा सकता है? हरगिज़ नहीं! अगर तू बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारे तो क्या उसे कुछ हासिल होता है? 4अल्लाह तुझे तेरी ख़ुदातरस ज़िंदगी के सबब से मलामत नहीं कर रहा। यह न सोच कि वह इसी लिए अदालत में तुझसे जवाब तलब कर रहा है। 5नहीं, वजह तेरी बड़ी बदकारी, तेरे ला-महदूद गुनाह हैं।

6जब तेरे भाइयों ने तुझसे क़र्ज़ लिया तो तूने बिलावजह वह चीज़ें अपना ली होंगी जो उन्होंने तुझे ज़मानत के तौर पर दी थीं, तूने उन्हें उनके कपड़ों से महरूम कर दिया होगा। 7तूने थकेमाँदों को पानी पिलाने से और भूके मरनेवालों को खाना खिलाने से इनकार किया होगा। 8बेशक तेरा रवैया इस ख़याल पर मबनी था कि पूरा मुल्क ताक़तवरों की मिलकियत है, कि सिर्फ़ बड़े लोग उसमें रह सकते हैं। 9तूने बेवाओं को ख़ाली हाथ मोड़ दिया होगा, यतीमों की ताक़त पाश पाश की होगी। 10इसी लिए तू फंदों से घिरा रहता है, अचानक ही तुझे दहशतनाक वाक़ियात डराते हैं। 11यही वजह है कि तुझ पर ऐसा अंधेरा छा गया है कि तू देख नहीं सकता, कि सैलाब ने तुझे डुबो दिया है।

12क्या अल्लाह आसमान की बुलंदियों पर नहीं होता? वह तो सितारों पर नज़र डालता है, ख़ाह वह कितने ही ऊँचे क्यों न हों। 13तो भी तू कहता है, 'अल्लाह क्या जानता है? क्या वह काले बादलों में से देखकर अदालत कर सकता है? 14वह घने बादलों में छुपा रहता है, इसलिए जब वह आसमान के गुंबद पर चलता है तो उसे कुछ नज़र नहीं आता।' 15क्या तू उस क़दीम राह से बाज़ नहीं आएगा जिस पर बदकार चलते रहे हैं? 16वह तो अपने मुक़र्ररा वक़्त से पहले ही सुकड़ गए, उनकी बुनियादें सैलाब से ही उड़ा ली गईं। 17उन्होंने अल्लाह से कहा, 'हमसे दूर हो जा,' और 'क़ादिरे-मुतलक़ हमारे लिए क्या कुछ कर सकता है?' 18लेकिन अल्लाह ही ने उनके घरों को भरपूर ख़ुशहाली से नवाज़ा, गो बेदीनों के बुरे मनसूबे उससे दूर ही दूर रहते हैं। 19रास्तबाज़ उनकी तबाही देखकर ख़ुश हुए, बेक़ुसूरों ने उनकी हँसी उड़ाकर कहा, 20'लो, यह देखो, उनकी जायदाद किस तरह मिट गई, उनकी दौलत किस तरह भस्म हो गई है!'

21ऐ अय्यूब, अल्लाह से सुलह करके सलामती हासिल कर, तब ही तू ख़ुशहाली पाएगा। 22अल्लाह के मुँह की हिदायत अपना ले, उसके फ़रमान अपने दिल में महफ़ूज़ रख। 23अगर तू क़ादिरे-मुतलक़ के पास वापस आए तो बहाल हो जाएगा, और तेरे ख़ैमे से बदी दूर ही रहेगी। 24सोने को ख़ाक के बराबर, ओफ़ीर का ख़ालिस सोना वादी के पत्थर के बराबर समझ ले 25तो क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुद तेरा सोना होगा, वही तेरे लिए चाँदी का ढेर होगा। 26तब तू क़ादिरे-मुतलक़ से लुत्फ़अंदोज़ होगा और अल्लाह के हुज़ूर अपना सर उठा सकेगा। 27तू उससे इल्तिजा करेगा तो वह तेरी सुनेगा और तू

अपनी मन्नतें बढ़ा सकेगा। 28जो कुछ भी तू करने
का इरादा रखे उसमें तुझे कामयाबी होगी, तेरी
राहों पर रौशनी चमकेगी। 29क्योंकि जो शेख़ी
बघारता है उसे अल्लाह पस्त करता जबकि जो
पस्तहाल है उसे वह नजात देता है। 30वह बेक़ुसूर
को छुड़ाता है, चुनाँचे अगर तेरे हाथ पाक हों तो
वह तुझे छुड़ाएगा।"

अय्यूब : काश मैं अल्लाह को कहीं पाता

23 अय्यूब ने जवाब में कहा,
2"बेशक आज मेरी शिकायत
सरकशी का इज़हार है, हालाँकि मैं अपनी आहों
पर क़ाबू पाने की कोशिश कर रहा हूँ।
3काश मैं उसे पाने का इल्म रखूँ ताकि उस
की सुकूनतगाह तक पहुँच सकूँ। 4फिर मैं अपना
मामला तरतीबवार उसके सामने पेश करता, मैं
अपना मुँह दलायल से भर लेता। 5तब मुझे उसके
जवाबों का पता चलता, मैं उसके बयानात पर
ग़ौर कर सकता। 6क्या वह अपनी अज़ीम क़ुव्वत
मुझसे लड़ने पर सर्फ़ करता? हरगिज़ नहीं! वह
यक़ीनन मुझ पर तवज्जुह देता। 7अगर मैं वहाँ
उसके हुज़ूर आ सकता तो दियानतदार आदमी
की तरह उसके साथ मुक़दमा लड़ता। तब मैं
हमेशा के लिए अपने मुंसिफ़ से बच निकलता!
8लेकिन अफ़सोस, अगर मैं मशरिक़ की तरफ़
जाऊँ तो वह वहाँ नहीं होता, मग़रिब की जानिब
बढ़ूँ तो वहाँ भी नहीं मिलता। 9शिमाल मैं उसे ढूँढ़ूँ
तो वह दिखाई नहीं देता, जुनूब की तरफ़ रुख़ करूँ
तो वहाँ भी पोशीदा रहता है। 10क्योंकि वह मेरी
राह को जानता है। अगर वह मेरी जाँच-पड़ताल
करता तो मैं ख़ालिस सोना साबित होता। 11मेरे
क़दम उस की राह में रहे हैं, मैं राह से न बाईं,
न दाईं तरफ़ हटा बल्कि सीधा उस पर चलता
रहा। 12मैं उसके होंटों के फ़रमान से बाज़ नहीं
आया बल्कि अपने दिल में ही उसके मुँह की बातें
महफ़ूज़ रखी हैं।
13अगर वह फ़ैसला करे तो कौन उसे रोक
सकता है? जो कुछ भी वह करना चाहे उसे अमल
में लाता है। 14जो भी मनसूबा उसने मेरे लिए
बाँधा उसे वह ज़रूर पूरा करेगा। और उसके ज़हन
में मज़ीद बहुत-से ऐसे मनसूबे हैं। 15इसी लिए मैं
उसके हुज़ूर दहशतज़दा हूँ। जब भी मैं इन बातों
पर ध्यान दूँ तो उससे डरता हूँ। 16अल्लाह ने ख़ुद
मुझे शिकस्तादिल किया, क़ादिरे-मुतलक़ ही ने
मुझे दहशत खिलाई है। 17क्योंकि न मैं तारीकी
से तबाह हो रहा हूँ, न इसलिए कि घने अंधेरे ने
मेरे चेहरे को ढाँप दिया है।

ज़मीन पर कितनी नाइनसाफ़ी पाई जाती है

24 क़ादिरे-मुतलक़ अदालत के औ-
क़ात क्यों नहीं मुक़र्रर करता? जो
उसे जानते हैं वह ऐसे दिन क्यों नहीं देखते?
2बेदीन अपनी ज़मीनों की हुदूद को आगे पीछे
करते और दूसरों के रेवड़ लूटकर अपनी चरागाहों
में ले जाते हैं। 3वह यतीमों का गधा हाँककर ले
जाते और इस शर्त पर बेवा को क़र्ज़ देते हैं कि
वह उन्हें ज़मानत के तौर पर अपना बैल दे। 4वह
ज़रूरतमंदों को रास्ते से हटाते हैं, चुनाँचे मुल्क के
ग़रीबों को सरासर छुप जाना पड़ता है।
5ज़रूरतमंद बयाबान में जंगली गधों की तरह
काम करने के लिए निकलते हैं। ख़ुराक का
खोज लगा लगाकर वह इधर-उधर घुमते-फिरते
हैं बल्कि रेगिस्तान ही उन्हें उनके बच्चों के लिए
खाना मुहैया करता है। 6जो खेत उनके अपने नहीं
हैं उनमें वह फ़सल काटते हैं, और बेदीनों के अंगूर
के बाग़ों में जाकर वह दो-चार अंगूर चुन लेते हैं जो
फ़सल चुनने के बाद बाक़ी रह गए थे। 7कपड़ों
से महरूम रहकर वह रात को बरहना हालत में
गुज़ारते हैं। सर्दी में उनके पास कम्बल तक नहीं
होता। 8पहाड़ों की बारिश से वह भीग जाते और
पनाहगाह न होने के बाइस पत्थरों के साथ लिपट
जाते हैं।
9बेदीन बाप से महरूम बच्चे को माँ की गोद से
छीन लेते हैं बल्कि इस शर्त पर मुसीबतज़दा को
क़र्ज़ देते हैं कि वह उन्हें ज़मानत के तौर पर अपना
शीरख़ार बच्चा दे। 10ग़रीब बरहना हालत में और

कपड़े पहने बग़ैर फिरते हैं, वह भूके होते हुए पूले
उठाए चलते हैं। 11ज़ैतून के जो दरख़्त बेदीनों
ने सफ़-दर-सफ़ लगाए थे उनके दरमियान ग़रीब
ज़ैतून का तेल निकालते हैं। प्यासी हालत में वह
शरीरों के हौज़ों में अंगूर को पाँवों तले कुचलकर
उसका रस निकालते हैं। 12शहर से मरनेवालों
की आहें निकलती हैं और ज़ख़मी लोग मदद के
लिए चीख़ते-चिल्लाते हैं। इसके बावुजूद अल्लाह
किसी को भी मुजरिम नहीं ठहराता।

13यह बेदीन उनमें से हैं जो नूर से सरकश
हो गए हैं। न वह उस की राहों से वाक़िफ़ हैं,
न उनमें रहते हैं। 14सुबह-सवेरे क़ातिल उठता है
ताकि मुसीबतज़दा और ज़रूरतमंद को क़त्ल करे।
रात को चोर चक्कर काटता है। 15ज़िनाकार की
आँखें शाम के धुँधलके के इंतज़ार में रहती हैं, यह
सोचकर कि उस वक़्त मैं किसी को नज़र नहीं
आऊँगा। निकलते वक़्त वह अपने मुँह को ढाँप
लेता है। 16डाकू अंधेरे में घरों में नक़ब लगाते
जबकि दिन के वक़्त वह छुपकर अपने पीछे कुंडी
लगा लेते हैं। नूर को वह जानते ही नहीं। 17गहरी
तारीकी ही उनकी सुबह होती है, क्योंकि उनकी
घने अंधेरे की दहशतों से दोस्ती हो गई है।

18लेकिन बेदीन पानी की सतह पर झाग हैं,
मुल्क में उनका हिस्सा मलऊन है और उनके
अंगूर के बाग़ों की तरफ़ कोई रुजू नहीं करता।
19जिस तरह काल और झुलसती गरमी बर्फ़ का
पानी छीन लेती हैं उसी तरह पाताल गुनाहगारों
को छीन लेता है। 20माँ का रहम उन्हें भूल जाता,
कीड़ा उन्हें चूस लेता और उनकी याद जाती रहती
है। यक़ीनन बेदीनी लकड़ी की तरह टूट जाती है।
21बेदीन बाँझ औरत पर ज़ुल्म और बेवाओं से
बदसुलूकी करते हैं, 22लेकिन अल्लाह ज़बरदस्तों
को अपनी क़ुदरत से घसीटकर ले जाता है। वह
मज़बूती से खड़े भी हों तो भी कोई यक़ीन नहीं कि
ज़िंदा रहेंगे। 23अल्लाह उन्हें हिफ़ाज़त से आराम
करने देता है, लेकिन उस की आँखें उनकी राहों
की पहरादारी करती रहती हैं। 24लमहा-भर के
लिए वह सरफ़राज़ होते, लेकिन फिर नेस्तो-
नाबूद हो जाते हैं। उन्हें ख़ाक में मिलाकर सबकी
तरह जमा किया जाता है, वह गंदुम की कटी हुई
बालों की तरह मुरझा जाते हैं।

25क्या ऐसा नहीं है? अगर कोई मुत्तफ़िक़ नहीं
तो वह साबित करे कि मैं ग़लती पर हूँ, वह दिखाए
कि मेरे दलायल बातिल हैं।”

बिलदद : अल्लाह के सामने कोई रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता

25 फिर बिलदद सूख़ी ने जवाब देकर
कहा,
2“अल्लाह की हुकूमत दहशतनाक है। वही
अपनी बुलंदियों पर सलामती क़ायम रखता है।
3क्या कोई उसके दस्तों की तादाद गिन सकता
है? उसका नूर किस पर नहीं चमकता? 4तो फिर
इनसान अल्लाह के सामने किस तरह रास्तबाज़
ठहर सकता है? जो औरत से पैदा हुआ वह किस
तरह पाक-साफ़ साबित हो सकता है? 5उस की
नज़र में न चाँद पुरनूर है, न सितारे पाक हैं। 6तो
फिर इनसान किस तरह पाक ठहर सकता है जो
कीड़ा ही है? आदमज़ाद तो मकोड़ा ही है।”

अय्यूब : तूने मुझे कितने अच्छे मशवरे दिए हैं!

26 अय्यूब ने जवाब देकर कहा,
2“वाह जी वाह! तूने क्या ख़ूब उसे
सहारा दिया जो बेबस है, क्या ख़ूब उस बाज़ू
को मज़बूत कर दिया जो बेताक़त है! 3तूने उसे
कितने अच्छे मशवरे दिए जो हिकमत से महरूम
है, अपनी समझ की कितनी गहरी बातें उस पर
ज़ाहिर की हैं। 4तूने किसकी मदद से यह कुछ
पेश किया है? किसने तेरी रूह में वह बातें डालीं
जो तेरे मुँह से निकल आई हैं?

कौन अल्लाह की अज़मत का अंदाज़ा लगा सकता है?

5अल्लाह के सामने वह तमाम मुरदा अरवाह
जो पानी और उसमें रहनेवालों के नीचे बसती हैं

डर के मारे तड़प उठती हैं। 6हाँ, उसके सामने
पाताल बरहना और उस की गहराइयाँ बेनिक़ाब
हैं।
7अल्लाह ही ने शिमाल को वीरानो-सुनसान
जगह के ऊपर तान लिया, उसी ने ज़मीन को
यों लगा दिया कि वह किसी चीज़ से लटकी हुई
नहीं है। 8उसने अपने बादलों में पानी लपेट लिया,
लेकिन वह बोझ तले न फटे। 9उसने अपना तख़्त
नज़रों से छुपाकर अपना बादल उस पर छा जाने
दिया। 10उसने पानी की सतह पर दायरा बनाया
जो रौशनी और अंधेरे के दरमियान हद बन गया।
11आसमान के सतून लरज़ उठे। उस की
धमकी पर वह दहशतज़दा हुए। 12अपनी क़ुदरत
से अल्लाह ने समुंदर को थमा दिया, अपनी
हिकमत से रहब अज़दहे को टुकड़े टुकड़े कर
दिया। 13उसके रूह ने आसमान को साफ़ किया,
उसके हाथ ने फ़रार होनेवाले साँप को छेद डाला।
14लेकिन ऐसे काम उस की राहों के किनारे पर
ही किए जाते हैं। जो कुछ हम उसके बारे में सुनते
हैं वह धीमी धीमी आवाज़ से हमारे कान तक
पहुँचता है। तो फिर कौन उस की क़ुदरत की
कड़कती आवाज़ समझ सकता है?”

मैं बेक़ुसूर हूँ

27 फिर अय्यूब ने अपनी बात जारी रखी,
2“अल्लाह की हयात की क़सम जिसने मेरा
इनसाफ़ करने से इनकार किया, क़ादिरे-मुतलक़
की क़सम जिसने मेरी ज़िंदगी तलख़ कर दी है,
3मेरे जीते-जी, हाँ जब तक अल्लाह का दम मेरी
नाक में है 4मेरे होंट झूट नहीं बोलेंगे, मेरी ज़बान
धोका बयान नहीं करेगी। 5मैं कभी तसलीम नहीं
करूँगा कि तुम्हारी बात दुरुस्त है। मैं बेइलज़ाम हूँ
और मरते दम तक इसके उलट नहीं कहूँगा। 6मैं
इसरार करता हूँ कि रास्तबाज़ हूँ और इससे कभी
बाज़ नहीं आऊँगा। मेरा दिल मेरे किसी भी दिन
के बारे में मुझे मलामत नहीं करता।
7अल्लाह करे कि मेरे दुश्मन के साथ वही
सुलूक किया जाए जो बेदीनों के साथ किया
जाएगा, कि मेरे मुख़ालिफ़ का वह अंजाम हो
जो बदकारों को पेश आएगा। 8क्योंकि उस वक़्त
शरीर की क्या उम्मीद रहेगी जब उसे इस ज़िंदगी
से मुंक़ते किया जाएगा, जब अल्लाह उस की
जान उससे तलब करेगा? 9क्या अल्लाह उस की
चीख़ें सुनेगा जब वह मुसीबत में फँसकर मदद के
लिए पुकारेगा? 10या क्या वह क़ादिरे-मुतलक़
से लुत्फ़अंदोज़ होगा और हर वक़्त अल्लाह को
पुकारेगा?
11अब मैं तुम्हें अल्लाह की क़ुदरत के बारे में
तालीम दूँगा, क़ादिरे-मुतलक़ का इरादा तुमसे
नहीं छुपाऊँगा। 12देखो, तुम सबने इसका
मुशाहदा किया है। तो फिर इस क़िस्म की बातिल
बातें क्यों करते हो?

बेदीन ज़िंदा नहीं रहेगा

13बेदीन अल्लाह से क्या अज्र पाएगा,
ज़ालिम को क़ादिरे-मुतलक़ से मीरास में क्या
मिलेगा? 14गो उसके बच्चे मुतअद्दिद हों, लेकिन
आख़िरकार वह तलवार की ज़द में आएँगे। उस
की औलाद भूकी रहेगी। 15जो बच जाएँ उन्हें
मोहलक बीमारी से क़ब्र में पहुँचाया जाएगा, और
उनकी बेवाएँ मातम नहीं कर पाएँगी। 16बेशक
वह ख़ाक की तरह चाँदी का ढेर लगाए और मिट्टी
की तरह नफ़ीस कपड़ों का तोदा इकट्ठा करे,
17लेकिन जो कपड़े वह जमा करे उन्हें रास्तबाज़
पहन लेगा, और जो चाँदी वह इकट्ठी करे उसे
बेक़ुसूर तक़सीम करेगा। 18जो घर बेदीन बना ले
वह घोंसले की मानिंद है, उस आरिज़ी झोंपड़ी
की मानिंद जो चौकीदार अपने लिए बना लेता
है। 19वह अमीर हालत में सो जाता है, लेकिन
आख़िरी दफ़ा। जब अपनी आँखें खोल लेता तो
तमाम दौलत जाती रही है। 20उस पर हौलनाक
वाक़ियात का सैलाब टूट पड़ता, उसे रात के
वक़्त आँधी छीन लेती है। 21मशरिक़ी लू उसे
उड़ा ले जाती, उसे उठाकर उसके मक़ाम से दूर
फेंक देती है। 22बेरहमी से वह उस पर यों झपट्टा
मारती रहती है कि उसे बार बार भागना पड़ता

है। 23वह तालियाँ बजाकर अपनी हिक़ारत का
इज़हार करती, अपनी जगह से आवाज़े कसती
है।

हिक्मत कहाँ पाई जाती है?

28 यक़ीनन चाँदी की कानें होती हैं और
ऐसी जगहें जहाँ सोना ख़ालिस किया
जाता है। 2लोहा ज़मीन से निकाला जाता
और लोग पत्थर पिघलाकर ताँबा बना लेते हैं।
3इनसान अंधेरे को ख़त्म करके ज़मीन की गहरी
गहरी जगहों तक कच्ची धात का खोज लगाता
है, ख़ाह वह कितने अंधेरे में क्यों न हो। 4एक
अजनबी क़ौम सुरंग लगाती है। जब रस्सों से
लटके हुए काम करते और इनसानों से दूर कान
में झूमते हैं तो ज़मीन पर गुज़रनेवालों को उनकी
याद ही नहीं रहती। 5ज़मीन की सतह पर ख़ुराक
पैदा होती है जबकि उस की गहराइयाँ यों तबदील
हो जाती हैं जैसे उसमें आग लगी हो। 6पत्थरों से
संगे-लाजवर्द निकाला जाता है जिसमें सोने के
ज़र्रे भी पाए जाते हैं।

7यह ऐसे रास्ते हैं जो कोई भी शिकारी परिंदा
नहीं जानता, जो किसी भी बाज़ ने नहीं देखा।
8जंगल के रोबदार जानवरों में से कोई भी इन
राहों पर नहीं चला, किसी भी शेरबबर ने इन पर
क़दम नहीं रखा। 9इनसान संगे-चक़माक़ पर हाथ
लगाकर पहाड़ों को जड़ से उलटा देता है। 10वह
पत्थर में सुरंग लगाकर हर क़िस्म की क़ीमती
चीज़ देख लेता 11और ज़मीनदोज़ नदियों को बंद
करके पोशीदा चीज़ें रौशनी में लाता है।

12लेकिन हिकमत कहाँ पाई जाती है, समझ
कहाँ से मिलती है? 13इनसान उस तक
जानेवाली राह नहीं जानता, क्योंकि उसे मुल्के-
हयात में पाया नहीं जाता। 14समुंदर कहता है,
'हिक्मत मेरे पास नहीं है,' और उस की गहराइयाँ
बयान करती हैं, 'यहाँ भी नहीं है।'

15हिकमत को न ख़ालिस सोने, न चाँदी से
ख़रीदा जा सकता है। 16उसे पाने के लिए न
ओफ़ीर का सोना, न बेशक़ीमत अक़ीक़े-अहमर[a]
या संगे-लाजवर्द[b] काफ़ी हैं। 17सोना और शीशा
उसका मुक़ाबला नहीं कर सकते, न वह सोने
के ज़ेवरात के एवज़ मिल सकती है। 18उस की
निसबत मूँगा और बिल्लौर की क्या क़दर है?
हिकमत से भरी थैली मोतियों से कहीं ज़्यादा
क़ीमती है। 19एथोपिया का ज़बरजद[c] उसका
मुक़ाबला नहीं कर सकता, उसे ख़ालिस सोने के
लिए ख़रीदा नहीं जा सकता।

20हिकमत कहाँ से आती, समझ कहाँ से
मिल सकती है? 21वह तमाम जानदारों से
पोशीदा रहती बल्कि परिंदों से भी छुपी रहती है।
22पाताल और मौत उसके बारे में कहते हैं, 'हमने
उसके बारे में सिर्फ़ अफ़वाहें सुनी हैं।'

23लेकिन अल्लाह उस तक जानेवाली राह को
जानता है, उसे मालूम है कि कहाँ मिल सकती
है। 24क्योंकि उसी ने ज़मीन की हुदूद तक देखा,
आसमान तले सब कुछ पर नज़र डाली 25ताकि
हवा का वज़न मुक़र्रर करे और पानी की पैमाइश
करके उस की हुदूद मुतैयिन करे। 26उसी ने
बारिश के लिए फ़रमान जारी किया और बादल
की कड़कती बिजली के लिए रास्ता तैयार किया।
27उसी वक़्त उसने हिकमत को देखकर उस की
जाँच-पड़ताल की। उसने उसे क़ायम भी किया
और उस की तह तक तहक़ीक़ भी की। 28इनसान
से उसने कहा, 'सुनो, अल्लाह का ख़ौफ़ मानना
ही हिकमत और बुराई से दूर रहना ही समझ है'।"

काश मेरी ज़िंदगी पहले की तरह हो

29 अय्यूब ने अपनी बात जारी रख-
कर कहा,

2"काश मैं दुबारा माज़ी के वह दिन गुज़ार सकूँ
जब अल्लाह मेरी देख-भाल करता था, 3जब उस
की शमा मेरे सर के ऊपर चमकती रही और मैं उस

[a] carnelian
[b] lapis lazuli
[c] peridot

की रौशनी की मदद से अंधेरे में चलता था। 4उस
वक़्त मेरी जवानी उरूज पर थी और मेरा ख़ैमा
अल्लाह के साये में रहता था। 5क़ादिरे-मुतलक़
मेरे साथ था, और मैं अपने बेटों से घिरा रहता था।
6कसरत के बाइस मेरे क़दम दही से धोए रहते
और चटान से तेल की नदियाँ फूटकर निकलती
थीं।

7जब कभी मैं शहर के दरवाज़े से निकल-
कर चौक में अपनी कुरसी पर बैठ जाता 8तो
जवान आदमी मुझे देखकर पीछे हटकर छुप जाते,
बुज़ुर्ग उठकर खड़े रहते, 9रईस बोलने से बाज़
आकर मुँह पर हाथ रखते, 10शुरफ़ा की आवाज़
दब जाती और उनकी ज़बान तालू से चिपक जाती
थी।

11जिस कान ने मेरी बातें सुनीं उसने मुझे
मुबारक कहा, जिस आँख ने मुझे देखा उसने
मेरे हक़ में गवाही दी। 12क्योंकि जो मुसीबत
में आकर आवाज़ देता उसे मैं बचाता, बेसहारा
यतीम को छुटकारा देता था। 13तबाह होनेवाले
मुझे बरकत देते थे। मेरे बाइस बेवाओं के दिलों
से ख़ुशी के नारे उभर आते थे। 14मैं रास्तबाज़ी
से मुलब्बस और रास्तबाज़ी मुझसे मुलब्बस रहती
थी, इनसाफ़ मेरा चोग़ा और पगड़ी था।

15अंधों के लिए मैं आँखें, लँगड़ों के लिए पाँव
बना रहता था। 16मैं ग़रीबों का बाप था, और जब
कभी अजनबी को मुक़दमा लड़ना पड़ा तो मैं ग़ौर
से उसके मामले का मुआयना करता था ताकि
उसका हक़ मारा न जाए। 17मैंने बेदीन का जबड़ा
तोड़कर उसके दाँतों में से शिकार छुड़ाया।

18उस वक़्त मेरा ख़याल था, 'मैं अपने ही घर
में वफ़ात पाऊँगा, सीमुरग़ की तरह अपनी ज़िंदगी
के दिनों में इज़ाफ़ा करूँगा। 19मेरी जड़ें पानी तक
फैली और मेरी शाख़ें ओस से तर रहेंगी। 20मेरी
इज़्ज़त हर वक़्त ताज़ा रहेगी, और मेरे हाथ की
कमान को नई तक़वियत मिलती रहेगी।'

21लोग मेरी सुनकर ख़ामोशी से मेरे मशवरों
के इंतज़ार में रहते थे। 22मेरे बात करने पर
वह जवाब में कुछ न कहते बल्कि मेरे अलफ़ाज़
हलकी-सी बूँदा-बाँदी की तरह उन पर टपकते
रहते। 23जिस तरह इनसान शिद्दत से बारिश के
इंतज़ार में रहता है उसी तरह वह मेरे इंतज़ार
में रहते थे। वह मुँह पसारकर बहार की बारिश
की तरह मेरे अलफ़ाज़ को जज़ब कर लेते थे।
24जब मैं उनसे बात करते वक़्त मुसकराता तो
उन्हें यक़ीन नहीं आता था, मेरी उन पर मेहरबानी
उनके नज़दीक निहायत क़ीमती थी। 25मैं उनकी
राह उनके लिए चुनकर उनकी क़ियादत करता,
उनके दरमियान यों बसता था जिस तरह बादशाह
अपने दस्तों के दरमियान। मैं उस की मानिंद था
जो मातम करनेवालों को तसल्ली देता है।

मुझे रद्द किया गया है

30 लेकिन अब वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं,
हालाँकि उनकी उम्र मुझसे कम है और
मैं उनके बापों को अपनी भेड़-बकरियों की देख-
भाल करनेवाले कुत्तों के साथ काम पर लगाने के
भी लायक़ नहीं समझता था। 2मेरे लिए उनके
हाथों की मदद का क्या फ़ायदा था? उनकी
पूरी ताक़त तो जाती रही थी। 3ख़ुराक की कमी
और शदीद भूक के मारे वह ख़ुश्क ज़मीन की
थोड़ी-बहुत पैदावार कतर कतरकर खाते हैं। हर
वक़्त वह तबाही और वीरानी के दामन में रहते हैं।
4वह झाड़ियों से ख़त्मी का फल तोड़कर खाते,
झाड़ियों[a] की जड़ें आग तापने के लिए इकट्ठी
करते हैं। 5उन्हें आबादियों से ख़ारिज किया गया
है, और लोग 'चोर चोर' चिल्लाकर उन्हें भगा देते
हैं। 6उन्हें घाटियों की ढलानों पर बसना पड़ता,
वह ज़मीन के ग़ारों में और पत्थरों के दरमियान
ही रहते हैं। 7झाड़ियों के दरमियान वह आवाज़ें
देते और मिलकर ऊँटकटारों तले दबक जाते हैं।

[a]यानी झाड़ी बनाम broom, सींक क़िस्म की झाड़ी
जिसके फूल ज़रद होते हैं।

8इन कमीने और बेनाम लोगों को मार मारकर
मुल्क से भगा दिया गया है।
9और अब मैं इन्हीं का निशाना बन गया हूँ।
अपने गीतों में वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं, मेरी बुरी
हालत उनके लिए मज़हकाख़ेज़ मिसाल बन गई
है। 10वह घिन खाकर मुझसे दूर रहते और मेरे
मुँह पर थूकने से नहीं रुकते। 11चूँकि अल्लाह ने
मेरी कमान की ताँत खोलकर मेरी रुसवाई की
है, इसलिए वह मेरी मौजूदगी में बेलगाम हो गए
हैं। 12मेरे दहने हाथ हुजूम खड़े होकर मुझे ठोकर
खिलाते और मेरी फ़सील के साथ मिट्टी के ढेर
लगाते हैं ताकि उसमें रख़ना डालकर मुझे तबाह
करें। 13वह मेरी क़िलाबंदियाँ ढाकर मुझे ख़ाक
में मिलाने में कामयाब हो जाते हैं। किसी और
की मदद दरकार ही नहीं। 14वह रख़ने में दाख़िल
होते और जौक़-दर-जौक़ तबाहशुदा फ़सील में से
गुज़रकर आगे बढ़ते हैं। 15हौलनाक वाक़ियात
मेरे ख़िलाफ़ खड़े हो गए हैं, और वह तेज़ हवा
की तरह मेरे वक़ार को उड़ा ले जा रहे हैं। मेरी
सलामती बादल की तरह ओझल हो गई है।
16और अब मेरी जान निकल रही है, मैं मुसीबत
के दिनों के क़ाबू में आ गया हूँ। 17रात को मेरी
हड्डियों को छेदा जाता है, कतरनेवाला दर्द मुझे
कभी नहीं छोड़ता। 18अल्लाह बड़े ज़ोर से मेरा
कपड़ा पकड़कर गरेबान की तरह मुझे अपनी
सख़्त गिरिफ़्त में रखता है। 19उसने मुझे कीचड़
में फेंक दिया है, और देखने में मैं ख़ाक और मिट्टी
ही बन गया हूँ। 20मैं तुझे पुकारता, लेकिन तू
जवाब नहीं देता। मैं खड़ा हो जाता, लेकिन तू मुझे
घूरता ही रहता है। 21तू मेरे साथ अपना सुलूक
बदलकर मुझ पर ज़ुल्म करने लगा, अपने हाथ के
पूरे ज़ोर से मुझे सताने लगा है। 22तू मुझे उड़ाकर
हवा पर सवार होने देता, गरजते तूफ़ान में घुलने
देता है। 23हाँ, अब मैं जानता हूँ कि तू मुझे मौत
के हवाले करेगा, उस घर में पहुँचाएगा जहाँ एक
दिन तमाम जानदार जमा हो जाते हैं।
24यक़ीनन मैंने कभी भी अपना हाथ किसी
ज़रूरतमंद के ख़िलाफ़ नहीं उठाया जब उसने
अपनी मुसीबत में आवाज़ दी। 25बल्कि जब
किसी का बुरा हाल था तो मैं हमदर्दी से रोने
लगा, ग़रीबों की हालत देखकर मेरा दिल ग़म
खाने लगा। 26ताहम मुझ पर मुसीबत आई,
अगरचे मैं भलाई की उम्मीद रख सकता था।
मुझ पर घना अंधेरा छा गया, हालाँकि मैं रौशनी
की तवक़्क़ो कर सकता था। 27मेरे अंदर सब
कुछ मुज़तरिब है और कभी आराम नहीं कर
सकता, मेरा वास्ता तकलीफ़देह दिनों से पड़ता
है। 28मैं मातमी लिबास में फिरता हूँ और कोई
मुझे तसल्ली नहीं देता, हालाँकि मैं जमात में खड़े
होकर मदद के लिए आवाज़ देता हूँ। 29मैं गीदड़ों
का भाई और उक़ाबी उल्लुओं का साथी बन गया
हूँ। 30मेरी जिल्द काली हो गई, मेरी हड्डियाँ तपती
गरमी के सबब से झुलस गई हैं। 31अब मेरा सरोद
सिर्फ़ मातम करने और मेरी बाँसरी सिर्फ़ रोनेवालों
के लिए इस्तेमाल होती है।

मेरी आख़िरी बात : मैं बेगुनाह हूँ

31 मैंने अपनी आँखों से अहद बाँधा है।
तो फिर मैं किस तरह किसी कुँवारी
पर नज़र डाल सकता हूँ? 2क्योंकि इनसान को
आसमान पर रहनेवाले ख़ुदा की तरफ़ से क्या
नसीब है, उसे बुलंदियों पर बसनेवाले क़ादिरे-
मुतलक़ से क्या विरासत पाना है? 3क्या ऐसा
नहीं है कि नारास्त शख़्स के लिए आफ़त और
बदकार के लिए तबाही मुक़र्रर है? 4मेरी राहें तो
अल्लाह को नज़र आती हैं, वह मेरा हर क़दम गिन
लेता है।
5न मैं कभी धोके से चला, न मेरे पाँवों ने कभी
फ़रेब देने के लिए फुरती की। अगर इसमें ज़रा
भी शक हो 6तो अल्लाह मुझे इनसाफ़ के तराज़ू
में तोल ले, अल्लाह मेरी बेइलज़ाम हालत मालूम
करे। 7अगर मेरे क़दम सहीह राह से हट गए, मेरी
आँखें मेरे दिल को ग़लत राह पर ले गईं या मेरे
हाथ दाग़दार हुए 8तो फिर जो बीज मैंने बोया उस
की पैदावार कोई और खाए, जो फ़सलें मैंने लगाईं
उन्हें उखाड़ा जाए।

9अगर मेरा दिल किसी औरत से नाजायज़
ताल्लुक़ात रखने पर उकसाया गया और मैं इस
मक़सद से अपने पड़ोसी के दरवाज़े पर ताक
लगाए बैठा 10तो फिर अल्लाह करे कि मेरी
बीवी किसी और आदमी की गंदुम पीसे, कि कोई
और उस पर झुक जाए। 11क्योंकि ऐसी हरकत
शर्मनाक होती, ऐसा जुर्म सज़ा के लायक़ होता
है। 12ऐसे गुनाह की आग पाताल तक सब कुछ
भस्म कर देती है। अगर वह मुझसे सरज़द होता
तो मेरी तमाम फ़सल जड़ों तक राख कर देता।

13अगर मेरा नौकर-नौकरानियों के साथ
झगड़ा था और मैंने उनका हक़ मारा 14तो मैं क्या
करूँ जब अल्लाह अदालत में खड़ा हो जाए? जब
वह मेरी पूछ-गछ करे तो मैं उसे क्या जवाब दूँ?
15क्योंकि जिसने मुझे मेरी माँ के पेट में बनाया
उसने उन्हें भी बनाया। एक ही ने उन्हें भी और
मुझे भी रहम में तश्कील दिया।

16क्या मैंने पस्तहालों की ज़रूरियात पूरी करने
से इनकार किया या बेवा की आँखों को बुझने
दिया? हरगिज़ नहीं! 17क्या मैंने अपनी रोटी
अकेले ही खाई और यतीम को उसमें शरीक न
किया? 18हरगिज़ नहीं, बल्कि अपनी जवानी से
लेकर मैंने उसका बाप बनकर उस की परवरिश
की, अपनी पैदाइश से ही बेवा की राहनुमाई की।
19जब कभी मैंने देखा कि कोई कपड़ों की कमी
के बाइस हलाक हो रहा है, कि किसी ग़रीब के
पास कम्बल तक नहीं 20तो मैंने उसे अपनी भेड़ों
की कुछ ऊन दी ताकि वह गरम हो सके। ऐसे
लोग मुझे दुआ देते थे। 21मैंने कभी भी यतीमों
के ख़िलाफ़ हाथ नहीं उठाया, उस वक़्त भी नहीं
जब शहर के दरवाज़े में बैठे बुज़ुर्ग मेरे हक़ में थे।
22अगर ऐसा न था तो अल्लाह करे कि मेरा शाना
कंधे से निकलकर गिर जाए, कि मेरा बाज़ू जोड़ से
फाड़ा जाए! 23ऐसी हरकतें मेरे लिए नामुमकिन
थीं, क्योंकि अगर मैं ऐसा करता तो मैं अल्लाह से
दहशत खाता रहता, मैं उससे डर के मारे क़ायम
न रह सकता।

24क्या मैंने सोने पर अपना पूरा भरोसा रखा या
ख़ालिस सोने से कहा, 'तुझ पर ही मेरा एतमाद
है'? हरगिज़ नहीं! 25क्या मैं इसलिए ख़ुश था
कि मेरी दौलत ज़्यादा है और मेरे हाथ ने बहुत कुछ
हासिल किया है? हरगिज़ नहीं! 26क्या सूरज
की चमक-दमक और चाँद की पुरवक़ार रविश
देखकर 27मेरे दिल को कभी चुपके से ग़लत राह
पर लाया गया? क्या मैंने कभी उनका एहतराम
किया?[a] 28हरगिज़ नहीं, क्योंकि यह भी सज़ा
के लायक़ जुर्म है। अगर मैं ऐसा करता तो
बुलंदियों पर रहनेवाले ख़ुदा का इनकार करता।

29क्या मैं कभी ख़ुश हुआ जब मुझसे नफ़रत
करनेवाला तबाह हुआ? क्या मैं बाग़ बाग़ हुआ
जब उस पर मुसीबत आई? हरगिज़ नहीं! 30मैंने
अपने मुँह को इजाज़त न दी कि गुनाह करके
उस की जान पर लानत भेजे। 31बल्कि मेरे ख़ैमे
के आदमियों को तसलीम करना पड़ा, 'कोई
नहीं है जो अय्यूब के गोश्त से सेर न हुआ।'
32अजनबी को बाहर गली में रात गुज़ारनी नहीं
पड़ती थी बल्कि मेरा दरवाज़ा मुसाफ़िरों के लिए
खुला रहता था। 33क्या मैंने कभी आदम की
तरह अपना गुनाह छुपाकर अपना क़ुसूर दिल में
पोशीदा रखा, 34इसलिए कि हुजूम से डरता और
अपने रिश्तेदारों से दहशत खाता था? हरगिज़
नहीं! मैंने कभी भी ऐसा काम न किया जिसके
बाइस मुझे डर के मारे चुप रहना पड़ता और घर
से निकल नहीं सकता था।

35काश कोई मेरी सुने! देखो, यहाँ मेरी बात
पर मेरे दस्तख़त हैं, अब क़ादिरे-मुतलक़ मुझे
जवाब दे। काश मेरे मुख़ालिफ़ लिखकर मुझे वह
इलज़ामात बताएँ जो उन्होंने मुझ पर लगाए हैं!
36अगर इलज़ामात का काग़ज़ मिलता तो मैं उसे
उठाकर अपने कंधे पर रखता, उसे पगड़ी की
तरह अपने सर पर बाँध लेता। 37मैं अल्लाह को

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : हाथ से उन्हें बोसा दिया।

अपने क़दमों का पूरा हिसाब-किताब देकर रईस
की तरह उसके क़रीब पहुँचता।
38क्या मेरी ज़मीन ने मदद के लिए पुकारकर
मुझ पर इलज़ाम लगाया है? क्या उस की
रेघारयाँ मेरे सबब से मिलकर रो पड़ी हैं? 39क्या
मैंने उस की पैदावार अज्र दिए बग़ैर खाई, उस पर
मेहनत-मशक़्क़त करनेवालों के लिए आहें भरने
का बाइस बन गया? हरगिज़ नहीं! 40अगर मैं
इसमें क़ुसूरवार ठहरूँ तो गंदुम के बजाए ख़ारदार
झाड़ियाँ और जौ के बजाए धतूरा[a] उगे।" यों
अय्यूब की बातें इख़्तिताम को पहुँच गईं।

चौथे साथी इलीहू की तक़रीर

32 तब मज़कूरा तीनों आदमी अय्यूब को
जवाब देने से बाज़ आए, क्योंकि वह
अब तक समझता था कि मैं रास्तबाज़ हूँ। 2यह
देखकर इलीहू बिन बरकेल ग़ुस्से हो गया। बूज़
शहर के रहनेवाले इस आदमी का ख़ानदान राम
था। एक तरफ़ तो वह अय्यूब से ख़फ़ा था,
क्योंकि यह अपने आपको अल्लाह के सामने
रास्तबाज़ ठहराता था। 3दूसरी तरफ़ वह तीनों
दोस्तों से भी नाराज़ था, क्योंकि न वह अय्यूब
को सहीह जवाब दे सके, न साबित कर सके कि
मुजरिम है। 4इलीहू ने अब तक अय्यूब से बात
नहीं की थी। जब तक दूसरों ने बात पूरी नहीं
की थी वह ख़ामोश रहा, क्योंकि वह बुज़ुर्ग थे।
5लेकिन अब जब उसने देखा कि तीनों आदमी
मज़ीद कोई जवाब नहीं दे सकते तो वह भड़क
उठा 6और जवाब में कहा,

"मैं कमउम्र हूँ जबकि आप सब उम्ररसीदा हैं,
इसलिए मैं कुछ शरमीला था, मैं आपको अपनी
राय बताने से डरता था। 7मैंने सोचा, चलो वह
बोलें जिनके ज़्यादा दिन गुज़रे हैं, वह तालीम दें
जिन्हें मुतअद्दिद सालों का तजरबा हासिल है।
8लेकिन जो रूह इनसान में है यानी जो दम
क़ादिरे-मुतलक़ ने उसमें फूँक दिया वही इनसान
को समझ अता करता है। 9न सिर्फ़ बूढ़े लोग
दानिशमंद हैं, न सिर्फ़ वह इनसाफ़ समझते हैं
जिनके बाल सफ़ेद हैं। 10चुनाँचे मैं गुज़ारिश
करता हूँ कि ज़रा मेरी बात सुनें, मुझे भी अपनी
राय पेश करने दीजिए।
11मैं आपके अलफ़ाज़ के इंतज़ार में रहा।
जब आप मौज़ूँ जवाब तलाश कर रहे थे तो मैं
आपकी दानिशमंद बातों पर ग़ौर करता रहा।
12मैंने आप पर पूरी तवज्जुह दी, लेकिन आपमें
से कोई अय्यूब को ग़लत साबित न कर सका,
कोई उसके दलायल का मुनासिब जवाब न दे
पाया। 13अब ऐसा न हो कि आप कहें, 'हमने
अय्यूब में हिकमत पाई है, इनसान उसे शिकस्त
देकर भगा नहीं सकता बल्कि सिर्फ़ अल्लाह ही।'
14क्योंकि अय्यूब ने अपने दलायल की तरतीब से
मेरा मुक़ाबला नहीं किया, और जब मैं जवाब दूँगा
तो आपकी बातें नहीं दोहराऊँगा।
15आप घबराकर जवाब देने से बाज़ आए हैं,
अब आप कुछ नहीं कह सकते। 16क्या मैं मज़ीद
इंतज़ार करूँ, गो आप ख़ामोश हो गए हैं, आप
रुककर मज़ीद जवाब नहीं दे सकते? 17मैं भी
जवाब देने में हिस्सा लेना चाहता हूँ, मैं भी अपनी
राय पेश करूँगा। 18क्योंकि मेरे अंदर से अलफ़ाज़
छलक रहे हैं, मेरी रूह मेरे अंदर मुझे मजबूर कर
रही है।
19हक़ीक़त में मैं अंदर से उस नई मै की
मानिंद हूँ जो बंद रखी गई हो, मैं नई मै से
भरी हुई नई मशकों की तरह फटने को हूँ।
20मुझे बोलना है ताकि आराम पाऊँ, लाज़िम
ही है कि मैं अपने होंटों को खोलकर जवाब दूँ।
21यक़ीनन न मैं किसी की जानिबदारी, न किसी
की चापलूसी करूँगा। 22क्योंकि मैं ख़ुशामद कर
ही नहीं सकता, वरना मेरा ख़ालिक़ मुझे जल्द ही
उड़ा ले जाएगा।

[a]एक बदबूदार पौदा।

अल्लाह कई तरीक़ों से इनसान से हमकलाम होता है

33 ऐ अय्यूब, मेरी तक़रीर सुनें, मेरी
तमाम बातों पर कान धरें! 2अब मैं
अपना मुँह खोल देता हूँ, मेरी ज़बान बोलती है।
3मेरे अलफ़ाज़ सीधी राह पर चलनेवाले दिल से
उभर आते हैं, मेरे होंट दियानतदारी से वह कुछ
बयान करते हैं जो मैं जानता हूँ। 4अल्लाह के
रूह ने मुझे बनाया, क़ादिरे-मुतलक़ के दम ने मुझे
ज़िंदगी बख़्शी।

5अगर आप इस क़ाबिल हों तो मुझे जवाब
दें और अपनी बातें तरतीब से पेश करके मेरा
मुक़ाबला करें। 6अल्लाह की नज़र में मैं तो
आपके बराबर हूँ, मुझे भी मिट्टी से लेकर तश्कील
दिया गया है। 7चुनाँचे मुझे आपके लिए दहशत
का बाइस नहीं होना चाहिए, मेरी तरफ़ से आप
पर भारी बोझ नहीं आएगा।

8आपने मेरे सुनते ही कहा बल्कि आपके
अलफ़ाज़ अभी तक मेरे कानों में गूँज रहे हैं, 9'मैं
पाक हूँ, मुझसे जुर्म सरज़द नहीं हुआ, मैं बेगुनाह
हूँ, मेरा कोई क़ुसूर नहीं। 10तो भी अल्लाह मुझसे
झगड़ने के मवाक़े ढूँडता और मुझे अपना दुश्मन
समझता है। 11वह मेरे पाँवों को काठ में डालकर
मेरी तमाम राहों की पहरादारी करता है।'

12लेकिन आपकी यह बात दुरुस्त नहीं,
क्योंकि अल्लाह इनसान से आला है। 13आप
उससे झगड़कर क्यों कहते हैं, 'वह मेरी किसी
भी बात का जवाब नहीं देता'? 14शायद इनसान
को अल्लाह नज़र न आए, लेकिन वह ज़रूर कभी
इस तरीक़े, कभी उस तरीक़े से उससे हमकलाम
होता है।

15कभी वह ख़ाब या रात की रोया में उससे
बात करता है। जब लोग बिस्तर पर लेटकर
गहरी नींद सो जाते हैं 16तो अल्लाह उनके कान
खोलकर अपनी नसीहतों से उन्हें दहशतज़दा कर
देता है। 17यों वह इनसान को ग़लत काम करने
और मग़रूर होने से बाज़ रखकर 18उस की जान
गढ़े में उतरने और दरियाए-मौत को उबूर करने से
रोक देता है।

19कभी अल्लाह इनसान की बिस्तर पर दर्द के
ज़रीए तरबियत करता है। तब उस की हड्डियों में
लगातार जंग होती है। 20उस की जान को ख़ुराक
से घिन आती बल्कि उसे लज़ीज़तरीन खाने से भी
नफ़रत होती है। 21उसका गोश्त-पोस्त सुकड़कर
ग़ायब हो जाता है जबकि जो हड्डियाँ पहले छुपी
हुई थीं वह नुमायाँ तौर पर नज़र आती हैं। 22उस
की जान गढ़े के क़रीब, उस की ज़िंदगी हलाक
करनेवालों के नज़दीक पहुँचती है।

23लेकिन अगर कोई फ़रिश्ता, हज़ारों में से
कोई सालिस उसके पास हो जो इनसान को
सीधी राह दिखाए 24और उस पर तरस खाकर
कहे, 'उसे गढ़े में उतरने से छुड़ा, मुझे फ़िद्या
मिल गया है, 25अब उसका जिस्म जवानी की
निसबत ज़्यादा तरो-ताज़ा हो जाए और वह दुबारा
जवानी की-सी ताक़त पाए' 26तो फिर वह शख़्स
अल्लाह से इल्तिजा करेगा, और अल्लाह उस पर
मेहरबान होगा। तब वह बड़ी ख़ुशी से अल्लाह का
चेहरा तकता रहेगा। इसी तरह अल्लाह इनसान
की रास्तबाज़ी बहाल करता है।

27ऐसा शख़्स लोगों के सामने गाएगा और
कहेगा, 'मैंने गुनाह करके सीधी राह टेढ़ी-मेढ़ी कर
दी, और मुझे कोई फ़ायदा न हुआ। 28लेकिन
उसने फ़िद्या देकर मेरी जान को मौत के गढ़े
में उतरने से छुड़ाया। अब मेरी ज़िंदगी नूर से
लुत्फ़अंदोज़ होगी।'

29अल्लाह इनसान के साथ यह सब कुछ
दो-चार मरतबा करता है 30ताकि उस की जान
गढ़े से वापस आए और वह ज़िंदगी के नूर से
रौशन हो जाए।

31ऐ अय्यूब, ध्यान से मेरी बात सुनें, ख़ामोश
हो जाएँ ताकि मैं बात करूँ। 32अगर आप जवाब
में कुछ बताना चाहें तो बताएँ। बोलें, क्योंकि मैं
आपको रास्तबाज़ ठहराने की आरज़ू रखता हूँ।
33लेकिन अगर आप कुछ बयान नहीं कर सकते

तो मेरी सुनें, चुप रहें ताकि मैं आपको हिकमत
की तालीम दूँ।”

अल्लाह हर एक को मुनासिब अज्र देता है

34 फिर इलीहू ने बात जारी रखकर कहा,
2“ऐ दानिशमंदो, मेरे अलफ़ाज़ सुनें! ऐ
आलिमो, मुझ पर कान धरें! 3क्योंकि कान यों
अलफ़ाज़ की जाँच-पड़ताल करता है जिस तरह
ज़बान ख़ुराक को चख लेती है। 4आएँ, हम अपने
लिए वह कुछ चुन लें जो दुरुस्त है, आपस में
जान लें कि क्या कुछ अच्छा है। 5अय्यूब ने कहा
है, ‘गो मैं बेगुनाह हूँ तो भी अल्लाह ने मुझे मेरे
हुक़ूक़ से महरूम कर रखा है। 6जो फ़ैसला मेरे
बारे में किया गया है उसे मैं झूट क़रार देता हूँ। गो
मैं बेक़ुसूर हूँ तो भी तीर ने मुझे यों ज़ख़मी कर
दिया कि उसका इलाज मुमकिन ही नहीं।’ 7अब
मुझे बताएँ, क्या कोई अय्यूब जैसा बुरा है? वह
तो कुफ़र की बातें पानी की तरह पीते, 8बदकारों
की सोहबत में चलते और बेदीनों के साथ अपना
वक़्त गुज़ारते हैं। 9क्योंकि वह दावा करते हैं कि
अल्लाह से लुत्फ़अंदोज़ होना इनसान के लिए
बेफ़ायदा है।

10चुनाँचे ऐ समझदार मर्दो, मेरी बात सुनें!
यह कैसे हो सकता है कि अल्लाह शरीर काम
करे? यह तो मुमकिन ही नहीं कि क़ादिरे-
मुतलक़ नाइनसाफ़ी करे। 11यक़ीनन वह इनसान
को उसके आमाल का मुनासिब अज्र देकर उस
पर वह कुछ लाता है जिसका तक़ाज़ा उसका
चाल-चलन करता है। 12यक़ीनन अल्लाह बेदीन
हरकतें नहीं करता, क़ादिरे-मुतलक़ इनसाफ़ का
ख़ून नहीं करता। 13किसने ज़मीन को अल्लाह
के हवाले किया? किसने उसे पूरी दुनिया पर
इख़्तियार दिया? कोई नहीं! 14अगर वह कभी
इरादा करे कि अपनी रूह और अपना दम इनसान
से वापस ले 15तो तमाम लोग दम छोड़कर दुबारा
ख़ाक हो जाएंगे।

16ऐ अय्यूब, अगर आपको समझ है तो सुनें,
मेरी बातों पर ध्यान दें। 17जो इनसाफ़ से नफ़रत
करे क्या वह हुकूमत कर सकता है? क्या आप
उसे मुजरिम ठहराना चाहते हैं जो रास्तबाज़ और
क़ादिरे-मुतलक़ है, 18जो बादशाह से कह सकता
है, ‘ऐ बदमाश!’ और शुरफ़ा से, ‘ऐ बेदीनो!’?
19वह तो न रईसों की जानिबदारी करता, न
ओहदेदारों को पस्तहालों पर तरजीह देता है,
क्योंकि सब ही को उसके हाथों ने बनाया है।
20वह पल-भर में, आधी रात ही मर जाते हैं।
शुरफ़ा को हिलाया जाता है तो वह कूच कर जाते
हैं, ताक़तवरों को बग़ैर किसी तगो-दौ के हटाया
जाता है।

21क्योंकि अल्लाह की आँखें इनसान की राहों
पर लगी रहती हैं, आदमज़ाद का हर क़दम उसे
नज़र आता है। 22कहीं इतनी तारीकी या घना
अंधेरा नहीं होता कि बदकार उसमें छुप सके।
23और अल्लाह किसी भी इनसान को उस वक़्त
से आगाह नहीं करता जब उसे इलाही तख़्ते-
अदालत के सामने आना है। 24उसे तहक़ीक़ात
की ज़रूरत ही नहीं बल्कि वह ज़ोरावरों को पाश
पाश करके दूसरों को उनकी जगह खड़ा कर देता
है। 25वह तो उनकी हरकतों से वाक़िफ़ है और
उन्हें रात के वक़्त यों तहो-बाला कर सकता है कि
चूर चूर हो जाएँ। 26उनकी बेदीनी के जवाब में वह
उन्हें सबकी नज़रों के सामने पटख़ देता है। 27उस
की पैरवी से हटने और उस की राहों का लिहाज़
न करने का यही नतीजा है। 28क्योंकि उनकी
हरकतों के बाइस पस्तहालों की चीख़ें अल्लाह
के सामने और मुसीबतज़दों की इल्तिजाएँ उसके
कान तक पहुँचीं। 29लेकिन अगर वह ख़ामोश
भी रहे तो कौन उसे मुजरिम क़रार दे सकता है?
अगर वह अपने चेहरे को छुपाए रखे तो कौन उसे
देख सकता है? वह तो क़ौम पर बल्कि हर फ़रद
पर हुकूमत करता है 30ताकि शरीर हुकूमत न करें
और क़ौम फँस न जाए।

31बेहतर है कि आप अल्लाह से कहें, ‘मुझे
ग़लत राह पर लाया गया है, आइंदा मैं दुबारा
बुरा काम नहीं करूँगा। 32जो कुछ मुझे नज़र नहीं
आता वह मुझे सिखा, अगर मुझसे नाइनसाफ़ी

हुई है तो आइंदा ऐसा नहीं करूँगा।' 33क्या अल्लाह को आपको वह अज्र देना चाहिए जो आपकी नज़र में मुनासिब है, गो आपने उसे रद्द कर दिया है? लाज़िम है कि आप ख़ुद ही फ़ैसला करें, न कि मैं। लेकिन ज़रा वह कुछ पेश करें जो कुछ आप सहीह समझते हैं। 34समझदार लोग बल्कि हर दानिशमंद जो मेरी बात सुने फ़रमाएगा, 35'अय्यूब इल्म के साथ बात नहीं कर रहा, उसके अलफ़ाज़ फ़हम से ख़ाली हैं। 36काश अय्यूब की पूरी जाँच-पड़ताल की जाए, क्योंकि वह शरीरों के-से जवाब पेश करता, 37वह अपने गुनाह में इज़ाफ़ा करके हमारे रूबरू अपने जुर्म पर शक डालता और अल्लाह पर मुतअद्दिद इलज़ामात लगाता है'।"

अपने आपको रास्तबाज़ मत ठहराना

35 फिर इलीहू ने अपनी बात जारी रखी, 2"आप कहते हैं, 'मैं अल्लाह से ज़्यादा रास्तबाज़ हूँ।' क्या आप यह बात दुरुस्त समझते हैं 3या यह कि 'मुझे क्या फ़ायदा है, गुनाह न करने से मुझे क्या नफ़ा होता है?' 4मैं आपको और साथी दोस्तों को इसका जवाब बताता हूँ।

5अपनी निगाह आसमान की तरफ़ उठाएँ, बुलंदियों के बादलों पर ग़ौर करें। 6अगर आपने गुनाह किया तो अल्लाह को क्या नुक़सान पहुँचा है? गो आपसे मुतअद्दिद जरायम भी सरज़द हुए हों ताहम वह मुतअस्सिर नहीं होगा। 7रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारने से आप उसे क्या दे सकते हैं? आपके हाथों से अल्लाह को क्या हासिल हो सकता है? कुछ भी नहीं! 8आपके हमजिंस इनसान ही आपकी बेदीनी से मुतअस्सिर होते हैं, और आदमज़ाद ही आपकी रास्तबाज़ी से फ़ायदा उठाते हैं।

9जब लोगों पर सख़्त ज़ुल्म होता है तो वह चीख़ते-चिल्लाते और बड़ों की ज़्यादती के बाइस मदद के लिए आवाज़ देते हैं। 10लेकिन कोई नहीं कहता, 'अल्लाह, मेरा ख़ालिक़ कहाँ है? वह कहाँ है जो रात के दौरान नग़मे अता करता, 11जो हमें ज़मीन पर चलनेवाले जानवरों की निसबत ज़्यादा तालीम देता, हमें परिंदों से ज़्यादा दानिशमंद बनाता है?' 12उनकी चीख़ों के बावुजूद अल्लाह जवाब नहीं देता, क्योंकि वह घमंडी और बुरे हैं।

13यक़ीनन अल्लाह ऐसी बातिल फ़रियाद नहीं सुनता, क़ादिरे-मुतलक़ उस पर ध्यान ही नहीं देता। 14तो फिर वह आप पर क्यों तवज्जुह दे जब आप दावा करते हैं, 'मैं उसे नहीं देख सकता,' और 'मेरा मामला उसके सामने ही है, मैं अब तक उसका इंतज़ार कर रहा हूँ'? 15वह आपकी क्यों सुने जब आप कहते हैं, 'अल्लाह का ग़ज़ब कभी सज़ा नहीं देता, उसे बुराई की परवा ही नहीं'? 16जब अय्यूब मुँह खोलता है तो बेमानी बातें निकलती हैं। जो मुतअद्दिद अलफ़ाज़ वह पेश करता है वह इल्म से ख़ाली हैं।"

अल्लाह कितना अज़ीम है

36 इलीहू ने अपनी बात जारी रखी, 2"थोड़ी देर के लिए सब्र करके मुझे इसकी तशरीह करने दें, क्योंकि मज़ीद बहुत कुछ है जो अल्लाह के हक़ में कहना है। 3मैं दूर दूर तक फिरूँगा ताकि वह इल्म हासिल करूँ जिससे मेरे ख़ालिक़ की रास्ती साबित हो जाए। 4यक़ीनन जो कुछ मैं कहूँगा वह फ़रेबदेह नहीं होगा। एक ऐसा आदमी आपके सामने खड़ा है जिसने ख़ुलूसदिली से अपना इल्म हासिल किया है।

5गो अल्लाह अज़ीम क़ुदरत का मालिक है ताहम वह ख़ुलूसदिलों को रद्द नहीं करता। 6वह बेदीन को ज़्यादा देर तक जीने नहीं देता, लेकिन मुसीबतज़दों का इनसाफ़ करता है। 7वह अपनी आँखों को रास्तबाज़ों से नहीं फेरता बल्कि उन्हें बादशाहों के साथ तख़्तनशीन करके बुलंदियों पर सरफ़राज़ करता है।

8फिर अगर उन्हें ज़ंजीरों में जकड़ा जाए, उन्हें मुसीबत के रस्सों में गिरिफ़्तार किया जाए 9तो वह उन पर ज़ाहिर करता है कि उनसे क्या कुछ सरज़द हुआ है, वह उन्हें उनके जरायम पेश करके

उन्हें दिखाता है कि उनका तकब्बुर का रवैया है।
10वह उनके कानों को तरबियत के लिए खोलकर
उन्हें हुक्म देता है कि अपनी नाइनसाफ़ी से बाज़
आकर वापस आओ। 11अगर वह मानकर उस
की ख़िदमत करने लगें तो फिर वह जीते-जी
अपने दिन ख़ुशहाली में और अपने साल सुकून से
गुज़ारेंगे। 12लेकिन अगर न मानें तो उन्हें दरियाए-
मौत को उबूर करना पड़ेगा, वह इल्म से महरूम
रहकर मर जाएंगे।

13बेदीन अपनी हरकतों से अपने आप पर
इलाही ग़ज़ब लाते हैं। अल्लाह उन्हें बाँध भी
ले, लेकिन वह मदद के लिए नहीं पुकारते।
14जवानी में ही उनकी जान निकल जाती, उनकी
ज़िंदगी मुक़द्दस फ़रिश्तों के हाथों ख़त्म हो जाती
है। 15लेकिन अल्लाह मुसीबतज़दा को उस की
मुसीबत के ज़रीए नजात देता, उस पर होनेवाले
ज़ुल्म की मारिफ़त उसका कान खोल देता है।

16वह आपको भी मुसीबत के मुँह से निकलने
की तरग़ीब दिलाकर एक ऐसी खुली जगह पर
लाना चाहता है जहाँ रुकावट नहीं है, जहाँ आपकी
मेज़ उम्दा खानों से भरी रहेगी। 17लेकिन इस
वक़्त आप अदालत का वह प्याला पीकर सेर
हो गए हैं जो बेदीनों के नसीब में है, इस वक़्त
अदालत और इनसाफ़ ने आपको अपनी सख़्त
गिरिफ़्त में ले लिया है। 18ख़बरदार कि यह बात
आपको कुफ़र बकने पर न उकसाए, ऐसा न हो
कि तावान की बड़ी रक़म आपको ग़लत राह पर
ले जाए। 19क्या आपकी दौलत आपका दिफ़ा
करके आपको मुसीबत से बचाएगी? या क्या
आपकी सिर-तोड़ कोशिशें यह सरंजाम दे सकती
हैं? हरगिज़ नहीं! 20रात की आरज़ू न करें,
उस वक़्त की जब क़ौमें जहाँ भी हों नेस्तो-नाबूद
हो जाती हैं। 21ख़बरदार रहें कि नाइनसाफ़ी की
तरफ़ रुजू न करें, क्योंकि आपको इसी लिए
मुसीबत से आज़माया जा रहा है।

22अल्लाह अपनी क़ुदरत में सरफ़राज़ है। कौन
उस जैसा उस्ताद है? 23किसने मुक़र्रर किया कि
उसे किस राह पर चलना है? कौन कह सकता है,
'तूने ग़लत काम किया'? कोई नहीं! 24उसके
काम की तमजीद करना न भूलें, उस सारे काम
की जिसकी लोगों ने अपने गीतों में हम्दो-सना की
है। 25हर शख़्स ने यह काम देख लिया, इनसान
ने दूर दूर से उसका मुलाहज़ा किया है।

26अल्लाह अज़ीम है और हम उसे नहीं जानते,
उसके सालों की तादाद मालूम नहीं कर सकते।
27क्योंकि वह पानी के क़तरे ऊपर खींचकर धुंध
से बारिश निकाल लेता है, 28वह बारिश जो
बादल ज़मीन पर बरसा देते और जिसकी बौछाड़ें
इनसान पर पड़ती हैं। 29कौन समझ सकता है
कि बादल किस तरह छा जाते, कि अल्लाह के
मसकन से बिजलियाँ किस तरह कड़कती हैं?
30वह अपने इर्दगिर्द रौशनी फैलाकर समुंदर की
जड़ों तक सब कुछ रौशन करता है। 31यों वह
बादलों से क़ौमों की परवरिश करता, उन्हें कसरत
की ख़ुराक मुहैया करता है। 32वह अपनी मुट्ठियों
को बादल की बिजलियों से भरकर हुक्म देता है
कि क्या चीज़ अपना निशाना बनाएँ। 33उसके
बादलों की गरजती आवाज़ उसके ग़ज़ब का
एलान करती, नाइनसाफ़ी पर उसके शदीद क़हर
को ज़ाहिर करती है।

37 यह सोचकर मेरा दिल लरज़कर
अपनी जगह से उछल पड़ता है। 2सुनें
और उस की ग़ज़बनाक आवाज़ पर ग़ौर करें, उस
ग़ुर्राती आवाज़ पर जो उसके मुँह से निकलती
है। 3आसमान तले हर मक़ाम पर बल्कि ज़मीन
की इंतहा तक वह अपनी बिजली चमकने देता
है। 4इसके बाद कड़कती आवाज़ सुनाई देती,
अल्लाह की रोबदार आवाज़ गरज उठती है।
और जब उस की आवाज़ सुनाई देती है तो वह
बिजलियों को नहीं रोकता।

5अल्लाह अनोखे तरीक़े से अपनी आवाज़
गरजने देता है। साथ साथ वह ऐसे अज़ीम काम
करता है जो हमारी समझ से बाहर हैं। 6क्योंकि
वह बर्फ़ को फ़रमाता है, 'ज़मीन पर पड़ जा' और
मूसलाधार बारिश को, 'अपना पूरा ज़ोर दिखा।'
7यों वह हर इनसान को उसके घर में रहने पर

मजबूर करता है ताकि सब जान लें कि अल्लाह
काम में मसरूफ़ है। 8तब जंगली जानवर भी
अपने भटों में छुप जाते, अपने घरों में पनाह लेते
हैं।

9तूफ़ान अपने कमरे से निकल आता, शिमाली
हवा मुल्क में ठंड फैला देती है। 10अल्लाह फूँक
मारता तो पानी जम जाता, उस की सतह दूर
दूर तक मुंजमिद हो जाती है। 11अल्लाह बादलों
को नमी से बोझल करके उनके ज़रीए दूर तक
अपनी बिजली चमकाता है। 12उस की हिदायत
पर वह मँडलाते हुए उसका हर हुक्म तकमील
तक पहुँचाते हैं। 13यों वह उन्हें लोगों की तरबियत
करने, अपनी ज़मीन को बरकत देने या अपनी
शफ़क़त दिखाने के लिए भेज देता है।

14ऐ अय्यूब, मेरी इस बात पर ध्यान दें,
रुककर अल्लाह के अज़ीम कामों पर ग़ौर करें।
15क्या आपको मालूम है कि अल्लाह अपने
कामों को कैसे तरतीब देता है, कि वह अपने
बादलों से बिजली किस तरह चमकने देता है?
16क्या आप बादलों की नक़लो-हरकत जानते
हैं? क्या आपको उसके अनोखे कामों की समझ
आती है जो कामिल इल्म रखता है? 17जब
ज़मीन जुनूबी लू की ज़द में आकर चुप हो जाती
और आपके कपड़े तपने लगते हैं 18तो क्या आप
अल्लाह के साथ मिलकर आसमान को ठोंक
ठोंककर पीतल के आईने की मानिंद सख़्त बना
सकते हैं? हरगिज़ नहीं!

19हमें बताएँ कि अल्लाह से क्या कहें!
अफ़सोस, अंधेरे के बाइस हम अपने ख़यालात
को तरतीब नहीं दे सकते। 20अगर मैं अपनी बात
पेश करूँ तो क्या उसे कुछ मालूम हो जाएगा
जिसका पहले इल्म न था? क्या कोई भी कुछ
बयान कर सकता है जो उसे पहले मालूम न
हो? कभी नहीं! 21एक वक़्त धूप नज़र नहीं
आती और बादल ज़मीन पर साया डालते हैं, फिर
हवा चलने लगती और मौसम साफ़ हो जाता है।
22शिमाल से सुनहरी चमक क़रीब आती और
अल्लाह रोबदार शानो-शौकत से घिरा हुआ आ
पहुँचता है। 23हम तो क़ादिरे-मुतलक़ तक नहीं
पहुँच सकते। उस की क़ुदरत आला और रास्ती
ज़ोरावर है, वह कभी इनसाफ़ का ख़ून नहीं
करता। 24इसलिए आदमज़ाद उससे डरते और
दिल के दानिशमंद उसका ख़ौफ़ मानते हैं।"

अल्लाह का जवाब

38 फिर अल्लाह ख़ुद अय्यूब से
हमकलाम हुआ। तूफ़ान में से उसने
उसे जवाब दिया,

2"यह कौन है जो समझ से ख़ाली बातें करने
से मेरे मनसूबे के सहीह मतलब पर परदा डालता
है? 3मर्द की तरह कमरबस्ता हो जा! मैं तुझसे
सवाल करता हूँ, और तू मुझे तालीम दे।

4तू कहाँ था जब मैंने ज़मीन की बुनियाद रखी?
अगर तुझे इसका इल्म हो तो मुझे बता! 5किसने
उस की लंबाई और चौड़ाई मुक़र्रर की? क्या तुझे
मालूम है? किसने नापकर उस की पैमाइश की?
6उसके सतून किस चीज़ पर लगाए गए? किसने
उसके कोने का बुनियादी पत्थर रखा, 7उस वक़्त
जब सुबह के सितारे मिलकर शादियाना बजा रहे,
तमाम फ़रिश्ते ख़ुशी के नारे लगा रहे थे?

8जब समुंदर रहम से फूट निकला तो किसने
दरवाज़े बंद करके उस पर क़ाबू पाया? 9उस
वक़्त मैंने बादलों को उसका लिबास बनाया और
उसे घने अंधेरे में यों लपेटा जिस तरह नौज़ाद को
पोतड़ों में लपेटा जाता है। 10उस की हुदूद मुक़र्रर
करके मैंने उसे रोकने के दरवाज़े और कुंडे लगाए।
11मैं बोला, 'तुझे यहाँ तक आना है, इससे आगे
न बढ़ना, तेरी रोबदार लहरों को यहीं रुकना है।'

12क्या तूने कभी सुबह को हुक्म दिया या उसे
तुलू होने की जगह दिखाई 13ताकि वह ज़मीन के
किनारों को पकड़कर बेदीनों को उससे झाड़ दे?
14उस की रौशनी में ज़मीन यों तश्कील पाती है
जिस तरह मिट्टी जिस पर मुहर लगाई जाए। सब
कुछ रंगदार लिबास पहने नज़र आता है। 15तब
बेदीनों की रौशनी रोकी जाती, उनका उठाया हुआ
बाज़ू तोड़ा जाता है।

16क्या तू समुंदर के सरचश्मों तक पहुँच-
कर उस की गहराइयों में से गुज़रा है? 17क्या
मौत के दरवाज़े तुझ पर ज़ाहिर हुए, तुझे घने अंधेरे
के दरवाज़े नज़र आए हैं? 18क्या तुझे ज़मीन के
वसी मैदानों की पूरी समझ आई है? मुझे बता
अगर यह सब कुछ जानता है!

19रौशनी के मंबा तक ले जानेवाला रास्ता कहाँ
है? अंधेरे की रिहाइशगाह कहाँ है? 20क्या तू
उन्हें उनके मक़ामों तक पहुँचा सकता है? क्या
तू उनके घरों तक ले जानेवाली राहों से वाक़िफ़
है? 21बेशक तू इसका इल्म रखता है, क्योंकि तू
उस वक़्त जन्म ले चुका था जब यह पैदा हुए। तू
तो क़दीम ज़माने से ही ज़िंदा है!

22क्या तू वहाँ तक पहुँच गया है जहाँ बर्फ़ के
ज़ख़ीरे जमा होते हैं? क्या तूने ओलों के गोदामों
को देख लिया है? 23मैं उन्हें मुसीबत के वक़्त
के लिए महफ़ूज़ रखता हूँ, ऐसे दिनों के लिए
जब लड़ाई और जंग छिड़ जाए। 24मुझे बता,
उस जगह तक किस तरह पहुँचना है जहाँ रौशनी
तक़सीम होती है, या उस जगह जहाँ से मशरिक़ी
हवा निकलकर ज़मीन पर बिखर जाती है?

25किसने मूसलाधार बारिश के लिए रास्ता
और गरजते तूफ़ान के लिए राह बनाई 26ताकि
इनसान से ख़ाली ज़मीन और ग़ैरआबाद रेगिस्तान
की आबपाशी हो जाए, 27ताकि वीरानो-सुनसान
बयाबान की प्यास बुझ जाए और उससे हरियाली
फूट निकले? 28क्या बारिश का बाप है? कौन
शबनम के क़तरों का वालिद है?

29बर्फ़ किस माँ के पेट से पैदा हुई? जो पाला
आसमान से आकर ज़मीन पर पड़ता है किसने
उसे जन्म दिया? 30जब पानी पत्थर की तरह
सख़्त हो जाए बल्कि गहरे समुंदर की सतह भी
जम जाए तो कौन यह सरंजाम देता है? 31क्या
तू ख़ोशाए-परवीन को बाँध सकता या जौज़े की
ज़ंजीरों को खोल सकता है? 32क्या तू करवा
सकता है कि सितारों के मुख़्तलिफ़ झुरमुट उनके
मुक़र्ररा औक़ात के मुताबिक़ निकल आएँ? क्या
तू दुब्बे-अकबर की उसके बच्चों समेत क़ियादत
करने के क़ाबिल है? 33क्या तू आसमान के
क़वानीन जानता या उस की ज़मीन पर हुकूमत
मुतैयिन करता है?

34क्या जब तू बुलंद आवाज़ से बादलों को
हुक्म दे तो वह तुझ पर मूसलाधार बारिश बरसाते
हैं? 35क्या तू बादल की बिजली ज़मीन पर भेज
सकता है? क्या वह तेरे पास आकर कहती है, 'मैं
ख़िदमत के लिए हाज़िर हूँ'? 36किसने मिसर के
लक़लक़ को हिकमत दी, मुरग़ को समझ अता
की? 37किस को इतनी दानाई हासिल है कि
वह बादलों को गिन सके? कौन आसमान के इन
घड़ों को उस वक़्त उंडेल सकता है 38जब मिट्टी
ढाले हुए लोहे की तरह सख़्त हो जाए और ढेले
एक दूसरे के साथ चिपक जाएँ? कोई नहीं!

39क्या तू ही शेरनी के लिए शिकार करता या
शेरों को सेर करता है 40जब वह अपनी छुपने
की जगहों में दबक जाएँ या गुंजान जंगल में कहीं
ताक लगाए बैठे हों? 41कौन कौवे को ख़ुराक
मुहैया करता है जब उसके बच्चे भूक के बाइस
अल्लाह को आवाज़ दें और मारे मारे फिरें?

39 क्या तुझे मालूम है कि पहाड़ी
बकरियों के बच्चे कब पैदा होते हैं?
जब हिरनी अपना बच्चा जन्म देती है तो क्या तू
इसको मुलाहज़ा करता है? 2क्या तू वह महीने
गिनता रहता है जब बच्चे हिरनियों के पेट में हों?
क्या तू जानता है कि किस वक़्त बच्चे जन्म देती
हैं? 3उस दिन वह दबक जाती, बच्चे निकल
आते और दर्दे-ज़ह ख़त्म हो जाता है। 4उनके बच्चे
ताक़तवर होकर खुले मैदान में फलते-फूलते,
फिर एक दिन चले जाते हैं और अपनी माँ के
पास वापस नहीं आते।

5किसने जंगली गधे को खुला छोड़ दिया?
किसने उसके रस्से खोल दिए? 6मैं ही ने बयाबान
उसका घर बना दिया, मैं ही ने मुक़र्रर किया
कि बंजर ज़मीन उस की रिहाइशगाह हो। 7वह
शहर का शोर-शराबा देखकर हँस उठता, और उसे
हाँकनेवाले की आवाज़ सुननी नहीं पड़ती। 8वह

चरने के लिए पहाड़ी इलाक़े में इधर-उधर घूमता और हरियाली का खोज लगाता रहता है।

9क्या जंगली बैल तेरी ख़िदमत करने के लिए तैयार होगा? क्या वह कभी रात को तेरी चरनी के पास गुज़ारेगा? 10क्या तू उसे बाँधकर हल चला सकता है? क्या वह वादी में तेरे पीछे चलकर सुहागा फेरेगा? 11क्या तू उस की बड़ी ताक़त देखकर उस पर एतमाद करेगा? क्या तू अपना सख़्त काम उसके सुपुर्द करेगा? 12क्या तू भरोसा कर सकता है कि वह तेरा अनाज जमा करके गाहने की जगह पर ले आए? हरगिज़ नहीं!

13शुतुरमुरग़ ख़ुशी से अपने परों को फड़फड़ाता है। लेकिन क्या उसका शाहपर लक़लक़ या बाज़ के शाहपर की मानिंद है? 14वह तो अपने अंडे ज़मीन पर अकेले छोड़ता है, और वह मिट्टी ही पर पकते हैं। 15शुतुरमुरग़ को ख़याल तक नहीं आता कि कोई उन्हें पाँवों तले कुचल सकता या कोई जंगली जानवर उन्हें रौंद सकता है। 16लगता नहीं कि उसके अपने बच्चे हैं, क्योंकि उसका उनके साथ सुलूक इतना सख़्त है। अगर उस की मेहनत नाकाम निकले तो उसे परवा ही नहीं, 17क्योंकि अल्लाह ने उसे हिकमत से महरूम रखकर उसे समझ से न नवाज़ा। 18तो भी वह इतनी तेज़ी से उछलकर भाग जाता है कि घोड़े और घुड़सवार की दौड़ देखकर हँसने लगता है।

19क्या तू घोड़े को उस की ताक़त देकर उस की गरदन को अयाल से आरास्ता करता है? 20क्या तू ही उसे टिड्डी की तरह फलाँगने देता है? जब वह ज़ोर से अपने नथनों को फूलाकर आवाज़ निकालता है तो कितना रोबदार लगता है! 21वह वादी में सुम मार मारकर अपनी ताक़त की ख़ुशी मनाता, फिर भागकर मैदाने-जंग में आ जाता है। 22वह ख़ौफ़ का मज़ाक़ उड़ाता और किसी से भी नहीं डरता, तलवार के रूबरू भी पीछे नहीं हटता। 23उसके ऊपर तरकश खड़खड़ाता, नेज़ा और शमशेर चमकती है। 24वह बड़ा शोर मचाकर इतनी तेज़ी और जोशो-ख़ुरोश से दुश्मन पर हमला करता है कि बिगुल बजते वक़्त भी रोका नहीं जाता। 25जब भी बिगुल बजे वह ज़ोर से हिनहिनाता और दूर ही से मैदाने-जंग, कमाँडरों का शोर और जंग के नारे सूँघ लेता है।

26क्या बाज़ तेरी ही हिकमत के ज़रीए हवा में उड़कर अपने परों को जुनूब की जानिब फैला देता है? 27क्या उक़ाब तेरे ही हुक्म पर बुलंदियों पर मँडलाता और ऊँची ऊँची जगहों पर अपना घोंसला बना लेता है? 28वह चटान पर रहता, उसके टूटे-फूटे किनारों और क़िलाबंद जगहों पर बसेरा करता है। 29वहाँ से वह अपने शिकार का खोज लगाता है, उस की आँखें दूर दूर तक देखती हैं। 30उसके बच्चे ख़ून के लालच में रहते, और जहाँ भी लाश हो वहाँ वह हाज़िर होता है।”

अय्यूब रब को जवाब नहीं दे सकता

40 रब ने अय्यूब से पूछा,

2“क्या मलामत करनेवाला अदालत में क़ादिरे-मुतलक़ से झगड़ना चाहता है? अल्लाह की सरज़निश करने-वाला उसे जवाब दे!”

3तब अय्यूब ने जवाब देकर रब से कहा,

4“मैं तो नालायक़ हूँ, मैं किस तरह तुझे जवाब दूँ? मैं अपने मुँह पर हाथ रखकर ख़ामोश रहूँगा। 5एक बार मैंने बात की और इसके बाद मज़ीद एक दफ़ा, लेकिन अब से मैं जवाब में कुछ नहीं कहूँगा।”

अल्लाह का जवाब : क्या तुझे मेरी जैसी क़ुदरत हासिल है?

6तब अल्लाह तूफ़ान में से अय्यूब से हमकलाम हुआ,

7“मर्द की तरह कमरबस्ता हो जा! मैं तुझसे सवाल करूँ और तू मुझे तालीम दे। 8क्या तू वाक़ई मेरा इनसाफ़ मनसूख़ करके मुझे मुजरिम ठहराना चाहता है ताकि ख़ुद रास्तबाज़ ठहरे? 9क्या तेरा बाज़ू अल्लाह के बाज़ू जैसा ज़ोरावर है? क्या तेरी आवाज़ उस की आवाज़ की तरह

कड़कती है। 10आ, अपने आपको शानो-शौकत
से आरास्ता कर, इज़्ज़तो-जलाल से मुलब्बस हो
जा! 11बयकवक़्त अपना शदीद क़हर मुख़्तलिफ़
जगहों पर नाज़िल कर, हर मग़रूर को अपना
निशाना बनाकर उसे ख़ाक में मिला दे। 12हर
मुतकब्बिर पर ग़ौर करके उसे पस्त कर। जहाँ
भी बेदीन हो वहीं उसे कुचल दे। 13उन सबको
मिट्टी में छुपा दे, उन्हें रस्सों में जकड़कर किसी
ख़ुफ़िया जगह गिरिफ़्तार कर। 14तब ही मैं तेरी
तारीफ़ करके मान जाऊँगा कि तेरा दहना हाथ
तुझे नजात दे सकता है।

अल्लाह की क़ुदरत और हिकमत की दो मिसालें

15बहेमोत[a] पर ग़ौर कर जिसे मैंने तुझे ख़लक़
करते वक़्त बनाया और जो बैल की तरह घास
खाता है। 16उस की कमर में कितनी ताक़त,
उसके पेट के पट्ठों में कितनी क़ुव्वत है। 17वह
अपनी दुम को देवदार के दरख़्त की तरह लटकने
देता है, उस की रानों की नसें मज़बूती से एक
दूसरी से जुड़ी हुई हैं। 18उस की हड्डियाँ पीतल
के-से पायप, लोहे के-से सरीए हैं। 19वह अल्लाह
के कामों में से अव्वल है, उसके ख़ालिक़ ही ने
उसे उस की तलवार दी। 20पहाड़ियाँ उसे अपनी
पैदावार पेश करती, खुले मैदान के तमाम जानवर
वहाँ खेलते कूदते हैं। 21वह काँटेदार झाड़ियों
के नीचे आराम करता, सरकंडों और दलदल में
छुपा रहता है। 22ख़ारदार झाड़ियाँ उस पर साया
डालती और नदी के सफ़ेदा के दरख़्त उसे घेरे
रखते हैं। 23जब दरिया सैलाब की सूरत इख़्तियार
करे तो वह नहीं भागता। गो दरियाए-यरदन उसके
मुँह पर फूट पड़े तो भी वह अपने आपको महफ़ूज़
समझता है। 24क्या कोई उस की आँखों में
उँगलियाँ डालकर उसे पकड़ सकता है? अगर
उसे फंदे में पकड़ा भी जाए तो क्या कोई उस की
नाक को छेद सकता है? हरगिज़ नहीं!

41 क्या तू लिवियातान[b] अज़दहे को
मछली के काँटे से पकड़ सकता या
उस की ज़बान को रस्से से बाँध सकता है? 2क्या
तू उस की नाक छेदकर उसमें से रस्सा गुज़ार
सकता या उसके जबड़े को काँटे से चीर सकता
है? 3क्या वह कभी तुझसे बार बार रहम माँगेगा
या नरम नरम अलफ़ाज़ से तेरी ख़ुशामद करेगा?
4क्या वह कभी तेरे साथ अहद करेगा कि तू उसे
अपना ग़ुलाम बनाए रखे? हरगिज़ नहीं! 5क्या
तू परिंदे की तरह उसके साथ खेल सकता या उसे
बाँधकर अपनी लड़कियों को दे सकता है ताकि
वह उसके साथ खेलें? 6क्या सौदागर कभी
उसका सौदा करेंगे या उसे ताजिरों में तक़सीम
करेंगे? कभी नहीं! 7क्या तू उस की खाल को
भालों से या उसके सर को हारपूनों से भर सकता
है? 8एक दफ़ा उसे हाथ लगाया तो यह लड़ाई
तुझे हमेशा याद रहेगी, और तू आइंदा ऐसी हरकत
कभी नहीं करेगा!

9यक़ीनन उस पर क़ाबू पाने की हर उम्मीद
फ़रेबदेह साबित होगी, क्योंकि उसे देखते ही
इनसान गिर जाता है। 10कोई इतना बेधड़क नहीं
है कि उसे मुश्तइल करे। तो फिर कौन मेरा सामना
कर सकता है? 11किसने मुझे कुछ दिया है कि
मैं उसका मुआवज़ा दूँ। आसमान तले हर चीज़
मेरी ही है!

12मैं तुझे उसके आज़ा के बयान से महरूम
नहीं रखूँगा, कि वह कितना बड़ा, ताक़तवर
और ख़ूबसूरत है। 13कौन उस की खाल[c] उतार
सकता, कौन उसके ज़िरा-बकतर की दो तहों के
अंदर तक पहुँच सकता है? 14कौन उसके मुँह का
दरवाज़ा खोलने की जुर्रत करे? उसके हौलनाक
दाँत देखकर इनसान के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।
15उस की पीठ पर एक दूसरी से ख़ूब जुड़ी हुई
ढालों की क़तारें होती हैं। 16वह इतनी मज़बूती

[a] साइंसदान मुत्तफ़िक़ नहीं कि यह कौन-सा जानवर था।
[b] साइंसदान मुत्तफ़िक़ नहीं कि यह कौन-सा जानवर था।
[c] लफ़्ज़ी तरजुमा : बैरूनी लिबास।

से एक दूसरी से लगी होती हैं कि उनके दरमियान
से हवा भी नहीं गुज़र सकती, 17बल्कि यों एक
दूसरी से चिमटी और लिपटी रहती हैं कि उन्हें एक
दूसरी से अलग नहीं किया जा सकता।

18जब छींकें मारे तो बिजली चमक उठती है।
उस की आँखें तुलूए-सुबह की पलकों की मानिंद
हैं। 19उसके मुँह से मशालें और चिंगारियाँ ख़ारिज
होती हैं, 20उसके नथनों से धुआँ यों निकलता है
जिस तरह भड़कती और दहकती आग पर रखी
गई देग से। 21जब फूँक मारे तो कोयले दहक
उठते और उसके मुँह से शोले निकलते हैं।

22उस की गरदन में इतनी ताक़त है कि जहाँ
भी जाए वहाँ उसके आगे आगे मायूसी फैल
जाती है। 23उसके गोश्त-पोस्त की तहें एक दूसरी
से ख़ूब जुड़ी हुई हैं, वह ढाले हुए लोहे की
तरह मज़बूत और बे-लचक हैं। 24उसका दिल
पत्थर जैसा सख़्त, चक्की के निचले पाट जैसा
मुस्तहकम है।

25जब उठे तो ज़ोरावर डर जाते और दहशत
खाकर पीछे हट जाते हैं। 26हथियारों का उस पर
कोई असर नहीं होता, ख़ाह कोई तलवार, नेज़े,
बरछी या तीर से उस पर हमला क्यों न करे।
27वह लोहे को भूसा और पीतल को गली-सड़ी
लकड़ी समझता है। 28तीर उसे नहीं भगा सकते,
और अगर फ़लाख़न के पत्थर उस पर चलाओ
तो उनका असर भूसे के बराबर है। 29डंडा उसे
तिनका-सा लगता है, और वह शमशेर का शोर-
शराबा सुनकर हँस उठता है। 30उसके पेट पर
तेज़ ठीकरे से लगे हैं, और जिस तरह अनाज पर
गाहने का आला चलाया जाता है उसी तरह वह
कीचड़ पर चलता है। 31जब समुंदर की गहराइयों
में से गुज़रे तो पानी उबलती देग की तरह खौलने
लगता है। वह मरहम के मुख़्तलिफ़ अजज़ा को
मिला मिलाकर तैयार करनेवाले अत्तार की तरह
समुंदर को हरकत में लाता है। 32अपने पीछे वह
चमकता-दमकता रास्ता छोड़ता है। तब लगता
है कि समुंदर की गहराइयों के सफ़ेद बाल हैं।
33दुनिया में उस जैसा कोई मख़लूक़ नहीं, ऐसा
बनाया गया है कि कभी न डरे। 34जो भी आला
हो उस पर वह हिक़ारत की निगाह से देखता है,
वह तमाम रोबदार जानवरों का बादशाह है।”

अय्यूब की आख़िरी बात

42 तब अय्यूब ने जवाब में रब से कहा,
2“मैंने जान लिया है कि तू सब कुछ
कर पाता है, कि तेरा कोई भी मनसूबा रोका
नहीं जा सकता। 3तूने फ़रमाया, ‘यह कौन है
जो समझ से ख़ाली बातें करने से मेरे मनसूबे के
सहीह मतलब पर परदा डालता है?’ यक़ीनन
मैंने ऐसी बातें बयान कीं जो मेरी समझ से बाहर
हैं, ऐसी बातें जो इतनी अनोखी हैं कि मैं उनका
इल्म रख ही नहीं सकता। 4तूने फ़रमाया, ‘सुन
मेरी बात तो मैं बोलूँगा। मैं तुझसे सवाल करता
हूँ, और तू मुझे तालीम दे।’ 5पहले मैंने तेरे बारे
में सिर्फ़ सुना था, लेकिन अब मेरी अपनी आँखों
ने तुझे देखा है। 6इसलिए मैं अपनी बातें मुस्तरद
करता, अपने आप पर ख़ाक और राख डालकर
तौबा करता हूँ।”

अय्यूब अपने दोस्तों की शफ़ाअत करता है

7अय्यूब से यह तमाम बातें कहने के बाद रब
इलीफ़ज़ तेमानी से हमकलाम हुआ, “मैं तुझसे
और तेरे दो दोस्तों से ग़ुस्से हूँ, क्योंकि गो मेरे बंदे
अय्यूब ने मेरे बारे में दुरुस्त बातें कीं मगर तुमने
ऐसा नहीं किया। 8चुनाँचे अब सात जवान बैल
और सात मेंढे लेकर मेरे बंदे अय्यूब के पास जाओ
और अपनी ख़ातिर भस्म होनेवाली क़ुरबानी पेश
करो। लाज़िम है कि अय्यूब तुम्हारी शफ़ाअत
करे, वरना मैं तुम्हें तुम्हारी हमाक़त का पूरा अज्र
दूँगा। लेकिन उस की शफ़ाअत पर मैं तुम्हें मुआफ़
करूँगा, क्योंकि मेरे बंदे अय्यूब ने मेरे बारे में वह
कुछ बयान किया जो सहीह है जबकि तुमने ऐसा
नहीं किया।”

9इलीफ़ज़ तेमानी, बिलदद सूख़ी और ज़ूफ़र
नामाती ने वह कुछ किया जो रब ने उन्हें करने को
कहा था तो रब ने अय्यूब की सुनी।

10और जब अय्यूब ने दोस्तों की शफ़ाअत की
तो रब ने उसे इतनी बरकत दी कि आख़िरकार
उसे पहले की निसबत दुगनी दौलत हासिल
हुई। 11तब उसके तमाम भाई-बहनें और पुराने
जाननेवाले उसके पास आए और घर में उसके
साथ खाना खाकर उस आफ़त पर अफ़सोस
किया जो रब अय्यूब पर लाया था। हर एक ने
उसे तसल्ली देकर उसे एक सिक्का और सोने
का एक छल्ला दे दिया।

12अब से रब ने अय्यूब को पहले की निसबत
कहीं ज़्यादा बरकत दी। उसे 14,000 बकरियाँ,
6,000 ऊँट, बैलों की 1,000 जोड़ियाँ और
1,000 गधियाँ हासिल हुईं। 13नीज़, उसके
मज़ीद सात बेटे और तीन बेटियाँ पैदा हुईं।
14उसने बेटियों के यह नाम रखे : पहली का
नाम यमीमा, दूसरी का क़सियह और तीसरी
का क़रन-हप्पूक। 15तमाम मुल्क में अय्यूब की
बेटियों जैसी ख़ूबसूरत ख़वातीन पाई नहीं जाती
थीं। अय्यूब ने उन्हें भी मीरास में मिलकियत दी,
ऐसी मिलकियत जो उनके भाइयों के दरमियान
ही थी।

16अय्यूब मज़ीद 140 साल ज़िंदा रहा,
इसलिए वह अपनी औलाद को चौथी पुश्त तक
देख सका। 17फिर वह दराज़ ज़िंदगी से आसूदा
होकर इंतक़ाल कर गया।

ज़बूर

पहली किताब 1-41

दो राहें

1 मुबारक है वह जो न बेदीनों के मशवरे पर
चलता, न गुनाहगारों की राह पर क़दम
रखता, और न तानाज़नों के साथ बैठता है
2बल्कि रब की शरीअत से लुत्फ़अंदोज़ होता
और दिन-रात उसी पर ग़ौरो-ख़ौज़ करता रहता
है।
3वह नहरों के किनारे पर लगे दरख़्त की मानिंद
है। वक़्त पर वह फल लाता, और उसके पत्ते नहीं
मुरझाते। जो कुछ भी करे उसमें वह कामयाब है।

4बेदीनों का यह हाल नहीं होता। वह भूसे की
मानिंद हैं जिसे हवा उड़ा ले जाती है।
5इसलिए बेदीन अदालत में क़ायम नहीं रहेंगे,
और गुनाहगार का रास्तबाज़ों की मजलिस में
मक़ाम नहीं होगा।
6क्योंकि रब रास्तबाज़ों की राह की पहरादारी
करता है जबकि बेदीनों की राह तबाह हो जाएगी।

अल्लाह का मसीह

2 अक़वाम क्यों तैश में आ गई हैं? उम्मतें
क्यों बेकार साज़िशें कर रही हैं?
2दुनिया के बादशाह उठ खड़े हुए, हुक्म-
रान रब और उसके मसीह के ख़िलाफ़ जमा हो
गए हैं।
3वह कहते हैं, “आओ, हम उनकी ज़ंजीरों को
तोड़कर आज़ाद हो जाएँ, उनके रस्सों को दूर तक
फेंक दें।”
4लेकिन जो आसमान पर तख़्तनशीन है वह
हँसता है, रब उनका मज़ाक़ उड़ाता है।
5फिर वह ग़ुस्से से उन्हें डाँटता, अपना शदीद
ग़ज़ब उन पर नाज़िल करके उन्हें डराता है।
6वह फ़रमाता है, “मैंने ख़ुद अपने बादशाह को
अपने मुक़द्दस पहाड़ सिय्यून पर मुक़र्रर किया
है!”

7आओ, मैं रब का फ़रमान सुनाऊँ। उसने
मुझसे कहा, “तू मेरा बेटा है, आज मैं तेरा बाप
बन गया हूँ।
8मुझसे माँग तो मैं तुझे मीरास में तमाम
अक़वाम अता करूँगा, दुनिया की इंतहा तक सब
कुछ बख़्श दूँगा।
9तू उन्हें लोहे के शाही असा से पाश पाश
करेगा, उन्हें मिट्टी के बरतनों की तरह चकनाचूर
करेगा।”
10चुनाँचे ऐ बादशाहो, समझ से काम लो! ऐ
दुनिया के हुक्मरानो, तरबियत क़बूल करो!
11ख़ौफ़ करते हुए रब की ख़िदमत करो,
लरज़ते हुए ख़ुशी मनाओ।
12बेटे को बोसा दो, ऐसा न हो कि वह ग़ुस्से
हो जाए और तुम रास्ते में ही हलाक हो जाओ।

क्योंकि वह एकदम तैश में आ जाता है। मुबारक हैं वह सब जो उसमें पनाह लेते हैं।

सुबह को मदद के लिए दुआ

3 दाऊद का ज़बूर। उस वक़्त जब उसे अपने बेटे अबीसलूम से भागना पड़ा।

ऐ रब, मेरे दुश्मन कितने ज़्यादा हैं, कितने लोग
मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं!
2मेरे बारे में बहुतेरे कह रहे हैं, “अल्लाह इसे
छुटकारा नहीं देगा।” (सिलाह)[a]

3लेकिन तू ऐ रब, चारों तरफ़ मेरी हिफ़ा-
ज़त करनेवाली ढाल है। तू मेरी इज़्ज़त है जो मेरे
सर को उठाए रखता है।
4मैं बुलंद आवाज़ से रब को पुकारता हूँ,
और वह अपने मुक़द्दस पहाड़ से मेरी सुनता है।
(सिलाह)
5मैं आराम से लेटकर सो गया, फिर जाग उठा,
क्योंकि रब ख़ुद मुझे सँभाले रखता है।
6उन हज़ारों से मैं नहीं डरता जो मुझे घेरे रखते
हैं।
7ऐ रब, उठ! ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे रिहा कर!
क्योंकि तूने मेरे तमाम दुश्मनों के मुँह पर थप्पड़
मारा, तूने बेदीनों के दाँतों को तोड़ दिया है।
8रब के पास नजात है। तेरी बरकत तेरी क़ौम
पर आए। (सिलाह)

शाम को मदद के लिए दुआ

4 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।

ऐ मेरी रास्ती के ख़ुदा, मेरी सुन जब मैं तुझे
पुकारता हूँ। ऐ तू जो मुसीबत में मेरी मख़लसी
रहा है मुझ पर मेहरबानी करके मेरी इल्तिजा सुन!
2ऐ आदमज़ादो, मेरी इज़्ज़त कब तक ख़ाक
में मिलाई जाती रहेगी? तुम कब तक बातिल
चीज़ों से लिपटे रहोगे, कब तक झूट की तलाश
में रहोगे? (सिलाह)
3जान लो कि रब ने ईमानदार को अपने लिए
अलग कर रखा है। रब मेरी सुनेगा जब मैं उसे
पुकारूँगा।
4ग़ुस्से में आते वक़्त गुनाह मत करना। अपने
बिस्तर पर लेटकर मामले पर सोच-बिचार करो,
लेकिन दिल में, ख़ामोशी से। (सिलाह)
5रास्ती की क़ुरबानियाँ पेश करो, और रब पर
भरोसा रखो।
6बहुतेरे शक कर रहे हैं, “कौन हमारे हालात
ठीक करेगा?” ऐ रब, अपने चेहरे का नूर हम पर
चमका!

7तूने मेरे दिल को ख़ुशी से भर दिया है, ऐसी
ख़ुशी से जो उनके पास भी नहीं होती जिनके पास
कसरत का अनाज और अंगूर है।
8मैं आराम से लेटकर सो जाता हूँ, क्योंकि तू
ही ऐ रब मुझे हिफ़ाज़त से बसने देता है।

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

5 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। इसे बाँसरी के साथ गाना है।

ऐ रब, मेरी बातें सुन, मेरी आहों पर ध्यान दे!
2ऐ मेरे बादशाह, मेरे ख़ुदा, मदद के लिए मेरी
चीख़ें सुन, क्योंकि मैं तुझी से दुआ करता हूँ।
3ऐ रब, सुबह को तू मेरी आवाज़ सुनता है,
सुबह को मैं तुझे सब कुछ तरतीब से पेश करके
जवाब का इंतज़ार करने लगता हूँ।

4क्योंकि तू ऐसा ख़ुदा नहीं है जो बेदीनी से ख़ुश
हो। जो बुरा है वह तेरे हुज़ूर नहीं ठहर सकता।

[a]सिलाह ग़ालिबन गाने बजाने के बारे में कोई हिदायत है। मुफ़स्सिरीन में इसके मतलब के बारे में इत्तफ़ाक़े-राय नहीं होती।

5मग़रूर तेरे हुज़ूर खड़े नहीं हो सकते, बदकार
से तू नफ़रत करता है।
6झूट बोलनेवालों को तू तबाह करता, ख़ूनख़ार
और धोकेबाज़ से रब घिन खाता है।

7लेकिन मुझ पर तूने बड़ी मेहरबानी की है,
इसलिए मैं तेरे घर में दाख़िल हो सकता, मैं तेरा
ख़ौफ़ मानकर तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह के सामने
सिजदा करता हूँ।
8ऐ रब, अपनी रास्त राह पर मेरी राहनुमाई कर
ताकि मेरे दुश्मन मुझ पर ग़ालिब न आएँ। अपनी
राह को मेरे आगे हमवार कर।

9क्योंकि उनके मुँह से एक भी क़ाबिले-एतमाद
बात नहीं निकलती। उनका दिल तबाही से भरा
रहता, उनका गला खुली क़ब्र है, और उनकी
ज़बान चिकनी-चुपड़ी बातें उगलती रहती है।
10ऐ रब, उन्हें उनके ग़लत काम का अज्र
दे। उनकी साज़िशें उनकी अपनी तबाही का
बाइस बनें। उन्हें उनके मुतअद्दिद गुनाहों के बाइस
निकालकर मुंतशिर कर दे, क्योंकि वह तुझसे
सरकश हो गए हैं।

11लेकिन जो तुझमें पनाह लेते हैं वह सब ख़ुश
हों, वह अबद तक शादियाना बजाएँ, क्योंकि
तू उन्हें महफ़ूज़ रखता है। तेरे नाम को प्यार
करनेवाले तेरा जशन मनाएँ।
12क्योंकि तू ऐ रब, रास्तबाज़ को बरकत देता
है, तू अपनी मेहरबानी की ढाल से उस की चारों
तरफ़ हिफ़ाज़त करता है।

मुसीबत में दुआ (तौबा का पहला ज़बूर)

6 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
तारदार साज़ों के साथ गाना है।
ऐ रब, ग़ुस्से में मुझे सज़ा न दे, तैश में मुझे
तंबीह न कर।
2ऐ रब, मुझ पर रहम कर, क्योंकि मैं निढाल
हूँ। ऐ रब, मुझे शफ़ा दे, क्योंकि मेरे आज़ा
दहशतज़दा हैं।
3मेरी जान निहायत ख़ौफ़ज़दा है। ऐ रब, तू
कब तक देर करेगा?
4ऐ रब, वापस आकर मेरी जान को बचा।
अपनी शफ़क़त की ख़ातिर मुझे छुटकारा दे।
5क्योंकि मुरदा तुझे याद नहीं करता। पाताल
में कौन तेरी सताइश करेगा?

6मैं कराहते कराहते थक गया हूँ। पूरी रात रोने
से बिस्तर भीग गया है, मेरे आँसुओं से पलंग गल
गया है।
7ग़म के मारे मेरी आँखें सूज गई हैं, मेरे
मुख़ालिफ़ों के हमलों से वह ज़ाया होती जा रही
हैं।
8ऐ बदकारो, मुझसे दूर हो जाओ, क्योंकि रब
ने मेरी आहो-बुका सुनी है।
9रब ने मेरी इल्तिजाओं को सुन लिया है, मेरी
दुआ रब को क़बूल है।
10मेरे तमाम दुश्मनों की रुसवाई हो जाएगी,
और वह सख़्त घबरा जाएंगे। वह मुड़कर अचानक
ही शरमिंदा हो जाएंगे।

इनसाफ़ के लिए दुआ

7 दाऊद का वह मातमी गीत जो उसने कूश
बिनयमीनी की बातों पर रब की तमजीद में गाया।
ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं तुझमें पनाह लेता हूँ। मुझे
उन सबसे बचाकर छुटकारा दे जो मेरा ताक़्क़ुब
कर रहे हैं,
2वरना वह शेरबबर की तरह मुझे फाड़कर
टुकड़े टुकड़े कर देंगे, और बचानेवाला कोई नहीं
होगा।

3ऐ रब मेरे ख़ुदा, अगर मुझसे यह कुछ सरज़द
हुआ और मेरे हाथ क़ुसूरवार हों,

4अगर मैंने उससे बुरा सुलूक किया जिसका
मेरे साथ झगड़ा नहीं था या अपने दुश्मन को
ख़ाहमख़ाह लूट लिया हो
5तो फिर मेरा दुश्मन मेरे पीछे पड़कर मुझे
पकड़ ले। वह मेरी जान को मिट्टी में कुचल दे,
मेरी इज़्ज़त को ख़ाक में मिलाए। (सिलाह)

6ऐ रब, उठ और अपना ग़ज़ब दिखा! मेरे
दुश्मनों के तैश के ख़िलाफ़ खड़ा हो जा। मेरी मदद
करने के लिए जाग उठ! तूने ख़ुद अदालत का
हुक्म दिया है।
7अक़वाम तेरे इर्दगिर्द जमा हो जाएँ जब तू
उनके ऊपर बुलंदियों पर तख़्तनशीन हो जाए।
8रब अक़वाम की अदालत करता है। ऐ रब,
मेरी रास्तबाज़ी और बेगुनाही का लिहाज़ करके
मेरा इनसाफ़ कर।
9ऐ रास्त ख़ुदा, जो दिल की गहराइयों को तह
तक जाँच लेता है, बेदीनों की शरारतें ख़त्म कर
और रास्तबाज़ को क़ायम रख।

10अल्लाह मेरी ढाल है। जो दिल से सीधी राह
पर चलते हैं उन्हें वह रिहाई देता है।
11अल्लाह आदिल मुंसिफ़ है, ऐसा ख़ुदा जो
रोज़ाना लोगों की सरज़निश करता है।

12यक़ीनन इस वक़्त भी दुश्मन अपनी तलवार
को तेज़ कर रहा, अपनी कमान को तानकर
निशाना बाँध रहा है।
13लेकिन जो मोहलक हथियार और जलते हुए
तीर उसने तैयार कर रखे हैं उनकी ज़द में वह ख़ुद
ही आ जाएगा।
14देख, बुराई का बीज उसमें उग आया है। अब
वह शरारत से हामिला होकर फिरता और झूट के
बच्चे जन्म देता है।

15लेकिन जो गढ़ा उसने दूसरों को फँसाने के
लिए खोद खोदकर तैयार किया उसमें ख़ुद गिर
पड़ा है।
16वह ख़ुद अपनी शरारत की ज़द में आएगा,
उसका ज़ुल्म उसके अपने सर पर नाज़िल होगा।

17मैं रब की सताइश करूँगा, क्योंकि वह रास्त
है। मैं रब तआला के नाम की तारीफ़ में गीत
गाऊँगा।

मख़लूक़ात का ताज

8 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
तर्ज़ : गित्तीत।
ऐ रब हमारे आक़ा, तेरा नाम पूरी दुनिया में
कितना शानदार है! तूने आसमान पर ही अपना
जलाल ज़ाहिर कर दिया है।
2अपने मुख़ालिफ़ों के जवाब में तूने छोटे बच्चों
और शीरख़ारों की ज़बान को तैयार किया है ताकि
वह तेरी क़ुव्वत से दुश्मन और कीनापरवर को
ख़त्म करें।

3जब मैं तेरे आसमान का मुलाहज़ा करता हूँ
जो तेरी उँगलियों का काम है, चाँद और सितारों
पर ग़ौर करता हूँ जिनको तूने अपनी अपनी जगह
पर क़ायम किया
4तो इनसान कौन है कि तू उसे याद करे या
आदमज़ाद कि तू उसका ख़याल रखे?
5तूने उसे फ़रिश्तों से कुछ ही कम बनाया,[a] तूने
उसे जलाल और इज़्ज़त का ताज पहनाया।
6तूने उसे अपने हाथों के कामों पर मुक़र्रर
किया, सब कुछ उसके पाँवों के नीचे कर दिया,
7ख़ाह भेड़-बकरियाँ हों ख़ाह गाय-बैल, जंगली
जानवर,
8परिंदे, मछलियाँ या समुंदरी राहों पर
चलनेवाले बाक़ी तमाम जानवर।

[a]एक और मुमकिना तरजुमा : तूने उसे थोड़ी देर के लिए फ़रिश्तों से कम कर दिया (देखिए इबरानियों 2:7,9)।

9ऐ रब हमारे आक़ा, पूरी दुनिया में तेरा नाम
कितना शानदार है!

अल्लाह की क़ुदरत और इनसाफ़

9 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
तर्ज़ : अलामूत-लब्बीन।
ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश करूँगा, तेरे
तमाम मोजिज़ात का बयान करूँगा।
2मैं शादमान होकर तेरी ख़ुशी मनाऊँगा। ऐ
अल्लाह तआला, मैं तेरे नाम की तमजीद में गीत
गाऊँगा।
3जब मेरे दुश्मन पीछे हट जाएंगे तो वह ठोकर
खाकर तेरे हुज़ूर तबाह हो जाएंगे।
4क्योंकि तूने मेरा इनसाफ़ किया है, तू तख़्त
पर बैठकर रास्त मुंसिफ़ साबित हुआ है।
5तूने अक़वाम को मलामत करके बेदीनों को
हलाक कर दिया, उनका नामो-निशान हमेशा के
लिए मिटा दिया है।
6दुश्मन तबाह हो गया, अबद तक मलबे का ढेर
बन गया है। तूने शहरों को जड़ से उखाड़ दिया है,
और उनकी याद तक बाक़ी नहीं रहेगी।

7लेकिन रब हमेशा तक तख़्तनशीन रहेगा, और
उसने अपने तख़्त को अदालत करने के लिए खड़ा
किया है।
8वह रास्ती से दुनिया की अदालत करेगा,
इनसाफ़ से उम्मतों का फ़ैसला करेगा।
9रब मज़लूमों की पनाहगाह है, एक क़िला
जिसमें वह मुसीबत के वक़्त महफ़ूज़ रहते हैं।

10ऐ रब, जो तेरा नाम जानते वह तुझ पर
भरोसा रखते हैं। क्योंकि जो तेरे तालिब हैं उन्हें
तूने कभी तर्क नहीं किया।
11रब की तमजीद में गीत गाओ जो सिय्यून
पहाड़ पर तख़्तनशीन है, उम्मतों में वह कुछ
सुनाओ जो उसने किया है।
12क्योंकि जो मक़तूलों का इंतक़ाम लेता है
वह मुसीबतज़दों की चीख़ें नज़रंदाज़ नहीं करता।

13ऐ रब, मुझ पर रहम कर! मेरी उस तकलीफ़
पर ग़ौर कर जो नफ़रत करनेवाले मुझे पहुँचा रहे
हैं। मुझे मौत के दरवाज़ों में से निकालकर उठा ले
14ताकि मैं सिय्यून बेटी के दरवाज़ों में तेरी
सताइश करके वह कुछ सुनाऊँ जो तूने मेरे लिए
किया है, ताकि मैं तेरी नजात की ख़ुशी मनाऊँ।

15अक़वाम उस गढ़े में ख़ुद गिर गई हैं जो
उन्होंने दूसरों को पकड़ने के लिए खोदा था। उनके
अपने पाँव उस जाल में फँस गए हैं जो उन्होंने
दूसरों को फँसाने के लिए बिछा दिया था।
16रब ने इनसाफ़ करके अपना इज़हार किया
तो बेदीन अपने हाथ के फंदे में उलझ गया।
(हिग्गायून का तर्ज़। सिलाह)
17बेदीन पाताल में उतरेंगे, जो उम्मतें अल्लाह
को भूल गई हैं वह सब वहाँ जाएँगी।
18क्योंकि वह ज़रूरतमंदों को हमेशा तक नहीं
भूलेगा, मुसीबतज़दों की उम्मीद अबद तक जाती
नहीं रहेगी।

19ऐ रब, उठ खड़ा हो ताकि इनसान ग़ालिब न
आए। बख़्श दे कि तेरे हुज़ूर अक़वाम की अदालत
की जाए।
20ऐ रब, उन्हें दहशतज़दा कर ताकि अक़वाम
जान लें कि इनसान ही हैं। (सिलाह)

इनसाफ़ के लिए दुआ

10 ऐ रब, तू इतना दूर क्यों खड़ा है?
मुसीबत के वक़्त तू अपने आपको
पोशीदा क्यों रखता है?

2बेदीन तकब्बुर से मुसीबतज़दों के पीछे लग
गए हैं, और अब बेचारे उनके जालों में उलझने
लगे हैं।
3क्योंकि बेदीन अपनी दिली आरज़ुओं पर
शेख़ी मारता है, और नाजायज़ नफ़ा कमानेवाला
लानत करके रब को हक़ीर जानता है।

4बेदीन ग़ुरूर से फूलकर कहता है, “अल्लाह
मुझसे जवाबतलबी नहीं करेगा।” उसके तमाम
ख़यालात इस बात पर मबनी हैं कि कोई ख़ुदा
नहीं है।
5जो कुछ भी करे उसमें वह कामयाब है। तेरी
अदालतें उसे बुलंदियों में कहीं दूर लगती हैं जबकि
वह अपने तमाम मुख़ालिफ़ों के ख़िलाफ़ फुँकारता
है।
6दिल में वह सोचता है, “मैं कभी नहीं
डगमगाऊँगा, नसल-दर-नसल मुसीबत के पंजों
से बचा रहूँगा।”
7उसका मुँह लानतों, फ़रेब और ज़ुल्म से भरा
रहता, उस की ज़बान नुक़सान और आफ़त
पहुँचाने के लिए तैयार रहती है।
8वह आबादियों के क़रीब ताक में बैठकर चुपके
से बेगुनाहों को मार डालता है, उस की आँखें
बदक़िस्मतों की घात में रहती हैं।
9जंगल में बैठे शेरबबर की तरह ताक में रहकर
वह मुसीबतज़दा पर हमला करने का मौक़ा ढूँडता
है। जब उसे पकड़ ले तो उसे अपने जाल में
घसीटकर ले जाता है।
10उसके शिकार पाश पाश होकर झुक जाते हैं,
बेचारे उस की ज़बरदस्त ताक़त की ज़द में आकर
गिर जाते हैं।
11तब वह दिल में कहता है, “अल्लाह भूल
गया है, उसने अपना चेहरा छुपा लिया है, उसे
यह कभी नज़र नहीं आएगा।”

12ऐ रब, उठ! ऐ अल्लाह, अपना हाथ उठाकर
नाचारों की मदद कर और उन्हें न भूल।
13बेदीन अल्लाह की तहक़ीर क्यों करे, वह
दिल में क्यों कहे, “अल्लाह मुझसे जवाब तलब
नहीं करेगा”?
14ऐ अल्लाह, हक़ीक़त में तू यह सब कुछ
देखता है। तू हमारी तकलीफ़ और परेशानी पर
ध्यान देकर मुनासिब जवाब देगा। नाचार अपना
मामला तुझ पर छोड़ देता है, क्योंकि तू यतीमों
का मददगार है।
15शरीर और बेदीन आदमी का बाज़ू तोड़ दे!
उससे उस की शरारतों की जवाबतलबी कर ताकि
उसका पूरा असर मिट जाए।

16रब अबद तक बादशाह है। उसके मुल्क से
दीगर अक़वाम ग़ायब हो गई हैं।
17ऐ रब, तूने नाचारों की आरज़ू सुन ली है। तू
उनके दिलों को मज़बूत करेगा और उन पर ध्यान
देकर
18यतीमों और मज़लूमों का इनसाफ़ करेगा
ताकि आइंदा कोई भी इनसान मुल्क में दहशत
न फैलाए।

रब पर भरोसा

11 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
मैंने रब में पनाह ली है। तो फिर तुम किस
तरह मुझसे कहते हो, “चल, परिंदे की तरह
फड़फड़ाकर पहाड़ों में भाग जा”?
2क्योंकि देखो, बेदीन कमान तानकर तीर को
ताँत पर लगा चुके हैं। अब वह अंधेरे में बैठकर इस
इंतज़ार में हैं कि दिल से सीधी राह पर चलनेवालों
पर चलाएँ।
3रास्तबाज़ क्या करे? उन्होंने तो बुनियाद को
ही तबाह कर दिया है।

4लेकिन रब अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह में है,
रब का तख़्त आसमान पर है। वहाँ से वह देखता
है, वहाँ से उस की आँखें आदमज़ादों को परखती
हैं।
5रब रास्तबाज़ को परखता तो है, लेकिन बेदीन
और ज़ालिम से नफ़रत ही करता है।
6बेदीनों पर वह जलते हुए कोयले और
शोलाज़न गंधक बरसा देगा। झुलसनेवाली आँधी
उनका हिस्सा होगी।
7क्योंकि रब रास्त है, और उसे इनसाफ़ प्यारा
है। सिर्फ़ सीधी राह पर चलनेवाले उसका चेहरा
देखेंगे।

मदद के लिए दुआ

12 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : शमीनीत।

ऐ रब, मदद फ़रमा! क्योंकि ईमानदार ख़त्म
हो गए हैं। दियानतदार इनसानों में से मिट गए हैं।
2आपस में सब झूट बोलते हैं। उनकी ज़बान
पर चिकनी-चुपड़ी बातें होती हैं जबकि दिल में
कुछ और ही होता है।
3रब तमाम चिकनी-चुपड़ी और शेख़ीबाज़
ज़बानों को काट डाले!
4वह उन सबको मिटा दे जो कहते हैं, "हम
अपनी लायक़ ज़बान के बाइस ताक़तवर हैं।
हमारे होंट हमें सहारा देते हैं तो कौन हमारा
मालिक होगा? कोई नहीं!"

5लेकिन रब फ़रमाता है, "नाचारों पर तुम्हारे
ज़ुल्म की ख़बर और ज़रूरतमंदों की कराहती
आवाज़ें मेरे सामने आई हैं। अब मैं उठकर उन्हें
उनसे छुटकारा दूँगा जो उनके ख़िलाफ़ फुँकारते
हैं।"

6रब के फ़रमान पाक हैं, वह भट्टी में सात बार
साफ़ की गई चाँदी की मानिंद ख़ालिस हैं।
7ऐ रब, तू ही उन्हें महफ़ूज़ रखेगा, तू ही उन्हें
अबद तक इस नसल से बचाए रखेगा,
8गो बेदीन आज़ादी से इधर-उधर फिरते हैं,
और इनसानों के दरमियान कमीनापन का राज
है।

मदद के लिए दुआ

13 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, कब तक? क्या तू मुझे अबद तक भूला
रहेगा? तू कब तक अपना चेहरा मुझसे छुपाए
रखेगा?
2मेरी जान कब तक परेशानियों में मुब्तला रहे,
मेरा दिल कब तक रोज़ बरोज़ दुख उठाता रहे?
मेरा दुश्मन कब तक मुझ पर ग़ालिब रहेगा?
3ऐ रब मेरे ख़ुदा, मुझ पर नज़र डालकर मेरी
सुन! मेरी आँखों को रौशन कर, वरना मैं मौत की
नींद सो जाऊँगा।
4तब मेरा दुश्मन कहेगा, "मैं उस पर ग़ालिब
आ गया हूँ!" और मेरे मुख़ालिफ़ शादियाना
बजाएंगे कि मैं हिल गया हूँ।

5लेकिन मैं तेरी शफ़क़त पर भरोसा रखता हूँ,
मेरा दिल तेरी नजात देखकर ख़ुशी मनाएगा।
6मैं रब की तमजीद में गीत गाऊँगा, क्योंकि
उसने मुझ पर एहसान किया है।

बेदीन की हमाक़त

14 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

अहमक़ दिल में कहता है, "अल्लाह है ही
नहीं!" ऐसे लोग बदचलन हैं, उनकी हरकतें
क़ाबिले-घिन हैं। एक भी नहीं है जो अच्छा काम
करे।
2रब ने आसमान से इनसान पर नज़र डाली
ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई
अल्लाह का तालिब है?
3अफ़सोस, सब सहीह राह से भटक गए,
सबके सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई
करता हो, एक भी नहीं।

4क्या जो बदी करके मेरी क़ौम को रोटी की
तरह खा लेते हैं उनमें से एक को भी समझ नहीं
आती? वह तो रब को पुकारते ही नहीं।

5तब उन पर सख़्त दहशत छा गई, क्योंकि
अल्लाह रास्तबाज़ की नसल के साथ है।
6तुम नाचार के मनसूबों को ख़ाक में मिलाना
चाहते हो, लेकिन रब ख़ुद उस की पनाहगाह है।

7काश कोहे-सिय्यून से इसराईल की नजात
निकले! जब रब अपनी क़ौम को बहाल करेगा

तो याक़ूब ख़ुशी के नारे लगाएगा, इसराईल बाग़ बाग़ होगा।

कौन अल्लाह के हुज़ूर क़ायम रह सकता है?

15 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, कौन तेरे ख़ैमे में ठहर सकता है? किस को तेरे मुक़द्दस पहाड़ पर रहने की इजाज़त है?

2वह जिसका चाल-चलन बेगुनाह है, जो रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारकर दिल से सच बोलता है।

3ऐसा शख़्स अपनी ज़बान से किसी पर तोहमत नहीं लगाता। न वह अपने पड़ोसी पर ज़्यादती करता, न उस की बेइज़्ज़ती करता है।

4वह मरदूद को हक़ीर जानता लेकिन ख़ुदातरस की इज़्ज़त करता है। जो वादा उसने क़सम खाकर किया उसे पूरा करता है, ख़ाह उसे कितना ही नुक़सान क्यों न पहुँचे।

5वह सूद लिए बग़ैर उधार देता है और उस की रिश्वत क़बूल नहीं करता जो बेगुनाह का हक़ मारना चाहता है। ऐसा शख़्स कभी डाँवाँडोल नहीं होगा।

एतमाद की दुआ

16 दाऊद का एक सुनहरा ज़बूर।
ऐ अल्लाह, मुझे महफ़ूज़ रख, क्योंकि तुझमें मैं पनाह लेता हूँ।

2मैंने रब से कहा, “तू मेरा आक़ा है, तू ही मेरी ख़ुशहाली का वाहिद सरचश्मा है।”

3मुल्क में जो मुक़द्दसीन हैं वही मेरे सूरमे हैं, उन्हीं को मैं पसंद करता हूँ।

4लेकिन जो दीगर माबूदों के पीछे भागे रहते हैं उनकी तकलीफ़ बढ़ती जाएगी। न मैं उनकी ख़ून की क़ुरबानियों को पेश करूँगा, न उनके नामों का ज़िक्र तक करूँगा।

5ऐ रब, तू मेरी मीरास और मेरा हिस्सा है। मेरा नसीब तेरे हाथ में है।

6जब क़ुरा डाला गया तो मुझे ख़ुशगवार ज़मीन मिल गई। यक़ीनन मेरी मीरास मुझे बहुत पसंद है।

7मैं रब की सताइश करूँगा जिसने मुझे मशवरा दिया है। रात को भी मेरा दिल मेरी हिदायत करता है।

8रब हर वक़्त मेरी आँखों के सामने रहता है। वह मेरे दहने हाथ रहता है, इसलिए मैं नहीं डगमगाऊँगा।

9इसलिए मेरा दिल शादमान है, मेरी जान ख़ुशी के नारे लगाती है। हाँ, मेरा बदन पुरसुकून ज़िंदगी गुज़ारेगा।

10क्योंकि तू मेरी जान को पाताल में नहीं छोड़ेगा, और न अपने मुक़द्दस को गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचने देगा।

11तू मुझे ज़िंदगी की राह से आगाह करता है। तेरे हुज़ूर से भरपूर ख़ुशियाँ, तेरे दहने हाथ से अबदी मसर्रतें हासिल होती हैं।

बेगुनाह शख़्स की दुआ

17 दाऊद की दुआ।
ऐ रब, इनसाफ़ के लिए मेरी फ़रियाद सुन, मेरी आहो-ज़ारी पर ध्यान दे। मेरी दुआ पर ग़ौर कर, क्योंकि वह फ़रेबदेह होंटों से नहीं निकलती।

2तेरे हुज़ूर मेरा इनसाफ़ किया जाए, तेरी आँखें उन बातों का मुशाहदा करें जो सच हैं।

3तूने मेरे दिल को जाँच लिया, रात को मेरा मुआयना किया है। तूने मुझे भट्टी में डाल दिया ताकि नापाक चीज़ें दूर करे, गो ऐसी कोई चीज़ नहीं मिली। क्योंकि मैंने पूरा इरादा कर लिया है कि मेरे मुँह से बुरी बात नहीं निकलेगी।

4जो कुछ भी दूसरे करते हैं मैंने ख़ुद तेरे मुँह के फ़रमान के ताबे रहकर अपने आपको ज़ालिमों की राहों से दूर रखा है।

5मैं क़दम बक़दम तेरी राहों में रहा, मेरे पाँव कभी न डगमगाए।

6ऐ अल्लाह, मैं तुझे पुकारता हूँ, क्योंकि तू
मेरी सुनेगा। कान लगाकर मेरी दुआ को सुन।
7तू जो अपने दहने हाथ से उन्हें रिहाई देता
है जो अपने मुख़ालिफ़ों से तुझमें पनाह लेते हैं,
मोजिज़ाना तौर पर अपनी शफ़क़त का इज़हार
कर।
8आँख की पुतली की तरह मेरी हिफ़ाज़त कर,
अपने परों के साये में मुझे छुपा ले।
9उन बेदीनों से मुझे महफ़ूज़ रख जो मुझ पर
तबाहकुन हमले कर रहे हैं, उन दुश्मनों से जो मुझे
घेरकर मार डालने की कोशिश कर रहे हैं।
10वह सरकश हो गए हैं, उनके मुँह घमंड की
बातें करते हैं।
11जिधर भी हम क़दम उठाएँ वहाँ वह भी पहुँच
जाते हैं। अब उन्होंने हमें घेर लिया है, वह घूर
घूरकर हमें ज़मीन पर पटख़ने का मौक़ा ढूँड रहे
हैं।
12वह उस शेरबबर की मानिंद हैं जो शिकार
को फाड़ने के लिए तड़पता है, उस जवान शेर की
मानिंद जो ताक में बैठा है।

13ऐ रब, उठ और उनका सामना कर, उन्हें
ज़मीन पर पटख़ दे! अपनी तलवार से मेरी जान
को बेदीनों से बचा।
14ऐ रब, अपने हाथ से मुझे इनसे छुटकारा दे।
उन्हें तो इस दुनिया में अपना हिस्सा मिल चुका
है। क्योंकि तूने उनके पेट को अपने माल से भर
दिया, बल्कि उनके बेटे भी सेर हो गए हैं और
इतना बाक़ी है कि वह अपनी औलाद के लिए भी
काफ़ी कुछ छोड़ जाएंगे।
15लेकिन मैं ख़ुद रास्तबाज़ साबित होकर तेरे
चेहरे का मुशाहदा करूँगा, मैं जागकर तेरी सूरत
से सेर हो जाऊँगा।

दाऊद का फ़तह का गीत

18 रब के ख़ादिम दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए। दाऊद ने रब के लिए यह
गीत गाया जब रब ने उसे तमाम दुश्मनों और साऊल से
बचाया। वह बोला,

ऐ रब मेरी क़ुव्वत, मैं तुझे प्यार करता हूँ।
2रब मेरी चटान, मेरा क़िला और मेरा
नजातदहिंदा है। मेरा ख़ुदा मेरी चटान है जिसमें
मैं पनाह लेता हूँ। वह मेरी ढाल, मेरी नजात का
पहाड़, मेरा बुलंद हिसार है।
3मैं रब को पुकारता हूँ, उस की तमजीद हो!
तब वह मुझे दुश्मनों से छुटकारा देता है।

4मौत के रस्सों ने मुझे घेर लिया, हलाकत के
सैलाब ने मेरे दिल पर दहशत तारी की।
5पाताल के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया, मौत ने
मेरे रास्ते में अपने फंदे डाल दिए।
6जब मैं मुसीबत में फँस गया तो मैंने रब को
पुकारा। मैंने मदद के लिए अपने ख़ुदा से फ़रियाद
की तो उसने अपनी सुकूनतगाह से मेरी आवाज़
सुनी, मेरी चीख़ें उसके कान तक पहुँच गईं।

7तब ज़मीन लरज़ उठी और थरथराने लगी,
पहाड़ों की बुनियादें रब के ग़ज़ब के सामने काँपने
और झूलने लगीं।
8उस की नाक से धुआँ निकल आया, उसके
मुँह से भस्म करनेवाले शोले और दहकते कोयले
भड़क उठे।
9आसमान को झुकाकर वह नाज़िल हुआ। जब
उतर आया तो उसके पाँवों के नीचे अंधेरा ही
अंधेरा था।
10वह करूबी फ़रिश्ते पर सवार हुआ और
उड़कर हवा के परों पर मँडलाने लगा।
11उसने अंधेरे को अपनी छुपने की जगह
बनाया, बारिश के काले और घने बादल ख़ैमे की
तरह अपने गिर्दागिर्द लगाए।
12उसके हुज़ूर की तेज़ रौशनी से उसके बादल
ओले और शोलाज़न कोयले लेकर निकल आए।
13रब आसमान से कड़कने लगा, अल्लाह
तआला की आवाज़ गूँज उठी। तब ओले और
शोलाज़न कोयले बरसने लगे।

14उसने अपने तीर चलाए तो दुश्मन तित्तर-
बित्तर हो गए। उस की तेज़ बिजली इधर-उधर
गिरती गई तो उनमें हलचल मच गई।
15ऐ रब, तूने डाँटा तो समुंदर की वादियाँ
ज़ाहिर हुईं, जब तू ग़ुस्से में गरजा तो तेरे दम के
झोंकों से ज़मीन की बुनियादें नज़र आईं।

16बुलंदियों पर से अपना हाथ बढ़ाकर उसने
मुझे पकड़ लिया, मुझे गहरे पानी में से खींचकर
निकाल लाया।
17उसने मुझे मेरे ज़बरदस्त दुश्मन से बचाया,
उनसे जो मुझसे नफ़रत करते हैं, जिन पर मैं
ग़ालिब न आ सका।
18जिस दिन मैं मुसीबत में फँस गया उस दिन
उन्होंने मुझ पर हमला किया, लेकिन रब मेरा
सहारा बना रहा।
19उसने मुझे तंग जगह से निकालकर छुटकारा
दिया, क्योंकि वह मुझसे ख़ुश था।
20रब मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र देता है। मेरे
हाथ साफ़ हैं, इसलिए वह मुझे बरकत देता है।
21क्योंकि मैं रब की राहों पर चलता रहा हूँ, मैं
बदी करने से अपने ख़ुदा से दूर नहीं हुआ।
22उसके तमाम अहकाम मेरे सामने रहे हैं, मैंने
उसके फ़रमानों को रद्द नहीं किया।
23उसके सामने ही मैं बेइलज़ाम रहा, गुनाह
करने से बाज़ रहा हूँ।
24इसलिए रब ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र
दिया, क्योंकि उस की आँखों के सामने ही में
पाक-साफ़ साबित हुआ।

25ऐ अल्लाह, जो वफ़ादार है उसके साथ तेरा
सुलूक वफ़ादारी का है, जो बेइलज़ाम है उसके
साथ तेरा सुलूक बेइलज़ाम है।
26जो पाक है उसके साथ तेरा सुलूक पाक है।
लेकिन जो कजरौ है उसके साथ तेरा सुलूक भी
कजरवी का है।
27क्योंकि तू पस्तहालों को नजात देता और
मग़रूर आँखों को पस्त करता है।
28ऐ रब, तू ही मेरा चराग़ जलाता, मेरा ख़ुदा
ही मेरे अंधेरे को रौशन करता है।
29क्योंकि तेरे साथ मैं फ़ौजी दस्ते पर हमला
कर सकता, अपने ख़ुदा के साथ दीवार को फलाँग
सकता हूँ।
30अल्लाह की राह कामिल है, रब का फ़रमान
ख़ालिस है। जो भी उसमें पनाह ले उस की वह
ढाल है।
31क्योंकि रब के सिवा कौन ख़ुदा है? हमारे
ख़ुदा के सिवा कौन चटान है?
32अल्लाह मुझे क़ुव्वत से कमरबस्ता करता,
वह मेरी राह को कामिल कर देता है।
33वह मेरे पाँवों को हिरन की-सी फुरती अता
करता, मुझे मज़बूती से मेरी बुलंदियों पर खड़ा
करता है।
34वह मेरे हाथों को जंग करने की तरबियत
देता है। अब मेरे बाज़ू पीतल की कमान को भी
तान लेते हैं।

35ऐ रब, तूने मुझे अपनी नजात की ढाल बख़्श
दी है। तेरे दहने हाथ ने मुझे क़ायम रखा, तेरी
नरमी ने मुझे बड़ा बना दिया है।
36तू मेरे क़दमों के लिए रास्ता बना देता है,
इसलिए मेरे टख़ने नहीं डगमगाते।
37मैंने अपने दुश्मनों का ताक़्क़ुब करके उन्हें
पकड़ लिया, मैं बाज़ न आया जब तक वह ख़त्म
न हो गए।
38मैंने उन्हें यों पाश पाश कर दिया कि दुबारा
उठ न सके बल्कि गिरकर मेरे पाँवों तले पड़े रहे।
39क्योंकि तूने मुझे जंग करने के लिए क़ुव्वत
से कमरबस्ता कर दिया, तूने मेरे मुख़ालिफ़ों को
मेरे सामने झुका दिया।
40तूने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने से भगा दिया,
और मैंने नफ़रत करनेवालों को तबाह कर दिया।
41वह मदद के लिए चीख़ते-चिल्लाते रहे,
लेकिन बचानेवाला कोई नहीं था। वह रब को
पुकारते रहे, लेकिन उसने जवाब न दिया।

42मैंने उन्हें चूर चूर करके गर्द की तरह हवा में
उड़ा दिया। मैंने उन्हें कचरे की तरह गली में फेंक
दिया।

43तूने मुझे क़ौम के झगड़ों से बचाकर अक़वाम
का सरदार बना दिया है। जिस क़ौम से मैं
नावाक़िफ़ था वह मेरी ख़िदमत करती है।
44ज्योंही मैं बात करता हूँ तो लोग मेरी सुनते
हैं। परदेसी दबककर मेरी ख़ुशामद करते हैं।
45वह हिम्मत हारकर काँपते हुए अपने क़िलों
से निकल आते हैं।

46रब ज़िंदा है! मेरी चटान की तमजीद हो!
मेरी नजात के ख़ुदा की ताज़ीम हो!
47वही ख़ुदा है जो मेरा इंतक़ाम लेता, अक़वाम
को मेरे ताबे कर देता
48और मुझे मेरे दुश्मनों से छुटकारा देता है।
यक़ीनन तू मुझे मेरे मुख़ालिफ़ों पर सरफ़राज़
करता, मुझे ज़ालिमों से बचाए रखता है।
49ऐ रब, इसलिए मैं अक़वाम में तेरी हम्दो-
सना करूँगा, तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।
50क्योंकि रब अपने बादशाह को बड़ी नजात
देता है, वह अपने मसह किए हुए बादशाह दाऊद
और उस की औलाद पर हमेशा तक मेहरबान
रहेगा।

मख़लूक़ात में अल्लाह का जलाल

19 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।

आसमान अल्लाह के जलाल का एलान करते
हैं, आसमानी गुंबद उसके हाथों का काम बयान
करता है।
2एक दिन दूसरे को इत्तला देता, एक रात दूसरी
को ख़बर पहुँचाती है,
3लेकिन ज़बान से नहीं। गो उनकी आवाज़
सुनाई नहीं देती,
4तो भी उनकी आवाज़ निकलकर पूरी दुनिया
में सुनाई देती, उनके अलफ़ाज़ दुनिया की इंतहा
तक पहुँच जाते हैं। वहाँ अल्लाह ने आफ़ताब के
लिए ख़ैमा लगाया है।
5जिस तरह दूल्हा अपनी ख़ाबगाह से निकलता
है उसी तरह सूरज निकलकर पहलवान की तरह
अपनी दौड़ दौड़ने पर ख़ुशी मनाता है।
6आसमान के एक सिरे से चढ़कर उसका
चक्कर दूसरे सिरे तक लगता है। उस की तपती
गरमी से कोई भी चीज़ पोशीदा नहीं रहती।

7रब की शरीअत कामिल है, उससे जान में
जान आ जाती है। रब के अहकाम क़ाबिले-
एतमाद हैं, उनसे सादालौह दानिशमंद हो जाता
है।
8रब की हिदायात बा-इनसाफ़ हैं, उनसे दिल
बाग़ बाग़ हो जाता है। रब के अहकाम पाक हैं,
उनसे आँखें चमक उठती हैं।
9रब का ख़ौफ़ पाक है और अबद तक क़ायम
रहेगा। रब के फ़रमान सच्चे और सबके सब रास्त
हैं।
10वह सोने बल्कि ख़ालिस सोने के ढेर से
ज़्यादा मरग़ूब हैं। वह शहद बल्कि छत्ते के ताज़ा
शहद से ज़्यादा मीठे हैं।

11उनसे तेरे ख़ादिम को आगाह किया जाता है,
उन पर अमल करने से बड़ा अज्र मिलता है।
12जो ख़ताएँ बेख़बरी में सरज़द हुईं कौन उन्हें
जानता है? मेरे पोशीदा गुनाहों को मुआफ़ कर!
13अपने ख़ादिम को गुस्ताख़ों से महफ़ूज़ रख
ताकि वह मुझ पर हुकूमत न करें। तब मैं
बेइलज़ाम होकर संगीन गुनाह से पाक रहूँगा।

14ऐ रब, बख़्श दे कि मेरे मुँह की बातें और मेरे
दिल की सोच-बिचार तुझे पसंद आए। तू ही मेरी
चटान और मेरा छुड़ानेवाला है।

फ़तह के लिए दुआ

20 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।

मुसीबत के दिन रब तेरी सुने, याक़ूब के ख़ुदा
का नाम तुझे महफ़ूज़ रखे।
2वह मक़दिस से तेरी मदद भेजे, वह सिय्यून
से तेरा सहारा बने।
3वह तेरी ग़ल्ला की नज़रें याद करे, तेरी भस्म
होनेवाली क़ुरबानियाँ क़बूल फ़रमाए। (सिलाह)
4वह तेरे दिल की आरज़ू पूरी करे, तेरे तमाम
मनसूबों को कामयाबी बख़्शे।
5तब हम तेरी नजात की ख़ुशी मनाएँगे, हम
अपने ख़ुदा के नाम में फ़तह का झंडा गाड़ेंगे। रब
तेरी तमाम गुज़ारिशें पूरी करे।

6अब मैंने जान लिया है कि रब अपने मसह
किए हुए बादशाह की मदद करता है। वह अपने
मुक़द्दस आसमान से उस की सुनकर अपने दहने
हाथ की क़ुदरत से उसे छुटकारा देगा।
7बाज़ अपने रथों पर, बाज़ अपने घोड़ों पर
फ़ख़र करते हैं, लेकिन हम रब अपने ख़ुदा के
नाम पर फ़ख़र करेंगे।
8हमारे दुश्मन झुककर गिर जाएंगे, लेकिन हम
उठकर मज़बूती से खड़े रहेंगे।

9ऐ रब, हमारी मदद फ़रमा! बादशाह हमारी
सुने जब हम मदद के लिए पुकारें।

बादशाह के लिए अल्लाह की मदद

21 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
ऐ रब, बादशाह तेरी क़ुव्वत देखकर शादमान
है, वह तेरी नजात की कितनी बड़ी ख़ुशी मनाता
है।
2तूने उस की दिली ख़ाहिश पूरी की और
इनकार न किया जब उस की आरज़ू ने होंटों पर
अलफ़ाज़ का रूप धारा। (सिलाह)
3क्योंकि तू अच्छी अच्छी बरकतें अपने साथ
लेकर उससे मिलने आया, तूने उसे ख़ालिस सोने
का ताज पहनाया।
4उसने तुझसे ज़िंदगी पाने की आरज़ू की तो
तूने उसे उम्र की दराज़ी बख़्शी, मज़ीद इतने दिन
कि उनकी इंतहा नहीं।
5तेरी नजात से उसे बड़ी इज़्ज़त हासिल हुई,
तूने उसे शानो-शौकत से आरास्ता किया।
6क्योंकि तू उसे अबद तक बरकत देता, उसे
अपने चेहरे के हुज़ूर लाकर निहायत ख़ुश कर देता
है।
7क्योंकि बादशाह रब पर एतमाद करता है,
अल्लाह तआला की शफ़क़त उसे डगमगाने से
बचाएगी।

8तेरे दुश्मन तेरे क़ब्ज़े में आ जाएंगे, जो तुझसे
नफ़रत करते हैं उन्हें तेरा दहना हाथ पकड़ लेगा।
9जब तू उन पर ज़ाहिर होगा तो वह भड़कती
भट्टी की-सी मुसीबत में फँस जाएंगे। रब अपने
ग़ज़ब में उन्हें हड़प कर लेगा, और आग उन्हें खा
जाएगी।
10तू उनकी औलाद को रूए-ज़मीन पर से मिटा
डालेगा, इनसानों में उनका नामो-निशान तक नहीं
रहेगा।
11गो वह तेरे ख़िलाफ़ साज़िशें करते हैं तो भी
उनके बुरे मनसूबे नाकाम रहेंगे।
12क्योंकि तू उन्हें भगाकर उनके चेहरों को
अपने तीरों का निशाना बना देगा।
13ऐ रब, उठ और अपनी क़ुदरत का इज़हार
कर ताकि हम तेरी क़ुदरत की तमजीद में साज़
बजाकर गीत गाएँ।

रास्तबाज़ का दुख

22 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तर्ज़ : तुलूए-सुबह की हिरनी।
ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों तर्क
कर दिया है? मैं चीख़ रहा हूँ, लेकिन मेरी नजात
नज़र नहीं आती।
2ऐ मेरे ख़ुदा, दिन को मैं चिल्लाता हूँ, लेकिन
तू जवाब नहीं देता। रात को पुकारता हूँ, लेकिन
आराम नहीं पाता।

3लेकिन तू क़ुद्दूस है, तू जो इसराईल की
मद्हसराई पर तख़्तनशीन होता है।
4तुझ पर हमारे बापदादा ने भरोसा रखा, और
जब भरोसा रखा तो तूने उन्हें रिहाई दी।
5जब उन्होंने मदद के लिए तुझे पुकारा तो बचने
का रास्ता खुल गया। जब उन्होंने तुझ पर एतमाद
किया तो शरमिंदा न हुए।

6लेकिन मैं कीड़ा हूँ, मुझे इनसान नहीं समझा
जाता। लोग मेरी बेइज़्ज़ती करते, मुझे हक़ीर
जानते हैं।
7सब मुझे देखकर मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं। वह
मुँह बनाकर तौबा तौबा करते और कहते हैं,
8"उसने अपना मामला रब के सुपुर्द किया है।
अब रब ही उसे बचाए। वही उसे छुटकारा दे,
क्योंकि वही उससे ख़ुश है।"

9यक़ीनन तू मुझे माँ के पेट से निकाल लाया।
मैं अभी माँ का दूध पीता था कि तूने मेरे दिल में
भरोसा पैदा किया।
10ज्योंही मैं पैदा हुआ मुझे तुझ पर छोड़ दिया
गया। माँ के पेट से ही तू मेरा ख़ुदा रहा है।
11मुझसे दूर न रह। क्योंकि मुसीबत ने मेरा
दामन पकड़ लिया है, और कोई नहीं जो मेरी मदद
करे।
12मुतअद्दिद बैलों ने मुझे घेर लिया, बसन के
ताक़तवर साँड चारों तरफ़ जमा हो गए हैं।
13मेरे ख़िलाफ़ उन्होंने अपने मुँह खोल दिए हैं,
उस दहाड़ते हुए शेरबबर की तरह जो शिकार को
फाड़ने के जोश में आ गया है।
14मुझे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेला गया है,
मेरी तमाम हड्डियाँ अलग अलग हो गई हैं, जिस्म
के अंदर मेरा दिल मोम की तरह पिघल गया है।
15मेरी ताक़त ठीकरे की तरह ख़ुश्क हो गई,
मेरी ज़बान तालू से चिपक गई है। हाँ, तूने मुझे
मौत की ख़ाक में लिटा दिया है।
16कुत्तों ने मुझे घेर रखा, शरीरों के जत्थे ने मेरा
इहाता किया है। उन्होंने मेरे हाथों और पाँवों को
छेद डाला है।
17मैं अपनी हड्डियों को गिन सकता हूँ। लोग
घूर घूरकर मेरी मुसीबत से ख़ुश होते हैं।
18वह आपस में मेरे कपड़े बाँट लेते और मेरे
लिबास पर क़ुरा डालते हैं।

19लेकिन तू ऐ रब, दूर न रह! ऐ मेरी क़ुव्वत,
मेरी मदद करने के लिए जल्दी कर!
20मेरी जान को तलवार से बचा, मेरी ज़िंदगी
को कुत्ते के पंजे से छुड़ा।
21शेर के मुँह से मुझे मख़लसी दे, जंगली बैलों
के सींगों से रिहाई अता कर।

ऐ रब, तूने मेरी सुनी है!
22मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम
का एलान करूँगा, जमात के दरमियान तेरी
मद्हसराई करूँगा।
23तुम जो रब का ख़ौफ़ मानते हो, उस की
तमजीद करो! ऐ याक़ूब की तमाम औलाद,
उसका एहतराम करो! ऐ इसराईल के तमाम
फ़रज़ंदो, उससे ख़ौफ़ खाओ!
24क्योंकि न उसने मुसीबतज़दा का दुख हक़ीर
जाना, न उस की तकलीफ़ से घिन खाई। उसने
अपना मुँह उससे न छुपाया बल्कि उस की सुनी
जब वह मदद के लिए चीख़ने-चिल्लाने लगा।
25ऐ ख़ुदा, बड़े इजतिमा में मैं तेरी सताइश
करूँगा, ख़ुदातरसों के सामने अपनी मन्नत पूरी
करूँगा।
26नाचार जी भरकर खाएँगे, रब के तालिब उस
की हम्दो-सना करेंगे। तुम्हारे दिल अबद तक ज़िंदा
रहें!
27लोग दुनिया की इंतहा तक रब को याद
करके उस की तरफ़ रुजू करेंगे। ग़ैरअक़वाम के
तमाम ख़ानदान उसे सिजदा करेंगे।

28क्योंकि रब को ही बादशाही का इख़्ति-
यार हासिल है, वही अक़वाम पर हुकूमत करता
है।

29दुनिया के तमाम बड़े लोग उसके हुज़ूर
खाएँगे और सिजदा करेंगे। ख़ाक में उतरनेवाले
सब उसके सामने झुक जाएंगे, वह सब जो अपनी
ज़िंदगी को ख़ुद क़ायम नहीं रख सकते।
30उसके फ़रज़ंद उस की ख़िदमत करेंगे। एक
आनेवाली नसल को रब के बारे में सुनाया
जाएगा।
31हाँ, वह आकर उस की रास्ती एक क़ौम को
सुनाएँगे जो अभी पैदा नहीं हुई, क्योंकि उसने यह
कुछ किया है।

अच्छा चरवाहा

23 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरा चरवाहा है, मुझे कमी न होगी।
2वह मुझे शादाब चरागाहों में चराता और
पुरसुकून चश्मों के पास ले जाता है।
3वह मेरी जान को ताज़ादम करता और अपने
नाम की ख़ातिर रास्ती की राहों पर मेरी क़ियादत
करता है।
4गो मैं तारीकतरीन वादी में से गुज़रूँ मैं मुसीबत
से नहीं डरूँगा, क्योंकि तू मेरे साथ है, तेरी लाठी
और तेरा असा मुझे तसल्ली देते हैं।

5तू मेरे दुश्मनों के रूबरू मेरे सामने मेज़
बिछाकर मेरे सर को तेल से तरो-ताज़ा करता है।
मेरा प्याला तेरी बरकत से छलक उठता है।
6यक़ीनन भलाई और शफ़क़त उम्र-भर मेरे
साथ साथ रहेंगी, और मैं जीते-जी रब के घर में
सुकूनत करूँगा।

बादशाह का इस्तक़बाल

24 दाऊद का ज़बूर।
ज़मीन और जो कुछ उस पर है रब का
है, दुनिया और उसके बाशिंदे उसी के हैं। 2क्योंकि
उसने ज़मीन की बुनियाद समुंदरों पर रखी और
उसे दरियाओं पर क़ायम किया।

3किस को रब के पहाड़ पर चढ़ने की इजाज़त
है? कौन उसके मुक़द्दस मक़ाम में खड़ा हो सकता
है?
4वह जिसके हाथ पाक और दिल साफ़ हैं, जो
न फ़रेब का इरादा रखता, न क़सम खाकर झूट
बोलता है।
5वह रब से बरकत पाएगा, उसे अपनी नजात
के ख़ुदा से रास्ती मिलेगी।
6यह होगा उन लोगों का हाल जो अल्लाह की
मरज़ी दरियाफ़्त करते, जो तेरे चेहरे के तालिब
होते हैं, ऐ याक़ूब के ख़ुदा। (सिलाह)

7ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ क़दीम दरवाज़ो,
पूरे तौर पर खुल जाओ ताकि जलाल का बादशाह
दाख़िल हो जाए।
8जलाल का बादशाह कौन है? रब जो क़वी
और क़ादिर है, रब जो जंग में ज़ोरावर है।
9ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ क़दीम दरवाज़ो,
पूरे तौर पर खुल जाओ ताकि जलाल का बादशाह
दाख़िल हो जाए।
10जलाल का बादशाह कौन है? रब्बुल-
अफ़वाज, वही जलाल का बादशाह है। (सिलाह)

मुआफ़ी और राहनुमाई के लिए दुआ

25 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं तेरा आरज़ूमंद हूँ।
2ऐ मेरे ख़ुदा, तुझ पर मैं भरोसा रखता हूँ।
मुझे शरमिंदा न होने दे कि मेरे दुश्मन मुझ पर
शादियाना बजाएँ।
3क्योंकि जो भी तुझ पर उम्मीद रखे वह
शरमिंदा नहीं होगा जबकि जो बिलावजह बेवफ़ा
होते हैं वही शरमिंदा हो जाएंगे।

4ऐ रब, अपनी राहें मुझे दिखा, मुझे अपने
रास्तों की तालीम दे।

5अपनी सच्चाई के मुताबिक़ मेरी राह-
नुमाई कर, मुझे तालीम दे। क्योंकि तू मेरी नजात
का ख़ुदा है। दिन-भर मैं तेरे इंतज़ार में रहता हूँ।
6ऐ रब, अपना वह रहम और मेहरबानी याद
कर जो तू क़दीम ज़माने से करता आया है।
7ऐ रब, मेरी जवानी के गुनाहों और मेरी बेवफ़ा
हरकतों को याद न कर बल्कि अपनी भलाई की
ख़ातिर और अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरा
ख़याल रख।

8रब भला और आदिल है, इसलिए वह
गुनाहगारों को सहीह राह पर चलने की तलक़ीन
करता है।
9वह फ़रोतनों की इनसाफ़ की राह पर
राहनुमाई करता, हलीमों को अपनी राह की
तालीम देता है।
10जो रब के अहद और अहकाम के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारें उन्हें रब मेहरबानी और वफ़ादारी
की राहों पर ले चलता है।
11ऐ रब, मेरा क़ुसूर संगीन है, लेकिन अपने
नाम की ख़ातिर उसे मुआफ़ कर।
12रब का ख़ौफ़ माननेवाला कहाँ है? रब ख़ुद
उसे उस राह की तालीम देगा जो उसे चुनना है।
13तब वह ख़ुशहाल रहेगा, और उस की
औलाद मुल्क को मीरास में पाएगी।
14जो रब का ख़ौफ़ मानें उन्हें वह अपने हमराज़
बनाकर अपने अहद की तालीम देता है।

15मेरी आँखें रब को तकती रहती हैं, क्योंकि
वही मेरे पाँवों को जाल से निकाल लेता है।
16मेरी तरफ़ मायल हो जा, मुझ पर मेहर-
बानी कर! क्योंकि मैं तनहा और मुसीबत-
ज़दा हूँ।
17मेरे दिल की परेशानियाँ दूर कर, मुझे मेरी
तकालीफ़ से रिहाई दे।
18मेरी मुसीबत और तंगी पर नज़र डालकर
मेरी ख़ताओं को मुआफ़ कर।
19देख, मेरे दुश्मन कितने ज़्यादा हैं, वह कितना
ज़ुल्म करके मुझसे नफ़रत करते हैं।
20मेरी जान को महफ़ूज़ रख, मुझे बचा! मुझे
शरमिंदा न होने दे, क्योंकि मैं तुझमें पनाह लेता
हूँ।
21बेगुनाही और दियानतदारी मेरी पहरा-
दारी करें, क्योंकि मैं तेरे इंतज़ार में रहता हूँ।
22ऐ अल्लाह, फ़िद्या देकर इसराईल को उस
की तमाम तकालीफ़ से आज़ाद कर!

बेगुनाह का इक़रार और इल्तिजा

26 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मेरा इनसाफ़ कर, क्योंकि मेरा
चाल-चलन बेक़ुसूर है। मैंने रब पर भरोसा रखा
है, और मैं डाँवाँडोल नहीं हो जाऊँगा।

2ऐ रब, मुझे जाँच ले, मुझे आज़माकर दिल
की तह तक मेरा मुआयना कर।
3क्योंकि तेरी शफ़क़त मेरी आँखों के सामने
रही है, मैं तेरी सच्ची राह पर चलता रहा हूँ।
4न मैं धोकेबाज़ों की मजलिस में बैठता, न
चालाक लोगों से रिफ़ाक़त रखता हूँ।
5मुझे शरीरों के इजतिमाओं से नफ़रत है,
बेदीनों के साथ मैं बैठता भी नहीं।
6ऐ रब, मैं अपने हाथ धोकर अपनी बेगुनाही
का इज़हार करता हूँ। मैं तेरी क़ुरबानगाह के गिर्द
फिरकर
7बुलंद आवाज़ से तेरी हम्दो-सना करता, तेरे
तमाम मोजिज़ात का एलान करता हूँ।
8ऐ रब, तेरी सुकूनतगाह मुझे प्यारी है, जिस
जगह तेरा जलाल ठहरता है वह मुझे अज़ीज़ है।

9मेरी जान को मुझसे छीनकर मुझे गुनाहगारों
में शामिल न कर! मेरी ज़िंदगी को मिटाकर मुझे
ख़ूनख़ारों में शुमार न कर,
10ऐसे लोगों में जिनके हाथ शर्मनाक हरकतों
से आलूदा हैं, जो हर वक़्त रिश्वत खाते हैं।

11क्योंकि मैं बेगुनाह ज़िंदगी गुज़ारता हूँ। फ़िद्या
देकर मुझे छुटकारा दे! मुझ पर मेहरबानी कर!

12मेरे पाँव हमवार ज़मीन पर क़ायम हो गए हैं,
और मैं इजतिमाओं में रब की सताइश करूँगा।

अल्लाह से रिफ़ाक़त

27 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरी रौशनी और मेरी नजात है, मैं
किससे डरूँ? रब मेरी जान की पनाहगाह है, मैं
किससे दहशत खाऊँ?

2जब शरीर मुझ पर हमला करें ताकि मुझे हड़प
कर लें, जब मेरे मुख़ालिफ़ और दुश्मन मुझ पर
टूट पड़ें तो वह ठोकर खाकर गिर जाएंगे।

3गो फ़ौज मुझे घेर ले मेरा दिल ख़ौफ़ नहीं
खाएगा, गो मेरे ख़िलाफ़ जंग छिड़ जाए मेरा
भरोसा क़ायम रहेगा।

4रब से मेरी एक गुज़ारिश है, मैं एक ही बात
चाहता हूँ। यह कि जीते-जी रब के घर में रहकर
उस की शफ़क़त से लुत्फ़अंदोज़ हो सकूँ, कि
उस की सुकूनतगाह में ठहरकर महवे-ख़याल रह
सकूँ।

5क्योंकि मुसीबत के दिन वह मुझे अपनी
सुकूनतगाह में पनाह देगा, मुझे अपने ख़ैमे में छुपा
लेगा, मुझे उठाकर ऊँची चटान पर रखेगा।

6अब मैं अपने दुश्मनों पर सरबुलंद हूँगा,
अगरचे उन्होंने मुझे घेर रखा है। मैं उसके ख़ैमे
में ख़ुशी के नारे लगाकर क़ुरबानियाँ पेश करूँगा,
साज़ बजाकर रब की मद्हसराई करूँगा।

7ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन जब मैं तुझे पुकारूँ,
मुझ पर मेहरबानी करके मेरी सुन।

8मेरा दिल तुझे याद दिलाता है कि तूने ख़ुद
फ़रमाया, “मेरे चेहरे के तालिब रहो!” ऐ रब, मैं
तेरे ही चेहरे का तालिब रहा हूँ।

9अपने चेहरे को मुझसे छुपाए न रख, अपने
ख़ादिम को ग़ुस्से से अपने हुज़ूर से न निकाल।
क्योंकि तू ही मेरा सहारा रहा है। ऐ मेरी नजात के
ख़ुदा, मुझे न छोड़, मुझे तर्क न कर।

10क्योंकि मेरे माँ-बाप ने मुझे तर्क कर दिया है,
लेकिन रब मुझे क़बूल करके अपने घर में लाएगा।

11ऐ रब, मुझे अपनी राह की तरबियत दे,
हमवार रास्ते पर मेरी राहनुमाई कर ताकि अपने
दुश्मनों से महफ़ूज़ रहूँ।

12मुझे मुख़ालिफ़ों के लालच में न आने दे,
क्योंकि झूटे गवाह मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं
जो तशद्दुद करने के लिए तैयार हैं।

13लेकिन मेरा पूरा ईमान यह है कि मैं ज़िंदों के
मुल्क में रहकर रब की भलाई देखूँगा।

14रब के इंतज़ार में रह! मज़बूत और दिलेर
हो, और रब के इंतज़ार में रह!

मदद के लिए दुआ और जवाब के लिए शुक्रगुज़ारी

28 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं तुझे पुकारता हूँ। ऐ मेरी
चटान, ख़ामोशी से अपना मुँह मुझसे न फेर।
क्योंकि अगर तू चुप रहे तो मैं मौत के गढ़े में
उतरनेवालों की मानिंद हो जाऊँगा।

2मेरी इल्तिजाएँ सुन जब मैं चीख़ते-चिल्लाते
तुझसे मदद माँगता हूँ, जब मैं अपने हाथ तेरी
सुकूनतगाह के मुक़द्दसतरीन कमरे की तरफ़
उठाता हूँ।

3मुझे उन बेदीनों के साथ घसीटकर सज़ा न
दे जो ग़लत काम करते हैं, जो अपने पड़ोसियों
से बज़ाहिर दोस्ताना बातें करते, लेकिन दिल में
उनके ख़िलाफ़ बुरे मनसूबे बाँधते हैं।

4उन्हें उनकी हरकतों और बुरे कामों का बदला
दे। जो कुछ उनके हाथों से सरज़द हुआ है उस
की पूरी सज़ा दे। उन्हें उतना ही नुक़सान पहुँचा दे
जितना उन्होंने दूसरों को पहुँचाया है।

5क्योंकि न वह रब के आमाल पर, न उसके
हाथों के काम पर तवज्जुह देते हैं। अल्लाह उन्हें
ढा देगा और दुबारा कभी तामीर नहीं करेगा।

6रब की तमजीद हो, क्योंकि उसने मेरी
इल्तिजा सुन ली।
7रब मेरी क़ुव्वत और मेरी ढाल है। उस पर मेरे
दिल ने भरोसा रखा, उससे मुझे मदद मिली है।
मेरा दिल शादियाना बजाता है, मैं गीत गाकर उस
की सताइश करता हूँ।
8रब अपनी क़ौम की क़ुव्वत और अपने मसह
किए हुए ख़ादिम का नजातबख़्श क़िला है।
9ऐ रब, अपनी क़ौम को नजात दे! अपनी
मीरास को बरकत दे! उनकी गल्लाबानी करके
उन्हें हमेशा तक उठाए रख।

रब के जलाल की तमजीद

29 दाऊद का ज़बूर।
ऐ अल्लाह के फ़रज़ंदो, रब की
तमजीद करो! रब के जलाल और क़ुदरत की
सताइश करो!
2रब के नाम को जलाल दो। मुक़द्दस लिबास
से आरास्ता होकर रब को सिजदा करो।
3रब की आवाज़ समुंदर के ऊपर गूँजती है।
जलाल का ख़ुदा गरजता है, रब गहरे पानी के
ऊपर गरजता है।
4रब की आवाज़ ज़ोरदार है, रब की आवाज़
पुरजलाल है।
5रब की आवाज़ देवदार के दरख़्तों को तोड़
डालती है, रब लुबनान के देवदार के दरख़्तों को
टुकड़े टुकड़े कर देता है।
6वह लुबनान को बछड़े और कोहे-सिरयून[a] को
जंगली बैल के बच्चे की तरह कूदने फाँदने देता है।
7रब की आवाज़ आग के शोले भड़का देती है।
8रब की आवाज़ रेगिस्तान को हिला देती है,
रब दश्ते-क़ादिस को काँपने देता है।
9रब की आवाज़ सुनकर हिरनी दर्दे-ज़ह में
मुब्तला हो जाती और जंगलों के पत्ते झड़ जाते
हैं। लेकिन उस की सुकूनतगाह में सब पुकारते हैं,
“जलाल!”
10रब सैलाब के ऊपर तख़्तनशीन है, रब
बादशाह की हैसियत से अबद तक तख़्तनशीन
है।
11रब अपनी क़ौम को तक़वियत देगा, रब
अपने लोगों को सलामती की बरकत देगा।

मौत से छुटकारे पर शुक्रगुज़ारी

30 दाऊद का ज़बूर। रब के घर की मख़सूसियत
के मौक़े पर गीत।
ऐ रब, मैं तेरी सताइश करता हूँ, क्योंकि तूने
मुझे गहराइयों में से खींच निकाला। तूने मेरे
दुश्मनों को मुझ पर बग़लें बजाने का मौक़ा नहीं
दिया।
2ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैंने चीख़ते-चिल्लाते हुए
तुझसे मदद माँगी, और तूने मुझे शफ़ा दी।
3ऐ रब, तू मेरी जान को पाताल से निकाल
लाया, तूने मेरी जान को मौत के गढ़े में उतरने से
बचाया है।
4ऐ ईमानदारो, साज़ बजाकर रब की तारीफ़
में गीत गाओ। उसके मुक़द्दस नाम की हम्दो-सना
करो।
5क्योंकि वह लमहा-भर के लिए ग़ुस्से होता,
लेकिन ज़िंदगी-भर के लिए मेहरबानी करता है।
गो शाम को रोना पड़े, लेकिन सुबह को हम ख़ुशी
मनाएँगे।

6जब हालात पुरसुकून थे तो मैं बोला, “मैं
कभी नहीं डगमगाऊँगा।”
7ऐ रब, जब तू मुझसे ख़ुश था तो तूने मुझे
मज़बूत पहाड़ पर रख दिया। लेकिन जब तूने
अपना चेहरा मुझसे छुपा लिया तो मैं सख़्त घबरा
गया।
8ऐ रब, मैंने तुझे पुकारा, हाँ ख़ुदावंद से मैंने
इल्तिजा की,
9“क्या फ़ायदा है अगर मैं हलाक होकर मौत
के गढ़े में उतर जाऊँ? क्या ख़ाक तेरी सताइश

[a]सिरयून हरमून का दूसरा नाम है।

करेगी? क्या वह लोगों को तेरी वफ़ादारी के बारे में बताएगी?

10ऐ रब, मेरी सुन, मुझ पर मेहरबानी कर। ऐ रब, मेरी मदद करने के लिए आ!”

11तूने मेरा मातम ख़ुशी के नाच में बदल दिया, तूने मेरे मातमी कपड़े उतारकर मुझे शादमानी से मुलब्बस किया।

12क्योंकि तू चाहता है कि मेरी जान ख़ामोश न हो बल्कि गीत गाकर तेरी तमजीद करती रहे। ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं अबद तक तेरी हम्दो-सना करूँगा।

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

31 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, मैंने तुझमें पनाह ली है। मुझे कभी शरमिंदा न होने दे बल्कि अपनी रास्ती के मुताबिक़ मुझे बचा!

2अपना कान मेरी तरफ़ झुका, जल्द ही मुझे छुटकारा दे। चटान का मेरा बुर्ज हो, पहाड़ का क़िला जिसमें मैं पनाह लेकर नजात पा सकूँ।

3क्योंकि तू मेरी चटान, मेरा क़िला है, अपने नाम की ख़ातिर मेरी राहनुमाई, मेरी क़ियादत कर।

4मुझे उस जाल से निकाल दे जो मुझे पकड़ने के लिए चुपके से बिछाया गया है। क्योंकि तू ही मेरी पनाहगाह है।

5मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ। ऐ रब, ऐ वफ़ादार ख़ुदा, तूने फ़िद्या देकर मुझे छुड़ाया है!

6मैं उनसे नफ़रत रखता हूँ जो बेकार बुतों से लिपटे रहते हैं। मैं तो रब पर भरोसा रखता हूँ।

7मैं बाग़ बाग़ हूँगा और तेरी शफ़क़त की ख़ुशी मनाऊँगा, क्योंकि तूने मेरी मुसीबत देखकर मेरी जान की परेशानी का ख़याल किया है।

8तूने मुझे दुश्मन के हवाले नहीं किया बल्कि मेरे पाँवों को खुले मैदान में क़ायम कर दिया है।

9ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ। ग़म के मारे मेरी आँखें सूज गई हैं, मेरी जान और जिस्म गल रहे हैं।

10मेरी ज़िंदगी दुख की चक्की में पिस रही है, मेरे साल आहें भरते भरते ज़ाया हो रहे हैं। मेरे क़ुसूर की वजह से मेरी ताक़त जवाब दे गई, मेरी हड्डियाँ गलने-सड़ने लगी हैं।

11मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ बल्कि मेरे हमसाये भी मुझे लान-तान करते, मेरे जाननेवाले मुझसे दहशत खाते हैं। गली में जो भी मुझे देखे मुझसे भाग जाता है।

12मैं मुरदों की मानिंद उनकी याददाश्त से मिट गया हूँ, मुझे ठीकरे की तरह फेंक दिया गया है।

13बहुतों की अफ़वाहें मुझ तक पहुँच गई हैं, चारों तरफ़ से हौलनाक ख़बरें मिल रही हैं। वह मिलकर मेरे ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे, मुझे क़त्ल करने के मनसूबे बाँध रहे हैं।

14लेकिन मैं ऐ रब, तुझ पर भरोसा रखता हूँ। मैं कहता हूँ, “तू मेरा ख़ुदा है!”

15मेरी तक़दीर[a] तेरे हाथ में है। मुझे मेरे दुश्मनों के हाथ से बचा, उनसे जो मेरे पीछे पड़ गए हैं।

16अपने चेहरे का नूर अपने ख़ादिम पर चमका, अपनी मेहरबानी से मुझे नजात दे।

17ऐ रब, मुझे शरमिंदा न होने दे, क्योंकि मैंने तुझे पुकारा है। मेरे बजाए बेदीनों के मुँह काले हो जाएँ, वह पाताल में उतरकर चुप हो जाएँ।

18उनके फ़रेबदेह होंट बंद हो जाएँ, क्योंकि वह तकब्बुर और हिक़ारत से रास्तबाज़ के ख़िलाफ़ कुफ़र बकते हैं।

19तेरी भलाई कितनी अज़ीम है! तू उसे उनके लिए तैयार रखता है जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं, उसे

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : मेरे औक़ात।

उन्हें दिखाता है जो इनसानों के सामने से तुझमें पनाह लेते हैं।

20तू उन्हें अपने चेहरे की आड़ में लोगों के हमलों से छुपा लेता, उन्हें ख़ैमे में लाकर इलज़ामतराश ज़बानों से महफ़ूज़ रखता है।

21रब की तमजीद हो, क्योंकि जब शहर का मुहासरा हो रहा था तो उसने मोजिज़ाना तौर पर मुझ पर मेहरबानी की।

22उस वक़्त मैं घबराकर बोला, "हाय, मैं तेरे हुज़ूर से मुंक़ते हो गया हूँ!" लेकिन जब मैंने चीख़ते-चिल्लाते हुए तुझसे मदद माँगी तो तूने मेरी इल्तिजा सुन ली।

23ऐ रब के तमाम ईमानदारो, उससे मुहब्बत रखो! रब वफ़ादारों को महफ़ूज़ रखता, लेकिन मग़रूरों को उनके रवय्ये का पूरा अज्र देगा।

24चुनाँचे मज़बूत और दिलेर हो, तुम सब जो रब के इंतज़ार में हो।

मुआफ़ी की बरकत (तौबा का दूसरा ज़बूर)

32 दाऊद का ज़बूर। हिकमत का गीत।
मुबारक है वह जिसके जरायम मुआफ़ किए गए, जिसके गुनाह ढाँपे गए हैं।

2मुबारक है वह जिसका गुनाह रब हिसाब में नहीं लाएगा और जिसकी रूह में फ़रेब नहीं है।

3जब मैं चुप रहा तो दिन-भर आहें भरने से मेरी हड्डियाँ गलने लगीं।

4क्योंकि दिन-रात मैं तेरे हाथ के बोझ तले पिसता रहा, मेरी ताक़त गोया मौसमे-गरमा की झुलसती तपिश में जाती रही। (सिलाह)

5तब मैंने तेरे सामने अपना गुनाह तसलीम किया, मैं अपना गुनाह छुपाने से बाज़ आया। मैं बोला, "मैं रब के सामने अपने जरायम का इक़रार करूँगा।" तब तूने मेरे गुनाह को मुआफ़ कर दिया। (सिलाह)

6इसलिए तमाम ईमानदार उस वक़्त तुझसे दुआ करें जब तू मिल सकता है। यक़ीनन जब बड़ा सैलाब आए तो उन तक नहीं पहुँचेगा।

7तू मेरी छुपने की जगह है, तू मुझे परेशानी से महफ़ूज़ रखता, मुझे नजात के नग़मों से घेर लेता है। (सिलाह)

8"मैं तुझे तालीम दूँगा, तुझे वह राह दिखाऊँगा जिस पर तुझे जाना है। मैं तुझे मशवरा देकर तेरी देख-भाल करूँगा।

9नासमझ घोड़े या ख़च्चर की मानिंद न हो, जिन पर क़ाबू पाने के लिए लगाम और दहाने की ज़रूरत है, वरना वह तेरे पास नहीं आएँगे।"

10बेदीन की मुतअद्दिद परेशानियाँ होती हैं, लेकिन जो रब पर भरोसा रखे उसे वह अपनी शफ़क़त से घेरे रखता है।

11ऐ रास्तबाज़ो, रब की ख़ुशी में जशन मनाओ! ऐ तमाम दियानतदारो, शादमानी के नारे लगाओ!

अल्लाह की हुकूमत और मदद की तारीफ़

33 ऐ रास्तबाज़ो, रब की ख़ुशी मनाओ!
क्योंकि मुनासिब है कि सीधी राह पर चलनेवाले उस की सताइश करें।

2सरोद बजाकर रब की हम्दो-सना करो। उस की तमजीद में दस तारोंवाला साज़ बजाओ।

3उस की तमजीद में नया गीत गाओ, महारत से साज़ बजाकर ख़ुशी के नारे लगाओ।

4क्योंकि रब का कलाम सच्चा है, और वह हर काम वफ़ादारी से करता है।

5उसे रास्तबाज़ी और इनसाफ़ प्यारे हैं, दुनिया रब की शफ़क़त से भरी हुई है।

6रब के कहने पर आसमान ख़लक़ हुआ, उसके मुँह के दम से सितारों का पूरा लशकर वुजूद में आया।

7वह समुंदर के पानी का बड़ा ढेर जमा करता,
पानी की गहराइयों को गोदामों में महफ़ूज़ रखता है।
8कुल दुनिया रब का ख़ौफ़ माने,
ज़मीन के तमाम बाशिंदे उससे दहशत खाएँ।
9क्योंकि उसने फ़रमाया तो फ़ौरन वुजूद में आया,
उसने हुक्म दिया तो उसी वक़्त क़ायम हुआ।
10रब अक़वाम का मनसूबा नाकाम होने देता,
वह उम्मतों के इरादों को शिकस्त देता है।
11लेकिन रब का मनसूबा हमेशा तक कामयाब रहता,
उसके दिल के इरादे पुश्त-दर-पुश्त क़ायम रहते हैं।

12मुबारक है वह क़ौम जिसका ख़ुदा रब है,
वह क़ौम जिसे उसने चुनकर अपनी मीरास बना लिया है।

13रब आसमान से नज़र डालकर तमाम इनसानों का मुलाहज़ा करता है।
14अपने तख़्त से वह ज़मीन के तमाम बाशिंदों का मुआयना करता है।
15जिसने उन सबके दिलों को तश्कील दिया
वह उनके तमाम कामों पर ध्यान देता है।

16बादशाह की बड़ी फ़ौज उसे नहीं छुड़ाती,
और सूरमे की बड़ी ताक़त उसे नहीं बचाती।
17घोड़ा भी मदद नहीं कर सकता। जो उस पर उम्मीद रखे वह धोका खाएगा। उस की बड़ी ताक़त छुटकारा नहीं देती।
18यक़ीनन रब की आँख उन पर लगी रहती है
जो उसका ख़ौफ़ मानते और उस की मेहरबानी के इंतज़ार में रहते हैं,
19कि वह उनकी जान मौत से बचाए और काल में महफ़ूज़ रखे।

20हमारी जान रब के इंतज़ार में है। वही हमारा सहारा, हमारी ढाल है।
21हमारा दिल उसमें ख़ुश है, क्योंकि हम उसके मुक़द्दस नाम पर भरोसा रखते हैं।

22ऐ रब, तेरी मेहरबानी हम पर रहे, क्योंकि हम तुझ पर उम्मीद रखते हैं।

अल्लाह की हिफ़ाज़त

34 दाऊद का यह ज़बूर उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब उसने फ़िलिस्ती बादशाह अबीमलिक के सामने पागल बनने का रूप भर लिया। यह देखकर बादशाह ने उसे भगा दिया। चले जाने के बाद दाऊद ने यह गीत गाया।

हर वक़्त मैं रब की तमजीद करूँगा, उस की हम्दो-सना हमेशा ही मेरे होंटों पर रहेगी।
2मेरी जान रब पर फ़ख़र करेगी। मुसीबत-ज़दा यह सुनकर ख़ुश हो जाएँ।
3आओ, मेरे साथ रब की ताज़ीम करो। आओ, हम मिलकर उसका नाम सरबुलंद करें।

4मैंने रब को तलाश किया तो उसने मेरी सुनी।
जिन चीज़ों से मैं दहशत खा रहा था उन सबसे उसने मुझे रिहाई दी।
5जिनकी आँखें उस पर लगी रहें वह ख़ुशी से चमकेंगे,
और उनके मुँह शरमिंदा नहीं होंगे।
6इस नाचार ने पुकारा तो रब ने उस की सुनी,
उसने उसे उस की तमाम मुसीबतों से नजात दी।

7जो रब का ख़ौफ़ मानें उनके इर्दगिर्द उसका फ़रिश्ता ख़ैमाज़न होकर उनको बचाए रखता है।
8रब की भलाई का तजरबा करो। मुबारक है वह जो उसमें पनाह ले।
9ऐ रब के मुक़द्दसीन, उसका ख़ौफ़ मानो,
क्योंकि जो उसका ख़ौफ़ मानें उन्हें कमी नहीं।
10जवान शेरबबर कभी ज़रूरतमंद और भूके होते हैं,
लेकिन रब के तालिबों को किसी भी अच्छी चीज़ की कमी नहीं होगी।
11ऐ बच्चो, आओ, मेरी बातें सुनो!
मैं तुम्हें रब के ख़ौफ़ की तालीम दूँगा।

12कौन मज़े से ज़िंदगी गुज़ारना और अच्छे दिन
देखना चाहता है?
13वह अपनी ज़बान को शरीर बातें करने से
रोके और अपने होंटों को झूट बोलने से।
14वह बुराई से मुँह फेरकर नेक काम करे,
सुलह-सलामती का तालिब होकर उसके पीछे
लगा रहे।
15रब की आँखें रास्तबाज़ों पर लगी रहती हैं,
और उसके कान उनकी इल्तिजाओं की तरफ़
मायल हैं।
16लेकिन रब का चेहरा उनके ख़िलाफ़ है जो
ग़लत काम करते हैं। उनका ज़मीन पर नामो-
निशान तक नहीं रहेगा।
17जब रास्तबाज़ फ़रियाद करें तो रब उनकी
सुनता, वह उन्हें उनकी तमाम मुसीबत से
छुटकारा देता है।
18रब शिकस्तादिलों के क़रीब होता है, वह उन्हें
रिहाई देता है जिनकी रूह को ख़ाक में कुचला गया
हो।
19रास्तबाज़ की मुतअद्दिद तकालीफ़ हो-
ती हैं, लेकिन रब उसे उन सबसे बचा लेता है।
20वह उस की तमाम हड्डियों की हिफ़ाज़त
करता है, एक भी नहीं तोड़ी जाएगी।
21बुराई बेदीन को मार डालेगी, और जो
रास्तबाज़ से नफ़रत करे उसे मुनासिब अज्र
मिलेगा।
22लेकिन रब अपने ख़ादिमों की जान का फ़िद्या
देगा। जो भी उसमें पनाह ले उसे सज़ा नहीं
मिलेगी।

शरीरों के हमलों से रिहाई के लिए दुआ

35 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, उनसे झगड़ जो मेरे साथ
झगड़ते हैं, उनसे लड़ जो मेरे साथ लड़ते हैं।
2लंबी और छोटी ढाल पकड़ ले और उठ-
कर मेरी मदद करने आ।
3नेज़े और बरछी को निकालकर उन्हें रोक दे
जो मेरा ताक़्क़ुब कर रहे हैं! मेरी जान से फ़रमा,
“मैं तेरी नजात हूँ!”
4जो मेरी जान के लिए कोशाँ हैं उनका मुँह
काला हो जाए, वह रुसवा हो जाएँ। जो मुझे
मुसीबत में डालने के मनसूबे बाँध रहे हैं वह पीछे
हटकर शरमिंदा हों।
5वह हवा में भूसे की तरह उड़ जाएँ जब रब का
फ़रिश्ता उन्हें भगा दे।
6उनका रास्ता तारीक और फिसलना हो जब
रब का फ़रिश्ता उनके पीछे पड़ जाए।
7क्योंकि उन्होंने बेसबब और चुपके से मेरे रास्ते
में जाल बिछाया, बिलावजह मुझे पकड़ने का गढ़ा
खोदा है।
8इसलिए तबाही अचानक ही उन पर आ पड़े,
पहले उन्हें पता ही न चले। जो जाल उन्होंने चुपके
से बिछाया उसमें वह ख़ुद उलझ जाएँ, जिस गढ़े
को उन्होंने खोदा उसमें वह ख़ुद गिरकर तबाह हो
जाएँ।

9तब मेरी जान रब की ख़ुशी मनाएगी और उस
की नजात के बाइस शादमान होगी।
10मेरे तमाम आज़ा कह उठेंगे, “ऐ रब, कौन
तेरी मानिंद है? कोई भी नहीं! क्योंकि तू ही
मुसीबतज़दा को ज़बरदस्त आदमी से छुटकारा
देता, तू ही नाचार और ग़रीब को लूटनेवाले के
हाथ से बचा लेता है।”

11ज़ालिम गवाह मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हो रहे
हैं। वह ऐसी बातों के बारे में मेरी पूछ-गछ कर रहे
हैं जिनसे मैं वाक़िफ़ ही नहीं।
12वह मेरी नेकी के एवज़ मुझे नुक़सान पहुँचा
रहे हैं। अब मेरी जान तने-तनहा है।
13जब वह बीमार हुए तो मैंने टाट ओढ़कर और
रोज़ा रखकर अपनी जान को दुख दिया। काश
मेरी दुआ मेरी गोद में वापस आए!

14मैंने यों मातम किया जैसे मेरा कोई दोस्त या
भाई हो। मैं मातमी लिबास पहनकर यों ख़ाक में
झुक गया जैसे अपनी माँ का जनाज़ा हो।

15लेकिन जब मैं ख़ुद ठोकर खाने लगा तो वह
ख़ुश होकर मेरे ख़िलाफ़ जमा हुए। वह मुझ पर
हमला करने के लिए इकट्ठे हुए, और मुझे मालूम
ही नहीं था। वह मुझे फाड़ते रहे और बाज़ न आए।
16मुसलसल कुफ़र बक बककर वह मेरा
मज़ाक़ उड़ाते, मेरे ख़िलाफ़ दाँत पीसते थे।
17ऐ रब, तू कब तक ख़ामोशी से देखता रहेगा?
मेरी जान को उनकी तबाहकुन हरकतों से बचा,
मेरी ज़िंदगी को जवान शेरों से छुटकारा दे।
18तब मैं बड़ी जमात में तेरी सताइश और बड़े
हुजूम में तेरी तारीफ़ करूँगा।
19उन्हें मुझ पर बग़लें बजाने न दे जो बेसबब
मेरे दुश्मन हैं। उन्हें मुझ पर नाक-भौं चढ़ाने न दे
जो बिलावजह मुझसे कीना रखते हैं।
20क्योंकि वह ख़ैर और सलामती की बातें
नहीं करते बल्कि उनके ख़िलाफ़ फ़रेबदेह मनसूबे
बाँधते हैं जो अमन और सुकून से मुल्क में रहते
हैं।
21वह मुँह फाड़कर कहते हैं, “लो जी, हमने
अपनी आँखों से उस की हरकतें देखी हैं!”
22ऐ रब, तुझे सब कुछ नज़र आया है। ख़ामोश
न रह! ऐ रब, मुझसे दूर न हो।
23ऐ रब मेरे ख़ुदा, जाग उठ! मेरे दिफ़ा में
उठकर उनसे लड़!
24ऐ रब मेरे ख़ुदा, अपनी रास्ती के मुताबिक़
मेरा इनसाफ़ कर। उन्हें मुझ पर बग़लें बजाने न
दे।
25वह दिल में न सोचें, “लो जी, हमारा इरादा
पूरा हुआ है!” वह न बोलें, “हमने उसे हड़प कर
लिया है।”
26जो मेरा नुक़सान देखकर ख़ुश हुए उन
सबका मुँह काला हो जाए, वह शरमिंदा हो जाएँ।
जो मुझे दबाकर अपने आप पर फ़ख़र करते हैं
वह शरमिंदगी और रुसवाई से मुलब्बस हो जाएँ।
27लेकिन जो मेरे इनसाफ़ के आरज़ूमंद हैं वह
ख़ुश हों और शादियाना बजाएँ। वह कहें, “रब
की बड़ी तारीफ़ हो, जो अपने ख़ादिम की ख़ैरियत
चाहता है।”
28तब मेरी ज़बान तेरी रास्ती बयान करेगी, वह
सारा दिन तेरी तमजीद करती रहेगी।

अल्लाह की मेहरबानी की तारीफ़

36 रब के ख़ादिम दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
बदकारी बेदीन के दिल ही में उससे बात करती
है। उस की आँखों के सामने अल्लाह का ख़ौफ़
नहीं होता,
2क्योंकि उस की नज़र में यह बात फ़ख़र का
बाइस है कि उसे क़ुसूरवार पाया गया, कि वह
नफ़रत करता है।
3उसके मुँह से शरारत और फ़रेब निकलता है,
वह समझदार होने और नेक काम करने से बाज़
आया है।
4अपने बिस्तर पर भी वह शरारत के मनसूबे
बाँधता है। वह मज़बूती से बुरी राह पर खड़ा रहता
और बुराई को मुस्तरद नहीं करता।

5ऐ रब, तेरी शफ़क़त आसमान तक, तेरी
वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।
6तेरी रास्ती बुलंदतरीन पहाड़ों की मानिंद, तेरा
इनसाफ़ समुंदर की गहराइयों जैसा है। ऐ रब, तू
इनसानो-हैवान की मदद करता है।
7ऐ अल्लाह, तेरी शफ़क़त कितनी बेश-
क़ीमत है! आदमज़ाद तेरे परों के साये में पनाह
लेते हैं।
8वह तेरे घर के उम्दा खाने से तरो-ताज़ा हो
जाते हैं, और तू उन्हें अपनी ख़ुशियों की नदी में
से पिलाता है।
9क्योंकि ज़िंदगी का सरचश्मा तेरे ही पास है,
और हम तेरे नूर में रहकर नूर का मुशाहदा करते
हैं।

10अपनी शफ़क़त उन पर फैलाए रख जो तुझे
जानते हैं, अपनी रास्ती उन पर जो दिल से
दियानतदार हैं।
11मग़रूरों का पाँव मुझ तक न पहुँचे, बेदीनों
का हाथ मुझे बेघर न बनाए।
12देखो, बदकार गिर गए हैं! उन्हें ज़मीन पर
पटख़ दिया गया है, और वह दुबारा कभी नहीं
उठेंगे।

बेदीनों की बज़ाहिर ख़ुशहाली

37 दाऊद का ज़बूर।
शरीरों के बाइस बेचैन न हो जा,
बदकारों पर रश्क न कर।
2क्योंकि वह घास की तरह जल्द ही मुरझा
जाएंगे, हरियाली की तरह जल्द ही सूख जाएंगे।
3रब पर भरोसा रखकर भलाई कर, मुल्क में
रहकर वफ़ादारी की परवरिश कर।
4रब से लुत्फ़अंदोज़ हो तो जो तेरा दिल चाहे
वह तुझे देगा।
5अपनी राह रब के सुपुर्द कर। उस पर भरोसा
रख तो वह तुझे कामयाबी बख़्शेगा।
6तब वह तेरी रास्तबाज़ी सूरज की तरह तुलू
होने देगा और तेरा इनसाफ़ दोपहर की रौशनी
की तरह चमकने देगा।
7रब के हुज़ूर चुप होकर सब्र से उसका इंतज़ार
कर। बेक़रार न हो अगर साज़िशें करनेवाला
कामयाब हो।
8ख़फ़ा होने से बाज़ आ, ग़ुस्से को छोड़ दे।
रंजीदा न हो, वरना बुरा ही नतीजा निकलेगा।

9क्योंकि शरीर मिट जाएंगे जबकि रब से
उम्मीद रखनेवाले मुल्क को मीरास में पाएँगे।
10मज़ीद थोड़ी देर सब्र कर तो बेदीन का नामो-
निशान मिट जाएगा। तू उसका खोज लगाएगा,
लेकिन कहीं नहीं पाएगा।
11लेकिन हलीम मुल्क को मीरास में पाकर बड़े
अमन और सुकून से लुत्फ़अंदोज़ होंगे।
12बेशक बेदीन दाँत पीस पीसकर रास्त-
बाज़ के ख़िलाफ़ साज़िशें करता रहे।
13लेकिन रब उस पर हँसता है, क्योंकि वह
जानता है कि उसका अंजाम क़रीब ही है।
14बेदीनों ने तलवार को खींचा और कमान को
तान लिया है ताकि नाचारों और ज़रूरतमंदों को
गिरा दें और सीधी राह पर चलनेवालों को क़त्ल
करें।
15लेकिन उनकी तलवार उनके अपने दिल में
घोंपी जाएगी, उनकी कमान टूट जाएगी।

16रास्तबाज़ को जो थोड़ा-बहुत हासिल है वह
बहुत बेदीनों की दौलत से बेहतर है।
17क्योंकि बेदीनों का बाज़ू टूट जाएगा जबकि
रब रास्तबाज़ों को सँभालता है।
18रब बेइलज़ामों के दिन जानता है, और
उनकी मौरूसी मिलकियत हमेशा के लिए क़ायम
रहेगी।
19मुसीबत के वक़्त वह शर्मसार नहीं होंगे,
काल भी पड़े तो सेर होंगे।
20लेकिन बेदीन हलाक हो जाएंगे, और रब के
दुश्मन चरागाहों की शान की तरह नेस्त हो जाएंगे,
धुएँ की तरह ग़ायब हो जाएंगे।
21बेदीन क़र्ज़ लेता और उसे नहीं उतारता,
लेकिन रास्तबाज़ मेहरबान है और फ़ैयाज़ी से देता
है।
22क्योंकि जिन्हें रब बरकत दे वह मुल्क को
मीरास में पाएँगे, लेकिन जिन पर वह लानत भेजे
उनका नामो-निशान तक नहीं रहेगा।
23अगर किसी के पाँव जम जाएँ तो यह रब
की तरफ़ से है। ऐसे शख़्स की राह को वह पसंद
करता है।
24अगर गिर भी जाए तो पड़ा नहीं रहेगा,
क्योंकि रब उसके हाथ का सहारा बना रहेगा।

25मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया हूँ।
लेकिन मैंने कभी नहीं देखा कि रास्तबाज़ को तर्क
किया गया या उसके बच्चों को भीक माँगनी पड़ी।

26वह हमेशा मेहरबान और क़र्ज़ देने के लिए
तैयार है। उस की औलाद बरकत का बाइस होगी।

27बुराई से बाज़ आकर भलाई कर। तब तू
हमेशा के लिए मुल्क में आबाद रहेगा,
28क्योंकि रब को इनसाफ़ प्यारा है, और
वह अपने ईमानदारों को कभी तर्क नहीं करेगा।
वह अबद तक महफ़ूज़ रहेंगे जबकि बेदीनों की
औलाद का नामो-निशान तक नहीं रहेगा।
29रास्तबाज़ मुल्क को मीरास में पाकर उसमें
हमेशा बसेंगे।
30रास्तबाज़ का मुँह हिकमत बयान करता और
उस की ज़बान से इनसाफ़ निकलता है।
31अल्लाह की शरीअत उसके दिल में है, और
उसके क़दम कभी नहीं डगमगाएँगे।
32बेदीन रास्तबाज़ की ताक में बैठकर उसे मार
डालने का मौक़ा ढूँडता है।
33लेकिन रब रास्तबाज़ को उसके हाथ में नहीं
छोड़ेगा, वह उसे अदालत में मुजरिम नहीं ठहरने
देगा।
34रब के इंतज़ार में रह और उस की राह पर
चलता रह। तब वह तुझे सरफ़राज़ करके मुल्क
का वारिस बनाएगा, और तू बेदीनों की हलाकत
देखेगा।

35मैंने एक बेदीन और ज़ालिम आदमी को
देखा जो फलते-फूलते देवदार के दरख़्त की तरह
आसमान से बातें करने लगा।
36लेकिन थोड़ी देर के बाद जब मैं दुबारा वहाँ से
गुज़रा तो वह था नहीं। मैंने उसका खोज लगाया,
लेकिन कहीं न मिला।
37बेइलज़ाम पर ध्यान दे और दियानतदार पर
ग़ौर कर, क्योंकि आख़िरकार उसे अमन और
सुकून हासिल होगा।
38लेकिन मुजरिम मिलकर तबाह हो जाएंगे,
और बेदीनों को आख़िरकार रूए-ज़मीन पर से
मिटाया जाएगा।
39रास्तबाज़ों की नजात रब की तरफ़ से है,
मुसीबत के वक़्त वही उनका क़िला है।
40रब ही उनकी मदद करके उन्हें छुटकारा देगा,
वही उन्हें बेदीनों से बचाकर नजात देगा। क्योंकि
उन्होंने उसमें पनाह ली है।

सज़ा से बचने की इल्तिजा
(तौबा का तीसरा ज़बूर)

38 दाऊद का ज़बूर। याददाश्त के लिए।
ऐ रब, अपने ग़ज़ब में मुझे सज़ा न दे,
क़हर में मुझे तंबीह न कर!
2क्योंकि तेरे तीर मेरे जिस्म में लग गए हैं, तेरा
हाथ मुझ पर भारी है।
3तेरी लानत के बाइस मेरा पूरा जिस्म बीमार
है, मेरे गुनाह के बाइस मेरी तमाम हड्डियाँ गलने
लगी हैं।
4क्योंकि मैं अपने गुनाहों के सैलाब में डूब गया
हूँ, वह नाक़ाबिले-बरदाश्त बोझ बन गए हैं।
5मेरी हमाक़त के बाइस मेरे ज़ख़्मों से बदबू
आने लगी, वह गलने लगे हैं।
6मैं कुबड़ा बनकर ख़ाक में दब गया हूँ, पूरा
दिन मातमी लिबास पहने फिरता हूँ।
7मेरी कमर में शदीद सोज़िश है, पूरा जिस्म
बीमार है।
8मैं निढाल और पाश पाश हो गया हूँ। दिल के
अज़ाब के बाइस मैं चीख़ता-चिल्लाता हूँ।

9ऐ रब, मेरी तमाम आरज़ू तेरे सामने है, मेरी
आहें तुझसे पोशीदा नहीं रहतीं।
10मेरा दिल ज़ोर से धड़कता, मेरी ताक़त
जवाब दे गई बल्कि मेरी आँखों की रौशनी भी
जाती रही है।
11मेरे दोस्त और साथी मेरी मुसीबत देखकर
मुझसे गुरेज़ करते, मेरे क़रीब के रिश्तेदार दूर खड़े
रहते हैं।
12मेरे जानी दुश्मन फंदे बिछा रहे हैं, जो मुझे
नुक़सान पहुँचाना चाहते हैं वह धमकियाँ दे रहे
और सारा सारा दिन फ़रेबदेह मनसूबे बाँध रहे हैं।

13और मैं? मैं तो गोया बहरा हूँ, मैं नहीं सुनता।
मैं गूँगे की मानिंद हूँ जो अपना मुँह नहीं खोलता।
14मैं ऐसा शख़्स बन गया हूँ जो न सुनता, न
जवाब में एतराज़ करता है।

15क्योंकि ऐ रब, मैं तेरे इंतज़ार में हूँ। ऐ रब
मेरे ख़ुदा, तू ही मेरी सुनेगा।
16मैं बोला, "ऐसा न हो कि वह मेरा नुक़सान
देखकर बग़लें बजाएँ, वह मेरे पाँवों के डगमगाने
पर मुझे दबाकर अपने आप पर फ़ख़र करें।"
17क्योंकि मैं लड़खड़ाने को हूँ, मेरी अज़ियत
मुतवातिर मेरे सामने रहती है।
18चुनाँचे मैं अपना क़ुसूर तसलीम करता हूँ, मैं
अपने गुनाह के बाइस ग़मगीन हूँ।
19मेरे दुश्मन ज़िंदा और ताक़तवर हैं, और जो
बिलावजह मुझसे नफ़रत करते हैं वह बहुत हैं।
20वह नेकी के बदले बदी करते हैं। वह इसलिए
मेरे दुश्मन हैं कि मैं भलाई के पीछे लगा रहता हूँ।

21ऐ रब, मुझे तर्क न कर! ऐ अल्लाह, मुझसे
दूर न रह!
22ऐ रब मेरी नजात, मेरी मदद करने में जल्दी
कर!

इनसान के फ़ानी होने के पेशे-नज़र इल्तिजा

39 दाऊद का ज़बूर। यदूतून के लिए। मौसीक़ी
के राहनुमा के लिए।

मैं बोला, "मैं अपनी राहों पर ध्यान दूँगा ताकि
अपनी ज़बान से गुनाह न करूँ। जब तक बेदीन
मेरे सामने रहे उस वक़्त तक अपने मुँह को लगाम
दिए रहूँगा।"
2मैं चुप-चाप हो गया और अच्छी चीज़ों से दूर
रहकर ख़ामोश रहा। तब मेरी अज़ियत बढ़ गई।
3मेरा दिल परेशानी से तपने लगा, मेरे कराहते
कराहते मेरे अंदर बेचैनी की आग-सी भड़क उठी।
तब बात ज़बान पर आ गई,
4"ऐ रब, मुझे मेरा अंजाम और मेरी उम्र की
हद दिखा ताकि मैं जान लूँ कि कितना फ़ानी हूँ।
5देख, मेरी ज़िंदगी का दौरानिया तेरे सामने
लमहा-भर का है। मेरी पूरी उम्र तेरे नज़दीक कुछ
भी नहीं है। हर इनसान दम-भर का ही है, ख़ाह वह
कितनी ही मज़बूती से खड़ा क्यों न हो। (सिलाह)
6जब वह इधर-उधर घूमे फिरे तो साया ही है।
उसका शोर-शराबा बातिल है, और गो वह दौलत
जमा करने में मसरूफ़ रहे तो भी उसे मालूम नहीं
कि बाद में किसके क़ब्ज़े में आएगी।"

7चुनाँचे ऐ रब, मैं किसके इंतज़ार में रहूँ? तू
ही मेरी वाहिद उम्मीद है!
8मेरे तमाम गुनाहों से मुझे छुटकारा दे। अहमक़
को मेरी रुसवाई करने न दे।
9मैं ख़ामोश हो गया हूँ और कभी अपना मुँह
नहीं खोलता, क्योंकि यह सब कुछ तेरे ही हाथ
से हुआ है।
10अपना अज़ाब मुझसे दूर कर! तेरे हाथ की
ज़रबों से मैं हलाक हो रहा हूँ।
11जब तू इनसान को उसके क़ुसूर की मुनासिब
सज़ा देकर उसको तंबीह करता है तो उस की
ख़ूबसूरती कीड़ा लगे कपड़े की तरह जाती रहती
है। हर इनसान दम-भर का ही है। (सिलाह)

12ऐ रब, मेरी दुआ सुन और मदद के लिए मेरी
आहों पर तवज्जुह दे। मेरे आँसुओं को देखकर
ख़ामोश न रह। क्योंकि मैं तेरे हुज़ूर रहनेवाला
परदेसी, अपने तमाम बापदादा की तरह तेरे हुज़ूर
बसनेवाला ग़ैरशहरी हूँ।
13मुझसे बाज़ आ ताकि मैं कूच करके नेस्त हो
जाने से पहले एक बार फिर हश्शाश-बश्शाश हो
जाऊँ।

शुक्र और दरख़ास्त

40 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।

मैं सब्र से रब के इंतज़ार में रहा तो वह मेरी
तरफ़ मायल हुआ और मदद के लिए मेरी चीख़ों
पर तवज्जुह दी।

2वह मुझे तबाही के गढ़े से खींच लाया, दलदल
और कीचड़ से निकाल लाया। उसने मेरे पाँवों को
चटान पर रख दिया, और अब मैं मज़बूती से चल-
फिर सकता हूँ।
3उसने मेरे मुँह में नया गीत डाल दिया, हमारे
ख़ुदा की हम्दो-सना का गीत उभरने दिया। बहुत-
से लोग यह देखेंगे और ख़ौफ़ खाकर रब पर
भरोसा रखेंगे।
4मुबारक है वह जो रब पर पूरा भरोसा रखता
है, जो तंग करनेवालों और फ़रेब में उलझे हुओं
की तरफ़ रुख़ नहीं करता।
5ऐ रब मेरे ख़ुदा, बार बार तूने हमें अपने
मोजिज़े दिखाए, जगह बजगह अपने मनसूबे
वुजूद में लाकर हमारी मदद की। तुझ जैसा कोई
नहीं है। तेरे अज़ीम काम बेशुमार हैं, मैं उनकी पूरी
फ़हरिस्त बता भी नहीं सकता।

6तू क़ुरबानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था,
लेकिन तूने मेरे कानों को खोल दिया। तूने भस्म
होनेवाली क़ुरबानियों और गुनाह की क़ुरबानियों
का तक़ाज़ा न किया।
7फिर मैं बोल उठा, “मैं हाज़िर हूँ जिस तरह
मेरे बारे में कलामे-मुक़द्दस[a] में लिखा है।
8ऐ मेरे ख़ुदा, मैं ख़ुशी से तेरी मरज़ी पूरी करता
हूँ, तेरी शरीअत मेरे दिल में टिक गई है।”
9मैंने बड़े इजतिमा में रास्ती की ख़ुशख़बरी
सुनाई है। ऐ रब, यक़ीनन तू जानता है कि मैंने
अपने होंटों को बंद न रखा।
10मैंने तेरी रास्ती अपने दिल में छुपाए न रखी
बल्कि तेरी वफ़ादारी और नजात बयान की। मैंने
बड़े इजतिमा में तेरी शफ़क़त और सदाक़त की
एक बात भी पोशीदा न रखी।

11ऐ रब, तू मुझे अपने रहम से महरूम नहीं
रखेगा, तेरी मेहरबानी और वफ़ादारी मुसलसल
मेरी निगहबानी करेंगी।

12क्योंकि बेशुमार तकलीफ़ों ने मुझे घेर रखा
है, मेरे गुनाहों ने आख़िरकार मुझे आ पकड़ा है।
अब मैं नज़र भी नहीं उठा सकता। वह मेरे सर के
बालों से ज़्यादा हैं, इसलिए मैं हिम्मत हार गया
हूँ।

13ऐ रब, मेहरबानी करके मुझे बचा! ऐ रब,
मेरी मदद करने में जल्दी कर!
14मेरे जानी दुश्मन सब शरमिंदा हो जाएँ,
उनकी सख़्त रुसवाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत
देखने से लुत्फ़ उठाते हैं वह पीछे हट जाएँ, उनका
मुँह काला हो जाए।
15जो मेरी मुसीबत देखकर क़हक़हा लगाते हैं
वह शर्म के मारे तबाह हो जाएँ।

16लेकिन तेरे तालिब शादमान होकर तेरी ख़ुशी
मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह हमेशा कहें,
“रब अज़ीम है!”
17मैं नाचार और ज़रूरतमंद हूँ, लेकिन रब मेरा
ख़याल रखता है। तू ही मेरा सहारा और मेरा
नजातदहिंदा है। ऐ मेरे ख़ुदा, देर न कर!

मरीज़ की दुआ

41 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
मुबारक है वह जो पस्तहाल का ख़याल रखता
है। मुसीबत के दिन रब उसे छुटकारा देगा।
2रब उस की हिफ़ाज़त करके उस की ज़िंदगी
को महफ़ूज़ रखेगा, वह मुल्क में उसे बरकत
देकर उसे उसके दुश्मनों के लालच के हवाले नहीं
करेगा।
3बीमारी के वक़्त रब उसको बिस्तर पर
सँभालेगा। तू उस की सेहत पूरी तरह बहाल
करेगा।

4मैं बोला, “ऐ रब, मुझ पर रहम कर! मुझे
शफ़ा दे, क्योंकि मैंने तेरा ही गुनाह किया है।”

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : किताब के तूमार में।

5मेरे दुश्मन मेरे बारे में ग़लत बातें करके कहते
हैं, “वह कब मरेगा? उसका नामो-निशान कब
मिटेगा?”
6जब कभी कोई मुझसे मिलने आए तो
उसका दिल झूट बोलता है। पसे-परदा वह ऐसी
नुक़सानदेह मालूमात जमा करता है जिन्हें बाद में
बाहर जाकर गलियों में फैला सके।
7मुझसे नफ़रत करनेवाले सब आपस में मेरे
ख़िलाफ़ फुसफुसाते हैं। वह मेरे ख़िलाफ़ बुरे
मनसूबे बाँधकर कहते हैं,
8“उसे मोहलक मरज़ लग गया है। वह कभी
अपने बिस्तर पर से दुबारा नहीं उठेगा।”
9मेरा दोस्त भी मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है।
जिस पर मैं एतमाद करता था और जो मेरी रोटी
खाता था, उसने मुझ पर लात उठाई है।

10लेकिन तू ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर!
मुझे दुबारा उठा खड़ा कर ताकि उन्हें उनके सुलूक
का बदला दे सकूँ।
11इससे मैं जानता हूँ कि तू मुझसे ख़ुश है कि
मेरा दुश्मन मुझ पर फ़तह के नारे नहीं लगाता।
12तूने मुझे मेरी दियानतदारी के बाइस क़ायम
रखा और हमेशा के लिए अपने हुज़ूर खड़ा किया
है।

13रब की हम्द हो जो इसराईल का ख़ुदा है।
अज़ल से अबद तक उस की तमजीद हो। आमीन,
फिर आमीन।

दूसरी किताब 42-72

परदेस में अल्लाह का आरज़ूमंद

42 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिकमत का
गीत। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह, जिस तरह हिरनी नदियों के ताज़ा
पानी के लिए तड़पती है उसी तरह मेरी जान तेरे
लिए तड़पती है।
2मेरी जान ख़ुदा, हाँ ज़िंदा ख़ुदा की प्यासी है।
मैं कब जाकर अल्लाह का चेहरा देखूँगा?

3दिन-रात मेरे आँसू मेरी ग़िज़ा रहे हैं। क्योंकि
पूरा दिन मुझसे कहा जाता है, “तेरा ख़ुदा कहाँ
है?”
4पहले हालात याद करके मैं अपने सामने
अपने दिल की आहो-ज़ारी उंडेल देता हूँ।[a] कितना
मज़ा आता था जब हमारा जुलूस निकलता था,
जब मैं हुजूम के बीच में ख़ुशी और शुक्रगुज़ारी
के नारे लगाते हुए अल्लाह की सुकूनतगाह की
जानिब बढ़ता जाता था। कितना शोर मच जाता
था जब हम जशन मनाते हुए घुमते-फिरते थे।

5ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यों खा रही है, बेचैनी
से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इंतज़ार में रह,
क्योंकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा
ख़ुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

6मेरी जान ग़म के मारे पिघल रही है। इसलिए
मैं तुझे यरदन के मुल्क, हरमून के पहाड़ी
सिलसिले और कोहे-मिसआर से याद करता हूँ।
7जब से तेरे आबशारों की आवाज़ बुलंद हुई तो
एक सैलाब दूसरे को पुकारने लगा है। तेरी तमाम
मौजें और लहरें मुझ पर से गुज़र गई हैं।
8दिन के वक़्त रब अपनी शफ़क़त भेजेगा, और
रात के वक़्त उसका गीत मेरे साथ होगा, मैं अपनी
हयात के ख़ुदा से दुआ करूँगा।
9मैं अल्लाह अपनी चटान से कहूँगा, “तू मुझे
क्यों भूल गया है? मैं अपने दुश्मन के ज़ुल्म के
बाइस क्यों मातमी लिबास पहने फिरूँ?”
10मेरे दुश्मनों की लान-तान से मेरी हड्डियाँ टूट
रही हैं, क्योंकि पूरा दिन वह कहते हैं, “तेरा ख़ुदा
कहाँ है?”

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : अपनी जान उंडेल देता हूँ।

11ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यों खा रही है, बेचैनी
से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इंतज़ार में रह,
क्योंकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा
ख़ुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

43 ऐ अल्लाह, मेरा इनसाफ़ कर! मेरे
लिए ग़ैरईमानदार क़ौम से लड़, मुझे
धोकेबाज़ और शरीर आदमियों से बचा।
2क्योंकि तू मेरी पनाह का ख़ुदा है। तूने मुझे
क्यों रद्द किया है? मैं अपने दुश्मन के ज़ुल्म के
बाइस क्यों मातमी लिबास पहने फिरूँ?
3अपनी रौशनी और सच्चाई को भेज ताकि वह
मेरी राहनुमाई करके मुझे तेरे मुक़द्दस पहाड़ और
तेरी सुकूनतगाह के पास पहुँचाएँ।
4तब मैं अल्लाह की क़ुरबानगाह के पास
आऊँगा, उस ख़ुदा के पास जो मेरी ख़ुशी और
फ़रहत है। ऐ अल्लाह मेरे ख़ुदा, वहाँ मैं सरोद
बजाकर तेरी सताइश करूँगा।

5ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यों खा रही है, बेचैनी
से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इंतज़ार में रह,
क्योंकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा
ख़ुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

क्या अल्लाह ने अपनी क़ौम को रद्द किया है?

44 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिकमत का
गीत। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह, जो कुछ तूने हमारे बापदादा के
ऐयाम में यानी क़दीम ज़माने में किया वह हमने
अपने कानों से उनसे सुना है।
2तूने ख़ुद अपने हाथ से दीगर क़ौमों को
निकालकर हमारे बापदादा को मुल्क में पौदे
की तरह लगा दिया। तूने ख़ुद दीगर उम्मतों को
शिकस्त देकर हमारे बापदादा को मुल्क में फलने-
फूलने दिया।
3उन्होंने अपनी ही तलवार के ज़रीए मुल्क पर
क़ब्ज़ा नहीं किया, अपने ही बाज़ू से फ़तह नहीं
पाई बल्कि तेरे दहने हाथ, तेरे बाज़ू और तेरे चेहरे
के नूर ने यह सब कुछ किया। क्योंकि वह तुझे
पसंद थे।
4तू मेरा बादशाह, मेरा ख़ुदा है। तेरे ही हुक्म पर
याक़ूब को मदद हासिल होती है।
5तेरी मदद से हम अपने दुश्मनों को ज़मीन पर
पटख़ देते, तेरा नाम लेकर अपने मुख़ालिफ़ों को
कुचल देते हैं।
6क्योंकि मैं अपनी कमान पर एतमाद नहीं
करता, और मेरी तलवार मुझे नहीं बचाएगी
7बल्कि तू ही हमें दुश्मन से बचाता, तू ही उन्हें
शरमिंदा होने देता है जो हमसे नफ़रत करते हैं।
8पूरा दिन हम अल्लाह पर फ़ख़र करते हैं,
और हम हमेशा तक तेरे नाम की तमजीद करेंगे।
(सिलाह)

9लेकिन अब तूने हमें रद्द कर दिया, हमें
शरमिंदा होने दिया है। जब हमारी फ़ौजें लड़ने के
लिए निकलती हैं तो तू उनका साथ नहीं देता।
10तूने हमें दुश्मन के सामने पसपा होने दिया,
और जो हमसे नफ़रत करते हैं उन्होंने हमें लूट
लिया है।
11तूने हमें भेड़-बकरियों की तरह क़स्साब
के हाथ में छोड़ दिया, हमें मुख़्तलिफ़ क़ौमों में
मुंतशिर कर दिया है।
12तूने अपनी क़ौम को ख़फ़ीफ़-सी रक़म के
लिए बेच डाला, उसे फ़रोख़्त करने से नफ़ा
हासिल न हुआ।
13यह तेरी तरफ़ से हुआ कि हमारे पड़ोसी हमें
रुसवा करते, गिर्दो-नवाह के लोग हमें लान-तान
करते हैं।
14हम अक़वाम में इबरतअंगेज़ मिसाल बन गए
हैं। लोग हमें देखकर तौबा तौबा कहते हैं।
15दिन-भर मेरी रुसवाई मेरी आँखों के सामने
रहती है। मेरा चेहरा शर्मसार ही रहता है,
16क्योंकि मुझे उनकी गालियाँ और कुफ़र
सुनना पड़ता है, दुश्मन और इंतक़ाम लेने पर तुले
हुए को बरदाश्त करना पड़ता है।

17यह सब कुछ हम पर आ गया है, हालाँकि न
हम तुझे भूल गए और न तेरे अहद से बेवफ़ा हुए
हैं।
18न हमारा दिल बाग़ी हो गया, न हमारे क़दम
तेरी राह से भटक गए हैं।
19ताहम तूने हमें चूर चूर करके गीदड़ों के
दरमियान छोड़ दिया, तूने हमें गहरी तारीकी में
डूबने दिया है।
20अगर हम अपने ख़ुदा का नाम भूलकर अपने
हाथ किसी और माबूद की तरफ़ उठाते
21तो क्या अल्लाह को यह बात मालूम न हो
जाती? ज़रूर! वह तो दिल के राज़ों से वाक़िफ़
होता है।
22लेकिन तेरी ख़ातिर हमें दिन-भर मौत का
सामना करना पड़ता है, लोग हमें ज़बह होनेवाली
भेड़ों के बराबर समझते हैं।

23ऐ रब, जाग उठ! तू क्यों सोया हुआ है?
हमें हमेशा के लिए रद्द न कर बल्कि हमारी मदद
करने के लिए खड़ा हो जा।
24तू अपना चेहरा हमसे पोशीदा क्यों रखता
है, हमारी मुसीबत और हम पर होनेवाले ज़ुल्म
को नज़रंदाज़ क्यों करता है?
25हमारी जान ख़ाक में दब गई, हमारा बदन
मिट्टी से चिमट गया है।
26उठकर हमारी मदद कर! अपनी शफ़क़त
की ख़ातिर फ़िद्या देकर हमें छुड़ा!

बादशाह की शादी

45 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिकमत और
मुहब्बत का गीत। तर्ज़ : सोसन के फूल।
मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
मेरे दिल से ख़ूबसूरत गीत छलक रहा है, मैं
उसे बादशाह को पेश करूँगा। मेरी ज़बान माहिर
कातिब के क़लम की मानिंद हो!

2तू आदमियों में सबसे ख़ूबसूरत है! तेरे होंट
शफ़क़त से मसह किए हुए हैं, इसलिए अल्लाह
ने तुझे अबदी बरकत दी है।
3ऐ सूरमे, अपनी तलवार से कमरबस्ता हो,
अपनी शानो-शौकत से मुलब्बस हो जा!
4ग़ालबा और कामयाबी हासिल कर। सच्चाई,
इंकिसारी और रास्ती की ख़ातिर लड़ने के लिए
निकल आ। तेरा दहना हाथ तुझे हैरतअंगेज़ काम
दिखाए।
5तेरे तेज़ तीर बादशाह के दुश्मनों के दिलों को
छेद डालें। क़ौमें तेरे पाँवों में गिर जाएँ।
6ऐ अल्लाह, तेरा तख़्त अज़ल से अबद तक
क़ायमो-दायम रहेगा, और इनसाफ़ का शाही
असा तेरी बादशाही पर हुकूमत करेगा।
7तूने रास्तबाज़ी से मुहब्बत और बेदीनी से
नफ़रत की, इसलिए अल्लाह तेरे ख़ुदा ने तुझे
ख़ुशी के तेल से मसह करके तुझे तेरे साथियों से
कहीं ज़्यादा सरफ़राज़ कर दिया।
8मुर, ऊद और अमलतास की बेशक़ीमत
ख़ुशबू तेरे तमाम कपड़ों से फैलती है। हाथीदाँत
के महलों में तारदार मौसीक़ी तेरा दिल बहलाती
है।
9बादशाहों की बेटियाँ तेरे ज़ेवरात से सजी
फिरती हैं। मलिका ओफ़ीर का सोना पहने हुए
तेरे दहने हाथ खड़ी है।

10ऐ बेटी, सुन मेरी बात! ग़ौर कर और कान
लगा। अपनी क़ौम और अपने बाप का घर भूल
जा।
11बादशाह तेरे हुस्न का आरज़ूमंद है, क्योंकि
वह तेरा आक़ा है। चुनाँचे झुककर उसका
एहतराम कर।
12सूर की बेटी तोह्फ़ा लेकर आएगी, क़ौम के
अमीर तेरी नज़रे-करम हासिल करने की कोशिश
करेंगे।
13बादशाह की बेटी कितनी शानदार चीज़ों से
आरास्ता है। उसका लिबास सोने के धागों से बुना
हुआ है।

14उसे नफ़ीस रंगदार कपड़े पहने बादशाह के
पास लाया जाता है। जो कुँवारी सहेलियाँ उसके
पीछे चलती हैं उन्हें भी तेरे सामने लाया जाता है।
15लोग शादमान होकर और ख़ुशी मनाते हुए
उन्हें वहाँ पहुँचाते हैं, और वह शाही महल में
दाख़िल होती हैं।

16ऐ बादशाह, तेरे बेटे तेरे बापदादा की जगह
खड़े हो जाएंगे, और तू उन्हें रईस बनाकर पूरी
दुनिया में ज़िम्मेदारियाँ देगा।
17पुश्त-दर-पुश्त मैं तेरे नाम की तमजीद
करूँगा, इसलिए क़ौमें हमेशा तक तेरी सताइश
करेंगी।

अल्लाह हमारी क़ुव्वत है

46 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। गीत का तर्ज़ : कुँवारियाँ।
अल्लाह हमारी पनाहगाह और क़ुव्वत है।
मुसीबत के वक़्त वह हमारा मज़बूत सहारा
साबित हुआ है।
2इसलिए हम ख़ौफ़ नहीं खाएँगे, गो ज़मीन
लरज़ उठे और पहाड़ झूमकर समुंदर की गहराइयों
में गिर जाएँ,
3गो समुंदर शोर मचाकर ठाठें मारे और पहाड़
उस की दहाड़ों से काँप उठें। (सिलाह)

4दरिया की शाख़ें अल्लाह के शहर को ख़ुश
करती हैं, उस शहर को जो अल्लाह तआला की
मुक़द्दस सुकूनतगाह है।
5अल्लाह उसके बीच में है, इसलिए शहर नहीं
डगमगाएगा। सुबह-सवेरे ही अल्लाह उस की
मदद करेगा।
6क़ौमें शोर मचाने, सलतनतें लड़खड़ाने लगीं।
अल्लाह ने आवाज़ दी तो ज़मीन लरज़ उठी।

7रब्बुल-अफ़वाज हमारे साथ है, याक़ूब का
ख़ुदा हमारा क़िला है। (सिलाह)

8आओ, रब के अज़ीम कामों पर नज़र डालो!
उसी ने ज़मीन पर हौलनाक तबाही नाज़िल की
है।
9वही दुनिया की इंतहा तक जंगें रोक देता, वही
कमान को तोड़ देता, नेज़े को टुकड़े टुकड़े करता
और ढाल को जला देता है।
10वह फ़रमाता है, “अपनी हरकतों से बाज़
आओ! जान लो कि मैं ख़ुदा हूँ। मैं अक़वाम में
सरबुलंद और दुनिया में सरफ़राज़ हूँगा।”

11रब्बुल-अफ़वाज हमारे साथ है। याक़ूब का
ख़ुदा हमारा क़िला है। (सिलाह)

अल्लाह तमाम क़ौमों का बादशाह है

47 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ तमाम क़ौमो, ताली बजाओ! ख़ुशी के नारे
लगाकर अल्लाह की मद्हसराई करो!
2क्योंकि रब तआला पुरजलाल है, वह पूरी
दुनिया का अज़ीम बादशाह है।
3उसने क़ौमों को हमारे तहत कर दिया, उम्मतों
को हमारे पाँवों तले रख दिया।
4उसने हमारे लिए हमारी मीरास को चुन लिया,
उसी को जो उसके प्यारे बंदे याक़ूब के लिए फ़ख़र
का बाइस था। (सिलाह)

5अल्लाह ने सऊद फ़रमाया तो साथ साथ
ख़ुशी का नारा बुलंद हुआ, रब बुलंदी पर चढ़ गया
तो साथ साथ नरसिंगा बजता रहा।
6मद्हसराई करो, अल्लाह की मद्हसराई
करो! मद्हसराई करो, हमारे बादशाह की
मद्हसराई करो!
7क्योंकि अल्लाह पूरी दुनिया का बादशाह है।
हिकमत का गीत गाकर उस की सताइश करो।
8अल्लाह क़ौमों पर हुकूमत करता है, अल्लाह
अपने मुक़द्दस तख़्त पर बैठा है।
9दीगर क़ौमों के शुरफ़ा इब्राहीम के ख़ुदा की
क़ौम के साथ जमा हो गए हैं, क्योंकि वह दुनिया

के हुक्मरानों का मालिक है। वह निहायत ही सरबुलंद है।

अल्लाह का शहर यरूशलम

48 गीत। क़ोरह की औलाद का ज़बूर।
रब अज़ीम और बड़ी तारीफ़ के लायक़ है। उसका मुक़द्दस पहाड़ हमारे ख़ुदा के शहर में है।

2कोहे-सिय्यून की बुलंदी ख़ूबसूरत है, पूरी दुनिया उससे ख़ुश होती है। कोहे-सिय्यून दूरतरीन शिमाल का इलाही पहाड़ ही है, वह अज़ीम बादशाह का शहर है।

3अल्लाह उसके महलों में है, वह उस की पनाहगाह साबित हुआ है।

4क्योंकि देखो, बादशाह जमा होकर यरूशलम से लड़ने आए।

5लेकिन उसे देखते ही वह हैरान हुए, वह दहशत खाकर भाग गए।

6वहाँ उन पर कपकपी तारी हुई, और वह दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाने लगे।

7जिस तरह मशरिक़ी आँधी तरसीस के शानदार जहाज़ों को टुकड़े टुकड़े कर देती है उसी तरह तूने उन्हें तबाह कर दिया।

8जो कुछ हमने सुना है वह हमारे देखते देखते रब्बुल-अफ़वाज हमारे ख़ुदा के शहर पर सादिक़ आया है, अल्लाह उसे अबद तक क़ायम रखेगा। (सिलाह)

9ऐ अल्लाह, हमने तेरी सुकूनतगाह में तेरी शफ़क़त पर ग़ौरो-ख़ौज़ किया है।

10ऐ अल्लाह, तेरा नाम इस लायक़ है कि तेरी तारीफ़ दुनिया की इंतहा तक की जाए। तेरा दहना हाथ रास्ती से भरा रहता है।

11कोहे-सिय्यून शादमान हो, यहूदाह की बेटियाँ[a] तेरे मुंसिफ़ाना फ़ैसलों के बाइस ख़ुशी मनाएँ।

12सिय्यून के इर्दगिर्द घूमो फिरो, उस की फ़सील के साथ साथ चलकर उसके बुर्ज गिन लो।

13उस की क़िलाबंदी पर ख़ूब ध्यान दो, उसके महलों का मुआयना करो ताकि आनेवाली नसल को सब कुछ सुना सको।

14यक़ीनन अल्लाह हमारा ख़ुदा हमेशा तक ऐसा ही है। वह अबद तक हमारी राहनुमाई करेगा।

अमीरों की शान सराब ही है

49 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ तमाम क़ौमो, सुनो! दुनिया के तमाम बाशिंदो, ध्यान दो!

2छोटे और बड़े, अमीर और ग़रीब सब तवज्जुह दें।

3मेरा मुँह हिकमत बयान करेगा और मेरे दिल का ग़ौरो-ख़ौज़ समझ अता करेगा।

4मैं अपना कान एक कहावत की तरफ़ झुकाऊँगा, सरोद बजाकर अपनी पहेली का हल बताऊँगा।

5मैं ख़ौफ़ क्यों खाऊँ जब मुसीबत के दिन आएँ और मक्कारों का बुरा काम मुझे घेर ले?

6ऐसे लोग अपनी मिलकियत पर एतमाद और अपनी बड़ी दौलत पर फ़ख़र करते हैं।

7कोई भी फ़िद्या देकर अपने भाई की जान को नहीं छुड़ा सकता। वह अल्लाह को इस क़िस्म का तावान नहीं दे सकता।

[a]यहाँ यहूदाह की बेटियों से मुराद उसके शहर भी हो सकते हैं।

8क्योंकि इतनी बड़ी रक़म देना उसके बस की
बात नहीं। आख़िरकार उसे हमेशा के लिए ऐसी
कोशिशों से बाज़ आना पड़ेगा।
9चुनाँचे कोई भी हमेशा के लिए ज़िंदा नहीं
रह सकता, आख़िरकार हर एक मौत के गढ़े में
उतरेगा।
10क्योंकि हर एक देख सकता है कि दानिशमंद
भी वफ़ात पाते और अहमक़ और नासमझ भी
मिलकर हलाक हो जाते हैं। सबको अपनी दौलत
दूसरों के लिए छोड़नी पड़ती है।
11उनकी क़ब्रें अबद तक उनके घर बनी रहेंगी,
पुश्त-दर-पुश्त वह उनमें बसे रहेंगे, गो उन्हें ज़मीनें
हासिल थीं जो उनके नाम पर थीं।

12इनसान अपनी शानो-शौकत के बा-
वुजूद क़ायम नहीं रहता, उसे जानवरों की तरह
हलाक होना है।
13यह उन सबकी तक़दीर है जो अपने आप
पर एतमाद रखते हैं, और उन सबका अंजाम जो
उनकी बातें पसंद करते हैं। (सिलाह)
14उन्हें भेड़-बकरियों की तरह पाताल में लाया
जाएगा, और मौत उन्हें चराएगी। क्योंकि सुबह
के वक़्त दियानतदार उन पर हुकूमत करेंगे। तब
उनकी शक्लो-सूरत घिसे-फटे कपड़े की तरह
गल-सड़ जाएगी, पाताल ही उनकी रिहाइशगाह
होगा।
15लेकिन अल्लाह मेरी जान का फ़िद्या देगा,
वह मुझे पकड़कर पाताल की गिरिफ़्त से
छुड़ाएगा। (सिलाह)

16मत घबरा जब कोई अमीर हो जाए, जब
उसके घर की शानो-शौकत बढ़ती जाए।
17मरते वक़्त तो वह अपने साथ कुछ नहीं
ले जाएगा, उस की शानो-शौकत उसके साथ
पाताल में नहीं उतरेगी।
18बेशक वह जीते-जी अपने आपको मुबारक
कहेगा, और दूसरे भी खाते-पीते आदमी की
तारीफ़ करेंगे।
19फिर भी वह आख़िरकार अपने बाप-
दादा की नसल के पास उतरेगा, उनके पास जो
दुबारा कभी रौशनी नहीं देखेंगे।

20जो इनसान अपनी शानो-शौकत के बावुजूद
नासमझ है, उसे जानवरों की तरह हलाक होना
है।

सहीह इबादत

50 आसफ़ का ज़बूर।
रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा बोल उठा है,
उसने तुलूए-सुबह से लेकर ग़ुरूबे-आफ़ताब तक
पूरी दुनिया को बुलाया है।
2अल्लाह का नूर सिय्यून से चमक उठा है, उस
पहाड़ से जो कामिल हुस्न का इज़हार है।
3हमारा ख़ुदा आ रहा है, वह ख़ामोश नहीं
रहेगा। उसके आगे आगे सब कुछ भस्म हो रहा
है, उसके इर्दगिर्द तेज़ आँधी चल रही है।
4वह आसमानो-ज़मीन को आवाज़ देता है,
“अब मैं अपनी क़ौम की अदालत करूँगा।
5मेरे ईमानदारों को मेरे हुज़ूर जमा करो, उन्हें
जिन्होंने क़ुरबानियाँ पेश करके मेरे साथ अहद
बाँधा है।”
6आसमान उस की रास्ती का एलान करेंगे,
क्योंकि अल्लाह ख़ुद इनसाफ़ करनेवाला है।
(सिलाह)
7“ऐ मेरी क़ौम, सुन! मुझे बात करने दे। ऐ
इसराईल, मैं तेरे ख़िलाफ़ गवाही दूँगा। मैं अल्लाह
तेरा ख़ुदा हूँ।
8मैं तुझे तेरी ज़बह की क़ुरबानियों के बाइस
मलामत नहीं कर रहा। तेरी भस्म होनेवाली
क़ुरबानियाँ तो मुसलसल मेरे सामने हैं।
9न मैं तेरे घर से बैल लूँगा, न तेरे बाड़ों से बकरे।
10क्योंकि जंगल के तमाम जानदार मेरे ही हैं,
हज़ारों पहाड़ियों पर बसनेवाले जानवर मेरे ही हैं।
11मैं पहाड़ों के हर परिंदे को जानता हूँ, और
जो भी मैदानों में हरकत करता है वह मेरा है।

12अगर मुझे भूक लगती तो मैं तुझे न बताता,
क्योंकि ज़मीन और जो कुछ उस पर है मेरा है।
13क्या तू समझता है कि मैं साँडों का गोश्त
खाना या बकरों का ख़ून पीना चाहता हूँ?
14अल्लाह को शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानी पेश
कर, और वह मन्नत पूरी कर जो तूने अल्लाह
तआला के हुज़ूर मानी है।
15मुसीबत के दिन मुझे पुकार। तब मैं तुझे
नजात दूँगा और तू मेरी तमजीद करेगा।"

16लेकिन बेदीन से अल्लाह फ़रमाता है, "मेरे
अहकाम सुनाने और मेरे अहद का ज़िक्र करने का
तेरा क्या हक़ है?
17तू तो तरबियत से नफ़रत करता और मेरे
फ़रमान कचरे की तरह अपने पीछे फेंक देता है।
18किसी चोर को देखते ही तू उसका साथ देता
है, तू ज़िनाकारों से रिफ़ाक़त रखता है।
19तू अपने मुँह को बुरे काम के लिए इस्तेमाल
करता, अपनी ज़बान को धोका देने के लिए तैयार
रखता है।
20तू दूसरों के पास बैठकर अपने भाई के
ख़िलाफ़ बोलता है, अपनी ही माँ के बेटे पर
तोहमत लगाता है।

21यह कुछ तूने किया है, और मैं ख़ामोश रहा।
तब तू समझा कि मैं बिलकुल तुझ जैसा हूँ।
लेकिन मैं तुझे मलामत करूँगा, तेरे सामने ही
मामला तरतीब से सुनाऊँगा।
22तुम जो अल्लाह को भूले हुए हो, बात समझ
लो, वरना मैं तुम्हें फाड़ डालूँगा। उस वक़्त कोई
नहीं होगा जो तुम्हें बचाए।

23जो शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानी पेश करे वह मेरी
ताज़ीम करता है। जो मुसम्मम इरादे से ऐसी राह
पर चले उसे मैं अल्लाह की नजात दिखाऊँगा।"

मुझ जैसे गुनाहगार पर रहम कर!
(तौबा का चौथा ज़बूर)

51 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। यह गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है
जब दाऊद के बत-सबा के साथ ज़िना करने के बाद नातन
नबी उसके पास आया।

ऐ अल्लाह, अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मुझ
पर मेहरबानी कर, अपने बड़े रहम के मुताबिक़
मेरी सरकशी के दाग़ मिटा दे।
2मुझे धो दे ताकि मेरा क़ुसूर दूर हो जाए, जो
गुनाह मुझसे सरज़द हुआ है उससे मुझे पाक कर।
3क्योंकि मैं अपनी सरकशी को मानता हूँ, और
मेरा गुनाह हमेशा मेरे सामने रहता है।
4मैंने तेरे, सिर्फ़ तेरे ही ख़िलाफ़ गुनाह किया,
मैंने वह कुछ किया जो तेरी नज़र में बुरा है।
क्योंकि लाज़िम है कि तू बोलते वक़्त रास्त ठहरे
और अदालत करते वक़्त पाकीज़ा साबित हो
जाए।

5यक़ीनन मैं गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ।
ज्योंही मैं माँ के पेट में वुजूद में आया तो गुनाहगार
था।
6यक़ीनन तू बातिन की सच्चाई पसंद करता
और पोशीदगी में मुझे हिकमत की तालीम देता
है।
7ज़ूफ़ा लेकर मुझसे गुनाह दूर कर ताकि पाक-
साफ़ हो जाऊँ। मुझे धो दे ताकि बर्फ़ से ज़्यादा
सफ़ेद हो जाऊँ।
8मुझे दुबारा ख़ुशी और शादमानी सुनने दे
ताकि जिन हड्डियों को तूने कुचल दिया वह
शादियाना बजाएँ।
9अपने चेहरे को मेरे गुनाहों से फेर ले, मेरा
तमाम क़ुसूर मिटा दे।
10ऐ अल्लाह, मेरे अंदर पाक दिल पैदा कर,
मुझमें नए सिरे से साबितक़दम रूह क़ायम कर।
11मुझे अपने हुज़ूर से ख़ारिज न कर, न अपने
मुक़द्दस रूह को मुझसे दूर कर।

12मुझे दुबारा अपनी नजात की ख़ुशी दिला,
मुझे मुस्तैद रूह अता करके सँभाले रख।
13तब मैं उन्हें तेरी राहों की तालीम दूँगा जो
तुझसे बेवफ़ा हो गए हैं, और गुनाहगार तेरे पास
वापस आएँगे।

14ऐ अल्लाह, मेरी नजात के ख़ुदा, क़त्ल का
क़ुसूर मुझसे दूर करके मुझे बचा। तब मेरी ज़बान
तेरी रास्ती की हम्दो-सना करेगी।
15ऐ रब, मेरे होंटों को खोल ताकि मेरा मुँह तेरी
सताइश करे।
16क्योंकि तू ज़बह की क़ुरबानी नहीं चाहता,
वरना मैं वह पेश करता। भस्म होनेवाली
क़ुरबानियाँ तुझे पसंद नहीं।
17अल्लाह को मंज़ूर क़ुरबानी शिकस्ता रूह है।
ऐ अल्लाह, तू शिकस्ता और कुचले हुए दिल को
हक़ीर नहीं जानेगा।

18अपनी मेहरबानी का इज़हार करके सिय्यून
को ख़ुशहाली बख़्श, यरूशलम की फ़सील तामीर
कर।
19तब तुझे हमारी सहीह क़ुरबानियाँ,
हमारी भस्म होनेवाली और मुकम्मल क़ुर-
बानियाँ पसंद आएँगी। तब तेरी क़ुरबानगाह पर
बैल चढ़ाए जाएंगे।

ज़ुल्म के बावुजूद तसल्ली

52 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। हिकमत का यह गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब दोएग अदोमी साऊल बादशाह के पास गया और उसे बताया, “दाऊद अख़ीमलिक इमाम के घर में गया है।”

ऐ सूरमे, तू अपनी बदी पर क्यों फ़ख़र करता
है? अल्लाह की शफ़क़त दिन-भर क़ायम रहती
है।
2ऐ धोकेबाज़, तेरी ज़बान तेज़ उस्तरे की तरह
चलती हुई तबाही के मनसूबे बाँधती है।
3तुझे भलाई की निसबत बुराई ज़्यादा प्यारी
है, सच बोलने की निसबत झूट ज़्यादा पसंद है।
(सिलाह)
4ऐ फ़रेबदेह ज़बान, तू हर तबाहकुन बात से
प्यार करती है।
5लेकिन अल्लाह तुझे हमेशा के लिए ख़ाक
में मिलाएगा। वह तुझे मार मारकर तेरे ख़ैमे से
निकाल देगा, तुझे जड़ से उखाड़कर ज़िंदों के
मुल्क से ख़ारिज कर देगा। (सिलाह)

6रास्तबाज़ यह देखकर ख़ौफ़ खाएँगे। वह उस
पर हँसकर कहेंगे,
7“लो, यह वह आदमी है जिसने अल्लाह में
पनाह न ली बल्कि अपनी बड़ी दौलत पर एतमाद
किया, जो अपने तबाहकुन मनसूबों से ताक़तवर
हो गया था।”

8लेकिन मैं अल्लाह के घर में ज़ैतून के फलते-
फूलते दरख़्त की मानिंद हूँ। मैं हमेशा के लिए
अल्लाह की शफ़क़त पर भरोसा रखूँगा।
9मैं अबद तक उसके लिए तेरी सताइश करूँगा
जो तूने किया है। मैं तेरे ईमानदारों के सामने ही
तेरे नाम के इंतज़ार में रहूँगा, क्योंकि वह भला है।

बेदीन की हमाक़त

53 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। हिकमत का गीत। तर्ज़ : महलत।

अहमक़ दिल में कहता है, “अल्लाह है ही
नहीं!” ऐसे लोग बदचलन हैं, उनकी हरकतें
क़ाबिले-घिन हैं। एक भी नहीं है जो अच्छा काम
करे।
2अल्लाह ने आसमान से इनसान पर नज़र
डाली ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या
कोई अल्लाह का तालिब है?
3अफ़सोस, सब सहीह राह से भटक गए,
सबके सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई
करता हो, एक भी नहीं।

4क्या जो बदी करके मेरी क़ौम को रोटी की
तरह खा लेते हैं उन्हें समझ नहीं आती? वह तो
अल्लाह को पुकारते ही नहीं।
5तब उन पर सख़्त दहशत वहाँ छा गई जहाँ
पहले दहशत का सबब नहीं था। जिन्होंने तुझे घेर
रखा था अल्लाह ने उनकी हड्डियाँ बिखेर दीं। तूने
उनको रुसवा किया, क्योंकि अल्लाह ने उन्हें रद्द
किया है।

6काश कोहे-सिय्यून से इसराईल की नजात
निकले! जब रब अपनी क़ौम को बहाल करेगा
तो याक़ूब ख़ुशी के नारे लगाएगा, इसराईल बाग़
बाग़ होगा।

ख़तरे में फँसे हुए शख़्स की इल्तिजा

54 दाऊद का ज़बूर। हिकमत का यह गीत
तारदार साज़ों के साथ गाना है। यह उस वक़्त
से मुताल्लिक़ है जब ज़ीफ़ के बाशिंदों ने साऊल के पास
जाकर कहा, “दाऊद हमारे पास छुपा हुआ है।”

ऐ अल्लाह, अपने नाम के ज़रीए से मुझे
छुटकारा दे! अपनी क़ुदरत के ज़रीए से मेरा
इनसाफ़ कर!
2ऐ अल्लाह, मेरी इल्तिजा सुन, मेरे मुँह के
अलफ़ाज़ पर ध्यान दे।
3क्योंकि परदेसी मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं,
ज़ालिम जो अल्लाह का लिहाज़ नहीं करते मेरी
जान लेने के दरपै हैं। (सिलाह)

4लेकिन अल्लाह मेरा सहारा है, रब मेरी ज़िंदगी
क़ायम रखता है।
5वह मेरे दुश्मनों की शरारत उन पर वापस
लाएगा। चुनाँचे अपनी वफ़ादारी दिखाकर उन्हें
तबाह कर दे!
6मैं तुझे रज़ाकाराना क़ुरबानी पेश करूँ-
गा। ऐ रब, मैं तेरे नाम की सताइश करूँगा,
क्योंकि वह भला है।
7क्योंकि उसने मुझे सारी मुसीबत से रिहाई दी,
और अब मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देखकर
ख़ुश हूँगा।

झूटे भाइयों पर शिकायत

55 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। हिकमत का यह गीत तारदार साज़ों
के साथ गाना है।

ऐ अल्लाह, मेरी दुआ पर ध्यान दे, अपने
आपको मेरी इल्तिजा से छुपाए न रख।
2मुझ पर ग़ौर कर, मेरी सुन। मैं बेचैनी से इधर-
उधर घूमते हुए आहें भर रहा हूँ।
3क्योंकि दुश्मन शोर मचा रहा, बेदीन मुझे तंग
कर रहा है। वह मुझ पर आफ़त लाने पर तुले हुए
हैं, ग़ुस्से में मेरी मुख़ालफ़त कर रहे हैं।
4मेरा दिल मेरे अंदर तड़प रहा है, मौत की
दहशत मुझ पर छा गई है।
5ख़ौफ़ और लरज़िश मुझ पर तारी हुई, हैबत
मुझ पर ग़ालिब आ गई है।

6मैं बोला, “काश मेरे कबूतर के-से पर हों
ताकि उड़कर आरामो-सुकून पा सकूँ!
7तब मैं दूर तक भागकर रेगिस्तान में बसेरा
करता,
8मैं जल्दी से कहीं पनाह लेता जहाँ तेज़ आँधी
और तूफ़ान से महफ़ूज़ रहता।” (सिलाह)

9ऐ रब, उनमें अबतरी पैदा कर, उनकी ज़बान
में इख़्तिलाफ़ डाल! क्योंकि मुझे शहर में हर
तरफ़ ज़ुल्म और झगड़े नज़र आते हैं।
10दिन-रात वह फ़सील पर चक्कर काटते हैं,
और शहर फ़साद और ख़राबी से भरा रहता है।
11उसके बीच में तबाही की हुकूमत है, और
ज़ुल्म और फ़रेब उसके चौक को नहीं छोड़ते।

12अगर कोई दुश्मन मेरी रुसवाई करता तो
क़ाबिले-बरदाश्त होता। अगर मुझसे नफ़रत

करनेवाला मुझे दबाकर अपने आपको सरफ़राज़ करता तो मैं उससे छुप जाता।

13लेकिन तू ही ने यह किया, तू जो मुझ जैसा है, जो मेरा क़रीबी दोस्त और हमराज़ है।

14मेरी तेरे साथ कितनी अच्छी रिफ़ाक़त थी जब हम हुजूम के साथ अल्लाह के घर की तरफ़ चलते गए!

15मौत अचानक ही उन्हें अपनी गिरिफ़्त में ले ले। ज़िंदा ही वह पाताल में उतर जाएँ, क्योंकि बुराई ने उनमें अपना घर बना लिया है।

16लेकिन मैं पुकारकर अल्लाह से मदद माँगता हूँ, और रब मुझे नजात देगा।

17मैं हर वक़्त आहो-ज़ारी करता और कराहता रहता हूँ, ख़ाह सुबह हो, ख़ाह दोपहर या शाम। और वह मेरी सुनेगा।

18वह फ़िद्या देकर मेरी जान को उनसे छुड़ाएगा जो मेरे ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं। गो उनकी तादाद बड़ी है वह मुझे आरामो-सुकून देगा।

19अल्लाह जो अज़ल से तख़्तनशीन है मेरी सुनकर उन्हें मुनासिब जवाब देगा। (सिलाह) क्योंकि न वह तबदील हो जाएंगे, न कभी अल्लाह का ख़ौफ़ मानेंगे।

20उस शख़्स ने अपना हाथ अपने दोस्तों के ख़िलाफ़ उठाया, उसने अपना अहद तोड़ लिया है।

21उस की ज़बान पर मक्खन की-सी चिकनी-चुपड़ी बातें और दिल में जंग है। उसके तेल से ज़्यादा नरम अलफ़ाज़ हक़ीक़त में खींची हुई तलवारें हैं।

22अपना बोझ रब पर डाल तो वह तुझे सँभालेगा। वह रास्तबाज़ को कभी डगमगाने नहीं देगा।

23लेकिन ऐ अल्लाह, तू उन्हें तबाही के गढ़े में उतरने देगा। ख़ूनख़ार और धोकेबाज़ आधी उम्र भी नहीं पाएँगे बल्कि जल्दी मरेंगे। लेकिन मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ।

मुसीबत में भरोसा

56 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : दूर-दराज़ जज़ीरों का कबूतर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब फ़िलिस्तियों ने उसे जात में पकड़ लिया।

ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर! क्योंकि लोग मुझे तंग कर रहे हैं, लड़नेवाला दिन-भर मुझे सता रहा है।

2दिन-भर मेरे दुश्मन मेरे पीछे लगे हैं, क्योंकि वह बहुत हैं और ग़ुरूर से मुझसे लड़ रहे हैं।

3लेकिन जब ख़ौफ़ मुझे अपनी गिरिफ़्त में ले ले तो मैं तुझ पर ही भरोसा रखता हूँ।

4अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं, क्योंकि फ़ानी इनसान मुझे क्या नुक़सान पहुँचा सकता है?

5दिन-भर वह मेरे अलफ़ाज़ को तोड़-मरोड़कर ग़लत मानी निकालते, अपने तमाम मनसूबों से मुझे ज़रर पहुँचाना चाहते हैं।

6वह हमलाआवर होकर ताक में बैठ जाते और मेरे हर क़दम पर ग़ौर करते हैं। क्योंकि वह मुझे मार डालने पर तुले हुए हैं।

7जो ऐसी शरीर हरकतें करते हैं, क्या उन्हें बचना चाहिए? हरगिज़ नहीं! ऐ अल्लाह, अक़वाम को ग़ुस्से में ख़ाक में मिला दे।

8जितने भी दिन मैं बेघर फिरा हूँ उनका तूने पूरा हिसाब रखा है। ऐ अल्लाह, मेरे आँसू अपने मशकीज़े में डाल ले! क्या वह पहले से तेरी किताब में क़लमबंद नहीं हैं? ज़रूर!

9फिर जब मैं तुझे पुकारूँगा तो मेरे दुश्मन मुझसे बाज़ आएँगे। यह मैंने जान लिया है कि अल्लाह मेरे साथ है!

10अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, रब के कलाम पर मेरा फ़ख़र है।

11अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं,
क्योंकि फ़ानी इनसान मुझे क्या नुक़सान पहुँचा
सकता है?

12ऐ अल्लाह, तेरे हुज़ूर मैंने मन्नतें मानी हैं,
और अब मैं तुझे शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानियाँ पेश
करूँगा।
13क्योंकि तूने मेरी जान को मौत से बचाया
और मेरे पाँवों को ठोकर खाने से महफ़ूज़ रखा
ताकि ज़िंदगी की रौशनी में अल्लाह के हुज़ूर चलूँ।

आज़माइश में अल्लाह पर एतमाद

57 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तर्ज़ : तबाह न कर। यह सुनहरा गीत
उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब वह साऊल से भागकर ग़ार
में छुप गया।

ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर, मुझ पर
मेहरबानी कर! क्योंकि मेरी जान तुझमें पनाह
लेती है। जब तक आफ़त मुझ पर से गुज़र न
जाए मैं तेरे परों के साये में पनाह लूँगा।
2मैं अल्लाह तआला को पुकारता हूँ, अल्लाह
से जो मेरा मामला ठीक करेगा।
3वह आसमान से मदद भेजकर मुझे छुटकारा
देगा और उनकी रुसवाई करेगा जो मुझे तंग
कर रहे हैं। (सिलाह) अल्लाह अपना करम और
वफ़ादारी भेजेगा।
4मैं इनसान को हड़प करनेवाले शेरबबरों के
बीच में लेटा हुआ हूँ, उनके दरमियान जिनके दाँत
नेज़े और तीर हैं और जिनकी ज़बान तेज़ तलवार
है।

5ऐ अल्लाह, आसमान पर सरबुलंद हो जा!
तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए!

6उन्होंने मेरे क़दमों के आगे फंदा बिछा दिया,
और मेरी जान ख़ाक में दब गई है। उन्होंने मेरे
सामने गढ़ा खोद लिया, लेकिन वह ख़ुद उसमें
गिर गए हैं। (सिलाह)

7ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़बूत, मेरा दिल
साबितक़दम है। मैं साज़ बजाकर तेरी मद्हसराई
करूँगा।
8ऐ मेरी जान, जाग उठ! ऐ सितार और सरोद,
जाग उठो! आओ, मैं तुलूए-सुबह को जगाऊँ।
9ऐ रब, क़ौमों में मैं तेरी सताइश, उम्मतों में
तेरी मद्हसराई करूँगा।
10क्योंकि तेरी अज़ीम शफ़क़त आसमान
जितनी बुलंद है, तेरी वफ़ादारी बादलों तक
पहुँचती है।
11ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज़ हो!
तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।

इंतक़ाम की दुआ

58 दाऊद का सुनहरा गीत। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर।

ऐ हुक्मरानो, क्या तुम वाक़ई मुंसिफ़ाना
फ़ैसला करते, क्या दियानतदारी से आदम-
ज़ादों की अदालत करते हो?
2हरगिज़ नहीं, तुम दिल में बदी करते और
मुल्क में अपने ज़ालिम हाथों के लिए रास्ता बनाते
हो।
3बेदीन पैदाइश से ही सहीह राह से दूर हो गए
हैं, झूट बोलनेवाले माँ के पेट से ही भटक गए हैं।
4वह साँप की तरह ज़हर उगलते हैं, उस बहरे
नाग की तरह जो अपने कानों को बंद कर रखता
है
5ताकि न जादूगर की आवाज़ सुने, न माहिर
सपेरे के मंत्र।

6ऐ अल्लाह, उनके मुँह के दाँत तोड़ डाल! ऐ
रब, जवान शेरबबरों के जबड़े को पाश पाश कर!
7वह उस पानी की तरह ज़ाया हो जाएँ जो
बहकर ग़ायब हो जाता है। उनके चलाए हुए तीर
बेअसर रहें।
8वह धूप में घोंगे की मानिंद हों जो चलता
चलता पिघल जाता है। उनका अंजाम उस बच्चे

का-सा हो जो माँ के पेट में ज़ाया होकर कभी सूरज नहीं देखेगा।

9इससे पहले कि तुम्हारी देगें काँटेदार टहनियों की आग महसूस करें अल्लाह उन सबको आँधी में उड़ाकर ले जाएगा।

10आख़िरकार दुश्मन को सज़ा मिलेगी। यह देखकर रास्तबाज़ ख़ुश होगा, और वह अपने पाँवों को बेदीनों के ख़ून में धो लेगा।

11तब लोग कहेंगे, “वाक़ई रास्तबाज़ को अज्र मिलता है, वाक़ई अल्लाह है जो दुनिया में लोगों की अदालत करता है!”

दुश्मन के दरमियान दुआ

59 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब साऊल ने अपने आदमियों को दाऊद के घर की पहरादारी करने के लिए भेजा ताकि जब मौक़ा मिले उसे क़त्ल करें।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे मेरे दुश्मनों से बचा। उनसे मेरी हिफ़ाज़त कर जो मेरे ख़िलाफ़ उठे हैं।

2मुझे बदकारों से छुटकारा दे, ख़ूनख़ारों से रिहा कर।

3देख, वह मेरी ताक में बैठे हैं। ऐ रब, ज़बरदस्त आदमी मुझ पर हमलाआवर हैं, हालाँकि मुझसे न ख़ता हुई न गुनाह।

4मैं बेक़ुसूर हूँ, ताहम वह दौड़ दौड़कर मुझसे लड़ने की तैयारियाँ कर रहे हैं। चुनाँचे जाग उठ, मेरी मदद करने आ, जो कुछ हो रहा है उस पर नज़र डाल।

5ऐ रब, लशकरों और इसराईल के ख़ुदा, दीगर तमाम क़ौमों को सज़ा देने के लिए जाग उठ! उन सब पर करम न फ़रमा जो शरीर और ग़द्दार हैं। (सिलाह)

6हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों की तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घुमते-फिरते हैं।

7देख, उनके मुँह से राल टपक रही है, उनके होंटों से तलवारें निकल रही हैं। क्योंकि वह समझते हैं, “कौन सुनेगा?”

8लेकिन तू ऐ रब, उन पर हँसता है, तू तमाम क़ौमों का मज़ाक़ उड़ाता है।

9ऐ मेरी क़ुव्वत, मेरी आँखें तुझ पर लगी रहेंगी, क्योंकि अल्लाह मेरा क़िला है।

10मेरा ख़ुदा अपनी मेहरबानी के साथ मुझसे मिलने आएगा, अल्लाह बख़्श देगा कि मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देखकर ख़ुश हूँगा।

11ऐ अल्लाह हमारी ढाल, उन्हें हलाक न कर, वरना मेरी क़ौम तेरा काम भूल जाएगी। अपनी क़ुदरत का इज़हार यों कर कि वह इधर-उधर लड़खड़ाकर गिर जाएँ।

12जो कुछ भी उनके मुँह से निकलता है वह गुनाह है, वह लानतें और झूट ही सुनाते हैं। चुनाँचे उन्हें उनके तकब्बुर के जाल में फँसने दे।

13ग़ुस्से में उन्हें तबाह कर! उन्हें यों तबाह कर कि उनका नामो-निशान तक न रहे। तब लोग दुनिया की इंतहा तक जान लेंगे कि अल्लाह याक़ूब की औलाद पर हुकूमत करता है। (सिलाह)

14हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों की तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घुमते-फिरते हैं।

15वह इधर-उधर गश्त लगाकर खाने की चीज़ें ढूँडते हैं। अगर पेट न भरे तो ग़ुर्राते रहते हैं।

16लेकिन मैं तेरी क़ुदरत की मद्हसराई करूँगा, सुबह को ख़ुशी के नारे लगाकर तेरी शफ़क़त की सताइश करूँगा। क्योंकि तू मेरा क़िला और मुसीबत के वक़्त मेरी पनाहगाह है।

17ऐ मेरी क़ुव्वत, मैं तेरी मद्हसराई करूँगा, क्योंकि अल्लाह मेरा क़िला और मेरा मेहरबान ख़ुदा है।

मरदूद क़ौम की दुआ

60 दाऊद का ज़बूर। तर्ज़ : अहद का सोसन। तालीम के लिए यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब दाऊद ने मसोपुतामिया के अरामियों और ज़ोबाह के अरामियों से जंग की। वापसी पर योआब ने नमक की वादी में 12,000 अदोमियों को मार डाला।

ऐ अल्लाह, तूने हमें रद्द किया, हमारी क़िलाबंदी में रख़ना डाल दिया है। लेकिन अब
अपने ग़ज़ब से बाज़ आकर हमें बहाल कर।
2तूने ज़मीन को ऐसे झटके दिए कि उसमें दराड़ें
पड़ गईं। अब उसके शिगाफ़ों को शफ़ा दे, क्योंकि
वह अभी तक थरथरा रही है।
3तूने अपनी क़ौम को तलख़ तजरबों से दोचार
होने दिया, हमें ऐसी तेज़ मै पिला दी कि हम
डगमगाने लगे हैं।
4लेकिन जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं उनके लिए तूने
झंडा गाड़ दिया जिसके इर्दगिर्द वह जमा होकर
तीरों से पनाह ले सकते हैं। (सिलाह)
5अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन ताकि
जो तुझे प्यारे हैं वह नजात पाएँ।

6अल्लाह ने अपने मक़दिस में फ़रमाया है, "मैं
फ़तह मनाते हुए सिकम को तक़सीम करूँगा और
वादीए-सुक्कात को नापकर बाँट दूँगा।
7जिलियाद मेरा है और मनस्सी मेरा है।
इफ़राईम मेरा ख़ोद और यहूदाह मेरा शाही असा
है।
8मोआब मेरा ग़ुस्ल का बरतन है, और अदोम
पर मैं अपना जूता फेंक दूँगा। ऐ फ़िलिस्ती मुल्क,
मुझे देखकर ज़ोरदार नारे लगा!"

9कौन मुझे क़िलाबंद शहर में लाएगा? कौन
मेरी राहनुमाई करके मुझे अदोम तक पहुँचाएगा?
10ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो तूने
हमें रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी फ़ौजों का
साथ नहीं देता जब वह लड़ने के लिए निकलती
हैं।
11मुसीबत में हमें सहारा दे, क्योंकि इस वक़्त
इनसानी मदद बेकार है।
12अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम करेंगे,
क्योंकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।

दूर से दरख़ास्त

61 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ के साथ गाना है।

ऐ अल्लाह, मेरी आहो-ज़ारी सुन, मेरी दुआ पर
तवज्जुह दे।
2मैं तुझे दुनिया की इंतहा से पुकार रहा
हूँ, क्योंकि मेरा दिल निढाल हो गया है। मेरी
राहनुमाई करके मुझे उस चटान पर पहुँचा दे जो
मुझसे बुलंद है।

3क्योंकि तू मेरी पनाहगाह रहा है, एक मज़बूत
बुर्ज जिसमें मैं दुश्मन से महफ़ूज़ हूँ।
4मैं हमेशा के लिए तेरे ख़ैमे में रहना, तेरे परों
तले पनाह लेना चाहता हूँ। (सिलाह)

5क्योंकि ऐ अल्लाह, तूने मेरी मन्नतों पर ध्यान
दिया, तूने मुझे वह मीरास बख़्शी जो उन सबको
मिलती है जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं।
6बादशाह को उम्र की दराज़ी बख़्श दे। वह
पुश्त-दर-पुश्त जीता रहे।
7वह हमेशा तक अल्लाह के हुज़ूर तख़्त-
नशीन रहे। शफ़क़त और वफ़ादारी उस की
हिफ़ाज़त करें।
8तब मैं हमेशा तक तेरे नाम की मद्हसराई
करूँगा, रोज़ बरोज़ अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।

ख़ामोशी से अल्लाह का इंतज़ार कर

62 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। यदूतून के लिए।

मेरी जान ख़ामोशी से अल्लाह ही के इंतज़ार में
है। उसी से मुझे मदद मिलती है।
2वही मेरी चटान, मेरी नजात और मेरा क़िला
है, इसलिए मैं ज़्यादा नहीं डगमगाऊँगा।

3तुम कब तक उस पर हमला करोगे जो पहले
ही झुकी हुई दीवार की मानिंद है? तुम सब कब
तक उसे क़त्ल करने पर तुले रहोगे जो पहले ही
गिरनेवाली चारदीवारी जैसा है?
4उनके मनसूबों का एक ही मक़सद है, कि उसे
उसके ऊँचे ओहदे से उतारें। उन्हें झूट से मज़ा
आता है। मुँह से वह बरकत देते, लेकिन अंदर ही
अंदर लानत करते हैं। (सिलाह)

5लेकिन तू ऐ मेरी जान, ख़ामोशी से अल्लाह
ही के इंतज़ार में रह। क्योंकि उसी से मुझे उम्मीद
है।
6सिर्फ़ वही मेरी जान की चटान, मेरी नजात
और मेरा क़िला है, इसलिए मैं नहीं डगमगाऊँगा।

7मेरी नजात और इज़्ज़त अल्लाह पर मबनी है,
वही मेरी महफ़ूज़ चटान है। अल्लाह में मैं पनाह
लेता हूँ।
8ऐ उम्मत, हर वक़्त उस पर भरोसा रख!
उसके हुज़ूर अपने दिल का रंजो-अलम पानी की
तरह उंडेल दे। अल्लाह ही हमारी पनाहगाह है।
(सिलाह)

9इनसान दम-भर का ही है, और बड़े लोग फ़रेब
ही हैं। अगर उन्हें तराज़ू में तोला जाए तो मिलकर
उनका वज़न एक फूँक से भी कम है।
10ज़ुल्म पर एतमाद न करो, चोरी करने पर
फ़ज़ूल उम्मीद न रखो। और अगर दौलत बढ़ जाए
तो तुम्हारा दिल उससे लिपट न जाए।
11अल्लाह ने एक बात फ़रमाई बल्कि दो बार
मैंने सुनी है कि अल्लाह ही क़ादिर है।
12ऐ रब, यक़ीनन तू मेहरबान है, क्योंकि तू हर
एक को उसके आमाल का बदला देता है।

अल्लाह के लिए आरज़ू

63 दाऊद का ज़बूर। यह उस वक़्त से मुताल्लिक़
है जब वह यहूदाह के रेगिस्तान में था।

ऐ अल्लाह, तू मेरा ख़ुदा है जिसे मैं ढूँडता हूँ।
मेरी जान तेरी प्यासी है, मेरा पूरा जिस्म तेरे लिए
तरसता है। मैं उस ख़ुश्क और निढाल मुल्क की
मानिंद हूँ जिसमें पानी नहीं है।
2चुनाँचे मैं मक़दिस में तुझे देखने के इंतज़ार में
रहा ताकि तेरी क़ुदरत और जलाल का मुशाहदा
करूँ।
3क्योंकि तेरी शफ़क़त ज़िंदगी से कहीं बेहतर
है, मेरे होंट तेरी मद्हसराई करेंगे।
4चुनाँचे मैं जीते-जी तेरी सताइश करूँगा, तेरा
नाम लेकर अपने हाथ उठाऊँगा।
5मेरी जान उम्दा ग़िज़ा से सेर हो जाएगी, मेरा
मुँह ख़ुशी के नारे लगाकर तेरी हम्दो-सना करेगा।
6बिस्तर पर मैं तुझे याद करता, पूरी रात के
दौरान तेरे बारे में सोचता रहता हूँ।
7क्योंकि तू मेरी मदद करने आया, और मैं तेरे
परों के साये में ख़ुशी के नारे लगाता हूँ।
8मेरी जान तेरे साथ लिपटी रहती, और तेरा
दहना हाथ मुझे सँभालता है।

9लेकिन जो मेरी जान लेने पर तुले हुए हैं वह
तबाह हो जाएंगे, वह ज़मीन की गहराइयों में उतर
जाएंगे।
10उन्हें तलवार के हवाले किया जाएगा, और
वह गीदड़ों की ख़ुराक बन जाएंगे।

11लेकिन बादशाह अल्लाह की ख़ुशी
मनाएगा। जो भी अल्लाह की क़सम खाता है
वह फ़ख़र करेगा, क्योंकि झूट बोलनेवालों के
मुँह बंद हो जाएंगे।

शरीअत के पोशीदा हमलों से हिफ़ाज़त की दुआ

64 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।

ऐ अल्लाह, सुन जब मैं अपनी आहो-ज़ारी
पेश करता हूँ। मेरी ज़िंदगी दुश्मन की दहशत से
महफ़ूज़ रख।

2मुझे बदमाशों की साज़िशों से छुपाए रख,
उनकी हलचल से जो ग़लत काम करते हैं।
3वह अपनी ज़बान को तलवार की तरह तेज़
करते और अपने ज़हरीले अलफ़ाज़ को तीरों की
तरह तैयार रखते हैं
4ताकि ताक में बैठकर उन्हें बेक़ुसूर पर चलाएँ।
वह अचानक और बेबाकी से उन्हें उस पर बरसा
देते हैं।
5वह बुरा काम करने में एक दूसरे की
हौसलाअफ़ज़ाई करते, एक दूसरे से मशवरा लेते
हैं कि हम अपने फंदे किस तरह छुपाकर लगाएँ?
वह कहते हैं, “यह किसी को भी नज़र नहीं
आएँगे।”
6वह बड़ी बारीकी से बुरे मनसूबों की तैयारियाँ
करते, फिर कहते हैं, “चलो, बात बन गई है,
मनसूबा सोच-बिचार के बाद तैयार हुआ है।”
यक़ीनन इनसान के बातिन और दिल की तह तक
पहुँचना मुश्किल ही है।

7लेकिन अल्लाह उन पर तीर बरसाएगा, और
अचानक ही वह ज़ख़मी हो जाएंगे।
8वह अपनी ही ज़बान से ठोकर खाकर गिर
जाएंगे। जो भी उन्हें देखेगा वह “तौबा तौबा”
कहेगा।
9तब तमाम लोग ख़ौफ़ खाकर कहेंगे,
“अल्लाह ही ने यह किया!” उन्हें समझ आएगी
कि यह उसी का काम है।

10रास्तबाज़ अल्लाह की ख़ुशी मनाकर
उसमें पनाह लेगा, और जो दिल से दिया-
नतदार हैं वह सब फ़ख़र करेंगे।

रूहानी और जिस्मानी बरकतों के लिए शुक्रगुज़ारी

65 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए
गीत।
ऐ अल्लाह, तू ही इस लायक़ है कि इनसान
कोहे-सिय्यून पर ख़ामोशी से तेरे इंतज़ार में रहे,
तेरी तमजीद करे और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी
करे।
2तू दुआओं को सुनता है, इसलिए तमाम
इनसान तेरे हुज़ूर आते हैं।
3गुनाह मुझ पर ग़ालिब आ गए हैं, तू ही हमारी
सरकश हरकतों को मुआफ़ कर।
4मुबारक है वह जिसे तू चुनकर क़रीब आने
देता है, जो तेरी बारगाहों में बस सकता है। बख़्श
दे कि हम तेरे घर, तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की
अच्छी चीज़ों से सेर हो जाएँ।

5ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हैबतनाक कामों से
अपनी रास्ती क़ायम करके हमारी सुन! क्योंकि
तू ज़मीन की तमाम हुदूद और दूर-दराज़ समुंदरों
तक सबकी उम्मीद है।
6तू अपनी क़ुदरत से पहाड़ों की मज़बूत
बुनियादें डालता और क़ुव्वत से कमरबस्ता रहता
है।
7तू मुतलातिम समुंदरों को थमा देता है, तू
उनकी गरजती लहरों और उम्मतों का शोर-शराबा
ख़त्म कर देता है।
8दुनिया की इंतहा के बाशिंदे तेरे निशानात से
ख़ौफ़ खाते हैं, और तू तुलूए-सुबह और ग़ुरूबे-
आफ़ताब को ख़ुशी मनाने देता है।

9तू ज़मीन की देख-भाल करके उसे पानी की
कसरत और ज़रख़ेज़ी से नवाज़ता है, चुनाँचे
अल्लाह की नदी पानी से भरी रहती है। ज़मीन
को यों तैयार करके तू इनसान को अनाज की
अच्छी फ़सल मुहैया करता है।
10तू खेत की रेघारियों को शराबोर करके
उसके ढेलों को हमवार करता है। तू बारिश की
बौछाड़ों से ज़मीन को नरम करके उस की फ़सलों
को बरकत देता है।
11तू साल को अपनी भलाई का ताज पहना
देता है, और तेरे नक़्शे-क़दम तेल की फ़रावानी
से टपकते हैं।

12बयाबान की चरागाहें तेल[a] की कसरत
से टपकती हैं, और पहाड़ियाँ भरपूर ख़ुशी से
मुलब्बस हो जाती हैं।
13सब्ज़ाज़ार भेड़-बकरियों से आरास्ता हैं,
वादियाँ अनाज से ढकी हुई हैं। सब ख़ुशी के नारे
लगा रहे हैं, सब गीत गा रहे हैं!

अल्लाह की मोजिज़ाना मदद की तारीफ़

66 मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। ज़बूर। गीत।
1 सारी ज़मीन, ख़ुशी के नारे लगाकर अल्लाह
की मद्हसराई कर!
2उसके नाम के जलाल की तमजीद करो, उस
की सताइश उरूज तक ले जाओ!
3अल्लाह से कहो, “तेरे काम कितने पुरजलाल
हैं। तेरी बड़ी क़ुदरत के सामने तेरे दुश्मन दबककर
तेरी ख़ुशामद करने लगते हैं।
4तमाम दुनिया तुझे सिजदा करे! वह तेरी
तारीफ़ में गीत गाए, तेरे नाम की सताइश करे।”
(सिलाह)

5आओ, अल्लाह के काम देखो! आदम-
ज़ाद की ख़ातिर उसने कितने पुरजलाल मोजिज़े
किए हैं!
6उसने समुंदर को ख़ुश्क ज़मीन में बदल दिया।
जहाँ पहले पानी का तेज़ बहाव था वहाँ से लोग
पैदल ही गुज़रे। चुनाँचे आओ, हम उस की ख़ुशी
मनाएँ।
7अपनी क़ुदरत से वह अबद तक हुकूमत करता
है। उस की आँखें क़ौमों पर लगी रहती हैं ताकि
सरकश उसके ख़िलाफ़ न उठें। (सिलाह)

8ऐ उम्मतो, हमारे ख़ुदा की हम्द करो। उस की
सताइश दूर तक सुनाई दे।
9क्योंकि वह हमारी ज़िंदगी क़ायम रखता,
हमारे पाँवों को डगमगाने नहीं देता।

10क्योंकि ऐ अल्लाह, तूने हमें आज़माया।
जिस तरह चाँदी को पिघलाकर साफ़ किया जाता
है उसी तरह तूने हमें पाक-साफ़ कर दिया है।
11तूने हमें जाल में फँसा दिया, हमारी कमर
पर अज़ियतनाक बोझ डाल दिया।
12तूने लोगों के रथों को हमारे सरों पर से
गुज़रने दिया, और हम आग और पानी की ज़द
में आ गए। लेकिन फिर तूने हमें मुसीबत से
निकालकर फ़रावानी की जगह पहुँचाया।

13मैं भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ लेकर तेरे
घर में आऊँगा और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी
करूँगा,
14वह मन्नतें जो मेरे मुँह ने मुसीबत के वक़्त
मानी थीं।
15भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर मैं तुझे
मोटी-ताज़ी भेड़ें और मेंढों का धुआँ पेश करूँगा,
साथ साथ बैल और बकरे भी चढ़ाऊँगा। (सिलाह)

16ऐ अल्लाह का ख़ौफ़ माननेवालो, आओ
और सुनो! जो कुछ अल्लाह ने मेरी जान के लिए
किया वह तुम्हें सुनाऊँगा।
17मैंने अपने मुँह से उसे पुकारा, लेकिन मेरी
ज़बान उस की तारीफ़ करने के लिए तैयार थी।
18अगर मैं दिल में गुनाह की परवरिश करता
तो रब मेरी न सुनता।
19लेकिन यक़ीनन रब ने मेरी सुनी, उसने मेरी
इल्तिजा पर तवज्जुह दी।
20अल्लाह की हम्द हो, जिसने न मेरी दुआ रद्द
की, न अपनी शफ़क़त मुझसे बाज़ रखी।

तमाम क़ौमें अल्लाह की तारीफ़ करें

67 ज़बूर। तारदार साज़ों के साथ गाना है।
मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
अल्लाह हम पर मेहरबानी करे और हमें बरकत
दे। वह अपने चेहरे का नूर हम पर चमकाए
(सिलाह)

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : ‘चरबी,’ जो फ़रावानी का निशान था।

2ताकि ज़मीन पर तेरी राह और तमाम क़ौमों
में तेरी नजात मालूम हो जाए।

3ऐ अल्लाह, क़ौमें तेरी सताइश करें, तमाम
क़ौमें तेरी सताइश करें।

4उम्मतें शादमान होकर ख़ुशी के नारे लगाएँ,
क्योंकि तू इनसाफ़ से क़ौमों की अदालत करेगा
और ज़मीन पर उम्मतों की क़ियादत करेगा।
(सिलाह)

5ऐ अल्लाह, क़ौमें तेरी सताइश करें, तमाम
क़ौमें तेरी सताइश करें।

6ज़मीन अपनी फ़सलें देती है। अल्लाह हमारा
ख़ुदा हमें बरकत दे!
7अल्लाह हमें बरकत दे, और दुनिया की
इंतहाएँ सब उसका ख़ौफ़ मानें।

अल्लाह की फ़तह

68 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए
गीत।
अल्लाह उठे तो उसके दुश्मन तित्तर-बित्तर हो
जाएंगे, उससे नफ़रत करनेवाले उसके सामने से
भाग जाएंगे।
2वह धुएँ की तरह बिखर जाएंगे। जिस तरह
मोम आग के सामने पिघल जाता है उसी तरह
बेदीन अल्लाह के हुज़ूर हलाक हो जाएंगे।
3लेकिन रास्तबाज़ ख़ुशो-ख़ुर्रम होंगे, वह
अल्लाह के हुज़ूर जशन मनाकर फूले न समाएँगे।

4अल्लाह की ताज़ीम में गीत गाओ, उसके नाम
की मदहसराई करो! जो रथ पर सवार बयाबान
में से गुज़र रहा है उसके लिए रास्ता तैयार करो।
रब उसका नाम है, उसके हुज़ूर ख़ुशी मनाओ!
5अल्लाह अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह में
यतीमों का बाप और बेवाओं का हामी है।

6अल्लाह बेघरों को घरों में बसा देता और
क़ैदियों को क़ैद से निकालकर ख़ुशहाली अता
करता है। लेकिन जो सरकश हैं वह झुलसे हुए
मुल्क में रहेंगे।

7ऐ अल्लाह, जब तू अपनी क़ौम के आगे आगे
निकला, जब तू रेगिस्तान में क़दम बक़दम आगे
बढ़ा (सिलाह)
8तो ज़मीन लरज़ उठी और आसमान से बारिश
टपकने लगी। हाँ, अल्लाह के हुज़ूर जो कोहे-
सीना और इसराईल का ख़ुदा है ऐसा ही हुआ।
9ऐ अल्लाह, तूने कसरत की बारिश बरसने दी।
जब कभी तेरा मौरूसी मुल्क निढाल हुआ तो तूने
उसे ताज़ादम किया।
10यों तेरी क़ौम उसमें आबाद हुई। ऐ
अल्लाह, अपनी भलाई से तूने उसे ज़रूरत-
मंदों के लिए तैयार किया।

11रब फ़रमान सादिर करता है तो ख़ुश-
ख़बरी सुनानेवाली औरतों का बड़ा लशकर
निकलता है,
12"फ़ौजों के बादशाह भाग रहे हैं। वह भाग
रहे हैं और औरतें लूट का माल तक़सीम कर रही
हैं।
13तुम क्यों अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान
बैठे रहते हो? देखो, कबूतर के परों पर चाँदी और
उसके शाहपरों पर पीला सोना चढ़ाया गया है।"
14जब क़ादिरे-मुतलक़ ने वहाँ के बाद-
शाहों को मुंतशिर कर दिया तो कोहे-ज़लमोन पर
बर्फ़ पड़ी।

15कोहे-बसन इलाही पहाड़ है, कोहे-बसन की
मुतअद्दिद चोटियाँ हैं।
16ऐ पहाड़ की मुतअद्दिद चोटियो, तुम उस
पहाड़ को क्यों रश्क की निगाह से देखती हो
जिसे अल्लाह ने अपनी सुकूनतगाह के लिए पसंद
किया है? यक़ीनन रब वहाँ हमेशा के लिए
सुकूनत करेगा।

17अल्लाह के बेशुमार रथ और अनगिनत
फ़ौजी हैं। ख़ुदावंद उनके दरमियान है, सीना का
ख़ुदा मक़दिस में है।
18तूने बुलंदी पर चढ़कर क़ैदियों का हुजूम
गिरिफ़्तार कर लिया, तुझे इनसानों से तोह्फ़े
मिले, उनसे भी जो सरकश हो गए थे। यों ही
रब ख़ुदा वहाँ सुकूनतपज़ीर हुआ।

19रब की तमजीद हो जो रोज़ बरोज़ हमारा
बोझ उठाए चलता है। अल्लाह हमारी नजात है।
(सिलाह)
20हमारा ख़ुदा वह ख़ुदा है जो हमें बार बार
नजात देता है, रब क़ादिरे-मुतलक़ हमें बार बार
मौत से बचने के रास्ते मुहैया करता है।
21यक़ीनन अल्लाह अपने दुश्मनों के सरों को
कुचल देगा। जो अपने गुनाहों से बाज़ नहीं आता
उस की खोपड़ी वह पाश पाश करेगा।
22रब ने फ़रमाया, “मैं उन्हें बसन से
वापस लाऊँगा, समुंदर की गहराइयों से वापस
पहुँचाऊँगा।
23तब तू अपने पाँवों को दुश्मन के ख़ून में धो
लेगा, और तेरे कुत्ते उसे चाट लेंगे।”

24ऐ अल्लाह, तेरे जुलूस नज़र आ गए हैं, मेरे
ख़ुदा और बादशाह के जुलूस मक़दिस में दाख़िल
होते हुए नज़र आ गए हैं।
25आगे गुलूकार, फिर साज़ बजानेवाले चल
रहे हैं। उनके आस-पास कुँवारियाँ दफ़ बजाते हुए
फिर रही हैं।
26“जमातों में अल्लाह की सताइश करो!
जितने भी इसराईल के सरचश्मे से निकले हुए
हो रब की तमजीद करो!”
27वहाँ सबसे छोटा भाई बिनयमीन आगे चल
रहा है, फिर यहूदाह के बुज़ुर्गों का पुरशोर हुजूम
ज़बूलून और नफ़ताली के बुज़ुर्गों के साथ चल
रहा है।

28ऐ अल्लाह, अपनी क़ुदरत बरूएकार ला! ऐ
अल्लाह, जो क़ुदरत तूने पहले भी हमारी ख़ातिर
दिखाई उसे दुबारा दिखा!
29उसे यरूशलम के ऊपर अपनी सुकूनत-
गाह से दिखा। तब बादशाह तेरे हुज़ूर तोह्फ़े
लाएँगे।
30सरकंडों में छुपे हुए दरिंदे को मलामत कर!
साँडों का जो ग़ोल बछड़ों जैसी क़ौमों में रहता है
उसे डाँट! उन्हें कुचल दे जो चाँदी को प्यार करते
हैं। उन क़ौमों को मुंतशिर कर जो जंग करने से
लुत्फ़अंदोज़ होती हैं।
31मिसर से सफ़ीर आएँगे, एथोपिया अपने
हाथ अल्लाह की तरफ़ उठाएगा।

32ऐ दुनिया की सलतनतो, अल्लाह की
ताज़ीम में गीत गाओ! रब की मद्हसराई करो
(सिलाह)
33जो अपने रथ पर सवार होकर क़दीम ज़माने
के बुलंदतरीन आसमानों में से गुज़रता है। सुनो
उस की आवाज़ जो ज़ोर से गरज रहा है।
34अल्लाह की क़ुदरत को तसलीम करो! उस
की अज़मत इसराईल पर छाई रहती और उस की
क़ुदरत आसमान पर है।
35ऐ अल्लाह, तू अपने मक़दिस से ज़ाहिर
होते वक़्त कितना महीब है। इसराईल का ख़ुदा
ही क़ौम को क़ुव्वत और ताक़त अता करता है।
अल्लाह की तमजीद हो!

आज़माइश से नजात की दुआ

69 दाऊद का ज़बूर। तर्ज़ : सोसन के फूल।
मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह, मुझे बचा! क्योंकि पानी मेरे गले
तक पहुँच गया है।
2मैं गहरी दलदल में धँस गया हूँ, कहीं पाँव
जमाने की जगह नहीं मिलती। मैं पानी की
गहराइयों में आ गया हूँ, सैलाब मुझ पर ग़ालिब
आ गया है।

3मैं चिल्लाते चिल्लाते थक गया हूँ। मेरा गला
बैठ गया है। अपने ख़ुदा का इंतज़ार करते करते
मेरी आँखें धुँधला गईं।
4जो बिलावजह मुझसे कीना रखते हैं वह मेरे
सर के बालों से ज़्यादा हैं, जो बेसबब मेरे दुश्मन
हैं और मुझे तबाह करना चाहते हैं वह ताक़तवर
हैं। जो कुछ मैंने नहीं लूटा उसे मुझसे तलब किया
जाता है।

5ऐ अल्लाह, तू मेरी हमाक़त से वाक़िफ़ है,
मेरा क़ुसूर तुझसे पोशीदा नहीं है।
6ऐ क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज, जो तेरे
इंतज़ार में रहते हैं वह मेरे बाइस शरमिंदा न हों।
ऐ इसराईल के ख़ुदा, मेरे बाइस तेरे तालिब की
रुसवाई न हो।
7क्योंकि तेरी ख़ातिर मैं शरमिंदगी बर-
दाश्त कर रहा हूँ, तेरी ख़ातिर मेरा चेहरा शर्मसार
ही रहता है।
8मैं अपने सगे भाइयों के नज़दीक अज-
नबी और अपनी माँ के बेटों के नज़दीक परदेसी
बन गया हूँ।
9क्योंकि तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा गई है, जो
तुझे गालियाँ देते हैं उनकी गालियाँ मुझ पर आ
गई हैं।
10जब मैं रोज़ा रखकर रोता था तो लोग मेरा
मज़ाक़ उड़ाते थे।
11जब मातमी लिबास पहने फिरता था तो
उनके लिए इबरतअंगेज़ मिसाल बन गया।
12जो बुज़ुर्ग शहर के दरवाज़े पर बैठे हैं वह मेरे
बारे में गप्पें हाँकते हैं। शराबी मुझे अपने तंज़ भरे
गीतों का निशाना बनाते हैं।

13लेकिन ऐ रब, मेरी तुझसे दुआ है कि मैं तुझे
दुबारा मंज़ूर हो जाऊँ। ऐ अल्लाह, अपनी अज़ीम
शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी सुन, अपनी यक़ीनी
नजात के मुताबिक़ मुझे बचा।
14मुझे दलदल से निकाल ताकि ग़रक़ न हो
जाऊँ। मुझे उनसे छुटकारा दे जो मुझसे नफ़रत
करते हैं। पानी की गहराइयों से मुझे बचा।
15सैलाब मुझ पर ग़ालिब न आए, समुंदर की
गहराई मुझे हड़प न कर ले, गढ़ा मेरे ऊपर अपना
मुँह बंद न कर ले।
16ऐ रब, मेरी सुन, क्योंकि तेरी शफ़क़त भली
है। अपने अज़ीम रहम के मुताबिक़ मेरी तरफ़ रुजू
कर।
17अपना चेहरा अपने ख़ादिम से छुपाए न रख,
क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ। जल्दी से मेरी सुन!
18क़रीब आकर मेरी जान का फ़िद्या दे, मेरे
दुश्मनों के सबब से एवज़ाना देकर मुझे छुड़ा।

19तू मेरी रुसवाई, मेरी शरमिंदगी और
तज़लील से वाक़िफ़ है। तेरी आँखें मेरे तमाम
दुश्मनों पर लगी रहती हैं।
20उनके तानों से मेरा दिल टूट गया है, मैं बीमार
पड़ गया हूँ। मैं हमदर्दी के इंतज़ार में रहा, लेकिन
बेफ़ायदा। मैंने तवक़्क़ो की कि कोई मुझे दिलासा
दे, लेकिन एक भी न मिला।
21उन्होंने मेरी ख़ुराक में कड़वा ज़हर मिलाया,
मुझे सिरका पिलाया जब प्यासा था।

22उनकी मेज़ उनके लिए फंदा और उनके
साथियों के लिए जाल बन जाए।
23उनकी आँखें तारीक हो जाएँ ताकि वह देख
न सकें। उनकी कमर हमेशा तक डगमगाती रहे।
24अपना पूरा ग़ुस्सा उन पर उतार, तेरा सख़्त
ग़ज़ब उन पर आ पड़े।
25उनकी रिहाइशगाह सुनसान हो जाए और
कोई उनके ख़ैमों में आबाद न हो,
26क्योंकि जिसे तू ही ने सज़ा दी उसे वह सताते
हैं, जिसे तू ही ने ज़ख़मी किया उसका दुख दूसरों
को सुनाकर ख़ुश होते हैं।
27उनके क़ुसूर का सख़्ती से हिसाब-किताब
कर, वह तेरे सामने रास्तबाज़ न ठहरें।

28उन्हें किताबे-हयात से मिटाया जाए, उनका
नाम रास्तबाज़ों की फ़हरिस्त में दर्ज न हो।

29हाय, मैं मुसीबत में फँसा हुआ हूँ, मुझे बहुत
दर्द है। ऐ अल्लाह, तेरी नजात मुझे महफ़ूज़ रखे।
30मैं अल्लाह के नाम की मद्हसराई करूँगा,
शुक्रगुज़ारी से उस की ताज़ीम करूँगा।
31यह रब को बैल या सींग और खुर रखने-
वाले साँड से कहीं ज़्यादा पसंद आएगा।
32हलीम अल्लाह का काम देखकर ख़ुश हो
जाएंगे। ऐ अल्लाह के तालिबो, तसल्ली पाओ!
33क्योंकि रब मुहताजों की सुनता और अपने
क़ैदियों को हक़ीर नहीं जानता।

34आसमानो-ज़मीन उस की तमजीद करें,
समुंदर और जो कुछ उसमें हरकत करता है उस
की सताइश करे।
35क्योंकि अल्लाह सिय्यून को नजात देकर
यहूदाह के शहरों को तामीर करेगा, और उसके
ख़ादिम उन पर क़ब्ज़ा करके उनमें आबाद हो
जाएंगे।
36उनकी औलाद मुल्क को मीरास में
पाएगी, और उसके नाम से मुहब्बत रखने-
वाले उसमें बसे रहेंगे।

दुश्मन से नजात की दुआ

70 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। याददाश्त के लिए।
ऐ अल्लाह, जल्दी से आकर मुझे बचा! ऐ रब,
मेरी मदद करने में जल्दी कर!
2मेरे जानी दुश्मन शरमिंदा हो जाएँ, उनकी
सख़्त रुसवाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत देखने
से लुत्फ़ उठाते हैं वह पीछे हट जाएँ, उनका मुँह
काला हो जाए।
3जो मेरी मुसीबत देखकर क़हक़हा लगाते हैं
वह शर्म के मारे पुश्त दिखाएँ।
4लेकिन तेरे तालिब शादमान होकर तेरी ख़ुशी
मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह हमेशा कहें,
“अल्लाह अज़ीम है!”
5लेकिन मैं नाचार और मुहताज हूँ। ऐ अल्लाह,
जल्दी से मेरे पास आ! तू ही मेरा सहारा और मेरा
नजातदहिंदा है। ऐ रब, देर न कर!

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

71 ऐ रब, मैंने तुझमें पनाह ली है। मुझे
कभी शरमिंदा न होने दे।
2अपनी रास्ती से मुझे बचाकर छुटकारा दे।
अपना कान मेरी तरफ़ झुकाकर मुझे नजात दे।
3मेरे लिए चटान पर महफ़ूज़ घर हो जिसमें मैं
हर वक़्त पनाह ले सकूँ। तूने फ़रमाया है कि मुझे
नजात देगा, क्योंकि तू ही मेरी चटान और मेरा
क़िला है।

4ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे बेदीन के हाथ से बचा, उसके
क़ब्ज़े से जो बेइनसाफ़ और ज़ालिम है।

5क्योंकि तू ही मेरी उम्मीद है। ऐ रब क़ादिरे-
मुतलक़, तू मेरी जवानी ही से मेरा भरोसा रहा है।
6पैदाइश से ही मैंने तुझ पर तकिया किया है,
माँ के पेट से तूने मुझे सँभाला है। मैं हमेशा तेरी
हम्दो-सना करूँगा।

7बहुतों के नज़दीक मैं बदशुगूनी हूँ, लेकिन तू
मेरी मज़बूत पनाहगाह है।
8दिन-भर मेरा मुँह तेरी तमजीद और ताज़ीम
से लबरेज़ रहता है।

9बुढ़ापे में मुझे रद्द न कर, ताक़त के ख़त्म होने
पर मुझे तर्क न कर।
10क्योंकि मेरे दुश्मन मेरे बारे में बातें कर रहे
हैं, जो मेरी जान की ताक लगाए बैठे हैं वह एक
दूसरे से सलाह-मशवरा कर रहे हैं।

11वह कहते हैं, “अल्लाह ने उसे तर्क कर दिया
है। उसके पीछे पड़कर उसे पकड़ो, क्योंकि कोई
नहीं जो उसे बचाए।”

12ऐ अल्लाह, मुझसे दूर न हो। ऐ मेरे ख़ुदा,
मेरी मदद करने में जल्दी कर।
13मेरे हरीफ़ शरमिंदा होकर फ़ना हो जाएँ, जो
मुझे नुक़सान पहुँचाने के दरपै हैं वह लान-तान
और रुसवाई तले दब जाएँ।
14लेकिन मैं हमेशा तेरे इंतज़ार में रहूँगा, हमेशा
तेरी सताइश करता रहूँगा।
15मेरा मुँह तेरी रास्ती सुनाता रहेगा, सारा दिन
तेरे नजातबख़्श कामों का ज़िक्र करता रहेगा, गो
मैं उनकी पूरी तादाद गिन भी नहीं सकता।
16मैं रब क़ादिरे-मुतलक़ के अज़ीम काम
सुनाते हुए आऊँगा, मैं तेरी, सिर्फ़ तेरी ही रास्ती
याद करूँगा।

17ऐ अल्लाह, तू मेरी जवानी से मुझे तालीम
देता रहा है, और आज तक मैं तेरे मोजिज़ात का
एलान करता आया हूँ।
18ऐ अल्लाह, ख़ाह मैं बूढ़ा हो जाऊँ और मेरे
बाल सफ़ेद हो जाएँ मुझे तर्क न कर जब तक मैं
आनेवाली पुश्त के तमाम लोगों को तेरी क़ुव्वत
और क़ुदरत के बारे में बता न लूँ।

19ऐ अल्लाह, तेरी रास्ती आसमान से बातें
करती है। ऐ अल्लाह, तुझ जैसा कौन है जिसने
इतने अज़ीम काम किए हैं?
20तूने मुझे मुतअद्दिद तलख़ तजरबों में से
गुज़रने दिया है, लेकिन तू मुझे दुबारा ज़िंदा भी
करेगा, तू मुझे ज़मीन की गहराइयों में से वापस
लाएगा।
21मेरा रुतबा बढ़ा दे, मुझे दुबारा तसल्ली दे।
22ऐ मेरे ख़ुदा, मैं सितार बजाकर तेरी सताइश
और तेरी वफ़ादारी की तमजीद करूँगा। ऐ
इसराईल के क़ुद्दूस, मैं सरोद बजाकर तेरी तारीफ़
में गीत गाऊँगा।
23जब मैं तेरी मद्हसराई करूँगा तो मेरे होंट
ख़ुशी के नारे लगाएँगे, और मेरी जान जिसे तूने
फ़िद्या देकर छुड़ाया है शादियाना बजाएगी।
24मेरी ज़बान भी दिन-भर तेरी रास्ती बयान
करेगी, क्योंकि जो मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहते
थे वह शर्मसार और रुसवा हो गए हैं।

सलामती का बादशाह

72 सुलेमान का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, बादशाह को अपना
इनसाफ़ अता कर, बादशाह के बेटे को अपनी
रास्ती बख़्श दे
2ताकि वह रास्ती से तेरी क़ौम और इनसाफ़
से तेरे मुसीबतज़दों की अदालत करे।
3पहाड़ क़ौम को सलामती और पहाड़ियाँ
रास्ती पहुँचाएँ।
4वह क़ौम के मुसीबतज़दों का इनसाफ़ करे
और मुहताजों की मदद करके ज़ालिमों को कुचल
दे।
5तब लोग पुश्त-दर-पुश्त तेरा ख़ौफ़ मानेंगे जब
तक सूरज चमके और चाँद रौशनी दे।
6वह कटी हुई घास के खेत पर बरसने-
वाली बारिश की तरह उतर आए, ज़मीन को तर
करनेवाली बौछाड़ों की तरह नाज़िल हो जाए।
7उसके दौरे-हुकूमत में रास्तबाज़ फले-फूलेगा,
और जब तक चाँद नेस्त न हो जाए सलामती का
ग़लबा होगा।
8वह एक समुंदर से दूसरे समुंदर तक और
दरियाए-फ़ुरात से दुनिया की इंतहा तक हुकूमत
करे।
9रेगिस्तान के बाशिंदे उसके सामने झुक जाएँ,
उसके दुश्मन ख़ाक चाटें।
10तरसीस और साहिली इलाक़ों के बाद-
शाह उसे ख़राज पहुँचाएँ, सबा और सिबा उसे
बाज पेश करें।
11तमाम बादशाह उसे सिजदा करें, सब
अक़वाम उस की ख़िदमत करें।

12क्योंकि जो ज़रूरतमंद मदद के लिए पुकारे
उसे वह छुटकारा देगा, जो मुसीबत में है और
जिसकी मदद कोई नहीं करता उसे वह रिहाई
देगा।
13वह पस्तहालों और ग़रीबों पर तरस खाएगा,
मुहताजों की जान को बचाएगा।
14वह एवज़ाना देकर उन्हें ज़ुल्मो-तशद्दुद से
छुड़ाएगा, क्योंकि उनका ख़ून उस की नज़र में
क़ीमती है।

15बादशाह ज़िंदाबाद! सबा का सोना उसे
दिया जाए। लोग हमेशा उसके लिए दुआ करें,
दिन-भर उसके लिए बरकत चाहें।
16मुल्क में अनाज की कसरत हो, पहा-
ड़ों की चोटियों पर भी उस की फ़सलें लहलहाएँ।
उसका फल लुबनान के फल जैसा उम्दा हो, शहरों
के बाशिंदे हरियाली की तरह फलें-फूलें।
17बादशाह का नाम अबद तक क़ायम रहे, जब
तक सूरज चमके उसका नाम फले-फूले। तमाम
अक़वाम उससे बरकत पाएँ, और वह उसे मुबारक
कहें।

18रब ख़ुदा की तमजीद हो जो इसराईल का
ख़ुदा है। सिर्फ़ वही मोजिज़े करता है!
19उसके जलाली नाम की अबद तक तमजीद
हो, पूरी दुनिया उसके जलाल से भर जाए।
आमीन, फिर आमीन।

20यहाँ दाऊद बिन यस्सी की दुआएँ ख़त्म होती
हैं।

तीसरी किताब 73-89

बेदीनों की कामयाबी के बावुजूद तसल्ली

73 आसफ़ का ज़बूर।
यक़ीनन अल्लाह इसराईल पर
मेहरबान है, उन पर जिनके दिल पाक हैं।
2लेकिन मैं फिसलने को था, मेरे क़दम
लग़ज़िश खाने को थे।
3क्योंकि शेख़ीबाज़ों को देखकर मैं बेचैन हो
गया, इसलिए कि बेदीन इतने ख़ुशहाल हैं।
4मरते वक़्त उनको कोई तकलीफ़ नहीं होती,
और उनके जिस्म मोटे-ताज़े रहते हैं।
5आम लोगों के मसायल से उनका वास्ता नहीं
पड़ता। जिस दर्दो-करब में दूसरे मुब्तला रहते हैं
उससे वह आज़ाद होते हैं।
6इसलिए उनके गले में तकब्बुर का हार है, वह
ज़ुल्म का लिबास पहने फिरते हैं।
7चरबी के बाइस उनकी आँखें उभर आई हैं।
उनके दिल बेलगाम वहमों की गिरिफ़्त में रहते
हैं।
8वह मज़ाक़ उड़ाकर बुरी बातें करते हैं, अपने
ग़ुरूर में ज़ुल्म की धमकियाँ देते हैं।
9वह समझते हैं कि जो कुछ हमारे मुँह से
निकलता है वह आसमान से है, जो बात हमारी
ज़बान पर आ जाती है वह पूरी ज़मीन के लिए
अहमियत रखती है।
10चुनाँचे अवाम उनकी तरफ़ रुजू होते हैं,
क्योंकि उनके हाँ कसरत का पानी पिया जाता
है।
11वह कहते हैं, “अल्लाह को क्या पता है?
अल्लाह तआला को इल्म ही नहीं।”
12देखो, यही है बेदीनों का हाल। वह हमेशा
सुकून से रहते, हमेशा अपनी दौलत में इज़ाफ़ा
करते हैं।
13यक़ीनन मैंने बेफ़ायदा अपना दिल पाक रखा
और अबस अपने हाथ ग़लत काम करने से बाज़
रखे।
14क्योंकि दिन-भर मैं दर्दो-करब में मुब्तला
रहता हूँ, हर सुबह मुझे सज़ा दी जाती है।

15अगर मैं कहता, “मैं भी उनकी तरह
बोलूँगा,” तो तेरे फ़रज़ंदों की नसल से ग़द्दारी
करता।
16मैं सोच-बिचार में पड़ गया ताकि बात
समझूँ, लेकिन सोचते सोचते थक गया, अज़ियत
में सिर्फ़ इज़ाफ़ा हुआ।

17तब मैं अल्लाह के मक़दिस में दाख़िल होकर
समझ गया कि उनका अंजाम क्या होगा।
18यक़ीनन तू उन्हें फिसलनी जगह पर रखेगा,
उन्हें फ़रेब में फँसाकर ज़मीन पर पटख़ देगा।
19अचानक ही वह तबाह हो जाएंगे,
दहशतनाक मुसीबत में फँसकर मुकम्मल तौर
पर फ़ना हो जाएंगे।
20ऐ रब, जिस तरह ख़ाब जाग उठते वक़्त
ग़ैरहक़ीक़ी साबित होता है उसी तरह तू उठते
वक़्त उन्हें वहम क़रार देकर हक़ीर जानेगा।

21जब मेरे दिल में तलख़ी पैदा हुई और मेरे
बातिन में सख़्त दर्द था
22तो मैं अहमक़ था। मैं कुछ नहीं समझता था
बल्कि तेरे सामने मवेशी की मानिंद था।
23तो भी मैं हमेशा तेरे साथ लिपटा रहूँगा,
क्योंकि तू मेरा दहना हाथ थामे रखता है।
24तू अपने मशवरे से मेरी क़ियादत करके
आख़िर में इज़्ज़त के साथ मेरा ख़ैरमक़्दम करेगा।
25जब तू मेरे साथ है तो मुझे आसमान पर क्या
कमी होगी? जब तू मेरे साथ है तो मैं ज़मीन की
कोई भी चीज़ नहीं चाहूँगा।
26ख़ाह मेरा जिस्म और मेरा दिल जवाब दे
जाएँ, लेकिन अल्लाह हमेशा तक मेरे दिल की
चटान और मेरी मीरास है।

27यक़ीनन जो तुझसे दूर हैं वह हलाक हो
जाएंगे, जो तुझसे बेवफ़ा हैं उन्हें तू तबाह कर
देगा।
28लेकिन मेरे लिए अल्लाह की क़ुरबत सब
कुछ है। मैंने रब क़ादिरे-मुतलक़ को अपनी
पनाहगाह बनाया है, और मैं लोगों को तेरे तमाम
काम सुनाऊँगा।

रब के घर की बेहुरमती पर अफ़सोस

74 आसफ़ का ज़बूर। हिकमत का गीत।
ऐ अल्लाह, तूने हमें हमेशा के लिए
क्यों रद्द किया है? अपनी चरागाह की भेड़ों पर
तेरा क़हर क्यों भड़कता रहता है?
2अपनी जमात को याद कर जिसे तूने क़दीम
ज़माने में ख़रीदा और एवज़ाना देकर छुड़ाया
ताकि तेरी मीरास का क़बीला हो। कोहे-सिय्यून
को याद कर जिस पर तू सुकूनतपज़ीर रहा है।
3अपने क़दम इन दायमी खंडरात की तरफ़
बढ़ा। दुश्मन ने मक़दिस में सब कुछ तबाह कर
दिया है।
4तेरे मुख़ालिफ़ों ने गरजते हुए तेरी जलसागाह
में अपने निशान गाड़ दिए हैं।
5उन्होंने गुंजान जंगल में लकड़हारों की तरह
अपने कुल्हाड़े चलाए,
6अपने कुल्हाड़ों और कुदालों से उस की तमाम
कंदाकारी को टुकड़े टुकड़े कर दिया है।
7उन्होंने तेरे मक़दिस को भस्म कर दिया, फ़र्श
तक तेरे नाम की सुकूनतगाह की बेहुरमती की है।
8अपने दिल में वह बोले, “आओ, हम उन
सबको ख़ाक में मिलाएँ!” उन्होंने मुल्क में
अल्लाह की हर इबादतगाह नज़रे-आतिश कर दी
है।
9अब हम पर कोई इलाही निशान ज़ाहिर नहीं
होता। न कोई नबी हमारे पास रह गया, न कोई
और मौजूद है जो जानता हो कि ऐसे हालात कब
तक रहेंगे।
10ऐ अल्लाह, हरीफ़ कब तक लान-तान
करेगा, दुश्मन कब तक तेरे नाम की तकफ़ीर
करेगा?
11तू अपना हाथ क्यों हटाता, अपना दहना
हाथ दूर क्यों रखता है? उसे अपनी चादर से
निकालकर उन्हें तबाह कर दे!

12अल्लाह क़दीम ज़माने से मेरा बादशाह है,
वही दुनिया में नजातबख़्श काम अंजाम देता है।
13तू ही ने अपनी क़ुदरत से समुंदर को चीरकर
पानी में अज़दहाओं के सरों को तोड़ डाला।
14तू ही ने लिवियातान के सरों को चूर चूर
करके उसे जंगली जानवरों को खिला दिया।

15एक जगह तूने चश्मे और नदियाँ फूटने दीं,
दूसरी जगह कभी न सूखनेवाले दरिया सूखने दिए।
16दिन भी तेरा है, रात भी तेरी ही है। चाँद और
सूरज तेरे ही हाथ से क़ायम हुए।
17तू ही ने ज़मीन की हुदूद मुक़र्रर कीं, तू ही ने
गरमियों और सर्दियों के मौसम बनाए।

18ऐ रब, दुश्मन की लान-तान याद कर।
ख़याल कर कि अहमक़ क़ौम तेरे नाम पर कुफ़र
बकती है।
19अपने कबूतर की जान को वहशी जानवरों
के हवाले न कर, हमेशा तक अपने मुसीबतज़दों
की ज़िंदगी को न भूल।
20अपने अहद का लिहाज़ कर, क्योंकि मुल्क
के तारीक कोने ज़ुल्म के मैदानों से भर गए हैं।
21होने न दे कि मज़लूमों को शरमिंदा होकर
पीछे हटना पड़े बल्कि बख़्श दे कि मुसीबतज़दा
और ग़रीब तेरे नाम पर फ़ख़र कर सकें।
22ऐ अल्लाह, उठकर अदालत में अपने मामले
का दिफ़ा कर। याद रहे कि अहमक़ दिन-भर तुझे
लान-तान करता है।
23अपने दुश्मनों के नारे न भूल बल्कि अपने
मुख़ालिफ़ों का मुसलसल बढ़ता हुआ शोर-शराबा
याद कर।

अल्लाह मग़रूरों की अदालत करता है

75 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर।

ऐ अल्लाह, तेरा शुक्र हो, तेरा शुक्र! तेरा नाम
उनके क़रीब है जो तेरे मोजिज़े बयान करते हैं।

2अल्लाह फ़रमाता है, “जब मेरा वक़्त आएगा
तो मैं इनसाफ़ से अदालत करूँगा।
3गो ज़मीन अपने बाशिंदों समेत डगमगाने लगे,
लेकिन मैं ही ने उसके सतूनों को मज़बूत कर दिया
है। (सिलाह)
4शेख़ीबाज़ों से मैंने कहा, ‘डींगें मत मारो,’ और
बेदीनों से, ‘अपने आप पर फ़ख़र मत करो।[a]
5न अपनी ताक़त पर शेख़ी मारो,[b] न अकड़कर
कुफ़र बको’।”
6क्योंकि सरफ़राज़ी न मशरिक़ से, न मग़रिब
से और न बयाबान से आती है
7बल्कि अल्लाह से जो मुंसिफ़ है। वही एक
को पस्त कर देता है और दूसरे को सरफ़राज़।
8क्योंकि रब के हाथ में झागदार और
मसालेदार मै का प्याला है जिसे वह लोगों को
पिला देता है। यक़ीनन दुनिया के तमाम बेदीनों
को इसे आख़िरी क़तरे तक पीना है।

9लेकिन मैं हमेशा अल्लाह के अज़ीम काम
सुनाऊँगा, हमेशा याक़ूब के ख़ुदा की मद्हसराई
करूँगा।

10अल्लाह फ़रमाता है, “मैं तमाम बेदीनों
की कमर तोड़ दूँगा जबकि रास्तबाज़ सरफ़राज़
होगा।”[c]

अल्लाह मुंसिफ़ है

76 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।

अल्लाह यहूदाह में मशहूर है, उसका नाम
इसराईल में अज़ीम है।
2उसने अपनी माँद सालिम[d] में और अपना भट
कोहे-सिय्यून पर बना लिया है।
3वहाँ उसने जलते हुए तीरों को तोड़ डाला और
ढाल, तलवार और जंग के हथियारों को चूर चूर
कर दिया है। (सिलाह)

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : सींग मत उठाओ।
[b] लफ़्ज़ी मतलब : न अपना सींग उठाओ।
[c] लफ़्ज़ी तरजुमा : बेदीनों के तमाम सींगों को काट डालूँगा जबकि रास्तबाज़ों का सींग सरफ़राज़ हो जाएगा।
[d] सालिम से मुराद यरूशलम है।

4ऐ अल्लाह, तू दरख़्शाँ है, तू शिकार के पहाड़ों
से आया हुआ अज़ीमुश-शान सूरमा है।

5बहादुरों को लूट लिया गया है, वह मौत की
नींद सो गए हैं। फ़ौजियों में से एक भी हाथ नहीं
उठा सकता।
6ऐ याक़ूब के ख़ुदा, तेरे डाँटने पर घोड़े और
रथबान बेहिसो-हरकत हो गए हैं।
7तू ही महीब है। जब तू झिड़के तो कौन तेरे
हुज़ूर क़ायम रहेगा?
8तूने आसमान से फ़ैसले का एलान किया।
ज़मीन सहमकर चुप हो गई
9जब अल्लाह अदालत करने के लिए उठा, जब
वह तमाम मुसीबतज़दों को नजात देने के लिए
आया। (सिलाह)
10क्योंकि इनसान का तैश भी तेरी तमजीद
का बाइस है। उसके तैश का आख़िरी नतीजा तेरा
जलाल ही है।[a]

11रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर मन्नतें मानकर
उन्हें पूरा करो। जितने भी उसके इर्दगिर्द हैं वह
पुरजलाल ख़ुदा के हुज़ूर हदिये लाएँ।
12वह हुक्मरानों को शिकस्ता रूह कर देता है,
उसी से दुनिया के बादशाह दहशत खाते हैं।

अल्लाह के अज़ीम कामों से तसल्ली मिलती है

77 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। यदूतून के लिए।
मैं अल्लाह से फ़रियाद करके मदद के लिए
चिल्लाता हूँ, मैं अल्लाह को पुकारता हूँ कि मुझ
पर ध्यान दे।
2अपनी मुसीबत में मैंने रब को तलाश किया।
रात के वक़्त मेरे हाथ बिलानाग़ा उस की तरफ़ उठे
रहे। मेरी जान ने तसल्ली पाने से इनकार किया।
3मैं अल्लाह को याद करता हूँ तो आहें भरने
लगता हूँ, मैं सोच-बिचार में पड़ जाता हूँ तो रूह
निढाल हो जाती है। (सिलाह)
4तू मेरी आँखों को बंद होने नहीं देता। मैं इतना
बेचैन हूँ कि बोल भी नहीं सकता।

5मैं क़दीम ज़माने पर ग़ौर करता हूँ, उन सालों
पर जो बड़ी देर हुए गुज़र गए हैं।
6रात को मैं अपना गीत याद करता हूँ। मेरा
दिल महवे-ख़याल रहता और मेरी रूह तफ़तीश
करती रहती है।
7“क्या रब हमेशा के लिए रद्द करेगा, क्या
आइंदा हमें कभी पसंद नहीं करेगा?
8क्या उस की शफ़क़त हमेशा के लिए जाती
रही है? क्या उसके वादे अब से जवाब दे गए हैं?
9क्या अल्लाह मेहरबानी करना भूल गया है?
क्या उसने ग़ुस्से में अपना रहम बाज़ रखा है?”
(सिलाह)
10मैं बोला, “इससे मुझे दुख है कि अल्लाह
तआला का दहना हाथ बदल गया है।”

11मैं रब के काम याद करूँगा, हाँ क़दीम ज़माने
के तेरे मोजिज़े याद करूँगा।
12जो कुछ तूने किया उसके हर पहलू पर ग़ौरो-
ख़ौज़ करूँगा, तेरे अज़ीम कामों में महवे-ख़याल
रहूँगा।
13ऐ अल्लाह, तेरी राह क़ुद्दूस है। कौन-सा
माबूद हमारे ख़ुदा जैसा अज़ीम है?
14तू ही मोजिज़े करनेवाला ख़ुदा है। अक़वाम
के दरमियान तूने अपनी क़ुदरत का इज़हार किया
है।
15बड़ी क़ुव्वत से तूने एवज़ाना देकर अपनी
क़ौम, याक़ूब और यूसुफ़ की औलाद को रिहा
कर दिया है। (सिलाह)

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : तू बचे हुए तैश से कमरबस्ता हो जाता है।

16ऐ अल्लाह, पानी ने तुझे देखा, पानी ने
तुझे देखा तो तड़पने लगा, गहराइयों तक लरज़ने
लगा।
17मूसलाधार बारिश बरसी, बादल गरज उठे
और तेरे तीर इधर-उधर चलने लगे।
18आँधी में तेरी आवाज़ कड़कती रही, दुनिया
बिजलियों से रौशन हुई, ज़मीन काँपती काँपती
उछल पड़ी।
19तेरी राह समुंदर में से, तेरा रास्ता गहरे पानी
में से गुज़रा, तो भी तेरे नक़्शे-क़दम किसी को
नज़र न आए।
20मूसा और हारून के हाथ से तूने रेवड़ की
तरह अपनी क़ौम की राहनुमाई की।

इसराईल की तारीख़ में इलाही सज़ा और रहम

78 आसफ़ का ज़बूर। हिकमत का गीत।
ऐ मेरी क़ौम, मेरी हिदायत पर ध्यान
दे, मेरे मुँह की बातों पर कान लगा।
2मैं तमसीलों में बात करूँगा, क़दीम ज़माने के
मुअम्मे बयान करूँगा।
3जो कुछ हमने सुन लिया और हमें मालूम हुआ
है, जो कुछ हमारे बापदादा ने हमें सुनाया है
4उसे हम उनकी औलाद से नहीं छुपाएँगे। हम
आनेवाली पुश्त को रब के क़ाबिले-तारीफ़ काम
बताएँगे, उस की क़ुदरत और मोजिज़ात बयान
करेंगे।
5क्योंकि उसने याक़ूब की औलाद को शरीअत
दी, इसराईल में अहकाम क़ायम किए। उसने
फ़रमाया कि हमारे बापदादा यह अहकाम अपनी
औलाद को सिखाएँ
6ताकि आनेवाली पुश्त भी उन्हें अपनाए, वह
बच्चे जो अभी पैदा नहीं हुए थे। फिर उन्हें भी
अपने बच्चों को सुनाना था।
7क्योंकि अल्लाह की मरज़ी है कि इस तरह हर
पुश्त अल्लाह पर एतमाद रखकर उसके अज़ीम
काम न भूले बल्कि उसके अहकाम पर अमल
करे।
8वह नहीं चाहता कि वह अपने बापदादा की
मानिंद हों जो ज़िद्दी और सरकश नसल थे, ऐसी
नसल जिसका दिल साबितक़दम नहीं था और
जिसकी रूह वफ़ादारी से अल्लाह से लिपटी न
रही।

9चुनाँचे इफ़राईम के मर्द गो कमानों से लैस थे
जंग के वक़्त फ़रार हुए।
10वह अल्लाह के अहद के वफ़ादार न रहे, उस
की शरीअत पर अमल करने के लिए तैयार नहीं
थे।
11जो कुछ उसने किया था, जो मोजिज़े उसने
उन्हें दिखाए थे, इफ़राईमी वह सब कुछ भूल गए।
12मुल्के-मिसर के इलाक़े ज़ुअन में उसने उनके
बापदादा के देखते देखते मोजिज़े किए थे।
13समुंदर को चीरकर उसने उन्हें उसमें से
गुज़रने दिया, और दोनों तरफ़ पानी मज़बूत दीवार
की तरह खड़ा रहा।
14दिन को उसने बादल के ज़रीए और रात-भर
चमकदार आग से उनकी क़ियादत की।
15रेगिस्तान में उसने पत्थरों को चाक करके
उन्हें समुंदर की-सी कसरत का पानी पिलाया।
16उसने होने दिया कि चटान से नदियाँ फूट
निकलें और पानी दरियाओं की तरह बहने लगे।

17लेकिन वह उसका गुनाह करने से बाज़ न
आए बल्कि रेगिस्तान में अल्लाह तआला से
सरकश रहे।
18जान-बूझकर उन्होंने अल्लाह को
आज़माकर वह ख़ुराक माँगी जिसका लालच
करते थे।
19अल्लाह के ख़िलाफ़ कुफ़र बककर वह
बोले, “क्या अल्लाह रेगिस्तान में हमारे लिए मेज़
बिछा सकता है?
20बेशक जब उसने चटान को मारा तो पानी
फूट निकला और नदियाँ बहने लगीं। लेकिन क्या
वह रोटी भी दे सकता है, अपनी क़ौम को गोश्त
भी मुहैया कर सकता है? यह तो नामुमकिन है।”

21यह सुनकर रब तैश में आ गया। याक़ूब
के ख़िलाफ़ आग भड़क उठी, और उसका ग़ज़ब
इसराईल पर नाज़िल हुआ।
22क्यों? इसलिए कि उन्हें अल्लाह पर यक़ीन
नहीं था, वह उस की नजात पर भरोसा नहीं रखते
थे।

23इसके बावुजूद अल्लाह ने उनके ऊपर
बादलों को हुक्म देकर आसमान के दरवाज़े खोल
दिए।
24उसने खाने के लिए उन पर मन बरसाया,
उन्हें आसमान से रोटी खिलाई।
25हर एक ने फ़रिश्तों की यह रोटी खाई बल्कि
अल्लाह ने इतना खाना भेजा कि उनके पेट भर
गए।
26फिर उसने आसमान पर मशरिक़ी हवा
चलाई और अपनी क़ुदरत से जुनूबी हवा पहुँचाई।
27उसने गर्द की तरह उन पर गोश्त बरसाया,
समुंदर की रेत जैसे बेशुमार परिंदे उन पर गिरने
दिए।
28ख़ैमागाह के बीच में ही वह गिर पड़े, उनके
घरों के इर्दगिर्द ही ज़मीन पर आ गिरे।
29तब वह खा खाकर ख़ूब सेर हो गए, क्योंकि
जिसका लालच वह करते थे वह अल्लाह ने उन्हें
मुहैया किया था।
30लेकिन उनका लालच अभी पूरा नहीं हुआ
था और गोश्त अभी उनके मुँह में था
31कि अल्लाह का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ।
क़ौम के खाते-पीते लोग हलाक हुए, इसराईल के
जवान ख़ाक में मिल गए।

32इन तमाम बातों के बावुजूद वह अपने गुनाहों
में इज़ाफ़ा करते गए और उसके मोजिज़ात पर
ईमान न लाए।
33इसलिए उसने उनके दिन नाकामी में गुज़रने
दिए, और उनके साल दहशत की हालत में
इख़्तितामपज़ीर हुए।

34जब कभी अल्लाह ने उनमें क़त्लो-ग़ारत
होने दी तो वह उसे ढूँडने लगे, वह मुड़कर अल्लाह
को तलाश करने लगे।
35तब उन्हें याद आया कि अल्लाह हमारी
चटान, अल्लाह तआला हमारा छुड़ानेवाला है।
36लेकिन वह मुँह से उसे धोका देते, ज़बान से
उसे झूट पेश करते थे।
37न उनके दिल साबितक़दमी से उसके साथ
लिपटे रहे, न वह उसके अहद के वफ़ादार रहे।

38तो भी अल्लाह रहमदिल रहा। उसने उन्हें
तबाह न किया बल्कि उनका क़ुसूर मुआफ़ करता
रहा। बार बार वह अपने ग़ज़ब से बाज़ आया,
बार बार अपना पूरा क़हर उन पर उतारने से गुरेज़
किया।
39क्योंकि उसे याद रहा कि वह फ़ानी इनसान
हैं, हवा का एक झोंका जो गुज़रकर कभी वापस
नहीं आता।

40रेगिस्तान में वह कितनी दफ़ा उससे सरकश
हुए, कितनी मरतबा उसे दुख पहुँचाया।
41बार बार उन्होंने अल्लाह को आज़माया, बार
बार इसराईल के क़ुद्दूस को रंजीदा किया।
42उन्हें उस की क़ुदरत याद न रही, वह दिन
जब उसने फ़िद्या देकर उन्हें दुश्मन से छुड़ाया,

43वह दिन जब उसने मिसर में अपने इलाही
निशान दिखाए, ज़ुअन के इलाक़े में अपने मोजिज़े
किए।
44उसने उनकी नहरों का पानी ख़ून में बदल
दिया, और वह अपनी नदियों का पानी पी न सके।
45उसने उनके दरमियान जुओं के ग़ोल भेजे
जो उन्हें खा गईं, मेंढक जो उन पर तबाही लाए।
46उनकी पैदावार उसने जवान टिड्डियों के
हवाले की, उनकी मेहनत का फल बालिग़ टिड्डियों
के सुपुर्द किया।
47उनकी अंगूर की बेलें उसने ओलों से, उनके
अंजीर-तूत के दरख़्त सैलाब से तबाह कर दिए।

48उनके मवेशी उसने ओलों के हवाले किए,
उनके रेवड़ बिजली के सुपुर्द किए।
49उसने उन पर अपना शोलाज़न ग़ज़ब
नाज़िल किया। क़हर, ख़फ़गी और मुसीबत यानी
तबाही लानेवाले फ़रिश्तों का पूरा दस्ता उन पर
हमलाआवर हुआ।
50उसने अपने ग़ज़ब के लिए रास्ता तैयार
करके उन्हें मौत से न बचाया बल्कि मोहलक वबा
की ज़द में आने दिया।
51मिसर में उसने तमाम पहलौठों को मार
डाला और हाम के ख़ैमों में मरदानगी का पहला
फल तमाम कर दिया।
52फिर वह अपनी क़ौम को भेड़-बकरियों की
तरह मिसर से बाहर लाकर रेगिस्तान में रेवड़ की
तरह लिए फिरा।
53वह हिफ़ाज़त से उनकी क़ियादत करता
रहा। उन्हें कोई डर नहीं था जबकि उनके दुश्मन
समुंदर में डूब गए।
54यों अल्लाह ने उन्हें मुक़द्दस मुल्क तक
पहुँचाया, उस पहाड़ तक जिसे उसके दहने हाथ
ने हासिल किया था।
55उनके आगे आगे वह दीगर क़ौमें
निकालता गया। उनकी ज़मीन उसने तक़-
सीम करके इसराईलियों को मीरास में दी, और
उनके ख़ैमों में उसने इसराईली क़बीले बसाए।

56इसके बावुजूद वह अल्लाह तआला को
आज़माने से बाज़ न आए बल्कि उससे सरकश
हुए और उसके अहकाम के ताबे न रहे।
57अपने बापदादा की तरह वह ग़द्दार बनकर
बेवफ़ा हुए। वह ढीली कमान की तरह नाकाम हो
गए।
58उन्होंने ऊँची जगहों की ग़लत क़ुर-
बानगाहों से अल्लाह को ग़ुस्सा दिलाया और
अपने बुतों से उसे रंजीदा किया।
59जब अल्लाह को ख़बर मिली तो वह
ग़ज़बनाक हुआ और इसराईल को मुकम्मल तौर
पर मुस्तरद कर दिया।
60उसने सैला में अपनी सुकूनतगाह छोड़
दी, वह ख़ैमा जिसमें वह इनसान के दर-
मियान सुकूनत करता था।
61अहद का संदूक़ उस की क़ुदरत और जलाल
का निशान था, लेकिन उसने उसे दुश्मन के हवाले
करके जिलावतनी में जाने दिया।
62अपनी क़ौम को उसने तलवार की ज़द
में आने दिया, क्योंकि वह अपनी मौरूसी
मिलकियत से निहायत नाराज़ था।
63क़ौम के जवान नज़रे-आतिश हुए, और उस
की कुँवारियों के लिए शादी के गीत गाए न गए।
64उसके इमाम तलवार से क़त्ल हुए, और उस
की बेवाओं ने मातम न किया।

65तब रब जाग उठा, उस आदमी की तरह
जिसकी नींद उचाट हो गई हो, उस सूरमे की
मानिंद जिससे नशे का असर उतर गया हो।
66उसने अपने दुश्मनों को मार मारकर भगा
दिया और उन्हें हमेशा के लिए शरमिंदा कर दिया।
67उस वक़्त उसने यूसुफ़ का ख़ैमा रद्द किया
और इफ़राईम के क़बीले को न चुना
68बल्कि यहूदाह के क़बीले और कोहे-सिय्यून
को चुन लिया जो उसे प्यारा था।
69उसने अपना मक़दिस बुलंदियों की मानिंद
बनाया, ज़मीन की मानिंद जिसे उसने हमेशा के
लिए क़ायम किया है।
70उसने अपने ख़ादिम दाऊद को चुनकर भेड़-
बकरियों के बाड़ों से बुलाया।
71हाँ, उसने उसे भेड़ों[a] की देख-भाल से
बुलाया ताकि वह उस की क़ौम याक़ूब, उस की
मीरास इसराईल की गल्लाबानी करे।

[a]इबरानी मतन से मुराद वह भेड़ है जो अभी अपने बच्चों को दूध पिलाती है।

72दाऊद ने ख़ुलूसदिली से उनकी गल्ला-
बानी की, बड़ी महारत से उसने उनकी राहनुमाई
की।

जंग की मुसीबत में क़ौम की दुआ

79 आसफ़ का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, अजनबी क़ौमें तेरी
मौरूसी ज़मीन में घुस आई हैं। उन्होंने तेरी मुक़द्दस
सुकूनतगाह की बेहुरमती करके यरूशलम को
मलबे का ढेर बना दिया है।
2उन्होंने तेरे ख़ादिमों की लाशें परिंदों को और
तेरे ईमानदारों का गोश्त जंगली जानवरों को
खिला दिया है।
3यरूशलम के चारों तरफ़ उन्होंने ख़ून की
नदियाँ बहाईं, और कोई बाक़ी न रहा जो मुरदों
को दफ़नाता।
4हमारे पड़ोसियों ने हमें मज़ाक़ का निशाना
बना लिया है, इर्दगिर्द की क़ौमें हमारी हँसी उड़ाती
और लान-तान करती हैं।

5ऐ रब, कब तक? क्या तू हमेशा तक ग़ुस्से
होगा? तेरी ग़ैरत कब तक आग की तरह भड़कती
रहेगी?
6अपना ग़ज़ब उन अक़वाम पर नाज़िल कर जो
तुझे तसलीम नहीं करतीं, उन सलतनतों पर जो
तेरे नाम को नहीं पुकारतीं।
7क्योंकि उन्होंने याक़ूब को हड़प करके उस की
रिहाइशगाह तबाह कर दी है।
8हमें उन गुनाहों के क़ुसूरवार न ठहरा जो हमारे
बापदादा से सरज़द हुए। हम पर रहम करने में
जल्दी कर, क्योंकि हम बहुत पस्तहाल हो गए हैं।
9ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हमारी मदद कर
ताकि तेरे नाम को जलाल मिले। हमें बचा, अपने
नाम की ख़ातिर हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर।
10दीगर अक़वाम क्यों कहें, "उनका ख़ुदा कहाँ
है?" हमारे देखते देखते उन्हें दिखा कि तू अपने
ख़ादिमों के ख़ून का बदला लेता है।
11क़ैदियों की आहें तुझ तक पहुँचीं, जो मरने
को हैं उन्हें अपनी अज़ीम क़ुदरत से महफ़ूज़ रख।
12ऐ रब, जो लान-तान हमारे पड़ोसियों ने तुझ
पर बरसाई है उसे सात गुना उनके सरों पर वापस
ला।
13तब हम जो तेरी क़ौम और तेरी चरागाह की
भेड़ें हैं अबद तक तेरी सताइश करेंगे, पुश्त-दर-
पुश्त तेरी हम्दो-सना करेंगे।

अंगूर की बेल की बहाली के लिए दुआ

80 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तर्ज़ : अहद के सोसन।
ऐ इसराईल के गल्लाबान, हम पर ध्यान दे! तू
जो यूसुफ़ की रेवड़ की तरह राहनुमाई करता है,
हम पर तवज्जुह कर! तू जो करूबी फ़रिश्तों के
दरमियान तख़्तनशीन है, अपना नूर चमका!
2इफ़राईम, बिनयमीन और मनस्सी के सामने
अपनी क़ुदरत को हरकत में ला। हमें बचाने आ!

3ऐ अल्लाह, हमें बहाल कर। अपने चेहरे का
नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

4ऐ रब, लशकरों के ख़ुदा, तेरा ग़ज़ब कब
तक भड़कता रहेगा, हालाँकि तेरी क़ौम तुझसे
इल्तिजा कर रही है?
5तूने उन्हें आँसुओं की रोटी खिलाई और
आँसुओं का प्याला ख़ूब पिलाया।
6तूने हमें पड़ोसियों के झगड़ों का निशाना
बनाया। हमारे दुश्मन हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं।

7ऐ लशकरों के ख़ुदा, हमें बहाल कर। अपने
चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

8अंगूर की जो बेल मिसर में उग रही थी
उसे तू उखाड़कर मुल्के-कनान लाया। तूने वहाँ
की अक़वाम को भगाकर यह बेल उनकी जगह
लगाई।

9तूने उसके लिए ज़मीन तैयार की तो वह जड़
पकड़कर पूरे मुल्क में फैल गई।
10उसका साया पहाड़ों पर छा गया, और उस
की शाख़ों ने देवदार के अज़ीम दरख़्तों को ढाँक
लिया।
11उस की टहनियाँ मग़रिब में समुंदर तक फैल
गईं, उस की डालियाँ मशरिक़ में दरियाए-फ़ुरात
तक पहुँच गईं।
12तूने उस की चारदीवारी क्यों गिरा दी? अब
हर गुज़रनेवाला उसके अंगूर तोड़ लेता है।
13जंगल के सुअर उसे खा खाकर तबाह करते,
खुले मैदान के जानवर वहाँ चरते हैं।

14ऐ लशकरों के ख़ुदा, हमारी तरफ़ दुबारा रुजू
फ़रमा! आसमान से नज़र डालकर हालात पर
ध्यान दे। इस बेल की देख-भाल कर।

15उसे महफ़ूज़ रख जिसे तेरे दहने हाथ ने
ज़मीन में लगाया, उस बेटे को जिसे तूने अपने
लिए पाला है।
16इस वक़्त वह कटकर नज़रे-आतिश हुआ है।
तेरे चेहरे की डाँट-डपट से लोग हलाक हो जाते
हैं।
17तेरा हाथ अपने दहने हाथ के बंदे को पनाह
दे, उस आदमज़ाद को जिसे तूने अपने लिए पाला
था।
18तब हम तुझसे दूर नहीं हो जाएंगे। बख़्श दे
कि हमारी जान में जान आए तो हम तेरा नाम
पुकारेंगे।

19ऐ रब, लशकरों के ख़ुदा, हमें बहाल कर।
अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

हक़ीक़ी इबादत क्या है?

81 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तर्ज़ : गित्तीत।

अल्लाह हमारी क़ुव्वत है। उस की ख़ुशी में
शादियाना बजाओ, याक़ूब के ख़ुदा की ताज़ीम
में ख़ुशी के नारे लगाओ।
2गीत गाना शुरू करो। दफ़ बजाओ, सरोद और
सितार की सुरीली आवाज़ निकालो।
3नए चाँद के दिन नरसिंगा फूँको, पूरे चाँद के
जिस दिन हमारी ईद होती है उसे फूँको।
4क्योंकि यह इसराईल का फ़र्ज़ है, यह याक़ूब
के ख़ुदा का फ़रमान है।
5जब यूसुफ़ मिसर के ख़िलाफ़ निकला तो
अल्लाह ने ख़ुद यह मुक़र्रर किया।

मैंने एक ज़बान सुनी, जो मैं अब तक नहीं
जानता था,
6"मैंने उसके कंधे पर से बोझ उतारा और
उसके हाथ भारी टोकरी उठाने से आज़ाद किए।
7मुसीबत में तूने आवाज़ दी तो मैंने तुझे
बचाया। गरजते बादल में से मैंने तुझे जवाब दिया
और तुझे मरीबा के पानी पर आज़माया। (सिलाह)
8ऐ मेरी क़ौम, सुन, तो मैं तुझे आगाह करूँगा।
ऐ इसराईल, काश तू मेरी सुने!
9तेरे दरमियान कोई और ख़ुदा न हो, किसी
अजनबी माबूद को सिजदा न कर।
10मैं ही रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर
से निकाल लाया। अपना मुँह ख़ूब खोल तो मैं उसे
भर दूँगा।

11लेकिन मेरी क़ौम ने मेरी न सुनी, इसराईल
मेरी बात मानने के लिए तैयार न था।
12चुनाँचे मैंने उन्हें उनके दिलों की ज़िद के
हवाले कर दिया, और वह अपने ज़ाती मशवरों
के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने लगे।
13काश मेरी क़ौम सुने, इसराईल मेरी राहों पर
चले!
14तब मैं जल्दी से उसके दुश्मनों को ज़ेर
करता, अपना हाथ उसके मुख़ालिफ़ों के ख़िलाफ़
उठाता।

15तब रब से नफ़रत करनेवाले दबककर उस
की ख़ुशामद करते, उनकी शिकस्त अबदी होती।
16लेकिन इसराईल को मैं बेहतरीन गंदुम
खिलाता, मैं चटान में से शहद निकालकर उसे
सेर करता।"

सबसे आला मुंसिफ़

82 आसफ़ का ज़बूर।
अल्लाह इलाही मजलिस में खड़ा है,
माबूदों के दरमियान वह अदालत करता है,
2"तुम कब तक अदालत में ग़लत फ़ैस-
ले करके बेदीनों की जानिबदारी करोगे? (सिलाह)
3पस्तहालों और यतीमों का इनसाफ़ करो,
मुसीबतज़दों और ज़रूरतमंदों के हुक़ूक़ क़ायम
रखो।
4पस्तहालों और ग़रीबों को बचाकर बे-
दीनों के हाथ से छुड़ाओ।"

5लेकिन वह कुछ नहीं जानते, उन्हें समझ ही
नहीं आती। वह तारीकी में टटोल टटोलकर घुमते-
फिरते हैं जबकि ज़मीन की तमाम बुनियादें झूमने
लगी हैं।
6बेशक मैंने कहा, "तुम ख़ुदा हो, सब अल्लाह
तआला के फ़रज़ंद हो।
7लेकिन तुम फ़ानी इनसान की तरह मर
जाओगे, तुम दीगर हुक्मरानों की तरह गिर
जाओगे।"

8ऐ अल्लाह, उठकर ज़मीन की अदालत
कर! क्योंकि तमाम अक़वाम तेरी ही मौरूसी
मिलकियत हैं।

क़ौम के दुश्मनों के ख़िलाफ़ दुआ

83 गीत। आसफ़ का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, ख़ामोश न रह! ऐ
अल्लाह, चुप न रह!
2देख, तेरे दुश्मन शोर मचा रहे हैं, तुझसे
नफ़रत करनेवाले अपना सर तेरे ख़िलाफ़ उठा
रहे हैं।
3तेरी क़ौम के ख़िलाफ़ वह चालाक मनसूबे
बाँध रहे हैं, जो तेरी आड़ में छुप गए हैं उनके
ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे हैं।
4वह कहते हैं, "आओ, हम उन्हें मिटा दें ताकि
क़ौम नेस्त हो जाए और इसराईल का नामो-
निशान बाक़ी न रहे।"
5क्योंकि वह आपस में सलाह-मशवरा करने
के बाद दिली तौर पर मुत्तहिद हो गए हैं, उन्होंने
तेरे ही ख़िलाफ़ अहद बाँधा है।
6उनमें अदोम के ख़ैमे, इसमाईली, मो-
आब, हाजिरी,
7जबाल, अम्मोन, अमालीक़, फिलिस्तिया
और सूर के बाशिंदे शामिल हो गए हैं।
8असूर भी उनमें शरीक होकर लूत की औलाद
को सहारा दे रहा है। (सिलाह)

9उनके साथ वही सुलूक कर जो तूने
मिदियानियों से यानी क़ैसोन नदी पर सीसरा और
याबीन से किया।
10क्योंकि वह ऐन-दोर के पास हलाक होकर
खेत में गोबर बन गए।
11उनके शुरफ़ा के साथ वही बरताव कर जो
तूने ओरेब और ज़एब से किया। उनके तमाम
सरदार ज़िबह और ज़लमुन्ना की मानिंद बन जाएँ,
12जिन्होंने कहा, "आओ, हम अल्लाह की
चरागाहों पर क़ब्ज़ा करें।"
13ऐ मेरे ख़ुदा, उन्हें लुढ़कबूटी और हवा में उड़ते
हुए भूसे की मानिंद बना दे।
14जिस तरह आग पूरे जंगल में फैल जाती और
एक ही शोला पहाड़ों को झुलसा देता है,
15उसी तरह अपनी आँधी से उनका ताक़्क़ुब
कर, अपने तूफ़ान से उनको दहशतज़दा कर दे।
16ऐ रब, उनका मुँह काला कर ताकि वह तेरा
नाम तलाश करें।

17वह हमेशा तक शरमिंदा और हवास-
बाख़्ता रहें, वह शर्मसार होकर हलाक हो जाएँ।
18तब ही वह जान लेंगे कि तू ही जिसका
नाम रब है अल्लाह तआला यानी पूरी दुनिया का
मालिक है।

रब के घर पर ख़ुशी

84 क़ोरह ख़ानदान का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए। तर्ज़ : गित्तीत।
ऐ रब्बुल-अफ़वाज, तेरी सुकूनतगाह कितनी
प्यारी है!
2मेरी जान रब की बारगाहों के लिए तड़पती
हुई निढाल है। मेरा दिल बल्कि पूरा जिस्म ज़िंदा
ख़ुदा को ज़ोर से पुकार रहा है।
3ऐ रब्बुल-अफ़वाज, ऐ मेरे बादशाह और ख़ुदा,
तेरी क़ुरबानगाहों के पास परिंदे को भी घर मिल
गया, अबाबील को भी अपने बच्चों को पालने का
घोंसला मिल गया है।

4मुबारक हैं वह जो तेरे घर में बसते हैं, वह
हमेशा ही तेरी सताइश करेंगे। (सिलाह)
5मुबारक हैं वह जो तुझमें अपनी ताक़त पाते,
जो दिल से तेरी राहों में चलते हैं।
6वह बुका की ख़ुश्क वादी[a] में से गुज़रते हुए
उसे शादाब जगह बना लेते हैं, और बारिशें उसे
बरकतों से ढाँप देती हैं।
7वह क़दम बक़दम तक़वियत पाते हुए आगे
बढ़ते, सब कोहे-सिय्यून पर अल्लाह के सामने
हाज़िर हो जाते हैं।
8ऐ रब, ऐ लशकरों के ख़ुदा, मेरी दुआ सुन! ऐ
याक़ूब के ख़ुदा, ध्यान दे! (सिलाह)
9ऐ अल्लाह, हमारी ढाल पर करम की निगाह
डाल। अपने मसह किए हुए ख़ादिम के चेहरे पर
नज़र कर।

10तेरी बारगाहों में एक दिन किसी और जगह
पर हज़ार दिनों से बेहतर है। मुझे अपने ख़ुदा के
घर के दरवाज़े पर हाज़िर रहना बेदीनों के घरों में
बसने से कहीं ज़्यादा पसंद है।
11क्योंकि रब ख़ुदा आफ़ताब और ढाल है,
वही हमें फ़ज़ल और इज़्ज़त से नवाज़ता है। जो
दियानतदारी से चलें उन्हें वह किसी भी अच्छी
चीज़ से महरूम नहीं रखता।
12ऐ रब्बुल-अफ़वाज, मुबारक है वह जो तुझ
पर भरोसा रखता है!

नए सिरे से बरकत पाने के लिए दुआ

85 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
ऐ रब, पहले तूने अपने मुल्क को पसंद किया,
पहले याक़ूब को बहाल किया।
2पहले तूने अपनी क़ौम का क़ुसूर मुआफ़
किया, उसका तमाम गुनाह ढाँप दिया। (सिलाह)
3जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल हो रहा था उसका
सिलसिला तूने रोक दिया, जो क़हर हमारे
ख़िलाफ़ भड़क रहा था उसे छोड़ दिया।

4ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हमें दुबारा बहाल
कर। हमसे नाराज़ होने से बाज़ आ।
5क्या तू हमेशा तक हमसे ग़ुस्से रहेगा? क्या
तू अपना क़हर पुश्त-दर-पुश्त क़ायम रखेगा?
6क्या तू दुबारा हमारी जान को ताज़ादम नहीं
करेगा ताकि तेरी क़ौम तुझसे ख़ुश हो जाए?
7ऐ रब, अपनी शफ़क़त हम पर ज़ाहिर कर,
अपनी नजात हमें अता फ़रमा।

8मैं वह कुछ सुनूँगा जो ख़ुदा रब फ़र-
माएगा। क्योंकि वह अपनी क़ौम और अपने
ईमानदारों से सलामती का वादा करेगा, अलबत्ता
लाज़िम है कि वह दुबारा हमाक़त में उलझ न
जाएँ।
9यक़ीनन उस की नजात उनके क़रीब है जो
उसका ख़ौफ़ मानते हैं ताकि जलाल हमारे मुल्क
में सुकूनत करे।

[a] या रोनेवाली यानी आँसुओं की वादी।

10शफ़क़त और वफ़ादारी एक दूसरे के गले
लग गए हैं, रास्ती और सलामती ने एक दूसरे को
बोसा दिया है।
11सच्चाई ज़मीन से फूट निकलेगी और रास्ती
आसमान से ज़मीन पर नज़र डालेगी।
12अल्लाह ज़रूर वह कुछ देगा जो अच्छा है,
हमारी ज़मीन ज़रूर अपनी फ़सलें पैदा करेगी।
13रास्ती उसके आगे आगे चलकर उसके
क़दमों के लिए रास्ता तैयार करेगी।

मुसीबत में दुआ

86 दाऊद की दुआ।
ऐ रब, अपना कान झुकाकर मेरी सुन,
क्योंकि मैं मुसीबतज़दा और मुहताज हूँ।
2मेरी जान को महफ़ूज़ रख, क्योंकि मैं
ईमानदार हूँ। अपने ख़ादिम को बचा जो तुझ पर
भरोसा रखता है। तू ही मेरा ख़ुदा है!
3ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्योंकि दिन-
भर मैं तुझे पुकारता हूँ।
4अपने ख़ादिम की जान को ख़ुश कर, क्योंकि
मैं तेरा आरज़ूमंद हूँ।
5क्योंकि तू ऐ रब भला है, तू मुआफ़ करने के
लिए तैयार है। जो भी तुझे पुकारते हैं उन पर तू
बड़ी शफ़क़त करता है।
6ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी इल्तिजाओं पर
तवज्जुह कर।
7मुसीबत के दिन मैं तुझे पुकारता हूँ, क्योंकि
तू मेरी सुनता है।

8ऐ रब, माबूदों में से कोई तेरी मानिंद नहीं है।
जो कुछ तू करता है कोई और नहीं कर सकता।
9ऐ रब, जितनी भी क़ौमें तूने बनाईं वह आकर
तेरे हुज़ूर सिजदा करेंगी और तेरे नाम को जलाल
देंगी।
10क्योंकि तू ही अज़ीम है और मोजिज़े करता
है। तू ही ख़ुदा है।

11ऐ रब, मुझे अपनी राह सिखा ताकि तेरी
वफ़ादारी में चलूँ। बख़्श दे कि मैं पूरे दिल से तेरा
ख़ौफ़ मानूँ।
12ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं पूरे दिल से तेरा शुक्र
करूँगा, हमेशा तक तेरे नाम की ताज़ीम करूँगा।
13क्योंकि तेरी मुझ पर शफ़क़त अज़ीम है, तूने
मेरी जान को पाताल की गहराइयों से छुड़ाया है।

14ऐ अल्लाह, मग़रूर मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए
हैं, ज़ालिमों का जत्था मेरी जान लेने के दरपै है।
यह लोग तेरा लिहाज़ नहीं करते।
15लेकिन तू, ऐ रब, रहीम और मेहरबान ख़ुदा
है। तू तहम्मुल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर है।
16मेरी तरफ़ रुजू फ़रमा, मुझ पर मेहर-
बानी कर! अपने ख़ादिम को अपनी क़ुव्वत अता
कर, अपनी ख़ादिमा के बेटे को बचा।
17मुझे अपनी मेहरबानी का कोई निशान
दिखा। मुझसे नफ़रत करनेवाले यह देखकर
शरमिंदा हो जाएँ कि तू रब ने मेरी मदद करके
मुझे तसल्ली दी है।

सिय्यून अक़वाम की माँ है

87 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। गीत।
उस की बुनियाद मुक़द्दस पहाड़ों पर
रखी गई है।
2रब सिय्यून के दरवाज़ों को याक़ूब की दीगर
आबादियों से कहीं ज़्यादा प्यार करता है।

3ऐ अल्लाह के शहर, तेरे बारे में शानदार बातें
सुनाई जाती हैं। (सिलाह)
4रब फ़रमाता है, “मैं मिसर और बाबल को
उन लोगों में शुमार करूँगा जो मुझे जानते हैं।”
फिलिस्तिया, सूर और एथोपिया के बारे में भी
कहा जाएगा, “इनकी पैदाइश यहीं हुई है।”

5लेकिन सिय्यून के बारे में कहा जाएगा, “हर
एक बाशिंदा उसमें पैदा हुआ है। अल्लाह तआला
ख़ुद उसे क़ायम रखेगा।”

6जब रब अक़वाम को किताब में दर्ज करेगा तो
वह साथ साथ यह भी लिखेगा, “यह सिय्यून में
पैदा हुई हैं।” (सिलाह)
7और लोग नाचते हुए गाएँगे, “मेरे तमाम चश्मे
तुझमें हैं।”

तर्क किए गए शख़्स के लिए दुआ

88 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए। तर्ज़ : महलत लअन्नोत।
हैमान इज़राही का हिकमत का गीत।
ऐ रब, ऐ मेरी नजात के ख़ुदा, दिन-रात मैं तेरे
हुज़ूर चीख़ता-चिल्लाता हूँ।
2मेरी दुआ तेरे हुज़ूर पहुँचे, अपना कान मेरी
चीख़ों की तरफ़ झुका।
3क्योंकि मेरी जान दुख से भरी है, और मेरी
टाँगें क़ब्र में लटकी हुई हैं।
4मुझे उनमें शुमार किया जाता है जो पाताल
में उतर रहे हैं। मैं उस मर्द की मानिंद हूँ जिसकी
तमाम ताक़त जाती रही है।
5मुझे मुरदों में तनहा छोड़ा गया है, क़ब्र में उन
मक़तूलों की तरह जिनका तू अब ख़याल नहीं
रखता और जो तेरे हाथ के सहारे से मुंक़ते हो गए
हैं।
6तूने मुझे सबसे गहरे गढ़े में, तारीकतरीन
गहराइयों में डाल दिया है।
7तेरे ग़ज़ब का पूरा बोझ मुझ पर आ पड़ा है,
तूने मुझे अपनी तमाम मौजों के नीचे दबा दिया
है। (सिलाह)
8तूने मेरे क़रीबी दोस्तों को मुझसे दूर कर दिया
है, और अब वह मुझसे घिन खाते हैं। मैं फँसा हुआ
हूँ और निकल नहीं सकता।
9मेरी आँखें ग़म के मारे पज़मुरदा हो गई हैं।
ऐ रब, दिन-भर मैं तुझे पुकारता, अपने हाथ तेरी
तरफ़ उठाए रखता हूँ।

10क्या तू मुरदों के लिए मोजिज़े करेगा? क्या
पाताल के बाशिंदे उठकर तेरी तमजीद करेंगे?
(सिलाह)
11क्या लोग क़ब्र में तेरी शफ़क़त या पाताल
में तेरी वफ़ा बयान करेंगे?
12क्या तारीकी में तेरे मोजिज़े या मुल्के-
फ़रामोश में तेरी रास्ती मालूम हो जाएगी?

13लेकिन ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता
हूँ, मेरी दुआ सुबह-सवेरे तेरे सामने आ जाती है।
14ऐ रब, तू मेरी जान को क्यों रद्द करता, अपने
चेहरे को मुझसे पोशीदा क्यों रखता है?
15मैं मुसीबतज़दा और जवानी से मौत के
क़रीब रहा हूँ। तेरे दहशतनाक हमले बरदाश्त
करते करते मैं जान से हाथ धो बैठा हूँ।
16तेरा भड़कता क़हर मुझ पर से गुज़र गया,
तेरे हौलनाक कामों ने मुझे नाबूद कर दिया है।
17दिन-भर वह मुझे सैलाब की तरह घेरे रखते
हैं, हर तरफ़ से मुझ पर हमलाआवर होते हैं।
18तूने मेरे दोस्तों और पड़ोसियों को मुझसे दूर
कर रखा है। तारीकी ही मेरी क़रीबी दोस्त बन गई
है।

इसराईल की मुसीबत और दाऊद से वादा

89 ऐतान इज़राही का हिकमत का गीत।
मैं अबद तक रब की मेहरबानियों की
मद्हसराई करूँगा, पुश्त-दर-पुश्त मुँह से तेरी
वफ़ा का एलान करूँगा।
2क्योंकि मैं बोला, “तेरी शफ़क़त हमेशा तक
क़ायम है, तूने अपनी वफ़ा की मज़बूत बुनियाद
आसमान पर ही रखी है।”
3तूने फ़रमाया, “मैंने अपने चुने हुए बंदे से
अहद बाँधा, अपने ख़ादिम दाऊद से क़सम खाकर
वादा किया है,
4‘मैं तेरी नसल को हमेशा तक क़ायम रखूँगा,
तेरा तख़्त हमेशा तक मज़बूत रखूँगा’।” (सिलाह)

5ऐ रब, आसमान तेरे मोजिज़ों की सताइश
करेंगे, मुक़द्दसीन की जमात में ही तेरी वफ़ादारी
की तमजीद करेंगे।

6क्योंकि बादलों में कौन रब की मानिंद है?
इलाही हस्तियों में से कौन रब की मानिंद है?
7जो भी मुक़द्दसीन की मजलिस में शामिल
हैं वह अल्लाह से ख़ौफ़ खाते हैं। जो भी उसके
इर्दगिर्द होते हैं उन पर उस की अज़मत और रोब
छाया रहता है।
8ऐ रब, ऐ लशकरों के ख़ुदा, कौन तेरी मानिंद
है? ऐ रब, तू क़वी और अपनी वफ़ा से घिरा रहता
है।
9तू ठाठें मारते हुए समुंदर पर हुकूमत करता
है। जब वह मौजज़न हो तो तू उसे थमा देता है।
10तूने समुंदरी अज़दहे रहब को कुचल दिया,
और वह मक़तूल की मानिंद बन गया। अपने क़वी
बाज़ू से तूने अपने दुश्मनों को तित्तर-बित्तर कर
दिया।
11आसमानो-ज़मीन तेरे ही हैं। दुनिया और जो
कुछ उसमें है तूने क़ायम किया।
12तूने शिमालो-जुनूब को ख़लक़ किया। तबूर
और हरमून तेरे नाम की ख़ुशी में नारे लगाते हैं।
13तेरा बाज़ू क़वी और तेरा हाथ ताक़तवर है।
तेरा दहना हाथ अज़ीम काम करने के लिए तैयार
है।
14रास्ती और इनसाफ़ तेरे तख़्त की बुनियाद
हैं। शफ़क़त और वफ़ा तेरे आगे आगे चलती हैं।

15मुबारक है वह क़ौम जो तेरी ख़ुशी के नारे
लगा सके। ऐ रब, वह तेरे चेहरे के नूर में चलेंगे।
16रोज़ाना वह तेरे नाम की ख़ुशी मनाएँगे और
तेरी रास्ती से सरफ़राज़ होंगे।
17क्योंकि तू ही उनकी ताक़त की शान है, और
तू अपने करम से हमें सरफ़राज़ करेगा।
18क्योंकि हमारी ढाल रब ही की है, हमारा
बादशाह इसराईल के क़ुद्दूस ही का है।

19माज़ी में तू रोया में अपने ईमानदारों से
हमकलाम हुआ। उस वक़्त तूने फ़रमाया, “मैंने
एक सूरमे को ताक़त से नवाज़ा है, क़ौम में से
एक को चुनकर सरफ़राज़ किया है।
20मैंने अपने ख़ादिम दाऊद को पा लिया और
उसे अपने मुक़द्दस तेल से मसह किया है।
21मेरा हाथ उसे क़ायम रखेगा, मेरा बाज़ू उसे
तक़वियत देगा।
22दुश्मन उस पर ग़ालिब नहीं आएगा, शरीर
उसे ख़ाक में नहीं मिलाएँगे।
23उसके आगे आगे मैं उसके दुश्मनों को पाश
पाश करूँगा। जो उससे नफ़रत रखते हैं उन्हें
ज़मीन पर पटख़ दूँगा।
24मेरी वफ़ा और मेरी शफ़क़त उसके साथ
रहेंगी, मेरे नाम से वह सरफ़राज़ होगा।
25मैं उसके हाथ को समुंदर पर और उसके
दहने हाथ को दरियाओं पर हुकूमत करने दूँगा।
26वह मुझे पुकारकर कहेगा, ‘तू मेरा बाप, मेरा
ख़ुदा और मेरी नजात की चटान है।’
27मैं उसे अपना पहलौठा और दुनिया का
सबसे आला बादशाह बनाऊँगा।
28मैं उसे हमेशा तक अपनी शफ़क़त से
नवाज़ता रहूँगा, मेरा उसके साथ अहद कभी
तमाम नहीं होगा।
29मैं उस की नसल हमेशा तक क़ायम रखूँगा,
जब तक आसमान क़ायम है उसका तख़्त क़ायम
रखूँगा।
30अगर उसके बेटे मेरी शरीअत तर्क करके मेरे
अहकाम पर अमल न करें,
31अगर वह मेरे फ़रमानों की बेहुरमती करके
मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी न गुज़ारें
32तो मैं लाठी लेकर उनकी तादीब करूँगा और
मोहलक वबाओं से उनके गुनाहों की सज़ा दूँगा।
33लेकिन मैं उसे अपनी शफ़क़त से महरूम
नहीं करूँगा, अपनी वफ़ा का इनकार नहीं करूँगा।
34न मैं अपने अहद की बेहुरमती करूँगा, न वह
कुछ तबदील करूँगा जो मैंने फ़रमाया है।
35मैंने एक बार सदा के लिए अपनी क़ुद्दूसियत
की क़सम खाकर वादा किया है, और मैं दाऊद
को कभी धोका नहीं दूँगा।

36उस की नसल अबद तक क़ायम रहेगी,
उसका तख़्त आफ़ताब की तरह मेरे सामने खड़ा
रहेगा।
37चाँद की तरह वह हमेशा तक बरक़रार रहेगा,
और जो गवाह बादलों में है वह वफ़ादार है।”
(सिलाह)

38लेकिन अब तूने अपने मसह किए हुए
ख़ादिम को ठुकराकर रद्द किया, तू उससे
ग़ज़बनाक हो गया है।
39तूने अपने ख़ादिम का अहद नामंज़ूर किया
और उसका ताज ख़ाक में मिलाकर उस की
बेहुरमती की है।
40तूने उस की तमाम फ़सीलें ढाकर उसके
क़िलों को मलबे के ढेर बना दिया है।
41जो भी वहाँ से गुज़रे वह उसे लूट लेता है।
वह अपने पड़ोसियों के लिए मज़ाक़ का निशाना
बन गया है।
42तूने उसके मुख़ालिफ़ों का दहना हाथ
सरफ़राज़ किया, उसके तमाम दुश्मनों को ख़ुश
कर दिया है।
43तूने उस की तलवार की तेज़ी बेअसर करके
उसे जंग में फ़तह पाने से रोक दिया है।
44तूने उस की शान ख़त्म करके उसका तख़्त
ज़मीन पर पटख़ दिया है।
45तूने उस की जवानी के दिन मुख़तसर करके
उसे रुसवाई की चादर में लपेटा है। (सिलाह)

46ऐ रब, कब तक? क्या तू अपने आपको
हमेशा तक छुपाए रखेगा? क्या तेरा क़हर अबद
तक आग की तरह भड़कता रहेगा?
47याद रहे कि मेरी ज़िंदगी कितनी मुख़-
तसर है, कि तूने तमाम इनसान कितने फ़ानी
ख़लक़ किए हैं।
48कौन है जिसका मौत से वास्ता न पड़े, कौन
है जो हमेशा ज़िंदा रहे? कौन अपनी जान को
मौत के क़ब्ज़े से बचाए रख सकता है? (सिलाह)

49ऐ रब, तेरी वह पुरानी मेहरबानियाँ कहाँ हैं
जिनका वादा तूने अपनी वफ़ा की क़सम खाकर
दाऊद से किया?
50ऐ रब, अपने ख़ादिमों की ख़जालत याद
कर। मेरा सीना मुतअद्दिद क़ौमों की लान-तान
से दुखता है,
51क्योंकि ऐ रब, तेरे दुश्मनों ने मुझे लान-तान
की, उन्होंने तेरे मसह किए हुए ख़ादिम को हर
क़दम पर लान-तान की है!

52अबद तक रब की हम्द हो! आमीन, फिर
आमीन।

चौथी किताब 90-106

फ़ानी इनसान अल्लाह में पनाह ले

90 मर्दे-ख़ुदा मूसा की दुआ।
ऐ रब, पुश्त-दर-पुश्त तू हमारी
पनाहगाह रहा है।
2इससे पहले कि पहाड़ पैदा हुए और तू ज़मीन
और दुनिया को वुजूद में लाया तू ही था। ऐ
अल्लाह, तू अज़ल से अबद तक है।
3तू इनसान को दुबारा ख़ाक होने देता है। तू
फ़रमाता है, ‘ऐ आदमज़ादो, दुबारा ख़ाक में मिल
जाओ!’
4क्योंकि तेरी नज़र में हज़ार साल कल के गुज़रे
हुए दिन के बराबर या रात के एक पहर की मानिंद
हैं।
5तू लोगों को सैलाब की तरह बहा ले जाता है,
वह नींद और उस घास की मानिंद हैं जो सुबह को
फूट निकलती है।
6वह सुबह को फूट निकलती और उगती है,
लेकिन शाम को मुरझाकर सूख जाती है।

7क्योंकि हम तेरे ग़ज़ब से फ़ना हो जाते और
तेरे क़हर से हवासबाख़्ता हो जाते हैं।
8तूने हमारी ख़ताओं को अपने सामने रखा,
हमारे पोशीदा गुनाहों को अपने चेहरे के नूर में
लाया है।

9चुनाँचे हमारे तमाम दिन तेरे क़हर के तहत
घटते घटते ख़त्म हो जाते हैं। जब हम अपने सालों
के इख़्तिताम पर पहुँचते हैं तो ज़िंदगी सर्द आह
के बराबर ही होती है।
10हमारी उम्र 70 साल या अगर ज़्यादा ताक़त
हो तो 80 साल तक पहुँचती है, और जो दिन
फ़ख़र का बाइस थे वह भी तकलीफ़देह और
बेकार हैं। जल्द ही वह गुज़र जाते हैं, और हम
परिंदों की तरह उड़कर चले जाते हैं।
11कौन तेरे ग़ज़ब की पूरी शिद्दत जानता है?
कौन समझता है कि तेरा क़हर हमारी ख़ुदातरसी
की कमी के मुताबिक़ ही है?
12चुनाँचे हमें हमारे दिनों का सहीह हिसाब
करना सिखा ताकि हमारे दिल दानिशमंद हो
जाएँ।

13ऐ रब, दुबारा हमारी तरफ़ रुजू फ़रमा! तू
कब तक दूर रहेगा? अपने ख़ादिमों पर तरस खा!
14सुबह को हमें अपनी शफ़क़त से सेर कर!
तब हम ज़िंदगी-भर बाग़ बाग़ होंगे और ख़ुशी
मनाएँगे।
15हमें उतने ही दिन ख़ुशी दिला जितने तूने
हमें पस्त किया है, उतने ही साल जितने हमें दुख
सहना पड़ा है।
16अपने ख़ादिमों पर अपने काम और उनकी
औलाद पर अपनी अज़मत ज़ाहिर कर।
17रब हमारा ख़ुदा हमें अपनी मेहरबानी
दिखाए। हमारे हाथों का काम मज़बूत कर, हाँ
हमारे हाथों का काम मज़बूत कर!

अल्लाह की पनाह में

91 जो अल्लाह तआला की पनाह में
रहे वह क़ादिरे-मुतलक़ के साये में
सुकूनत करेगा।
2मैं कहूँगा, “ऐ रब, तू मेरी पनाह और मेरा
क़िला है, मेरा ख़ुदा जिस पर मैं भरोसा रखता
हूँ।”
3क्योंकि वह तुझे चिड़ीमार के फंदे और
मोहलक मरज़ से छुड़ाएगा।
4वह तुझे अपने शाहपरों के नीचे ढाँप लेगा,
और तू उसके परों तले पनाह ले सकेगा। उस की
वफ़ादारी तेरी ढाल और पुश्ता रहेगी।
5रात की दहशतों से ख़ौफ़ मत खा, न उस तीर
से जो दिन के वक़्त चले।
6उस मोहलक मरज़ से दहशत मत खा जो
तारीकी में घूमे फिरे, न उस वबाई बीमारी से जो
दोपहर के वक़्त तबाही फैलाए।
7गो तेरे साथ खड़े हज़ार अफ़राद हलाक हो
जाएँ और तेरे दहने हाथ दस हज़ार मर जाएँ,
लेकिन तू उस की ज़द में नहीं आएगा।
8तू अपनी आँखों से इसका मुलाहज़ा करेगा,
तू ख़ुद बेदीनों की सज़ा देखेगा।
9क्योंकि तूने कहा है, “रब मेरी पनाहगाह है,”
तू अल्लाह तआला के साये में छुप गया है।
10इसलिए तेरा किसी बला से वास्ता नहीं
पड़ेगा, कोई आफ़त भी तेरे ख़ैमे के क़रीब फटकने
नहीं पाएगी।

11क्योंकि वह अपने फ़रिश्तों को हर राह पर
तेरी हिफ़ाज़त करने का हुक्म देगा,
12और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि
तेरे पाँवों को पत्थर से ठेस न लगे।
13तू शेरबबरों और ज़हरीले साँपों पर क़दम
रखेगा, तू जवान शेरों और अज़दहाओं को कुचल
देगा।
14रब फ़रमाता है, “चूँकि वह मुझसे लिपटा
रहता है इसलिए मैं उसे बचाऊँगा। चूँकि वह मेरा
नाम जानता है इसलिए मैं उसे महफ़ूज़ रखूँगा।
15वह मुझे पुकारेगा तो मैं उस की सुनूँगा।
मुसीबत में मैं उसके साथ हूँगा। मैं उसे छुड़ाकर
उस की इज़्ज़त करूँगा।
16मैं उसे उम्र की दराज़ी बख़्शूँगा और उस पर
अपनी नजात ज़ाहिर करूँगा।”

अल्लाह की सताइश करने की ख़ुशी

92 ज़बूर। सबत के लिए गीत।
रब का शुक्र करना भला है। ऐ अल्लाह तआला, तेरे नाम की मद्हसराई करना भला है।
2सुबह को तेरी शफ़क़त और रात को तेरी वफ़ा का एलान करना भला है,
3ख़ासकर जब साथ साथ दस तारोंवाला साज़, सितार और सरोद बजते हैं।

4क्योंकि ऐ रब, तूने मुझे अपने कामों से ख़ुश किया है, और तेरे हाथों के काम देखकर मैं ख़ुशी के नारे लगाता हूँ।
5ऐ रब, तेरे काम कितने अज़ीम, तेरे ख़यालात कितने गहरे हैं।
6नादान यह नहीं जानता, अहमक़ को इसकी समझ नहीं आती।
7गो बेदीन घास की तरह फूट निकलते और बदकार सब फलते-फूलते हैं, लेकिन आख़िरकार वह हमेशा के लिए हलाक हो जाएंगे।
8मगर तू, ऐ रब, अबद तक सरबुलंद रहेगा।

9क्योंकि तेरे दुश्मन, ऐ रब, तेरे दुश्मन यक़ीनन तबाह हो जाएंगे, बदकार सब तित्तर-बित्तर हो जाएंगे।

10तूने मुझे जंगली बैल की-सी ताक़त देकर ताज़ा तेल से मसह किया है।
11मेरी आँख अपने दुश्मनों की शिकस्त से और मेरे कान उन शरीरों के अंजाम से लुत्फ़अंदोज़ हुए हैं जो मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं।

12रास्तबाज़ खजूर के दरख़्त की तरह फले-फूलेगा, वह लुबनान के देवदार के दरख़्त की तरह बढ़ेगा।
13जो पौदे रब की सुकूनतगाह में लगाए गए हैं वह हमारे ख़ुदा की बारगाहों में फलें-फूलेंगे।
14वह बुढ़ापे में भी फल लाएँगे और तरो-ताज़ा और हरे-भरे रहेंगे।
15उस वक़्त भी वह एलान करेंगे, “रब रास्त है। वह मेरी चटान है, और उसमें नारास्ती नहीं होती।”

अल्लाह अबदी बादशाह है

93 रब बादशाह है, वह जलाल से मुलब्बस है। रब जलाल से मुलब्बस और क़ुदरत से कमरबस्ता है। यक़ीनन दुनिया मज़बूत बुनियाद पर क़ायम है, और वह नहीं डगमगाएगी।

2तेरा तख़्त क़दीम ज़माने से क़ायम है, तू अज़ल से मौजूद है।
3ऐ रब, सैलाब गरज उठे, सैलाब शोर मचाकर गरज उठे, सैलाब ठाठें मारकर गरज उठे।
4लेकिन एक है जो गहरे पानी के शोर से ज़्यादा ज़ोरावर, जो समुंदर की ठाठों से ज़्यादा ताक़तवर है। रब जो बुलंदियों पर रहता है कहीं ज़्यादा अज़ीम है।

5ऐ रब, तेरे अहकाम हर तरह से क़ाबिले-एतमाद हैं। तेरा घर हमेशा तक क़ुद्दूसियत से आरास्ता रहेगा।

क़ौम पर ज़ुल्म करनेवालों से रिहाई के लिए दुआ

94 ऐ रब, ऐ इंतक़ाम लेनेवाले ख़ुदा! ऐ इंतक़ाम लेनेवाले ख़ुदा, अपना नूर चमका।
2ऐ दुनिया के मुंसिफ़, उठकर मग़रूरों को उनके आमाल की मुनासिब सज़ा दे।
3ऐ रब, बेदीन कब तक, हाँ कब तक फ़तह के नारे लगाएँगे?

4वह कुफ़र की बातें उगलते रहते, तमाम बदकार शेख़ी मारते रहते हैं।

5ऐ रब, वह तेरी क़ौम को कुचल रहे, तेरी
मौरूसी मिलकियत पर ज़ुल्म कर रहे हैं।
6बेवाओं और अजनबियों को वह मौत के घाट
उतार रहे, यतीमों को क़त्ल कर रहे हैं।
7वह कहते हैं, “यह रब को नज़र नहीं आता,
याक़ूब का ख़ुदा ध्यान ही नहीं देता।”

8ऐ क़ौम के नादानो, ध्यान दो! ऐ अह-
मक़ो, तुम्हें कब समझ आएगी?
9जिसने कान बनाया, क्या वह नहीं सुनता?
जिसने आँख को तश्कील दिया क्या वह नहीं
देखता?
10जो अक़वाम को तंबीह करता और इनसान
को तालीम देता है क्या वह सज़ा नहीं देता?
11रब इनसान के ख़यालात जानता है, वह
जानता है कि वह दम-भर के ही हैं।

12ऐ रब, मुबारक है वह जिसे तू तरबियत देता
है, जिसे तू अपनी शरीअत की तालीम देता है
13ताकि वह मुसीबत के दिनों से आराम पाए
और उस वक़्त तक सुकून से ज़िंदगी गुज़ारे जब
तक बेदीनों के लिए गढ़ा तैयार न हो।
14क्योंकि रब अपनी क़ौम को रद्द नहीं करेगा,
वह अपनी मौरूसी मिलकियत को तर्क नहीं
करेगा।
15फ़ैसले दुबारा इनसाफ़ पर मबनी होंगे, और
तमाम दियानतदार दिल उस की पैरवी करेंगे।

16कौन शरीरों के सामने मेरा दिफ़ा करेगा?
कौन मेरे लिए बदकारों का सामना करेगा?
17अगर रब मेरा सहारा न होता तो मेरी जान
जल्द ही ख़ामोशी के मुल्क में जा बसती।
18ऐ रब, जब मैं बोला, “मेरा पाँव डगमगाने
लगा है” तो तेरी शफ़क़त ने मुझे सँभाला।
19जब तशवीशनाक ख़यालात मुझे बेचैन करने
लगे तो तेरी तसल्लियों ने मेरी जान को ताज़ादम
किया।

20ऐ अल्लाह, क्या तबाही की हुकूमत तेरे साथ
मुत्तहिद हो सकती है, ऐसी हुकूमत जो अपने
फ़रमानों से ज़ुल्म करती है? हरगिज़ नहीं!
21वह रास्तबाज़ की जान लेने के लिए आपस
में मिल जाते और बेक़ुसूरों को क़ातिल ठहराते हैं।
22लेकिन रब मेरा क़िला बन गया है, और मेरा
ख़ुदा मेरी पनाह की चटान साबित हुआ है।
23वह उनकी नाइनसाफ़ी उन पर वापस आने
देगा और उनकी शरीर हरकतों के जवाब में उन्हें
तबाह करेगा। रब हमारा ख़ुदा उन्हें नेस्त करेगा।

परस्तिश और फ़रमाँबरदारी की दावत

95 आओ, हम शादियाना बजाकर रब की
मद्हसराई करें, ख़ुशी के नारे लगाकर
अपनी नजात की चटान की तमजीद करें!
2आओ, हम शुक्रगुज़ारी के साथ उसके हुज़ूर
आएँ, गीत गाकर उस की सताइश करें।
3क्योंकि रब अज़ीम ख़ुदा और तमाम माबूदों
पर अज़ीम बादशाह है।
4उसके हाथ में ज़मीन की गहराइयाँ हैं, और
पहाड़ की बुलंदियाँ भी उसी की हैं।
5समुंदर उसका है, क्योंकि उसने उसे ख़लक़
किया। ख़ुश्की उस की है, क्योंकि उसके हाथों ने
उसे तश्कील दिया।
6आओ हम सिजदा करें और रब अपने ख़ालिक़
के सामने झुककर घुटने टेकें।
7क्योंकि वह हमारा ख़ुदा है और हम उस की
चरागाह की क़ौम और उसके हाथ की भेड़ें हैं।
अगर तुम आज उस की आवाज़ सुनो
8“तो अपने दिलों को सख़्त न करो जिस तरह
मरीबा में हुआ, जिस तरह रेगिस्तान में मस्सा में
हुआ।
9वहाँ तुम्हारे बापदादा ने मुझे आज़माया और
जाँचा, हालाँकि उन्होंने मेरे काम देख लिए थे।
10चालीस साल मैं उस नसल से घिन खाता
रहा। मैं बोला, ‘उनके दिल हमेशा सहीह राह से
हट जाते हैं, और वह मेरी राहें नहीं जानते।’

11अपने ग़ज़ब में मैंने क़सम खाई, 'यह कभी
उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे जहाँ मैं उन्हें सुकून
देता'।"

दुनिया का ख़ालिक़ और मुंसिफ़

96 रब की तमजीद में नया गीत गाओ, ऐ
पूरी दुनिया, रब की मद्हसराई करो।
2रब की तमजीद में गीत गाओ, उसके नाम
की सताइश करो, रोज़ बरोज़ उस की नजात की
ख़ुशख़बरी सुनाओ।
3क़ौमों में उसका जलाल और तमाम उम्मतों
में उसके अजायब बयान करो।
4क्योंकि रब अज़ीम और सताइश के बहुत
लायक़ है। वह तमाम माबूदों से महीब है।
5क्योंकि दीगर क़ौमों के तमाम माबूद बुत ही
हैं जबकि रब ने आसमान को बनाया।
6उसके हुज़ूर शानो-शौकत, उसके मक़-
दिस में क़ुदरत और जलाल है।
7ऐ क़ौमों के क़बीलो, रब की तमजीद करो,
रब के जलाल और क़ुदरत की सताइश करो।
8रब के नाम को जलाल दो। क़ुरबानी लेकर
उस की बारगाहों में दाख़िल हो जाओ।
9मुक़द्दस लिबास से आरास्ता होकर रब को
सिजदा करो। पूरी दुनिया उसके सामने लरज़
उठे।
10क़ौमों में एलान करो, "रब ही बादशाह है!
यक़ीनन दुनिया मज़बूती से क़ायम है और नहीं
डगमगाएगी। वह इनसाफ़ से क़ौमों की अदालत
करेगा।"

11आसमान ख़ुश हो, ज़मीन जशन मनाए!
समुंदर और जो कुछ उसमें है ख़ुशी से गरज उठे।
12मैदान और जो कुछ उसमें है बाग़ बाग़ हो।
फिर जंगल के दरख़्त शादियाना बजाएंगे।
13वह रब के सामने शादियाना बजाएंगे,
क्योंकि वह आ रहा है, वह दुनिया की अदालत
करने आ रहा है। वह इनसाफ़ से दुनिया की
अदालत करेगा और अपनी सदाक़त से अक़वाम
का फ़ैसला करेगा।

अल्लाह की सलतनत पर ख़ुशी

97 रब बादशाह है! ज़मीन जशन मनाए,
साहिली इलाक़े दूर दूर तक ख़ुश हों।
2वह बादलों और गहरे अंधेरे से घिरा रहता है,
रास्ती और इनसाफ़ उसके तख़्त की बुनियाद हैं।
3आग उसके आगे आगे भड़ककर चारों तरफ़
उसके दुश्मनों को भस्म कर देती है।
4उस की कड़कती बिजलियों ने दुनिया को
रौशन कर दिया तो ज़मीन यह देखकर पेचो-ताब
खाने लगी।
5रब के आगे आगे, हाँ पूरी दुनिया के मालिक
के आगे आगे पहाड़ मोम की तरह पिघल गए।
6आसमानों ने उस की रास्ती का एलान किया,
और तमाम क़ौमों ने उसका जलाल देखा।

7तमाम बुतपरस्त, हाँ सब जो बुतों पर फ़ख़र
करते हैं शरमिंदा हों। ऐ तमाम माबूदो, उसे सिजदा
करो!
8कोहे-सिय्यून सुनकर ख़ुश हुआ। ऐ रब, तेरे
फ़ैसलों के बाइस यहूदाह की बेटियाँ[a] बाग़ बाग़
हुईं।
9क्योंकि तू ऐ रब, पूरी दुनिया पर सबसे आला
है, तू तमाम माबूदों से सरबुलंद है।

10तुम जो रब से मुहब्बत रखते हो, बुराई से
नफ़रत करो! रब अपने ईमानदारों की जान को
महफ़ूज़ रखता है, वह उन्हें बेदीनों के क़ब्ज़े से
छुड़ाता है।
11रास्तबाज़ के लिए नूर का और दिल के
दियानतदारों के लिए शादमानी का बीज बोया
गया है।
12ऐ रास्तबाज़ो, रब से ख़ुश हो, उसके मुक़द्दस
नाम की सताइश करो।

[a]एक और मुमकिना तरजुमा : यहूदाह की आबादियाँ।

पूरी दुनिया का शाही मुंसिफ़

98 रब की तमजीद में नया गीत गाओ,
क्योंकि उसने मोजिज़े किए हैं। अपने
दहने हाथ और मुक़द्दस बाज़ू से उसने नजात दी
है।
2रब ने अपनी नजात का एलान किया और
अपनी रास्ती क़ौमों के रूबरू ज़ाहिर की है।
3उसने इसराईल के लिए अपनी शफ़क़त और
वफ़ा याद की है। दुनिया की इंतहाओं ने सब हमारे
ख़ुदा की नजात देखी है।
4ऐ पूरी दुनिया, नारे लगाकर रब की मद्हसराई
करो! आपे में न समाओ और जशन मनाकर हम्द
के गीत गाओ!
5सरोद बजाकर रब की मद्हसराई करो, सरोद
और गीत से उस की सताइश करो।
6तुरम और नरसिंगा फूँककर रब बादशाह के
हुज़ूर ख़ुशी के नारे लगाओ!
7समुंदर और जो कुछ उसमें है, दुनिया और
उसके बाशिंदे ख़ुशी से गरज उठें।
8दरिया तालियाँ बजाएँ, पहाड़ मिलकर ख़ुशी
मनाएँ,
9वह रब के सामने ख़ुशी मनाएँ। क्योंकि वह
ज़मीन की अदालत करने आ रहा है। वह इनसाफ़
से दुनिया की अदालत करेगा, रास्ती से क़ौमों का
फ़ैसला करेगा।

क़ुद्दूस ख़ुदा

99 रब बादशाह है, अक़वाम लरज़ उठें!
वह करूबी फ़रिश्तों के दरमियान
तख़्तनशीन है, दुनिया डगमगाए!
2कोहे-सिय्यून पर रब अज़ीम है, तमाम
अक़वाम पर सरबुलंद है।
3वह तेरे अज़ीम और पुरजलाल नाम की
सताइश करें, क्योंकि वह क़ुद्दूस है।

4वह बादशाह की क़ुदरत की तमजीद करें जो
इनसाफ़ से प्यार करता है। ऐ अल्लाह, तू ही ने
अदल क़ायम किया, तू ही ने याक़ूब में इनसाफ़
और रास्ती पैदा की है।
5रब हमारे ख़ुदा की ताज़ीम करो, उसके पाँवों
की चौकी के सामने सिजदा करो, क्योंकि वह
क़ुद्दूस है।

6मूसा और हारून उसके इमामों में से थे।
समुएल भी उनमें से था जो उसका नाम पुकारते
थे। उन्होंने रब को पुकारा, और उसने उनकी
सुनी।
7वह बादल के सतून में से उनसे हमकलाम
हुआ, और वह उन अहकाम और फ़रमानों के ताबे
रहे जो उसने उन्हें दिए थे।
8ऐ रब हमारे ख़ुदा, तूने उनकी सुनी। तू जो
अल्लाह है उन्हें मुआफ़ करता रहा, अलबत्ता उन्हें
उनकी बुरी हरकतों की सज़ा भी देता रहा।
9रब हमारे ख़ुदा की ताज़ीम करो और उसके
मुक़द्दस पहाड़ पर सिजदा करो, क्योंकि रब हमारा
ख़ुदा क़ुद्दूस है।

अल्लाह की सताइश करो!

100 शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानी के लिए ज़बूर।
ऐ पूरी दुनिया, ख़ुशी के नारे
लगाकर रब की मद्हसराई करो!
2ख़ुशी से रब की इबादत करो, जशन मनाते
हुए उसके हुज़ूर आओ!
3जान लो कि रब ही ख़ुदा है। उसी ने हमें ख़लक़
किया, और हम उसके हैं, उस की क़ौम और उस
की चरागाह की भेड़ें।

4शुक्र करते हुए उसके दरवाज़ों में दाख़िल हो,
सताइश करते हुए उस की बारगाहों में हाज़िर हो।
उसका शुक्र करो, उसके नाम की तमजीद करो!
5क्योंकि रब भला है। उस की शफ़क़त अबदी
है, और उस की वफ़ादारी पुश्त-दर-पुश्त क़ायम
है।

बादशाह की हुकूमत कैसी होनी चाहिए?

101 दाऊद का ज़बूर।
मैं शफ़क़त और इनसाफ़ का गीत गाऊँगा। ऐ रब, मैं तेरी मद्हसराई करूँगा।
2मैं बड़ी एहतियात से बेइलज़ाम राह पर चलूँगा। लेकिन तू कब मेरे पास आएगा? मैं ख़ुलूसदिली से अपने घर में ज़िंदगी गुज़ारूँगा।
3मैं शरारत की बात अपने सामने नहीं रखता और बुरी हरकतों से नफ़रत करता हूँ। ऐसी चीज़ें मेरे साथ लिपट न जाएँ।
4झूटा दिल मुझसे दूर रहे। मैं बुराई को जानना ही नहीं चाहता।
5जो चुपके से अपने पड़ोसी पर तोहमत लगाए उसे मैं ख़ामोश कराऊँगा, जिसकी आँखें मग़रूर और दिल मुतकब्बिर हो उसे बरदाश्त नहीं करूँगा।
6मेरी आँखें मुल्क के वफ़ादारों पर लगी रहती हैं ताकि वह मेरे साथ रहें। जो बेइलज़ाम राह पर चले वही मेरी ख़िदमत करे।
7धोकेबाज़ मेरे घर में न ठहरे, झूट बोलनेवाला मेरी मौजूदगी में क़ायम न रहे।
8हर सुबह को मैं मुल्क के तमाम बेदीनों को ख़ामोश कराऊँगा ताकि तमाम बदकारों को रब के शहर में से मिटाया जाए।

सिय्यून की बहाली के लिए दुआ (तौबा का पाँचवाँ ज़बूर)

102 मुसीबतज़दा की दुआ, उस वक़्त जब वह निढाल होकर रब के सामने अपनी आहो-ज़ारी उंडेल देता है।
ऐ रब, मेरी दुआ सुन! मदद के लिए मेरी आहें तेरे हुज़ूर पहुँचें।
2जब मैं मुसीबत में हूँ तो अपना चेहरा मुझसे छुपाए न रख बल्कि अपना कान मेरी तरफ़ झुका। जब मैं पुकारूँ तो जल्द ही मेरी सुन।
3क्योंकि मेरे दिन धुएँ की तरह ग़ायब हो रहे हैं, मेरी हड्डियाँ कोयलों की तरह दहक रही हैं।
4मेरा दिल घास की तरह झुलसकर सूख गया है, और मैं रोटी खाना भी भूल गया हूँ।
5आहो-ज़ारी करते करते मेरा जिस्म सुकड़ गया है, जिल्द और हड्डियाँ ही रह गई हैं।
6मैं रेगिस्तान में दश्ती उल्लू और खंडरात में छोटे उल्लू की मानिंद हूँ।
7मैं बिस्तर पर जागता रहता हूँ, छत पर तनहा परिंदे की मानिंद हूँ।
8दिन-भर मेरे दुश्मन मुझे लान-तान करते हैं। जो मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं वह मेरा नाम लेकर लानत करते हैं।
9राख मेरी रोटी है, और जो कुछ पीता हूँ उसमें मेरे आँसू मिले होते हैं।
10क्योंकि मुझ पर तेरी लानत और तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ है। तूने मुझे उठाकर ज़मीन पर पटख़ दिया है।
11मेरे दिन शाम के ढलनेवाले साये की मानिंद हैं। मैं घास की तरह सूख रहा हूँ।

12लेकिन तू ऐ रब अबद तक तख़्तनशीन है, तेरा नाम पुश्त-दर-पुश्त क़ायम रहता है।
13अब आ, कोहे-सिय्यून पर रहम कर। क्योंकि उस पर मेहरबानी करने का वक़्त आ गया है, मुक़र्ररा वक़्त आ गया है।
14क्योंकि तेरे ख़ादिमों को उसका एक एक पत्थर प्यारा है, और वह उसके मलबे पर तरस खाते हैं।
15तब ही क़ौमें रब के नाम से डरेंगी, और दुनिया के तमाम बादशाह तेरे जलाल का ख़ौफ़ खाएँगे।
16क्योंकि रब सिय्यून को अज़ सरे-नौ तामीर करेगा, वह अपने पूरे जलाल के साथ ज़ाहिर हो जाएगा।
17मुफ़लिसों की दुआ पर वह ध्यान देगा और उनकी फ़रियादों को हक़ीर नहीं जानेगा।

18आनेवाली नसल के लिए यह क़लमबंद हो जाए ताकि जो क़ौम अभी पैदा नहीं हुई वह रब की सताइश करे।

19क्योंकि रब ने अपने मक़दिस की बुलंदियों
से झाँका है, उसने आसमान से ज़मीन पर नज़र
डाली है
20ताकि क़ैदियों की आहो-ज़ारी सुने और
मरनेवालों की ज़ंजीरें खोले।
21क्योंकि उस की मरज़ी है कि वह कोहे-
सिय्यून पर रब के नाम का एलान करें और
यरूशलम में उस की सताइश करें,
22कि क़ौमें और सलतनतें मिलकर जमा हो
जाएँ और रब की इबादत करें।

23रास्ते में ही अल्लाह ने मेरी ताक़त तोड़कर
मेरे दिन मुख़तसर कर दिए हैं।
24मैं बोला, “ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे ज़िंदों के मुल्क
से दूर न कर, मेरी ज़िंदगी तो अधूरी रह गई है।
लेकिन तेरे साल पुश्त-दर-पुश्त क़ायम रहते हैं।
25तूने क़दीम ज़माने में ज़मीन की बुनियाद
रखी, और तेरे ही हाथों ने आसमानों को बनाया।
26यह तो तबाह हो जाएंगे, लेकिन तू क़ायम
रहेगा। यह सब कपड़े की तरह घिस-फट जाएंगे।
तू उन्हें पुराने लिबास की तरह बदल देगा, और
वह जाते रहेंगे।
27लेकिन तू वही का वही रहता है, और तेरी
ज़िंदगी कभी ख़त्म नहीं होती।
28तेरे ख़ादिमों के फ़रज़ंद तेरे हुज़ूर बसते रहेंगे,
और उनकी औलाद तेरे सामने क़ायम रहेगी।”

रब की शफ़क़त की सताइश

103 दाऊद का ज़बूर।
ऐ मेरी जान, रब की सताइश
कर! मेरा रगो-रेशा उसके क़ुद्दूस नाम की हम्द
करे!
2ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर और जो
कुछ उसने तेरे लिए किया है उसे भूल न जा।
3क्योंकि वह तेरे तमाम गुनाहों को मुआफ़
करता, तुझे तमाम बीमारियों से शफ़ा देता है।
4वह एवज़ाना देकर तेरी जान को मौत के गढ़े
से छुड़ा लेता, तेरे सर को अपनी शफ़क़त और
रहमत के ताज से आरास्ता करता है।
5वह तेरी ज़िंदगी को अच्छी चीज़ों से सेर करता
है, और तू दुबारा जवान होकर उक़ाब की-सी
तक़वियत पाता है।

6रब तमाम मज़लूमों के लिए रास्ती और
इनसाफ़ क़ायम करता है।
7उसने अपनी राहें मूसा पर और अपने अज़ीम
काम इसराईलियों पर ज़ाहिर किए।
8रब रहीम और मेहरबान है, वह तहम्मुल और
शफ़क़त से भरपूर है।
9न वह हमेशा डाँटता रहेगा, न अबद तक
नाराज़ रहेगा।
10न वह हमारी ख़ताओं के मुताबिक़ सज़ा
देता, न हमारे गुनाहों का मुनासिब अज्र देता है।
11क्योंकि जितना बुलंद आसमान है, उतनी ही
अज़ीम उस की शफ़क़त उन पर है जो उसका
ख़ौफ़ मानते हैं।
12जितनी दूर मशरिक़ मग़रिब से है उतना ही
उसने हमारे क़ुसूर हमसे दूर कर दिए हैं।
13जिस तरह बाप अपने बच्चों पर तरस खाता
है उसी तरह रब उन पर तरस खाता है जो उसका
ख़ौफ़ मानते हैं।

14क्योंकि वह हमारी साख़्त जानता है, उसे
याद है कि हम ख़ाक ही हैं।
15इनसान के दिन घास की मानिंद हैं, और वह
जंगली फूल की तरह ही फलता-फूलता है।
16जब उस पर से हवा गुज़रे तो वह नहीं रहता,
और उसके नामो-निशान का भी पता नहीं चलता।

17लेकिन जो रब का ख़ौफ़ मानें उन पर वह
हमेशा तक मेहरबानी करेगा, वह अपनी रास्ती
उनके पोतों और नवासों पर भी ज़ाहिर करेगा।

18शर्त यह है कि वह उसके अहद के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारें और ध्यान से उसके अहकाम पर
अमल करें।

19रब ने आसमान पर अपना तख़्त क़ायम
किया है, और उस की बादशाही सब पर हुकूमत
करती है।
20ऐ रब के फ़रिश्तो, उसके ताक़तवर
सूरमाओ, जो उसके फ़रमान पूरे करते हो ताकि
उसका कलाम माना जाए, रब की सताइश करो!
21ऐ तमाम लशकरो, तुम सब जो उसके
ख़ादिम हो और उस की मरज़ी पूरी करते हो, रब
की सताइश करो!
22तुम सब जिन्हें उसने बनाया, रब की सताइश
करो! उस की सलतनत की हर जगह पर उस की
तमजीद करो। ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर!

ख़ालिक़ की हम्दो-सना

104 ऐ मेरी जान, रब की सताइश
कर! ऐ रब मेरे ख़ुदा, तू निहायत
ही अज़ीम है, तू जाहो-जलाल से आरास्ता है।
2तेरी चादर नूर है जिसे तू ओढ़े रहता है। तू
आसमान को ख़ैमे की तरह तानकर
3अपना बालाख़ाना उसके पानी के बीच में
तामीर करता है। बादल तेरा रथ है, और तू हवा
के परों पर सवार होता है।
4तू हवाओं को अपने क़ासिद और आग के
शोलों को अपने ख़ादिम बना देता है।

5तूने ज़मीन को मज़बूत बुनियाद पर रखा
ताकि वह कभी न डगमगाए।
6सैलाब ने उसे लिबास की तरह ढाँप दिया,
और पानी पहाड़ों के ऊपर ही खड़ा हुआ।
7लेकिन तेरे डाँटने पर पानी फ़रार हुआ, तेरी
गरजती आवाज़ सुनकर वह एकदम भाग गया।
8तब पहाड़ ऊँचे हुए और वादियाँ उन जगहों
पर उतर आईं जो तूने उनके लिए मुक़र्रर की थीं।
9तूने एक हद बाँधी जिससे पानी बढ़ नहीं
सकता। आइंदा वह कभी पूरी ज़मीन को नहीं
ढाँकने का।
10तू वादियों में चश्मे फूटने देता है, और वह
पहाड़ों में से बह निकलते हैं।
11बहते बहते वह खुले मैदान के तमाम जानवरों
को पानी पिलाते हैं। जंगली गधे आकर अपनी
प्यास बुझाते हैं।
12परिंदे उनके किनारों पर बसेरा करते, और
उनकी चहचहाती आवाज़ें घने बेल-बूटों में से
सुनाई देती हैं।
13तू अपने बालाख़ाने से पहाड़ों को तर करता
है, और ज़मीन तेरे हाथ से सेर होकर हर तरह का
फल लाती है।
14तू जानवरों के लिए घास फूटने और इनसान
के लिए पौदे उगने देता है ताकि वह ज़मीन की
काश्तकारी करके रोटी हासिल करे।
15तेरी मै इनसान का दिल ख़ुश करती, तेरा
तेल उसका चेहरा रौशन कर देता, तेरी रोटी
उसका दिल मज़बूत करती है।
16रब के दरख़्त यानी लुबनान में उसके लगाए
हुए देवदार के दरख़्त सेराब रहते हैं।
17परिंदे उनमें अपने घोंसले बना लेते हैं, और
लक़लक़ जूनीपर के दरख़्त में अपना आशियाना।
18पहाड़ों की बुलंदियों पर पहाड़ी बकरों का
राज है, चटानों में बिज्जू पनाह लेते हैं।
19तूने साल को महीनों में तक़सीम करने के
लिए चाँद बनाया, और सूरज को ग़ुरूब होने के
औक़ात मालूम हैं।
20तू अंधेरा फैलने देता है तो दिन ढल जाता है
और जंगली जानवर हरकत में आ जाते हैं।
21जवान शेरबबर दहाड़कर शिकार के पीछे पड़
जाते और अल्लाह से अपनी ख़ुराक का मुतालबा
करते हैं।
22फिर सूरज तुलू होने लगता है, और वह
खिसककर अपने भटों में छुप जाते हैं।

23उस वक़्त इनसान घर से निकलकर अपने
काम में लग जाता और शाम तक मसरूफ़ रहता
है।

24ऐ रब, तेरे अनगिनत काम कितने अज़ीम हैं!
तूने हर एक को हिकमत से बनाया, और ज़मीन
तेरी मख़लूक़ात से भरी पड़ी है।

25समुंदर को देखो, वह कितना बड़ा और वसी
है। उसमें बेशुमार जानदार हैं, बड़े भी और छोटे
भी।
26उस की सतह पर जहाज़ इधर-उधर सफ़र
करते हैं, उस की गहराइयों में लिवियातान फिरता
है, वह अज़दहा जिसे तूने उसमें उछलने कूदने के
लिए तश्कील दिया था।
27सब तेरे इंतज़ार में रहते हैं कि तू उन्हें वक़्त
पर खाना मुहैया करे।
28तू उनमें ख़ुराक तक़सीम करता है तो वह
उसे इकट्ठा करते हैं। तू अपनी मुट्ठी खोलता है तो
वह अच्छी चीज़ों से सेर हो जाते हैं।
29जब तू अपना चेहरा छुपा लेता है तो उनके
हवास गुम हो जाते हैं। जब तू उनका दम निकाल
लेता है तो वह नेस्त होकर दुबारा ख़ाक में मिल
जाते हैं।
30तू अपना दम भेज देता है तो वह पैदा हो
जाते हैं। तू ही रूए-ज़मीन को बहाल करता है।

31रब का जलाल अबद तक क़ायम रहे! रब
अपने काम की ख़ुशी मनाए!
32वह ज़मीन पर नज़र डालता है तो वह लरज़
उठती है। वह पहाड़ों को छू देता है तो वह धुआँ
छोड़ते हैं।
33मैं उम्र-भर रब की तमजीद में गीत गाऊँगा,
जब तक ज़िंदा हूँ अपने ख़ुदा की मद्हसराई
करूँगा।
34मेरी बात उसे पसंद आए! मैं रब से कितना
ख़ुश हूँ!
35गुनाहगार ज़मीन से मिट जाएँ और बेदीन
नेस्तो-नाबूद हो जाएँ। ऐ मेरी जान, रब की
सताइश कर! रब की हम्द हो!

माज़ी में रब की नजात की हम्द

105 रब का शुक्र करो और उस-
का नाम पुकारो! अक़वाम में
उसके कामों का एलान करो।
2साज़ बजाकर उस की मद्हसराई करो। उसके
तमाम अजायब के बारे में लोगों को बताओ।
3उसके मुक़द्दस नाम पर फ़ख़र करो। रब के
तालिब दिल से ख़ुश हों।
4रब और उस की क़ुदरत की दरियाफ़्त करो,
हर वक़्त उसके चेहरे के तालिब रहो।
5जो मोजिज़े उसने किए उन्हें याद करो। उसके
इलाही निशान और उसके मुँह के फ़ैसले दोहराते
रहो।
6तुम जो उसके ख़ादिम इब्राहीम की औलाद
और याक़ूब के फ़रज़ंद हो, जो उसके बरगुज़ीदा
लोग हो, तुम्हें सब कुछ याद रहे!
7वही रब हमारा ख़ुदा है, वही पूरी दुनिया की
अदालत करता है।
8वह हमेशा अपने अहद का ख़याल रखता है,
उस कलाम का जो उसने हज़ार पुश्तों के लिए
फ़रमाया था।
9यह वह अहद है जो उसने इब्राहीम से बाँधा,
वह वादा जो उसने क़सम खाकर इसहाक़ से
किया था।
10उसने उसे याक़ूब के लिए क़ायम किया
ताकि वह उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे, उसने
तसदीक़ की कि यह मेरा इसराईल से अबदी अहद
है।
11साथ साथ उसने फ़रमाया, “मैं तुझे मुल्के-
कनान दूँगा। यह तेरी मीरास का हिस्सा होगा।”

12उस वक़्त वह तादाद में कम और थोड़े ही थे
बल्कि मुल्क में अजनबी ही थे।

13अब तक वह मुख़्तलिफ़ क़ौमों और
सलतनतों में घुमते-फिरते थे।
14लेकिन अल्लाह ने उन पर किसी को ज़ुल्म
करने न दिया, और उनकी ख़ातिर उसने बादशाहों
को डाँटा,
15"मेरे मसह किए हुए ख़ादिमों को मत छेड़ना,
मेरे नबियों को नुक़सान मत पहुँचाना।"

16फिर अल्लाह ने मुल्के-कनान में काल पड़ने
दिया और ख़ुराक का हर ज़ख़ीरा ख़त्म किया।
17लेकिन उसने उनके आगे आगे एक आदमी
को मिसर भेजा यानी यूसुफ़ को जो ग़ुलाम बनकर
फ़रोख़्त हुआ।
18उसके पाँव और गरदन ज़ंजीरों में जकड़े रहे
19जब तक वह कुछ पूरा न हुआ जिसकी
पेशगोई यूसुफ़ ने की थी, जब तक रब के फ़रमान
ने उस की तसदीक़ न की।
20तब मिसरी बादशाह ने अपने बंदों को
भेजकर उसे रिहाई दी, क़ौमों के हुक्मरान ने उसे
आज़ाद किया।
21उसने उसे अपने घराने पर निगरान और
अपनी तमाम मिलकियत पर हुक्मरान मुक़र्रर
किया।
22यूसुफ़ को फ़िरौन के रईसों को अपनी
मरज़ी के मुताबिक़ चलाने और मिसरी बुज़ुर्गों को
हिकमत की तालीम देने की ज़िम्मेदारी भी दी गई।

23फिर याक़ूब का ख़ानदान मिसर आया, और
इसराईल हाम के मुल्क में अजनबी की हैसियत
से बसने लगा।
24वहाँ अल्लाह ने अपनी क़ौम को बहुत
फलने-फूलने दिया, उसने उसे उसके दुश्मनों से
ज़्यादा ताक़तवर बना दिया।
25साथ साथ उसने मिसरियों का रवैया बदल
दिया, तो वह उस की क़ौम इसराईल से नफ़रत
करके रब के ख़ादिमों से चालाकियाँ करने लगे।

26तब अल्लाह ने अपने ख़ादिम मूसा और
अपने चुने हुए बंदे हारून को मिसर में भेजा।
27मुल्के-हाम में आकर उन्होंने उनके दरमियान
अल्लाह के इलाही निशान और मोजिज़े दिखाए।
28अल्लाह के हुक्म पर मिसर पर तारीकी छा
गई, मुल्क में अंधेरा हो गया। लेकिन उन्होंने उसके
फ़रमान न माने।
29उसने उनका पानी ख़ून में बदलकर उनकी
मछलियों को मरवा दिया।
30मिसर के मुल्क पर मेंढकों के ग़ोल छा गए
जो उनके हुक्मरानों के अंदरूनी कमरों तक पहुँच
गए।
31अल्लाह के हुक्म पर मिसर के पूरे इलाक़े में
मक्खियों और जुओं के ग़ोल फैल गए।
32बारिश की बजाए उसने उनके मुल्क पर
ओले और दहकते शोले बरसाए।
33उसने उनकी अंगूर की बेलें और अंजीर के
दरख़्त तबाह कर दिए, उनके इलाक़े के दरख़्त
तोड़ डाले।
34उसके हुक्म पर अनगिनत टिड्डियाँ अपने
बच्चों समेत मुल्क पर हमलाआवर हुईं।
35वह उनके मुल्क की तमाम हरियाली और
उनके खेतों की तमाम पैदावार चट कर गईं।
36फिर अल्लाह ने मिसर में तमाम पह-
लौठों को मार डाला, उनकी मरदानगी का पहला
फल तमाम हुआ।

37इसके बाद वह इसराईल को चाँदी और सोने
से नवाज़कर मिसर से निकाल लाया। उस वक़्त
उसके क़बीलों में ठोकर खानेवाला एक भी नहीं
था।
38मिसर ख़ुश था जब वह रवाना हुए, क्योंकि
उन पर इसराईल की दहशत छा गई थी।
39दिन को अल्लाह ने उनके ऊपर बादल
कम्बल की तरह बिछा दिया, रात को आग मुहैया
की ताकि रौशनी हो।
40जब उन्होंने ख़ुराक माँगी तो उसने उन्हें बटेर
पहुँचाकर आसमानी रोटी से सेर किया।

41उसने चटान को चाक किया तो पानी फूट
निकला, और रेगिस्तान में पानी की नदियाँ बहने
लगीं।

42क्योंकि उसने उस मुक़द्दस वादे का
ख़याल रखा जो उसने अपने ख़ादिम इब्रा-
हीम से किया था।
43चुनाँचे वह अपनी चुनी हुई क़ौम को मिसर
से निकाल लाया, और वह ख़ुशी और शादमानी
के नारे लगाकर निकल आए।
44उसने उन्हें दीगर अक़वाम के ममालिक दिए,
और उन्होंने दीगर उम्मतों की मेहनत के फल पर
क़ब्ज़ा किया।
45क्योंकि वह चाहता था कि वह उसके
अहकाम और हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारें। रब की हम्द हो।

अल्लाह का फ़ज़ल और इसराईल की सरकशी

106 रब की हम्द हो! रब का शुक्र
करो, क्योंकि वह भला है, और
उस की शफ़क़त अबदी है।
2कौन रब के तमाम अज़ीम काम सुना सकता,
कौन उस की मुनासिब तमजीद कर सकता है?

3मुबारक हैं वह जो इनसाफ़ क़ायम रखते, जो
हर वक़्त रास्त काम करते हैं।
4ऐ रब, अपनी क़ौम पर मेहरबानी करते वक़्त
मेरा ख़याल रख, नजात देते वक़्त मेरी भी मदद
कर
5ताकि मैं तेरे चुने हुए लोगों की ख़ुशहाली देख
सकूँ और तेरी क़ौम की ख़ुशी में शरीक होकर तेरी
मीरास के साथ सताइश कर सकूँ।

6हमने अपने बापदादा की तरह गुनाह किया है,
हमसे नाइनसाफ़ी और बेदीनी सरज़द हुई है।
7जब हमारे बापदादा मिसर में थे तो उन्हें तेरे
मोजिज़ों की समझ न आई और तेरी मुतअद्दिद
मेहरबानियाँ याद न रहीं बल्कि वह समुंदर यानी
बहरे-क़ुलज़ुम पर सरकश हुए।

8तो भी उसने उन्हें अपने नाम की ख़ातिर
बचाया, क्योंकि वह अपनी क़ुदरत का इज़हार
करना चाहता था।
9उसने बहरे-क़ुलज़ुम को झिड़का तो वह ख़ुश्क
हो गया। उसने उन्हें समुंदर की गहराइयों में से यों
गुज़रने दिया जिस तरह रेगिस्तान में से।
10उसने उन्हें नफ़रत करनेवाले के हाथ से
छुड़ाया और एवज़ाना देकर दुश्मन के हाथ से रिहा
किया।
11उनके मुख़ालिफ़ पानी में डूब गए। एक भी
न बचा।
12तब उन्होंने अल्लाह के फ़रमानों पर ईमान
लाकर उस की मद्हसराई की।

13लेकिन जल्द ही वह उसके काम भूल गए।
वह उस की मरज़ी का इंतज़ार करने के लिए तैयार
न थे।
14रेगिस्तान में शदीद लालच में आकर
उन्होंने वहीं बयाबान में अल्लाह को आज़-
माया।
15तब उसने उनकी दरख़ास्त पूरी की, लेकिन
साथ साथ मोहलक वबा भी उनमें फैला दी।
16ख़ैमागाह में वह मूसा और रब के मुक़द्दस
इमाम हारून से हसद करने लगे।
17तब ज़मीन खुल गई, और उसने दातन को
हड़प कर लिया, अबीराम के जत्थे को अपने अंदर
दफ़न कर लिया।
18आग उनके जत्थे में भड़क उठी, और बेदीन
नज़रे-आतिश हुए।

19वह कोहे-होरिब यानी सीना के दामन में
बछड़े का बुत ढालकर उसके सामने औंधे मुँह हो
गए।
20उन्होंने अल्लाह को जलाल देने के बजाए
घास खानेवाले बैल की पूजा की।

21वह अल्लाह को भूल गए, हालाँकि उसी ने
उन्हें छुड़ाया था, उसी ने मिसर में अज़ीम काम
किए थे।
22जो मोजिज़े हाम के मुल्क में हुए और जो
जलाली वाक़ियात बहरे-क़ुलज़ुम पर पेश आए थे
वह सब अल्लाह के हाथ से हुए थे।
23चुनाँचे अल्लाह ने फ़रमाया कि मैं उन्हें
नेस्तो-नाबूद करूँगा। लेकिन उसका चुना हुआ
ख़ादिम मूसा रख़ने में खड़ा हो गया ताकि उसके
ग़ज़ब को इसराईलियों को मिटाने से रोके। सिर्फ़
इस वजह से अल्लाह अपने इरादे से बाज़ आया।

24फिर उन्होंने कनान के ख़ुशगवार मुल्क को
हक़ीर जाना। उन्हें यक़ीन नहीं था कि अल्लाह
अपना वादा पूरा करेगा।
25वह अपने ख़ैमों में बुड़बुड़ाने लगे और रब की
आवाज़ सुनने के लिए तैयार न हुए।
26तब उसने अपना हाथ उनके ख़िलाफ़ उठाया
ताकि उन्हें वहीं रेगिस्तान में हलाक करे
27और उनकी औलाद को दीगर अक़वाम में
फेंककर मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर कर दे।

28वह बाल-फ़ग़ूर देवता से लिपट गए और
मुरदों के लिए पेश की गई क़ुरबानियों का गोश्त
खाने लगे।
29उन्होंने अपनी हरकतों से रब को तैश
दिलाया तो उनमें मोहलक बीमारी फैल गई।
30लेकिन फ़ीनहास ने उठकर उनकी अदालत
की। तब वबा रुक गई।
31इसी बिना पर अल्लाह ने उसे पुश्त-दर-पुश्त
और अबद तक रास्तबाज़ क़रार दिया।

32मरीबा के चश्मे पर भी उन्होंने रब को ग़ुस्सा
दिलाया। उन्हीं के बाइस मूसा का बुरा हाल हुआ।
33क्योंकि उन्होंने उसके दिल में इतनी तलख़ी
पैदा की कि उसके मुँह से बेजा बातें निकलीं।

34जो दीगर क़ौमें मुल्क में थीं उन्हें उन्होंने नेस्त
न किया, हालाँकि रब ने उन्हें यह करने को कहा
था।
35न सिर्फ़ यह बल्कि वह ग़ैरक़ौमों से रिश्ता
बाँधकर उनमें घुल मिल गए और उनके रस्मो-
रिवाज अपना लिए।
36वह उनके बुतों की पूजा करने में लग गए,
और यह उनके लिए फंदे का बाइस बन गए।
37वह अपने बेटे-बेटियों को बदरूहों के हुज़ूर
क़ुरबान करने से भी न कतराए।
38हाँ, उन्होंने अपने बेटे-बेटियों को कनान
के देवताओं के हुज़ूर पेश करके उनका
मासूम ख़ून बहाया। इससे मुल्क की बे-
हुरमती हुई।
39वह अपनी ग़लत हरकतों से नापाक और
अपने ज़िनाकाराना कामों से अल्लाह से बेवफ़ा
हुए।

40तब अल्लाह अपनी क़ौम से सख़्त नाराज़
हुआ, और उसे अपनी मौरूसी मिलकियत से घिन
आने लगी।
41उसने उन्हें दीगर क़ौमों के हवाले किया, और
जो उनसे नफ़रत करते थे वह उन पर हुकूमत करने
लगे।
42उनके दुश्मनों ने उन पर ज़ुल्म करके उनको
अपना मुती बना लिया।
43अल्लाह बार बार उन्हें छुड़ाता रहा, हालाँकि
वह अपने सरकश मनसूबों पर तुले रहे और अपने
क़ुसूर में डूबते गए।
44लेकिन उसने मदद के लिए उनकी आहें
सुनकर उनकी मुसीबत पर ध्यान दिया।
45उसने उनके साथ अपना अहद याद किया,
और वह अपनी बड़ी शफ़क़त के बाइस पछताया।
46उसने होने दिया कि जिसने भी उन्हें
गिरिफ़्तार किया उसने उन पर तरस खाया।

47ऐ रब हमारे ख़ुदा, हमें बचा! हमें दीगर क़ौमों
से निकालकर जमा कर। तब ही हम तेरे मुक़द्दस

नाम की सताइश करेंगे और तेरे क़ाबिले-तारीफ़ कामों पर फ़ख़र करेंगे।

48अज़ल से अबद तक रब, इसराईल के ख़ुदा की हम्द हो। तमाम क़ौम कहे, “आमीन! रब की हम्द हो!”

पाँचवीं किताब 107-150

नजातयाफ़्ता की शुक्रगुज़ारी

107 रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।

2रब के नजातयाफ़्ता जिनको उसने एवज़ाना देकर दुश्मन के क़ब्ज़े से छुड़ाया है सब यह कहें।

3उसने उन्हें मशरिक़ से मग़रिब तक और शिमाल से जुनूब तक दीगर ममालिक से इकट्ठा किया है।

4बाज़ रेगिस्तान में सहीह रास्ता भूलकर वीरान रास्ते पर मारे मारे फिरे, और कहीं भी आबादी न मिली।

5भूक और प्यास के मारे उनकी जान निढाल हो गई।

6तब उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

7उसने उन्हें सहीह राह पर लाकर ऐसी आबादी तक पहुँचाया जहाँ रह सकते थे।

8वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी शफ़क़त और अपने मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।

9क्योंकि वह प्यासी जान को आसूदा करता और भूकी जान को कसरत की अच्छी चीज़ों से सेर करता है।

10दूसरे ज़ंजीरों और मुसीबत में जकड़े हुए अंधेरे और गहरी तारीकी में बसते थे,

11क्योंकि वह अल्लाह के फ़रमानों से सरकश हुए थे, उन्होंने अल्लाह तआला का फ़ैसला हक़ीर जाना था।

12इसलिए अल्लाह ने उनके दिल को तकलीफ़ में मुब्तला करके पस्त कर दिया। जब वह ठोकर खाकर गिर गए और मदद करनेवाला कोई न रहा था

13तो उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

14वह उन्हें अंधेरे और गहरी तारीकी से निकाल लाया और उनकी ज़ंजीरें तोड़ डालीं।

15वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी शफ़क़त और अपने मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।

16क्योंकि उसने पीतल के दरवाज़े तोड़ डाले, लोहे के कुंडे टुकड़े टुकड़े कर दिए हैं।

17कुछ लोग अहमक़ थे, वह अपने सरकश चाल-चलन और गुनाहों के बाइस परेशानियों में मुब्तला हुए।

18उन्हें हर ख़ुराक से घिन आने लगी, और वह मौत के दरवाज़ों के क़रीब पहुँचे।

19तब उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

20उसने अपना कलाम भेजकर उन्हें शफ़ा दी और उन्हें मौत के गढ़े से बचाया।

21वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी शफ़क़त और मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।

22वह शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानियाँ पेश करें और ख़ुशी के नारे लगाकर उसके कामों का चर्चा करें।

23बाज़ बहरी जहाज़ में बैठ गए और तिजारत के सिलसिले में समुंदर पर सफ़र करते करते दूर-दराज़ इलाक़ों तक पहुँचे।

24उन्होंने रब के अज़ीम काम और समुंदर की गहराइयों में उसके मोजिज़े देखे हैं।

25क्योंकि रब ने हुक्म दिया तो आँधी चली जो समुंदर की मौजें बुलंदियों पर लाई।

26वह आसमान तक चढ़ीं और गहराइयों तक
उतरीं। परेशानी के बाइस मल्लाहों की हिम्मत
जवाब दे गई।
27वह शराब में धुत आदमी की तरह लड़खड़ाते
और डगमगाते रहे। उनकी तमाम हिकमत नाकाम
साबित हुई।
28तब उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा,
और उसने उन्हें तमाम परेशानियों से छुटकारा
दिया।
29उसने समुंदर को थमा दिया और ख़ामोशी
फैल गई, लहरें साकित हो गईं।
30मुसाफ़िर पुरसुकून हालात देखकर ख़ुश
हुए, और अल्लाह ने उन्हें मनज़िले-मक़सूद तक
पहुँचाया।
31वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी
शफ़क़त और अपने मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर
किए हैं।
32वह क़ौम की जमात में उस की ताज़ीम करें,
बुज़ुर्गों की मजलिस में उस की हम्द करें।

33कई जगहों पर वह दरियाओं को रेगिस्तान
में और चश्मों को प्यासी ज़मीन में बदल देता है।
34बाशिंदों की बुराई देखकर वह ज़रख़ेज़
ज़मीन को कल्लर के बयाबान में बदल देता है।
35दूसरी जगहों पर वह रेगिस्तान को झील में
और प्यासी ज़मीन को चश्मों में बदल देता है।
36वहाँ वह भूकों को बसा देता है ताकि
आबादियाँ क़ायम करें।
37तब वह खेत और अंगूर के बाग़ लगाते हैं जो
ख़ूब फल लाते हैं।
38अल्लाह उन्हें बरकत देता है तो उनकी तादाद
बहुत बढ़ जाती है। वह उनके रेवड़ों को भी कम
होने नहीं देता।
39जब कभी उनकी तादाद कम हो जाती और
वह मुसीबत और दुख के बोझ तले ख़ाक में दब
जाते हैं
40तो वह शुरफ़ा पर अपनी हिक़ारत उंडेल देता
और उन्हें रेगिस्तान में भगाकर सहीह रास्ते से दूर
फिरने देता है।
41लेकिन मुहताज को वह मुसीबत की दलदल
से निकालकर सरफ़राज़ करता और उसके
ख़ानदानों को भेड़-बकरियों की तरह बढ़ा देता है।

42सीधी राह पर चलनेवाले यह देखकर ख़ुश
होंगे, लेकिन बेइनसाफ़ का मुँह बंद किया
जाएगा।
43कौन दानिशमंद है? वह इस पर ध्यान दे,
वह रब की मेहरबानियों पर ग़ौर करे।

जंग में रब पर उम्मीद

108 दाऊद का ज़बूर। गीत।
ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़-
बूत है। मैं साज़ बजाकर तेरी मद्हसराई करूँगा।
ऐ मेरी जान, जाग उठ!
2ऐ सितार और सरोद, जाग उठो! मैं तुलूए-
सुबह को जगाऊँगा।
3ऐ रब, मैं क़ौमों में तेरी सताइश, उम्मतों में
तेरी मद्हसराई करूँगा।
4क्योंकि तेरी शफ़क़त आसमान से कहीं बुलंद
है, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।
5ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज़ हो! तेरा
जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।
6अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन ताकि
जो तुझे प्यारे हैं नजात पाएँ।

7अल्लाह ने अपने मक़दिस में फ़रमाया है, “मैं
फ़तह मनाते हुए सिकम को तक़सीम करूँगा और
वादीए-सुक्कात को नापकर बाँट दूँगा।
8जिलियाद मेरा है और मनस्सी मेरा है।
इफ़राईम मेरा ख़ोद और यहूदाह मेरा शाही असा
है।
9मोआब मेरा ग़ुस्ल का बरतन है, और अदोम
पर मैं अपना जूता फेंक दूँगा। मैं फ़िलिस्ती मुल्क
पर ज़ोरदार नारे लगाऊँगा!”

10कौन मुझे क़िलाबंद शहर में लाएगा? कौन
मेरी राहनुमाई करके मुझे अदोम तक पहुँचाएगा?
11ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो तूने
हमें रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी फ़ौजों का
साथ नहीं देता जब वह लड़ने के लिए निकलती
हैं।
12मुसीबत में हमें सहारा दे, क्योंकि इस वक़्त
इनसानी मदद बेकार है।
13अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम करेंगे,
क्योंकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।

बेरहम मुख़ालिफ़ के सामने अल्लाह से दुआ

109 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए।
ऐ अल्लाह मेरे फ़ख़र, ख़ामोश न रह!
2क्योंकि उन्होंने अपना बेदीन और फ़रेब-
देह मुँह मेरे ख़िलाफ़ खोलकर झूटी ज़बान से मेरे
साथ बात की है।
3वह मुझे नफ़रत के अलफ़ाज़ से घेरकर
बिलावजह मुझसे लड़े हैं।
4मेरी मुहब्बत के जवाब में वह मुझ पर अपनी
दुश्मनी का इज़हार करते हैं। लेकिन दुआ ही मेरा
सहारा है।
5मेरी नेकी के एवज़ वह मुझे नुक़सान पहुँचाते
और मेरे प्यार के बदले मुझसे नफ़रत करते हैं।

6ऐ अल्लाह, किसी बेदीन को मुक़र्रर कर जो
मेरे दुश्मन के ख़िलाफ़ गवाही दे, कोई मुख़ालिफ़
उसके दहने हाथ खड़ा हो जाए जो उस पर
इलज़ाम लगाए।
7मुक़दमे में उसे मुजरिम ठहराया जाए। उस
की दुआएँ भी उसके गुनाहों में शुमार की जाएँ।
8उस की ज़िंदगी मुख़तसर हो, कोई और उस
की ज़िम्मेदारी उठाए।
9उस की औलाद यतीम और उस की बीवी बेवा
बन जाए।
10उसके बच्चे आवारा फिरें और भीक माँगने
पर मजबूर हो जाएँ। उन्हें उनके तबाहशुदा घरों से
निकलकर इधर-उधर रोटी ढूँडनी पड़े।
11जिससे उसने क़र्ज़ा लिया था वह उसके
तमाम माल पर क़ब्ज़ा करे, और अजनबी उस
की मेहनत का फल लूट लें।
12कोई न हो जो उस पर मेहरबानी करे या
उसके यतीमों पर रहम करे।
13उस की औलाद को मिटाया जाए, अगली
पुश्त में उनका नामो-निशान तक न रहे।
14रब उसके बापदादा की नाइनसाफ़ी का
लिहाज़ करे, और वह उस की माँ की ख़ता भी
दरगुज़र न करे।
15उनका बुरा किरदार रब के सामने रहे, और
वह उनकी याद रूए-ज़मीन पर से मिटा डाले।
16क्योंकि उसको कभी मेहरबानी करने का
ख़याल न आया बल्कि वह मुसीबतज़दा, मुहताज
और शिकस्तादिल का ताक़्क़ुब करता रहा ताकि
उसे मार डाले।
17उसे लानत करने का शौक़ था, चुनाँचे लानत
उसी पर आए! उसे बरकत देना पसंद नहीं था,
चुनाँचे बरकत उससे दूर रहे।
18उसने लानत चादर की तरह ओढ़ ली, चुनाँचे
लानत पानी की तरह उसके जिस्म में और तेल की
तरह उस की हड्डियों में सरायत कर जाए।
19वह कपड़े की तरह उससे लिपटी रहे, पटके
की तरह हमेशा उससे कमरबस्ता रहे।

20रब मेरे मुख़ालिफ़ों को और उन्हें जो मेरे
ख़िलाफ़ बुरी बातें करते हैं यही सज़ा दे।
21लेकिन तू ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, अपने नाम
की ख़ातिर मेरे साथ मेहरबानी का सुलूक कर।
मुझे बचा, क्योंकि तेरी ही शफ़क़त तसल्लीबख़्श
है।
22क्योंकि मैं मुसीबतज़दा और ज़रूरतमंद हूँ।
मेरा दिल मेरे अंदर मजरूह है।

23शाम के ढलते साये की तरह मैं ख़त्म
होनेवाला हूँ। मुझे टिड्डी की तरह झाड़कर दूर कर
दिया गया है।
24रोज़ा रखते रखते मेरे घुटने डगमगाने लगे
और मेरा जिस्म सूख गया है।
25मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना
बन गया हूँ। मुझे देखकर वह सर हिलाकर "तौबा
तौबा" कहते हैं।
26ऐ रब मेरे ख़ुदा, मेरी मदद कर! अपनी
शफ़क़त का इज़हार करके मुझे छुड़ा!
27उन्हें पता चले कि यह तेरे हाथ से पेश आया
है, कि तू रब ही ने यह सब कुछ किया है।
28जब वह लानत करें तो मुझे बरकत दे! जब
वह मेरे ख़िलाफ़ उठें तो बख़्श दे कि शरमिंदा हो
जाएँ जबकि तेरा ख़ादिम ख़ुश हो।
29मेरे मुख़ालिफ़ रुसवाई से मुलब्बस हो जाएँ,
उन्हें शरमिंदगी की चादर ओढ़नी पड़े।

30मैं ज़ोर से रब की सताइश करूँगा, बहुतों के
दरमियान उस की हम्द करूँगा।
31क्योंकि वह मुहताज के दहने हाथ खड़ा
रहता है ताकि उसे उनसे बचाए जो उसे मुजरिम
ठहराते हैं।

अबदी बादशाह और इमाम

110 दाऊद का ज़बूर।
रब ने मेरे रब से कहा, "मेरे दहने
हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँवों की
चौकी न बना दूँ।"
2रब सिय्यून से तेरी सलतनत की सरहदें
बढ़ाकर कहेगा, "आस-पास के दुश्मनों पर
हुकूमत कर!"
3जिस दिन तू अपनी फ़ौज को खड़ा करेगा तेरी
क़ौम ख़ुशी से तेरे पीछे हो लेगी। तू मुक़द्दस शानो-
शौकत से आरास्ता होकर तुलूए-सुबह के बातिन
से अपनी जवानी की ओस पाएगा।
4रब ने क़सम खाई है और इससे पछ-
ताएगा नहीं, "तू अबद तक इमाम है, ऐसा इमाम
जैसा मलिके-सिद्क़ था।"
5रब तेरे दहने हाथ पर रहेगा और अपने ग़ज़ब
के दिन दीगर बादशाहों को चूर चूर करेगा।
6वह क़ौमों में अदालत करके मैदान को लाशों
से भर देगा और दूर तक सरों को पाश पाश
करेगा।
7रास्ते में वह नदी से पानी पी लेगा, इसलिए
अपना सर उठाए फिरेगा।

अल्लाह के फ़ज़्ल की तमजीद

111 रब की हम्द हो! मैं पूरे दिल से
दियानतदारों की मजलिस और
जमात में रब का शुक्र करूँगा।
2रब के काम अज़ीम हैं। जो उनसे लुत्फ़-
अंदोज़ होते हैं वह उनका ख़ूब मुतालआ करते हैं।

3उसका काम शानदार और जलाली है, उस
की रास्ती अबद तक क़ायम रहती है।
4वह अपने मोजिज़े याद कराता है। रब
मेहरबान और रहीम है।
5जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं उन्हें उसने ख़ुराक
मुहैया की है। वह हमेशा तक अपने अहद का
ख़याल रखेगा।
6उसने अपनी क़ौम को अपने ज़बरदस्त कामों
का एलान करके कहा, "मैं तुम्हें ग़ैरक़ौमों की
मीरास अता करूँगा।"
7जो भी काम उसके हाथ करें वह सच्चे और
रास्त हैं। उसके तमाम अहकाम क़ाबिले-एतमाद
हैं।
8वह अज़ल से अबद तक क़ायम हैं, और उन
पर सच्चाई और दियानतदारी से अमल करना है।
9उसने अपनी क़ौम का फ़िद्या भेजकर उसे
छुड़ाया है। उसने फ़रमाया, "मेरा क़ौम के साथ
अहद अबद तक क़ायम रहे।" उसका नाम क़ुद्दूस
और पुरजलाल है।

10हिकमत इससे शुरू होती है कि हम रब का
ख़ौफ़ मानें। जो भी उसके अहकाम पर अमल
करे उसे अच्छी समझ हासिल होगी। उस की हम्द
हमेशा तक क़ायम रहेगी।

अल्लाह के ख़ौफ़ की तारीफ़

112 रब की हम्द हो! मुबारक
है वह जो अल्लाह का ख़ौफ़
मानता और उसके अहकाम से बहुत लुत्फ़-
अंदोज़ होता है।
2उसके फ़रज़ंद मुल्क में ताक़तवर होंगे, और
दियानतदार की नसल को बरकत मिलेगी।
3दौलत और ख़ुशहाली उसके घर में रहेगी, और
उस की रास्तबाज़ी अबद तक क़ायम रहेगी।
4अंधेरे में चलते वक़्त दियानतदारों पर रौशनी
चमकती है। वह रास्तबाज़, मेहरबान और रहीम
है।

5मेहरबानी करना और क़र्ज़ देना बा-बरकत है।
जो अपने मामलों को इनसाफ़ से हल करे वह
अच्छा करेगा,
6क्योंकि वह अबद तक नहीं डगमगाएगा।
रास्तबाज़ हमेशा ही याद रहेगा।
7वह बुरी ख़बर मिलने से नहीं डरता। उसका
दिल मज़बूत है, और वह रब पर भरोसा रखता है।
8उसका दिल मुस्तहकम है। वह सहमा हुआ
नहीं रहता, क्योंकि वह जानता है कि एक दिन मैं
अपने दुश्मनों की शिकस्त देखकर ख़ुश हूँगा।
9वह फ़ैयाज़ी से ज़रूरतमंदों में ख़ैरात बिखेर
देता है। उस की रास्तबाज़ी हमेशा क़ायम रहेगी,
और उसे इज़्ज़त के साथ सरफ़राज़ किया
जाएगा।
10बेदीन यह देखकर नाराज़ हो जाएगा, वह
दाँत पीस पीसकर नेस्त हो जाएगा। जो कुछ
बेदीन चाहते हैं वह जाता रहेगा।

अल्लाह की अज़मत और मेहरबानी

113 रब की हम्द हो! ऐ रब के
ख़ादिमो, रब के नाम की सताइश
करो, रब के नाम की तारीफ़ करो।
2रब के नाम की अब से अबद तक तमजीद हो।
3तुलूए-सुबह से ग़ुरूबे-आफ़ताब तक रब के
नाम की हम्द हो।
4रब तमाम अक़वाम से सरबुलंद है, उसका
जलाल आसमान से अज़ीम है।
5कौन रब हमारे ख़ुदा की मानिंद है जो बुलंदियों
पर तख़्तनशीन है
6और आसमानो-ज़मीन को देखने के लिए नीचे
झुकता है?
7पस्तहाल को वह ख़ाक में से उठाकर पाँवों
पर खड़ा करता, मुहताज को राख से निकालकर
सरफ़राज़ करता है।
8वह उसे शुरफ़ा के साथ, अपनी क़ौम के
शुरफ़ा के साथ बिठा देता है।
9बाँझ को वह औलाद अता करता है ताकि वह
घर में ख़ुशी से ज़िंदगी गुज़ार सके। रब की हम्द
हो!

मिसर में अल्लाह के मोजिज़ात

114 जब इसराईल मिसर से रवा-
ना हुआ और याक़ूब का घराना
अजनबी ज़बान बोलनेवाली क़ौम से निकल आया
2तो यहूदाह अल्लाह का मक़दिस बन गया और
इसराईल उस की बादशाही।
3यह देखकर समुंदर भाग गया और दरियाए-
यरदन पीछे हट गया।
4पहाड़ मेंढों की तरह कूदने और पहाड़ियाँ
जवान भेड़-बकरियों की तरह फाँदने लगीं।

5ऐ समुंदर, क्या हुआ कि तू भाग गया है? ऐ
यरदन, क्या हुआ कि तू पीछे हट गया है?
6ऐ पहाड़ो, क्या हुआ कि तुम मेंढों की तरह
कूदने लगे हो? ऐ पहाड़ियो, क्या हुआ कि तुम
जवान भेड़-बकरियों की तरह फाँदने लगी हो?

7ऐ ज़मीन, रब के हुज़ूर, याक़ूब के ख़ुदा के
हुज़ूर लरज़ उठ,
8उसके सामने थरथरा जिसने चटान को जोहड़
में और सख़्त पत्थर को चश्मे में बदल दिया।

अल्लाह ही की हम्द हो

115 ऐ रब, हमारी ही इज़्ज़त की
ख़ातिर काम न कर बल्कि
इसलिए कि तेरे नाम को जलाल मिले, इसलिए
कि तू मेहरबान और वफ़ादार ख़ुदा है।
2दीगर अक़वाम क्यों कहें, “उनका ख़ुदा कहाँ
है?”
3हमारा ख़ुदा तो आसमान पर है, और जो जी
चाहे करता है।

4उनके बुत सोने-चाँदी के हैं, इनसान के हाथ
ने उन्हें बनाया है।
5उनके मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते।
उनकी आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।
6उनके कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते,
उनकी नाक है लेकिन वह सूँघ नहीं सकते।
7उनके हाथ हैं, लेकिन वह छू नहीं सकते।
उनके पाँव हैं, लेकिन वह चल नहीं सकते। उनके
गले से आवाज़ नहीं निकलती।
8जो बुत बनाते हैं वह उनकी मानिंद हो जाएँ,
जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे बेहिसो-
हरकत हो जाएँ।

9ऐ इसराईल, रब पर भरोसा रख! वही तेरा
सहारा और तेरी ढाल है।
10ऐ हारून के घराने, रब पर भरोसा रख! वही
तेरा सहारा और तेरी ढाल है।
11ऐ रब का ख़ौफ़ माननेवालो, रब पर भरोसा
रखो! वही तुम्हारा सहारा और तुम्हारी ढाल है।

12रब ने हमारा ख़याल किया है, और वह हमें
बरकत देगा। वह इसराईल के घराने को बरकत
देगा, वह हारून के घराने को बरकत देगा।
13वह रब का ख़ौफ़ माननेवालों को बरकत
देगा, ख़ाह छोटे हों या बड़े।
14रब तुम्हारी तादाद में इज़ाफ़ा करे, तुम्हारी
भी और तुम्हारी औलाद की भी।
15रब जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ है
तुम्हें बरकत से मालामाल करे।
16आसमान तो रब का है, लेकिन ज़मीन को
उसने आदमज़ादों को बख़्श दिया है।
17ऐ रब, मुरदे तेरी सताइश नहीं करते,
ख़ामोशी के मुल्क में उतरनेवालों में से कोई भी
तेरी तमजीद नहीं करता।
18लेकिन हम रब की सताइश अब से अबद
तक करेंगे। रब की हम्द हो!

मौत से नजात पर शुक्रगुज़ारी

116 मैं रब से मुहब्बत रखता हूँ,
क्योंकि उसने मेरी आवाज़ और
मेरी इल्तिजा सुनी है।
2उसने अपना कान मेरी तरफ़ झुकाया है,
इसलिए मैं उम्र-भर उसे पुकारूँगा।

3मौत ने मुझे अपनी ज़ंजीरों में जकड़ लिया,
और पाताल की परेशानियाँ मुझ पर ग़ालिब आईं।
मैं मुसीबत और दुख में फँस गया।
4तब मैंने रब का नाम पुकारा, “ऐ रब,
मेहरबानी करके मुझे बचा!”
5रब मेहरबान और रास्त है, हमारा ख़ुदा रहीम
है।
6रब सादा लोगों की हिफ़ाज़त करता है। जब
मैं पस्तहाल था तो उसने मुझे बचाया।
7ऐ मेरी जान, अपनी आरामगाह के पास
वापस आ, क्योंकि रब ने तेरे साथ भलाई की
है।
8क्योंकि ऐ रब, तूने मेरी जान को मौत से,
मेरी आँखों को आँसू बहाने से और मेरे पाँवों को
फिसलने से बचाया है।
9अब मैं ज़िंदों की ज़मीन में रहकर रब के हुज़ूर
चलूँगा।

10मैं ईमान लाया और इसलिए बोला, “मैं
शदीद मुसीबत में फँस गया हूँ।”
11मैं सख़्त घबरा गया और बोला, “तमाम
इनसान दरोग़गो हैं।”
12जो भलाइयाँ रब ने मेरे साथ की हैं उन सबके
एवज़ मैं क्या दूँ?
13मैं नजात का प्याला उठाकर रब का नाम
पुकारूँगा।
14मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क़ौम के सामने
ही अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।

15रब की निगाह में उसके ईमानदारों की मौत
गिराँक़दर है।
16ऐ रब, यक़ीनन मैं तेरा ख़ादिम, हाँ तेरा
ख़ादिम और तेरी ख़ादिमा का बेटा हूँ। तूने मेरी
ज़ंजीरों को तोड़ डाला है।
17मैं तुझे शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानी पेश करके
तेरा नाम पुकारूँगा।
18मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क़ौम के सामने
ही अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।
19मैं रब के घर की बारगाहों में, ऐ यरूशलम
तेरे बीच में ही उन्हें पूरा करूँगा। रब की हम्द हो।

तमाम अक़वाम अल्लाह की हम्द करें

117 ऐ तमाम अक़वाम, रब की
तमजीद करो! ऐ तमाम उम्मतो,
उस की मद्हसराई करो!
2क्योंकि उस की हम पर शफ़क़त अज़ीम है,
और रब की वफ़ादारी अबदी है। रब की हम्द हो!

अल्लाह की मदद पर शुक्रगुज़ारी

118 रब का शुक्र करो, क्योंकि वह
भला है, और उस की शफ़क़त
अबदी है।
2इसराईल कहे, “उस की शफ़क़त अबदी है।”
3हारून का घराना कहे, “उस की शफ़क़त
अबदी है।”
4रब का ख़ौफ़ माननेवाले कहें, “उस की
शफ़क़त अबदी है।”

5मुसीबत में मैंने रब को पुकारा तो रब ने मेरी
सुनकर मेरे पाँवों को खुले मैदान में क़ायम कर
दिया है।
6रब मेरे हक़ में है, इसलिए मैं नहीं डरूँगा।
इनसान मेरा क्या बिगाड़ सकता है?
7रब मेरे हक़ में है और मेरा सहारा है, इसलिए
मैं उनकी शिकस्त देखकर ख़ुश हूँगा जो मुझसे
नफ़रत करते हैं।

8रब में पनाह लेना इनसान पर एतमाद करने
से कहीं बेहतर है।
9रब में पनाह लेना शुरफ़ा पर एतमाद करने से
कहीं बेहतर है।

10तमाम अक़वाम ने मुझे घेर लिया, लेकिन
मैंने अल्लाह का नाम लेकर उन्हें भगा दिया।
11उन्होंने मुझे घेर लिया, हाँ चारों तरफ़ से घेर
लिया, लेकिन मैंने अल्लाह का नाम लेकर उन्हें
भगा दिया।
12वह शहद की मक्खियों की तरह चारों तरफ़
से मुझ पर हमलाआवर हुए, लेकिन काँटेदार
झाड़ियों की आग की तरह जल्द ही बुझ गए।
मैंने रब का नाम लेकर उन्हें भगा दिया।
13दुश्मन ने मुझे धक्का देकर गिराने की
कोशिश की, लेकिन रब ने मेरी मदद की।
14रब मेरी क़ुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी
नजात बन गया है।

15ख़ुशी और फ़तह के नारे रास्तबाज़ों के ख़ैमों
में गूँजते हैं, “रब का दहना हाथ ज़बरदस्त काम
करता है!
16रब का दहना हाथ सरफ़राज़ करता है, रब
का दहना हाथ ज़बरदस्त काम करता है!”
17मैं नहीं मरूँगा बल्कि ज़िंदा रहकर रब के
काम बयान करूँगा।

18गो रब ने मेरी सख़्त तादीब की है, उसने मुझे
मौत के हवाले नहीं किया।

19रास्ती के दरवाज़े मेरे लिए खोल दो ताकि मैं
उनमें दाख़िल होकर रब का शुक्र करूँ।
20यह रब का दरवाज़ा है, इसी में रास्त-
बाज़ दाख़िल होते हैं।

21मैं तेरा शुक्र करता हूँ, क्योंकि तूने मेरी
सुनकर मुझे बचाया है।
22जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द
किया वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।
23यह रब ने किया और देखने में कितना
हैरतअंगेज़ है।
24इसी दिन रब ने अपनी क़ुदरत दिखाई है।
आओ, हम शादियाना बजाकर उस की ख़ुशी
मनाएँ।
25ऐ रब, मेहरबानी करके हमें बचा! ऐ रब,
मेहरबानी करके कामयाबी अता फ़रमा!

26मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।
रब की सुकूनतगाह से हम तुम्हें बरकत देते हैं।
27रब ही ख़ुदा है, और उसने हमें रौशनी
बख़्शी है। आओ, ईद की क़ुरबानी रस्सियों से
क़ुरबानगाह के सींगों के साथ बान्धो।

28तू मेरा ख़ुदा है, और मैं तेरा शुक्र करता हूँ।
ऐ मेरे ख़ुदा, मैं तेरी ताज़ीम करता हूँ।
29रब की सताइश करो, क्योंकि वह भला है
और उस की शफ़क़त अबदी है।

अल्लाह के कलाम की शान

-1-

119 मुबारक हैं वह जिनका चाल-
चलन बेइलज़ाम है, जो रब की
शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हैं।
2मुबारक हैं वह जो उसके अहकाम पर अमल
करते और पूरे दिल से उसके तालिब रहते हैं,
3जो बदी नहीं करते बल्कि उस की राहों पर
चलते हैं।
4तूने हमें अपने अहकाम दिए हैं, और तू चाहता
है कि हम हर लिहाज़ से उनके ताबे रहें।
5काश मेरी राहें इतनी पुख़्ता हों कि मैं
साबितक़दमी से तेरे अहकाम पर अमल करूँ!
6तब मैं शरमिंदा नहीं हूँगा, क्योंकि मेरी आँखें
तेरे तमाम अहकाम पर लगी रहेंगी।
7जितना मैं तेरे बा-इनसाफ़ फ़ैसलों के बारे
में सीखूँगा उतना ही दियानतदार दिल से तेरी
सताइश करूँगा।
8तेरे अहकाम पर मैं हर वक़्त अमल करूँगा।
मुझे पूरी तरह तर्क न कर!

-2-

9नौजवान अपनी राह को किस तरह पाक
रखे? इस तरह कि तेरे कलाम के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारे।
10मैं पूरे दिल से तेरा तालिब रहा हूँ। मुझे अपने
अहकाम से भटकने न दे।
11मैंने तेरा कलाम अपने दिल में महफ़ूज़ रखा
है ताकि तेरा गुनाह न करूँ।
12ऐ रब, तेरी हम्द हो! मुझे अपने अहकाम
सिखा।
13अपने होंटों से मैं दूसरों को तेरे मुँह की तमाम
हिदायात सुनाता हूँ।
14मैं तेरे अहकाम की राह से उतना
लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ जितना कि हर तरह की
दौलत से।
15मैं तेरी हिदायात में महवे-ख़याल रहूँगा और
तेरी राहों को तकता रहूँगा।
16मैं तेरे फ़रमानों से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ और
तेरा कलाम नहीं भूलता।

-3-

17अपने ख़ादिम से भलाई कर ताकि मैं ज़िंदा
रहूँ और तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारूँ।

18मेरी आँखों को खोल ताकि तेरी शरीअत के
अजायब देखूँ।
19दुनिया में मैं परदेसी ही हूँ। अपने अहकाम
मुझसे छुपाए न रख!
20मेरी जान हर वक़्त तेरी हिदायात की आरज़ू
करते करते निढाल हो रही है।
21तू मग़रूरों को डाँटता है। उन पर लानत जो
तेरे अहकाम से भटक जाते हैं!
22मुझे लोगों की तौहीन और तहक़ीर से रिहाई
दे, क्योंकि मैं तेरे अहकाम के ताबे रहा हूँ।
23गो बुज़ुर्ग मेरे ख़िलाफ़ मनसूबे बाँधने के लिए
बैठ गए हैं, तेरा ख़ादिम तेरे अहकाम में महवे-
ख़याल रहता है।
24तेरे अहकाम से ही मैं लुत्फ़ उठाता हूँ, वही
मेरे मुशीर हैं।

-4-

25मेरी जान ख़ाक में दब गई है। अपने कलाम
के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
26मैंने अपनी राहें बयान कीं तो तूने मेरी सुनी।
मुझे अपने अहकाम सिखा।
27मुझे अपने अहकाम की राह समझने के
क़ाबिल बना ताकि तेरे अजायब में महवे-ख़याल
रहूँ।
28मेरी जान दुख के मारे निढाल हो गई है। मुझे
अपने कलाम के मुताबिक़ तक़वियत दे।
29फ़रेब की राह मुझसे दूर रख और मुझे अपनी
शरीअत से नवाज़।
30मैंने वफ़ा की राह इख़्तियार करके तेरे आईन
अपने सामने रखे हैं।
31मैं तेरे अहकाम से लिपटा रहता हूँ। ऐ रब,
मुझे शरमिंदा न होने दे।
32मैं तेरे फ़रमानों की राह पर दौड़ता हूँ, क्योंकि
तूने मेरे दिल को कुशादगी बख़्शी है।

-5-

33ऐ रब, मुझे अपने आईन की राह सिखा तो
मैं उम्र-भर उन पर अमल करूँगा।
34मुझे समझ अता कर ताकि तेरी शरीअत के
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारूँ और पूरे दिल से उसके
ताबे रहूँ।
35अपने अहकाम की राह पर मेरी राह-
नुमाई कर, क्योंकि यही मैं पसंद करता हूँ।
36मेरे दिल को लालच में आने न दे बल्कि उसे
अपने फ़रमानों की तरफ़ मायल कर।
37मेरी आँखों को बातिल चीज़ों से फेर ले,
और मुझे अपनी राहों पर सँभालकर मेरी जान
को ताज़ादम कर।
38जो वादा तूने अपने ख़ादिम से किया वह पूरा
कर ताकि लोग तेरा ख़ौफ़ मानें।
39जिस रुसवाई से मुझे ख़ौफ़ है उसका ख़तरा
दूर कर, क्योंकि तेरे अहकाम अच्छे हैं।
40मैं तेरी हिदायात का शदीद आरज़ूमंद हूँ,
अपनी रास्ती से मेरी जान को ताज़ादम कर।

-6-

41ऐ रब, तेरी शफ़क़त और वह नजात जिसका
वादा तूने किया है मुझ तक पहुँचे
42ताकि मैं बेइज़्ज़ती करनेवाले को जवाब दे
सकूँ। क्योंकि मैं तेरे कलाम पर भरोसा रखता हूँ।
43मेरे मुँह से सच्चाई का कलाम न छीन,
क्योंकि मैं तेरे फ़रमानों के इंतज़ार में हूँ।
44मैं हर वक़्त तेरी शरीअत की पैरवी करूँगा,
अब से अबद तक उसमें क़ायम रहूँगा।
45मैं खुले मैदान में चलता फिरूँगा, क्योंकि तेरे
आईन का तालिब रहता हूँ।
46मैं शर्म किए बग़ैर बादशाहों के सामने तेरे
अहकाम बयान करूँगा।
47मैं तेरे फ़रमानों से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ, वह
मुझे प्यारे हैं।
48मैं अपने हाथ तेरे फ़रमानों की तरफ़
उठाऊँगा, क्योंकि वह मुझे प्यारे हैं। मैं तेरी
हिदायात में महवे-ख़याल रहूँगा।

-7-

49उस बात का ख़याल रख जो तूने अपने
ख़ादिम से की और जिससे तूने मुझे उम्मीद
दिलाई है।
50मुसीबत में यही तसल्ली का बाइस रहा है
कि तेरा कलाम मेरी जान को ताज़ादम करता है।
51मग़रूर मेरा हद से ज़्यादा मज़ाक़ उड़ाते हैं,
लेकिन मैं तेरी शरीअत से दूर नहीं होता।
52ऐ रब, मैं तेरे क़दीम फ़रमान याद करता हूँ
तो मुझे तसल्ली मिलती है।
53बेदीनों को देखकर मैं आग-बगूला हो जाता
हूँ, क्योंकि उन्होंने तेरी शरीअत को तर्क किया है।
54जिस घर में मैं परदेसी हूँ उसमें मैं तेरे
अहकाम के गीत गाता रहता हूँ।
55ऐ रब, रात को मैं तेरा नाम याद करता हूँ,
तेरी शरीअत पर अमल करता रहता हूँ।
56यह तेरी बख़्शिश है कि मैं तेरे आईन की
पैरवी करता हूँ।

-8-

57रब मेरी मीरास है। मैंने तेरे फ़रमानों पर
अमल करने का वादा किया है।
58मैं पूरे दिल से तेरी शफ़क़त का तालिब रहा
हूँ। अपने वादे के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी कर।
59मैंने अपनी राहों पर ध्यान देकर तेरे अहकाम
की तरफ़ क़दम बढ़ाए हैं।
60मैं नहीं झिजकता बल्कि भागकर तेरे
अहकाम पर अमल करने की कोशिश करता हूँ।
61बेदीनों के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया है,
लेकिन मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।
62आधी रात को मैं जाग उठता हूँ ताकि तेरे
रास्त फ़रमानों के लिए तेरा शुक्र करूँ।
63मैं उन सबका साथी हूँ जो तेरा ख़ौफ़ मानते
हैं, उन सबका दोस्त जो तेरी हिदायात पर अमल
करते हैं।
64ऐ रब, दुनिया तेरी शफ़क़त से मामूर है। मुझे
अपने अहकाम सिखा!

-9-

65ऐ रब, तूने अपने कलाम के मुताबिक़ अपने
ख़ादिम से भलाई की है।
66मुझे सहीह इम्तियाज़ और इरफ़ान सिखा,
क्योंकि मैं तेरे अहकाम पर ईमान रखता हूँ।
67इससे पहले कि मुझे पस्त किया गया मैं
आवारा फिरता था, लेकिन अब मैं तेरे कलाम के
ताबे रहता हूँ।
68तू भला है और भलाई करता है। मुझे अपने
आईन सिखा!
69मग़रूरों ने झूट बोलकर मुझ पर कीचड़
उछाली है, लेकिन मैं पूरे दिल से तेरी हिदायात
की फ़रमाँबरदारी करता हूँ।
70उनके दिल अकड़कर बेहिस हो गए हैं,
लेकिन मैं तेरी शरीअत से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ।
71मेरे लिए अच्छा था कि मुझे पस्त किया गया,
क्योंकि इस तरह मैंने तेरे अहकाम सीख लिए।
72जो शरीअत तेरे मुँह से सादिर हुई है वह मुझे
सोने-चाँदी के हज़ारों सिक्कों से ज़्यादा पसंद है।

-10-

73तेरे हाथों ने मुझे बनाकर मज़बूत बुनियाद
पर रख दिया है। मुझे समझ अता फ़रमा ताकि
तेरे अहकाम सीख लूँ।
74जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं वह मुझे देखकर ख़ुश
हो जाएँ, क्योंकि मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में रहता
हूँ।
75ऐ रब, मैंने जान लिया है कि तेरे फ़ैसले रास्त
हैं। यह भी तेरी वफ़ादारी का इज़हार है कि तूने
मुझे पस्त किया है।
76तेरी शफ़क़त मुझे तसल्ली दे, जिस तरह तूने
अपने ख़ादिम से वादा किया है।
77मुझ पर अपने रहम का इज़हार कर ताकि
मेरी जान में जान आए, क्योंकि मैं तेरी शरीअत
से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ।
78जो मग़रूर मुझे झूट से पस्त कर रहे हैं वह
शरमिंदा हो जाएँ। लेकिन मैं तेरे फ़रमानों में महवे-
ख़याल रहूँगा।

79काश जो तेरा ख़ौफ़ मानते और तेरे अहकाम
जानते हैं वह मेरे पास वापस आएँ!
80मेरा दिल तेरे आईन की पैरवी करने में
बेइलज़ाम रहे ताकि मेरी रुसवाई न हो जाए।

-11-

81मेरी जान तेरी नजात की आरज़ू करते करते
निढाल हो रही है, मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में हूँ।
82मेरी आँखें तेरे वादे की राह देखते देखते
धुँधला रही हैं। तू मुझे कब तसल्ली देगा?
83मैं धुएँ में सुकड़ी हुई मशक की मानिंद हूँ
लेकिन तेरे फ़रमानों को नहीं भूलता।
84तेरे ख़ादिम को मज़ीद कितनी देर इंतज़ार
करना पड़ेगा? तू मेरा ताक़्क़ुब करनेवालों की
अदालत कब करेगा?
85जो मग़रूर तेरी शरीअत के ताबे नहीं होते
उन्होंने मुझे फँसाने के लिए गढ़े खोद लिए हैं।
86तेरे तमाम अहकाम पुरवफ़ा हैं। मेरी मदद
कर, क्योंकि वह झूट का सहारा लेकर मेरा
ताक़्क़ुब कर रहे हैं।
87वह मुझे रूए-ज़मीन पर से मिटाने के क़रीब
ही हैं, लेकिन मैंने तेरे आईन को तर्क नहीं किया।
88अपनी शफ़क़त का इज़हार करके मेरी जान
को ताज़ादम कर ताकि तेरे मुँह के फ़रमानों पर
अमल करूँ।

-12-

89ऐ रब, तेरा कलाम अबद तक आसमान पर
क़ायमो-दायम है।
90तेरी वफ़ादारी पुश्त-दर-पुश्त रहती है। तूने
ज़मीन की बुनियाद रखी, और वह वहीं की वहीं
बरक़रार रहती है।
91आज तक आसमानो-ज़मीन तेरे फ़र-
मानों को पूरा करने के लिए हाज़िर रहते हैं,
क्योंकि तमाम चीज़ें तेरी ख़िदमत करने के लिए
बनाई गई हैं।
92अगर तेरी शरीअत मेरी ख़ुशी न होती तो मैं
अपनी मुसीबत में हलाक हो गया होता।
93मैं तेरी हिदायात कभी नहीं भूलूँगा, क्योंकि
उन्हीं के ज़रीए तू मेरी जान को ताज़ादम करता
है।
94मैं तेरा ही हूँ, मुझे बचा! क्योंकि मैं तेरे
अहकाम का तालिब रहा हूँ।
95बेदीन मेरी ताक में बैठ गए हैं ताकि मुझे मार
डालें, लेकिन मैं तेरे आईन पर ध्यान देता रहूँगा।
96मैंने देखा है कि हर कामिल चीज़ की हद
होती है, लेकिन तेरे फ़रमान की कोई हद नहीं
होती।

-13-

97तेरी शरीअत मुझे कितनी प्यारी है! दिन-
भर मैं उसमें महवे-ख़याल रहता हूँ।
98तेरा फ़रमान मुझे मेरे दुश्मनों से ज़्यादा
दानिशमंद बना देता है, क्योंकि वह हमेशा तक
मेरा ख़ज़ाना है।
99मुझे अपने तमाम उस्तादों से ज़्यादा समझ
हासिल है, क्योंकि मैं तेरे आईन में महवे-ख़याल
रहता हूँ।
100मुझे बुज़ुर्गों से ज़्यादा समझ हासिल है,
क्योंकि मैं वफ़ादारी से तेरे अहकाम की पैरवी
करता हूँ।
101मैंने हर बुरी राह पर क़दम रखने से गुरेज़
किया है ताकि तेरे कलाम से लिपटा रहूँ।
102मैं तेरे फ़रमानों से दूर नहीं हुआ, क्योंकि तू
ही ने मुझे तालीम दी है।
103तेरा कलाम कितना लज़ीज़ है, वह मेरे मुँह
में शहद से ज़्यादा मीठा है।
104तेरे अहकाम से मुझे समझ हासिल होती
है, इसलिए मैं झूट की हर राह से नफ़रत करता
हूँ।

-14-

105तेरा कलाम मेरे पाँवों के लिए चराग़ है जो
मेरी राह को रौशन करता है।

106मैंने क़सम खाई है कि तेरे रास्त फ़रमानों
की पैरवी करूँगा, और मैं यह वादा पूरा भी
करूँगा।
107मुझे बहुत पस्त किया गया है। ऐ रब, अपने
कलाम के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
108ऐ रब, मेरे मुँह की रज़ाकाराना क़ुरबा-
नियों को पसंद कर और मुझे अपने आईन सिखा!
109मेरी जान हमेशा ख़तरे में है, लेकिन मैं तेरी
शरीअत नहीं भूलता।
110बेदीनों ने मेरे लिए फंदा तैयार कर रखा है,
लेकिन मैं तेरे फ़रमानों से नहीं भटका।
111तेरे अहकाम मेरी अबदी मीरास बन गए हैं,
क्योंकि उनसे मेरा दिल ख़ुशी से उछलता है।
112मैंने अपना दिल तेरे अहकाम पर अमल
करने की तरफ़ मायल किया है, क्योंकि इसका
अज्र अबदी है।

-15-

113मैं दोदिलों से नफ़रत लेकिन तेरी शरीअत
से मुहब्बत करता हूँ।
114तू मेरी पनाहगाह और मेरी ढाल है, मैं तेरे
कलाम के इंतज़ार में रहता हूँ।
115ऐ बदकारो, मुझसे दूर हो जाओ, क्योंकि
मैं अपने ख़ुदा के अहकाम से लिपटा रहूँगा।
116अपने फ़रमान के मुताबिक़ मुझे सँभाल
ताकि ज़िंदा रहूँ। मेरी आस टूटने न दे ताकि
शरमिंदा न हो जाऊँ।
117मेरा सहारा बन ताकि बचकर हर वक़्त तेरे
आईन का लिहाज़ रखूँ।
118तू उन सबको रद्द करता है जो तेरे अहकाम
से भटके फिरते हैं, क्योंकि उनकी धोकेबाज़ी
फ़रेब ही है।
119तू ज़मीन के तमाम बेदीनों को नापाक चाँदी
से ख़ारिज की हुई मैल की तरह फेंककर नेस्त कर
देता है, इसलिए तेरे फ़रमान मुझे प्यारे हैं।
120मेरा जिस्म तुझसे दहशत खाकर थरथराता
है, और मैं तेरे फ़ैसलों से डरता हूँ।

-16-

121मैंने रास्त और बा-इनसाफ़ काम किया है,
चुनाँचे मुझे उनके हवाले न कर जो मुझ पर ज़ुल्म
करते हैं।
122अपने ख़ादिम की ख़ुशहाली का ज़ा-
मिन बनकर मग़रूरों को मुझ पर ज़ुल्म करने न
दे।
123मेरी आँखें तेरी नजात और तेरे रास्त वादे
की राह देखते देखते रह गई हैं।
124अपने ख़ादिम से तेरा सुलूक तेरी शफ़क़त
के मुताबिक़ हो। मुझे अपने अहकाम सिखा।
125मैं तेरा ही ख़ादिम हूँ। मुझे फ़हम अता
फ़रमा ताकि तेरे आईन की पूरी समझ आए।
126अब वक़्त आ गया है कि रब क़दम उठाए,
क्योंकि लोगों ने तेरी शरीअत को तोड़ डाला है।
127इसलिए मैं तेरे अहकाम को सोने बल्कि
ख़ालिस सोने से ज़्यादा प्यार करता हूँ।
128इसलिए मैं एहतियात से तेरे तमाम आईन
के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता हूँ। मैं हर फ़रेबदेह
राह से नफ़रत करता हूँ।

-17-

129तेरे अहकाम ताज्जुबअंगेज़ हैं, इस-
लिए मेरी जान उन पर अमल करती है।
130तेरे कलाम का इनकिशाफ़ रौशनी बख़्शता
और सादालौह को समझ अता करता है।
131मैं तेरे फ़रमानों के लिए इतना प्यासा हूँ कि
मुँह खोलकर हाँप रहा हूँ।
132मेरी तरफ़ रुजू फ़रमा और मुझ पर वही
मेहरबानी कर जो तू उन सब पर करता है जो तेरे
नाम से प्यार करते हैं।
133अपने कलाम से मेरे क़दम मज़बूत कर,
किसी भी गुनाह को मुझ पर हुकूमत न करने दे।
134फ़िद्या देकर मुझे इनसान के ज़ुल्म से
छुटकारा दे ताकि मैं तेरे अहकाम के ताबे रहूँ।
135अपने चेहरे का नूर अपने ख़ादिम पर चमका
और मुझे अपने अहकाम सिखा।

136मेरी आँखों से आँसुओं की नदियाँ बह रही
हैं, क्योंकि लोग तेरी शरीअत के ताबे नहीं रहते।

-18-

137ऐ रब, तू रास्त है, और तेरे फ़ैसले दुरुस्त
हैं।
138तूने रास्ती और बड़ी वफ़ादारी के साथ
अपने फ़रमान जारी किए हैं।
139मेरी जान ग़ैरत के बाइस तबाह हो गई है,
क्योंकि मेरे दुश्मन तेरे फ़रमान भूल गए हैं।
140तेरा कलाम आज़माकर पाक-साफ़ साबित
हुआ है, तेरा ख़ादिम उसे प्यार करता है।
141मुझे ज़लील और हक़ीर जाना जाता है,
लेकिन मैं तेरे आईन नहीं भूलता।
142तेरी रास्ती अबदी है, और तेरी शरीअत
सच्चाई है।
143मुसीबत और परेशानी मुझ पर ग़ालिब आ
गई हैं, लेकिन मैं तेरे अहकाम से लुत्फ़अंदोज़
होता हूँ।
144तेरे अहकाम अबद तक रास्त हैं। मुझे
समझ अता फ़रमा ताकि मैं जीता रहूँ।

-19-

145मैं पूरे दिल से पुकारता हूँ, “ऐ रब,
मेरी सुन! मैं तेरे आईन के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारूँगा।”
146मैं पुकारता हूँ, “मुझे बचा! मैं तेरे अहकाम
की पैरवी करूँगा।”
147पौ फटने से पहले पहले मैं उठकर मदद के
लिए पुकारता हूँ। मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में हूँ।
148रात के वक़्त ही मेरी आँखें खुल जाती हैं
ताकि तेरे कलाम पर ग़ौरो-ख़ौज़ करूँ।
149अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी आवाज़
सुन! ऐ रब, अपने फ़रमानों के मुताबिक़ मेरी
जान को ताज़ादम कर।
150जो चालाकी से मेरा ताक़्क़ुब कर रहे हैं वह
क़रीब पहुँच गए हैं। लेकिन वह तेरी शरीअत से
इंतहाई दूर हैं।
151ऐ रब, तू क़रीब ही है, और तेरे अहकाम
सच्चाई हैं।
152बड़ी देर पहले मुझे तेरे फ़रमानों से मालूम
हुआ है कि तूने उन्हें हमेशा के लिए क़ायम रखा
है।

-20-

153मेरी मुसीबत का ख़याल करके मुझे बचा!
क्योंकि मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।
154अदालत में मेरे हक़ में लड़कर मेरा
एवज़ाना दे ताकि मेरी जान छूट जाए। अपने वादे
के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
155नजात बेदीनों से बहुत दूर है, क्योंकि वह
तेरे अहकाम के तालिब नहीं होते।
156ऐ रब, तू मुतअद्दिद तरीक़ों से अपने रहम
का इज़हार करता है। अपने आईन के मुताबिक़
मेरी जान को ताज़ादम कर।
157मेरा ताक़्क़ुब करनेवालों और मेरे दुश्मनों
की बड़ी तादाद है, लेकिन मैं तेरे अहकाम से दूर
नहीं हुआ।
158बेवफ़ाओं को देखकर मुझे घिन आती है,
क्योंकि वह तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं
गुज़ारते।
159देख, मुझे तेरे अहकाम से प्यार है। ऐ
रब, अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी जान को
ताज़ादम कर।
160तेरे कलाम का लुब्बे-लुबाब सच्चाई है, तेरे
तमाम रास्त फ़रमान अबद तक क़ायम हैं।

-21-

161सरदार बिलावजह मेरा पीछा करते हैं,
लेकिन मेरा दिल तेरे कलाम से ही डरता है।
162मैं तेरे कलाम की ख़ुशी उस की तरह
मनाता हूँ जिसे कसरत का माले-ग़नीमत मिल
गया हो।
163मैं झूट से नफ़रत करता बल्कि घिन खाता
हूँ, लेकिन तेरी शरीअत मुझे प्यारी है।

164मैं दिन में सात बार तेरी सताइश करता हूँ,
क्योंकि तेरे अहकाम रास्त हैं।
165जिन्हें शरीअत प्यारी है उन्हें बड़ा सुकून
हासिल है, वह किसी भी चीज़ से ठोकर खाकर
नहीं गिरेंगे।
166ऐ रब, मैं तेरी नजात के इंतज़ार में रहते हुए
तेरे अहकाम की पैरवी करता हूँ।
167मेरी जान तेरे फ़रमानों से लिपटी रहती है,
वह उसे निहायत प्यारे हैं।
168मैं तेरे आईन और हिदायात की पैरवी करता
हूँ, क्योंकि मेरी तमाम राहें तेरे सामने हैं।

-22-

169ऐ रब, मेरी आहें तेरे सामने आएँ, मुझे
अपने कलाम के मुताबिक़ समझ अता फ़रमा।
170मेरी इल्तिजाएँ तेरे सामने आएँ, मुझे अपने
कलाम के मुताबिक़ छुड़ा!
171मेरे होंटों से हम्दो-सना फूट निकले,
क्योंकि तू मुझे अपने अहकाम सिखाता है।
172मेरी ज़बान तेरे कलाम की मद्हसराई करे,
क्योंकि तेरे तमाम फ़रमान रास्त हैं।
173तेरा हाथ मेरी मदद करने के लिए तैयार
रहे, क्योंकि मैंने तेरे अहकाम इख़्तियार किए हैं।
174ऐ रब, मैं तेरी नजात का आरज़ूमंद हूँ, तेरी
शरीअत से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ।
175मेरी जान ज़िंदा रहे ताकि तेरी सताइश कर
सके। तेरे आईन मेरी मदद करें।
176मैं भटकी हुई भेड़ की तरह आवारा फिर
रहा हूँ। अपने ख़ादिम को तलाश कर, क्योंकि मैं
तेरे अहकाम नहीं भूलता।

तोहमत लगानेवालों से रिहाई के लिए दुआ

120 ज़ियारत का गीत।
मुसीबत में मैंने रब को पुकारा,
और उसने मेरी सुनी।
2ऐ रब, मेरी जान को झूटे होंटों और फ़रेबदेह
ज़बान से बचा।
3ऐ फ़रेबदेह ज़बान, वह तेरे साथ किया करे,
मज़ीद तुझे क्या दे?
4वह तुझ पर जंगजू के तेज़ तीर और दहकते
कोयले बरसाए!

5मुझ पर अफ़सोस! मुझे अजनबी मुल्क
मसक में, क़ीदार के ख़ैमों के पास रहना पड़ता
है।
6इतनी देर से अमन के दुश्मनों के पास रहने से
मेरी जान तंग आ गई है।
7मैं तो अमन चाहता हूँ, लेकिन जब कभी बोलूँ
तो वह जंग करने पर तुले होते हैं।

इनसान का वफ़ादार मुहाफ़िज़

121 ज़ियारत का गीत।
मैं अपनी आँखों को पहाड़ों की
तरफ़ उठाता हूँ। मेरी मदद कहाँ से आती है?
2मेरी मदद रब से आती है, जो आसमानो-
ज़मीन का ख़ालिक़ है।

3वह तेरा पाँव फिसलने नहीं देगा। तेरा
मुहाफ़िज़ ऊँघने का नहीं।
4यक़ीनन इसराईल का मुहाफ़िज़ न ऊँघ-
ता है, न सोता है।
5रब तेरा मुहाफ़िज़ है, रब तेरे दहने हाथ पर
सायबान है।
6न दिन को सूरज, न रात को चाँद तुझे ज़रर
पहुँचाएगा।
7रब तुझे हर नुक़सान से बचाएगा, वह तेरी
जान को महफ़ूज़ रखेगा।
8रब अब से अबद तक तेरे आने जाने की
पहरादारी करेगा।

यरूशलम पर बरकत

122 दाऊद का ज़ियारत का गीत।
मैं उनसे ख़ुश हुआ जिन्होंने
मुझसे कहा, “आओ, हम रब के घर चलें।”

2ऐ यरूशलम, अब हमारे पाँव तेरे दरवाज़ों में
खड़े हैं।
3यरूशलम शहर यों बनाया गया है कि उसके
तमाम हिस्से मज़बूती से एक दूसरे के साथ जुड़े
हुए हैं।
4वहाँ क़बीले, हाँ रब के क़बीले हाज़िर होते
हैं ताकि रब के नाम की सताइश करें जिस तरह
इसराईल को फ़रमाया गया है।
5क्योंकि वहाँ तख़्ते-अदालत करने के लिए
लगाए गए हैं, वहाँ दाऊद के घराने के तख़्त हैं।
6यरूशलम के लिए सलामती माँगो! "जो
तुझसे प्यार करते हैं वह सुकून पाएँ।
7तेरी फ़सील में सलामती और तेरे महलों में
सुकून हो।"
8अपने भाइयों और हमसायों की ख़ातिर मैं
कहूँगा, "तेरे अंदर सलामती हो!"
9रब हमारे ख़ुदा के घर की ख़ातिर मैं तेरी
ख़ुशहाली का तालिब रहूँगा।

अल्लाह हम पर मेहरबानी करे

123 ज़ियारत का गीत।
मैं अपनी आँखों को तेरी तरफ़
उठाता हूँ, तेरी तरफ़ जो आसमान पर तख़्तनशीन
है।
2जिस तरह ग़ुलाम की आँखें अपने मालिक
के हाथ की तरफ़ और लौंडी की आँखें अपनी
मालिकन के हाथ की तरफ़ लगी रहती हैं उसी
तरह हमारी आँखें रब अपने ख़ुदा पर लगी रहती
हैं, जब तक वह हम पर मेहरबानी न करे।
3ऐ रब, हम पर मेहरबानी कर, हम पर
मेहरबानी कर! क्योंकि हम हद से ज़्यादा हिक़ारत
का निशाना बन गए हैं।
4सुकून से ज़िंदगी गुज़ारनेवालों की लान-तान
और मग़रूरों की तहक़ीर से हमारी जान दूभर हो
गई है।

मुसीबत में अल्लाह हमारा सहारा है

124 दाऊद का ज़ियारत का गीत।
इसराईल कहे, "अगर रब हमारे
साथ न होता,
2अगर रब हमारे साथ न होता जब लोग हमारे
ख़िलाफ़ उठे
3और आग-बगूला होकर अपना पूरा ग़ुस्सा हम
पर उतारा, तो वह हमें ज़िंदा हड़प कर लेते।
4फिर सैलाब हम पर टूट पड़ता, नदी का तेज़
धारा हम पर ग़ालिब आ जाता
5और मुतलातिम पानी हम पर से गुज़र
जाता।"
6रब की हम्द हो जिसने हमें उनके दाँतों के
हवाले न किया, वरना वह हमें फाड़ खाते।
7हमारी जान उस चिड़िया की तरह छूट गई है
जो चिड़ीमार के फंदे से निकलकर उड़ गई है।
फंदा टूट गया है, और हम बच निकले हैं।
8रब का नाम, हाँ उसी का नाम हमारा सहारा
है जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ है।

चारों तरफ़ से क़ौम की हिफ़ाज़त

125 ज़ियारत का गीत।
जो रब पर भरोसा रखते हैं
वह कोहे-सिय्यून की मानिंद हैं जो कभी नहीं
डगमगाता बल्कि अबद तक क़ायम रहता है।
2जिस तरह यरूशलम पहाड़ों से घिरा रहता है
उसी तरह रब अपनी क़ौम को अब से अबद तक
चारों तरफ़ से महफ़ूज़ रखता है।
3क्योंकि बेदीनों की रास्तबाज़ों की मीरास पर
हुकूमत नहीं रहेगी, ऐसा न हो कि रास्तबाज़
बदकारी करने की आज़माइश में पड़ जाएँ।
4ऐ रब, उनसे भलाई कर जो नेक हैं, जो दिल
से सीधी राह पर चलते हैं।
5लेकिन जो भटककर अपनी टेढ़ी-मेढ़ी राहों
पर चलते हैं उन्हें रब बदकारों के साथ ख़ारिज
कर दे। इसराईल की सलामती हो!

रब अपने क़ैदियों को रिहाई देता है

126 ज़ियारत का गीत।
जब रब ने सिय्यून को बहाल
किया तो ऐसा लग रहा था कि हम ख़ाब देख रहे
हैं।
2तब हमारा मुँह हँसी-ख़ुशी से भर गया, और
हमारी ज़बान शादमानी के नारे लगाने से रुक न
सकी। तब दीगर क़ौमों में कहा गया, “रब ने उनके
लिए ज़बरदस्त काम किया है।”
3रब ने वाक़ई हमारे लिए ज़बरदस्त काम किया
है। हम कितने ख़ुश थे, कितने ख़ुश!

4ऐ रब, हमें बहाल कर। जिस तरह मौसमे-
बरसात में दश्ते-नजब के ख़ुश्क नाले पानी से भर
जाते हैं उसी तरह हमें बहाल कर।
5जो आँसू बहा बहाकर बीज बोएँ वह ख़ुशी के
नारे लगाकर फ़सल काटेंगे।
6वह रोते हुए बीज बोने के लिए निकलेंगे,
लेकिन जब फ़सल पक जाए तो ख़ुशी के नारे
लगाकर पूले उठाए अपने घर लौटेंगे।

अल्लाह ही हमारा घर तामीर करता है

127 सुलेमान का ज़ियारत का गीत।
अगर रब घर को तामीर न करे
तो उस पर काम करनेवालों की मेहनत अबस है।
अगर रब शहर की पहरादारी न करे तो इनसानी
पहरेदारों की निगहबानी अबस है।
2यह भी अबस है कि तुम सुबह-सवेरे उठो और
पूरे दिन मेहनत-मशक़्क़त के साथ रोज़ी कमाकर
रात गए सो जाओ। क्योंकि जो अल्लाह को प्यारे
हैं उन्हें वह उनकी ज़रूरियात उनके सोते में पूरी
कर देता है।

3बच्चे ऐसी नेमत हैं जो हम मीरास में रब से
पाते हैं, औलाद एक अज्र है जो वही हमें देता है।
4जवानी में पैदा हुए बेटे सूरमे के हाथ में तीरों
की मानिंद हैं।
5मुबारक है वह आदमी जिसका तरकश उनसे
भरा है। जब वह शहर के दरवाज़े पर अपने दुश्मनों
से झगड़ेगा तो शरमिंदा नहीं होगा।

जिस ख़ानदान को अल्लाह बरकत देता है

128 ज़ियारत का गीत।
मुबारक है वह जो रब का ख़ौफ़
मानकर उस की राहों पर चलता है।
2यक़ीनन तू अपनी मेहनत का फल खाएगा।
मुबारक हो, क्योंकि तू कामयाब होगा।
3घर में तेरी बीवी अंगूर की फलदार बेल की
मानिंद होगी, और तेरे बेटे मेज़ के इर्दगिर्द बैठकर
ज़ैतून की ताज़ा शाख़ों[a] की मानिंद होंगे।
4जो आदमी रब का ख़ौफ़ माने उसे ऐसी ही
बरकत मिलेगी।
5रब तुझे कोहे-सिय्यून से बरकत दे। वह करे
कि तू जीते-जी यरूशलम की ख़ुशहाली देखे,
6कि तू अपने पोतों-नवासों को भी देखे।
इसराईल की सलामती हो!

मदद के लिए इसराईल की दुआ

129 ज़ियारत का गीत।
इसराईल कहे, “मेरी जवा-
नी से ही मेरे दुश्मन बार बार मुझ पर हम-
लाआवर हुए हैं।
2मेरी जवानी से ही वह बार बार मुझ पर
हमलाआवर हुए हैं। तो भी वह मुझ पर ग़ालिब
न आए।”
3हल चलानेवालों ने मेरी पीठ पर हल चलाकर
उस पर अपनी लंबी लंबी रेघारयाँ बनाई हैं।
4रब रास्त है। उसने बेदीनों के रस्से काटकर
मुझे आज़ाद कर दिया है।

[a] इससे मुराद है पैवंदकारी के लिए दरख़्त से काटी गई टहनियाँ।

5अल्लाह करे कि जितने भी सिय्यून से नफ़रत
रखें वह शरमिंदा होकर पीछे हट जाएँ।
6वह छतों पर की घास की मानिंद हों जो सहीह
तौर पर बढ़ने से पहले ही मुरझा जाती है
7और जिससे न फ़सल काटनेवाला अपना
हाथ, न पूले बाँधनेवाला अपना बाज़ू भर सके।
8जो भी उनसे गुज़रे वह न कहे, "रब तुम्हें
बरकत दे।"
हम रब का नाम लेकर तुम्हें बरकत देते हैं!

बड़ी मुसीबत से रिहाई की दुआ (तौबा का छटा ज़बूर)

130 ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, मैं तुझे गहराइयों से
पुकारता हूँ।
2ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन! कान लगाकर मेरी
इल्तिजाओं पर ध्यान दे!
3ऐ रब, अगर तू हमारे गुनाहों का हिसाब करे
तो कौन क़ायम रहेगा? कोई भी नहीं!
4लेकिन तुझसे मुआफ़ी हासिल होती है ताकि
तेरा ख़ौफ़ माना जाए।

5मैं रब के इंतज़ार में हूँ, मेरी जान शिद्दत से
इंतज़ार करती है। मैं उसके कलाम से उम्मीद
रखता हूँ।
6पहरेदार जिस शिद्दत से पौ फटने के इंतज़ार
में रहते हैं, मेरी जान उससे भी ज़्यादा शिद्दत के
साथ, हाँ ज़्यादा शिद्दत के साथ रब की मुंतज़िर
रहती है।

7ऐ इसराईल, रब की राह देखता रह! क्योंकि
रब के पास शफ़क़त और फ़िद्या का ठोस बंदोबस्त
है।
8वह इसराईल के तमाम गुनाहों का फ़िद्या देकर
उसे नजात देगा।

बच्चे का-सा ईमान

131 ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, न मेरा दिल घमंडी है, न
मेरी आँखें मग़रूर हैं। जो बातें इतनी अज़ीम और
हैरानकुन हैं कि मैं उनसे निपट नहीं सकता उन्हें
मैं नहीं छेड़ता।
2यक़ीनन मैंने अपनी जान को राहत और
सुकून दिलाया है, और अब वह माँ की गोद में
बैठे छोटे बच्चे की मानिंद है, हाँ मेरी जान छोटे
बच्चे[a] की मानिंद है।
3ऐ इसराईल, अब से अबद तक रब के इंतज़ार
में रह!

दाऊद का घराना और सिय्यून पर मक़दिस

132 ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, दाऊद का ख़याल रख,
उस की तमाम मुसीबतों को याद कर।
2उसने क़सम खाकर रब से वादा किया और
याक़ूब के क़वी ख़ुदा के हुज़ूर मन्नत मानी,
3"न मैं अपने घर में दाख़िल हूँगा, न बिस्तर
पर लेटूँगा,
4न मैं अपनी आँखों को सोने दूँगा, न अपने
पपोटों को ऊँघने दूँगा
5जब तक रब के लिए मक़ाम और याक़ूब के
सूरमे के लिए सुकूनतगाह न मिले।"

6हमने इफ़राता में अहद के संदूक़ की ख़बर
सुनी और यार के खुले मैदान में उसे पा लिया।
7आओ, हम उस की सुकूनतगाह में दाख़िल
होकर उसके पाँवों की चौकी के सामने सिजदा
करें।

8ऐ रब, उठकर अपनी आरामगाह के पास आ,
तू और अहद का संदूक़ जो तेरी क़ुदरत का इज़हार
है।
9तेरे इमाम रास्ती से मुलब्बस हो जाएँ, और
तेरे ईमानदार ख़ुशी के नारे लगाएँ।

[a]जिस बच्चे ने माँ का दूध पीना छोड़ दिया है।

10ऐ अल्लाह, अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर
अपने मसह किए हुए बंदे के चेहरे को रद्द न कर।
11रब ने क़सम खाकर दाऊद से वादा किया
है, और वह उससे कभी नहीं फिरेगा, “मैं तेरी
औलाद में से एक को तेरे तख़्त पर बिठाऊँगा।
12अगर तेरे बेटे मेरे अहद के वफ़ादार रहें और
उन अहकाम की पैरवी करें जो मैं उन्हें सिखाऊँगा
तो उनके बेटे भी हमेशा तक तेरे तख़्त पर बैठेंगे।”

13क्योंकि रब ने कोहे-सिय्यून को चुन लिया है,
और वही वहाँ सुकूनत करने का आरज़ूमंद था।
14उसने फ़रमाया, “यह हमेशा तक मेरी
आरामगाह है, और यहाँ मैं सुकूनत करूँगा,
क्योंकि मैं इसका आरज़ूमंद हूँ।
15मैं सिय्यून की ख़ुराक को कसरत की बरकत
देकर उसके ग़रीबों को रोटी से सेर करूँगा।
16मैं उसके इमामों को नजात से मुलब्बस
करूँगा, और उसके ईमानदार ख़ुशी से ज़ोरदार
नारे लगाएँगे।
17यहाँ मैं दाऊद की ताक़त बढ़ा दूँगा,[a] और
यहाँ मैंने अपने मसह किए हुए ख़ादिम के लिए
चराग़ तैयार कर रखा है।
18मैं उसके दुश्मनों को शरमिंदगी से मुलब्बस
करूँगा जबकि उसके सर का ताज चमकता
रहेगा।”

भाइयों की यगांगत की बरकत

133 दाऊद का ज़बूर। ज़ियारत का गीत।
जब भाई मिलकर और यगांगत
से रहते हैं यह कितना अच्छा और प्यारा है।
2यह उस नफ़ीस तेल की मानिंद है जो हारून
इमाम के सर पर उंडेला जाता है और टपक
टपककर उस की दाढ़ी और लिबास के गरेबान
पर आ जाता है।
3यह उस ओस की मानिंद है जो कोहे-हरमून
से सिय्यून के पहाड़ों पर पड़ती है। क्योंकि रब ने
फ़रमाया है, “वहीं हमेशा तक बरकत और ज़िंदगी
मिलेगी।”

रब के घर में रात की सताइश

134 ज़ियारत का गीत।
आओ, रब की सताइश करो, ऐ
रब के तमाम ख़ादिमो जो रात के वक़्त रब के घर
में खड़े हो।
2मक़दिस में अपने हाथ उठाकर रब की
तमजीद करो!
3रब सिय्यून से तुझे बरकत दे, आसमानो-
ज़मीन का ख़ालिक़ तुझे बरकत दे।

अल्लाह की परस्तिश

135 रब की हम्द हो! रब के नाम की
सताइश करो! उस की तमजीद
करो, ऐ रब के तमाम ख़ादिमो,
2जो रब के घर में, हमारे ख़ुदा की बारगाहों में
खड़े हो।
3रब की हम्द करो, क्योंकि रब भला है। उसके
नाम की मद्हसराई करो, क्योंकि वह प्यारा है।
4क्योंकि रब ने याक़ूब को अपने लिए चुन
लिया, इसराईल को अपनी मिलकियत बना
लिया है।

5हाँ, मैंने जान लिया है कि रब अज़ीम है, कि
हमारा रब दीगर तमाम माबूदों से ज़्यादा अज़ीम
है।
6रब जो जी चाहे करता है, ख़ाह आसमान पर
हो या ज़मीन पर, ख़ाह समुंदरों में हो या गहराइयों
में कहीं भी हो।
7वह ज़मीन की इंतहा से बादल चढ़ने देता और
बिजली बारिश के लिए पैदा करता है, वह हवा
अपने गोदामों से निकाल लाता है।
8मिसर में उसने इनसानो-हैवान के तमाम
पहलौठों को मार डाला।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : मैं दाऊद का सींग फूटने दूँगा।

9ऐ मिसर, उसने अपने इलाही निशान और
मोजिज़ात तेरे दरमियान ही किए। तब फ़िरौन
और उसके तमाम मुलाज़िम उनका निशाना बन
गए।

10उसने मुतअद्दिद क़ौमों को शिकस्त देकर
ताक़तवर बादशाहों को मौत के घाट उतार दिया।
11अमोरियों का बादशाह सीहोन, बसन का
बादशाह ओज और मुल्के-कनान की तमाम
सलतनतें न रहीं।
12उसने उनका मुल्क इसराईल को देकर
फ़रमाया कि आइंदा यह मेरी क़ौम की मौरूसी
मिलकियत होगा।

13ऐ रब, तेरा नाम अबदी है। ऐ रब, तुझे पुश्त-
दर-पुश्त याद किया जाएगा।
14क्योंकि रब अपनी क़ौम का इनसाफ़ करके
अपने ख़ादिमों पर तरस खाएगा।

15दीगर क़ौमों के बुत सोने-चाँदी के हैं, इनसान
के हाथ ने उन्हें बनाया।
16उनके मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते,
उनकी आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।
17उनके कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते,
उनके मुँह में साँस ही नहीं होती।
18जो बुत बनाते हैं वह उनकी मानिंद हो जाएँ,
जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे बेहिसो-
हरकत हो जाएँ।

19ऐ इसराईल के घराने, रब की सताइश कर।
ऐ हारून के घराने, रब की तमजीद कर।
20ऐ लावी के घराने, रब की हम्दो-सना कर। ऐ
रब का ख़ौफ़ माननेवालो, रब की सताइश करो।
21सिय्यून से रब की हम्द हो। उस की हम्द हो
जो यरूशलम में सुकूनत करता है। रब की हम्द
हो!

तख़लीक़ और क़ौम की तारीख़ में अल्लाह के मोजिज़े

136 रब का शुक्र करो, क्योंकि वह
भला है, और उस की शफ़क़त
अबदी है।
2ख़ुदाओं के ख़ुदा का शुक्र करो, क्योंकि उस
की शफ़क़त अबदी है।
3मालिकों के मालिक का शुक्र करो, क्योंकि
उस की शफ़क़त अबदी है।
4जो अकेला ही अज़ीम मोजिज़े करता है
उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी
है।
5जिसने हिकमत के साथ आसमान बना-
या उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़-
क़त अबदी है।
6जिसने ज़मीन को मज़बूती से पानी के ऊपर
लगा दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की
शफ़क़त अबदी है।
7जिसने आसमान की रौशनियों को ख़लक़
किया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त
अबदी है।
8जिसने सूरज को दिन के वक़्त हुकूमत करने
के लिए बनाया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की
शफ़क़त अबदी है।
9जिसने चाँद और सितारों को रात के वक़्त
हुकूमत करने के लिए बनाया उसका शुक्र करो,
क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
10जिसने मिसर में पहलौठों को मार डाला
उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी
है।
11जो इसराईल को मिसरियों में से निकाल
लाया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त
अबदी है।
12जिसने उस वक़्त बड़ी ताक़त और क़ुदरत
का इज़हार किया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस
की शफ़क़त अबदी है।

13जिसने बहरे-क़ुलज़ुम को दो हिस्सों में
तक़सीम कर दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस
की शफ़क़त अबदी है।
14जिसने इसराईल को उसके बीच में से गुज़रने
दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त
अबदी है।
15जिसने फ़िरौन और उस की फ़ौज को बहरे-
क़ुलज़ुम में बहाकर ग़रक़ कर दिया उसका शुक्र
करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
16जिसने रेगिस्तान में अपनी क़ौम की
क़ियादत की उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की
शफ़क़त अबदी है।
17जिसने बड़े बादशाहों को शिकस्त दी उसका
शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
18जिसने ताक़तवर बादशाहों को मार डाला
उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी
है।
19जिसने अमोरियों के बादशाह सीहोन को
मौत के घाट उतारा उसका शुक्र करो, क्योंकि
उस की शफ़क़त अबदी है।
20जिसने बसन के बादशाह ओज को हलाक
कर दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की
शफ़क़त अबदी है।
21जिसने उनका मुल्क इसराईल को मीरास में
दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त
अबदी है।
22जिसने उनका मुल्क अपने ख़ादिम इसराईल
की मौरूसी मिलकियत बनाया उसका शुक्र करो,
क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
23जिसने हमारा ख़याल किया जब हम ख़ाक
में दब गए थे उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की
शफ़क़त अबदी है।
24जिसने हमें उनके क़ब्ज़े से छुड़ाया जो हम
पर ज़ुल्म कर रहे थे उसका शुक्र करो, क्योंकि
उस की शफ़क़त अबदी है।
25जो तमाम जानदारों को ख़ुराक मुहैया करता
है उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त
अबदी है।
26आसमान के ख़ुदा का शुक्र करो, क्योंकि
उस की शफ़क़त अबदी है।

बाबल में जिलावतनों की आहो-ज़ारी

137 जब सिय्यून की याद आई तो हम
बाबल की नहरों के किनारे ही
बैठकर रो पड़े।
2हमने वहाँ के सफ़ेदा के दरख़्तों से अपने सरोद
लटका दिए,
3क्योंकि जिन्होंने हमें गिरिफ़्तार किया था
उन्होंने हमें वहाँ गीत गाने को कहा, और जो हमारा
मज़ाक़ उड़ाते हैं उन्होंने ख़ुशी का मुतालबा किया,
“हमें सिय्यून का कोई गीत सुनाओ!”
4लेकिन हम अजनबी मुल्क में किस तरह रब
का गीत गाएँ?
5ऐ यरूशलम, अगर मैं तुझे भूल जाऊँ तो मेरा
दहना हाथ सूख जाए।
6अगर मैं तुझे याद न करूँ और यरूशलम को
अपनी अज़ीमतरीन ख़ुशी से ज़्यादा क़ीमती न
समझूँ तो मेरी ज़बान तालू से चिपक जाए।

7ऐ रब, वह कुछ याद कर जो अदोमियों ने
उस दिन किया जब यरूशलम दुश्मन के क़ब्ज़े
में आया। उस वक़्त वह बोले, “उसे ढा दो!
बुनियादों तक उसे गिरा दो!”
8ऐ बाबल बेटी जो तबाह करने पर तुली हुई है,
मुबारक है वह जो तुझे उसका बदला दे जो तूने
हमारे साथ किया है।
9मुबारक है वह जो तेरे बच्चों को पकड़कर
पत्थर पर पटख़ दे।

अल्लाह की मदद के लिए शुक्रगुज़ारी

138 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश
करूँगा, माबूदों के सामने ही तेरी तमजीद करूँगा।
2मैं तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की तरफ़ रुख़
करके सिजदा करूँगा, तेरी मेहरबानी और
वफ़ादारी के बाइस तेरा शुक्र करूँगा। क्योंकि

तूने अपने नाम और कलाम को तमाम चीज़ों पर सरफ़राज़ किया है।
3जिस दिन मैंने तुझे पुकारा तूने मेरी सुनकर मेरी जान को बड़ी तक़वियत दी।

4ऐ रब, दुनिया के तमाम हुक्मरान तेरे मुँह के फ़रमान सुनकर तेरा शुक्र करें।
5वह रब की राहों की मद्हसराई करें, क्योंकि रब का जलाल अज़ीम है।
6क्योंकि गो रब बुलंदियों पर है वह पस्तहाल का ख़याल करता और मग़रूरों को दूर से ही पहचान लेता है।

7जब कभी मुसीबत मेरा दामन नहीं छोड़ती तो तू मेरी जान को ताज़ादम करता है, तू अपना दहना हाथ बढ़ाकर मुझे मेरे दुश्मनों के तैश से बचाता है।
8रब मेरी ख़ातिर बदला लेगा। ऐ रब, तेरी शफ़क़त अबदी है। उन्हें न छोड़ जिनको तेरे हाथों ने बनाया है!

अल्लाह सब कुछ जानता और हर जगह मौजूद है

139 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, तू मेरा मुआयना करता और मुझे ख़ूब जानता है।
2मेरा उठना बैठना तुझे मालूम है, और तू दूर से ही मेरी सोच समझता है।
3तू मुझे जाँचता है, ख़ाह मैं रास्ते में हूँ या आराम करूँ। तू मेरी तमाम राहों से वाक़िफ़ है।
4क्योंकि जब भी कोई बात मेरी ज़बान पर आए तू ऐ रब पहले ही उसका पूरा इल्म रखता है।
5तू मुझे चारों तरफ़ से घेरे रखता है, तेरा हाथ मेरे ऊपर ही रहता है।
6इसका इल्म इतना हैरानकुन और अज़ीम है कि मैं इसे समझ नहीं सकता।

7मैं तेरे रूह से कहाँ भाग जाऊँ, तेरे चेहरे से कहाँ फ़रार हो जाऊँ?
8अगर आसमान पर चढ़ जाऊँ तो तू वहाँ मौजूद है, अगर उतरकर अपना बिस्तर पाताल में बिछाऊँ तो तू वहाँ भी है।
9गो मैं तुलूए-सुबह के परों पर उड़कर समुंदर की दूरतरीन हद पर जा बसूँ,
10वहाँ भी तेरा हाथ मेरी क़ियादत करेगा, वहाँ भी तेरा दहना हाथ मुझे थामे रखेगा।
11अगर मैं कहूँ, “तारीकी मुझे छुपा दे, और मेरे इर्दगिर्द की रौशनी रात में बदल जाए,” तो भी कोई फ़रक़ नहीं पड़ेगा।
12तेरे सामने तारीकी भी तारीक नहीं होती, तेरे हुज़ूर रात दिन की तरह रौशन होती है बल्कि रौशनी और अंधेरा एक जैसे होते हैं।

13क्योंकि तूने मेरा बातिन बनाया है, तूने मुझे माँ के पेट में तश्कील दिया है।
14मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि मुझे जलाली और मोजिज़ाना तौर से बनाया गया है। तेरे काम हैरतअंगेज़ हैं, और मेरी जान यह ख़ूब जानती है।
15मेरा ढाँचा तुझसे छुपा नहीं था जब मुझे पोशीदगी में बनाया गया, जब मुझे ज़मीन की गहराइयों में तश्कील दिया गया।
16तेरी आँखों ने मुझे उस वक़्त देखा जब मेरे जिस्म की शक्ल अभी नामुकम्मल थी। जितने भी दिन मेरे लिए मुक़र्रर थे वह सब तेरी किताब में उस वक़्त दर्ज थे, जब एक भी नहीं गुज़रा था।

17ऐ अल्लाह, तेरे ख़यालात समझना मेरे लिए कितना मुश्किल है! उनकी कुल तादाद कितनी अज़ीम है।
18अगर मैं उन्हें गिन सकता तो वह रेत से ज़्यादा होते। मैं जाग उठता हूँ तो तेरे ही साथ होता हूँ।

19ऐ अल्लाह, काश तू बेदीन को मार डाले, कि ख़ूनख़ार मुझसे दूर हो जाएँ।

20वह फ़रेब से तेरा ज़िक्र करते हैं, हाँ तेरे मुख़ालिफ़ झूट बोलते हैं।
21ऐ रब, क्या मैं उनसे नफ़रत न करूँ जो तुझसे नफ़रत करते हैं? क्या मैं उनसे घिन न खाऊँ जो तेरे ख़िलाफ़ उठे हैं?
22यक़ीनन मैं उनसे सख़्त नफ़रत करता हूँ। वह मेरे दुश्मन बन गए हैं।

23ऐ अल्लाह, मेरा मुआयना करके मेरे दिल का हाल जान ले, मुझे जाँचकर मेरे बेचैन ख़यालात को जान ले।
24मैं नुक़सानदेह राह पर तो नहीं चल रहा? अबदी राह पर मेरी क़ियादत कर!

दुश्मन से रिहाई की दुआ

140 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ रब, मुझे शरीरों से छुड़ा और ज़ालिमों से महफ़ूज़ रख।
2दिल में वह बुरे मनसूबे बाँधते, रोज़ाना जंग छेड़ते हैं।
3उनकी ज़बान साँप की ज़बान जैसी तेज़ है, और उनके होंटों में साँप का ज़हर है। (सिलाह)
4ऐ रब, मुझे बेदीन के हाथों से महफ़ूज़ रख, ज़ालिम से मुझे बचाए रख, उनसे जो मेरे पाँवों को ठोकर खिलाने के मनसूबे बाँध रहे हैं।
5मग़रूरों ने मेरे रास्ते में फंदा और रस्से छुपाए हैं, उन्होंने जाल बिछाकर रास्ते के किनारे किनारे मुझे पकड़ने के फंदे लगाए हैं। (सिलाह)

6मैं रब से कहता हूँ, “तू ही मेरा ख़ुदा है, मेरी इल्तिजाओं की आवाज़ सुन!”
7ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, ऐ मेरी क़वी नजात! जंग के दिन तू अपनी ढाल से मेरे सर की हिफ़ाज़त करता है।
8ऐ रब, बेदीन का लालच पूरा न कर। उसका इरादा कामयाब होने न दे, ऐसा न हो कि यह लोग सरफ़राज़ हो जाएँ। (सिलाह)
9उन्होंने मुझे घेर लिया है, लेकिन जो आफ़त उनके होंट मुझ पर लाना चाहते हैं वह उनके अपने सरों पर आए!
10दहकते कोयले उन पर बरसें, और उन्हें आग में, अथाह गढ़ों में फेंका जाए ताकि आइंदा कभी न उठें।
11तोहमत लगानेवाला मुल्क में क़ायम न रहे, और बुराई ज़ालिम को मार मारकर उसका पीछा करे।

12मैं जानता हूँ कि रब अदालत में मुसीबतज़दा का दिफ़ा करेगा। वही ज़रूरतमंद का इनसाफ़ करेगा।
13यक़ीनन रास्तबाज़ तेरे नाम की सताइश करेंगे, और दियानतदार तेरे हुज़ूर बसेंगे।

हिफ़ाज़त की गुज़ारिश

141 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं तुझे पुकार रहा हूँ, मेरे पास आने में जल्दी कर! जब मैं तुझे आवाज़ देता हूँ तो मेरी फ़रियाद पर ध्यान दे!
2मेरी दुआ तेरे हुज़ूर बख़ूर की क़ुरबानी की तरह क़बूल हो, मेरे तेरी तरफ़ उठाए हुए हाथ शाम की ग़ल्ला की नज़र की तरह मंज़ूर हों।
3ऐ रब, मेरे मुँह पर पहरा बिठा, मेरे होंटों के दरवाज़े की निगहबानी कर।
4मेरे दिल को ग़लत बात की तरफ़ मायल न होने दे, ऐसा न हो कि मैं बदकारों के साथ मिलकर बुरे काम में मुलव्वस हो जाऊँ और उनके लज़ीज़ खानों में शिरकत करूँ।

5रास्तबाज़ शफ़क़त से मुझे मारे और मुझे तंबीह करे। मेरा सर इससे इनकार नहीं करेगा, क्योंकि यह उसके लिए शफ़ाबख़्श तेल की मानिंद होगा। लेकिन मैं हर वक़्त शरीरों की हरकतों के ख़िलाफ़ दुआ करता हूँ।
6जब वह गिरकर उस चटान के हाथ में आएँगे जो उनका मुंसिफ़ है तो वह मेरी बातों पर ध्यान

देंगे, और उन्हें समझ आएगी कि वह कितनी
प्यारी हैं।

7ऐ अल्लाह, हमारी हड्डियाँ उस ज़मीन की
मानिंद हैं जिस पर किसी ने इतने ज़ोर से हल
चलाया है कि ढेले उड़कर इधर-उधर बिखर गए
हैं। हमारी हड्डियाँ पाताल के मुँह तक बिखर गई
हैं।

8ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, मेरी आँखें तुझ पर
लगी रहती हैं, और मैं तुझमें पनाह लेता हूँ। मुझे
मौत के हवाले न कर।

9मुझे उस जाल से महफ़ूज़ रख जो उन्होंने मुझे
पकड़ने के लिए बिछाया है। मुझे बदकारों के फंदों
से बचाए रख।

10बेदीन मिलकर उनके अपने जालों में उलझ
जाएँ जबकि मैं बचकर आगे निकलूँ।

सख़्त मुसीबत में मदद की पुकार

142 हिकमत का गीत। दुआ जो दाऊद ने की
जब वह ग़ार में था।

मैं मदद के लिए चीख़ता-चिल्लाता रब को
पुकारता हूँ, मैं ज़ोरदार आवाज़ से रब से इल्तिजा
करता हूँ।

2मैं अपनी आहो-ज़ारी उसके सामने उंडेल
देता, अपनी तमाम मुसीबत उसके हुज़ूर पेश
करता हूँ।

3जब मेरी रूह मेरे अंदर निढाल हो जाती है तो
तू ही मेरी राह जानता है। जिस रास्ते में मैं चलता
हूँ उसमें लोगों ने फंदा छुपाया है।

4मैं दहनी तरफ़ नज़र डालकर देखता हूँ,
लेकिन कोई नहीं है जो मेरा ख़याल करे। मैं बच
नहीं सकता, कोई नहीं है जो मेरी जान की फ़िकर
करे।

5ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता हूँ। मैं
कहता हूँ, "तू मेरी पनाहगाह और ज़िंदों के मुल्क
में मेरा मौरूसी हिस्सा है।"

6मेरी चीख़ों पर ध्यान दे, क्योंकि मैं बहुत पस्त
हो गया हूँ। मुझे उनसे छुड़ा जो मेरा पीछा कर रहे
हैं, क्योंकि मैं उन पर क़ाबू नहीं पा सकता।

7मेरी जान को क़ैदख़ाने से निकाल ला ताकि
तेरे नाम की सताइश करूँ। जब तू मेरे साथ भलाई
करेगा तो रास्तबाज़ मेरे इर्दगिर्द जमा हो जाएंगे।

बचाव और क़ियादत की गुज़ारिश
(तौबा का सातवाँ ज़बूर)

143 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी
इल्तिजाओं पर ध्यान दे। अपनी वफ़ादारी और
रास्ती की ख़ातिर मेरी सुन!

2अपने ख़ादिम को अपनी अदालत में न ला,
क्योंकि तेरे हुज़ूर कोई भी जानदार रास्तबाज़ नहीं
ठहर सकता।

3क्योंकि दुश्मन ने मेरी जान का पीछा करके
उसे ख़ाक में कुचल दिया है। उसने मुझे उन लोगों
की तरह तारीकी में बसा दिया है जो बड़े अरसे से
मुरदा हैं।

4मेरे अंदर मेरी रूह निढाल है, मेरे अंदर मेरा
दिल दहशत के मारे बेहिसो-हरकत हो गया है।

5मैं क़दीम ज़माने के दिन याद करता और तेरे
कामों पर ग़ौरो-ख़ौज़ करता हूँ। जो कुछ तेरे हाथों
ने किया उसमें मैं महवे-ख़याल रहता हूँ।

6मैं अपने हाथ तेरी तरफ़ उठाता हूँ, मेरी जान
ख़ुश्क ज़मीन की तरह तेरी प्यासी है। (सिलाह)

7ऐ रब, मेरी सुनने में जल्दी कर। मेरी जान तो
ख़त्म होनेवाली है। अपना चेहरा मुझसे छुपाए न
रख, वरना मैं गढ़े में उतरनेवालों की मानिंद हो
जाऊँगा।

8सुबह के वक़्त मुझे अपनी शफ़क़त की ख़बर
सुना, क्योंकि मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ। मुझे
वह राह दिखा जिस पर मुझे जाना है, क्योंकि मैं
तेरा ही आरज़ूमंद हूँ।

9ऐ रब, मुझे मेरे दुश्मनों से छुड़ा, क्योंकि मैं
तुझमें पनाह लेता हूँ।
10मुझे अपनी मरज़ी पूरी करना सिखा, क्योंकि
तू मेरा ख़ुदा है। तेरा नेक रूह हमवार ज़मीन पर
मेरी राहनुमाई करे।
11ऐ रब, अपने नाम की ख़ातिर मेरी जान को
ताज़ादम कर। अपनी रास्ती से मेरी जान को
मुसीबत से बचा।
12अपनी शफ़क़त से मेरे दुश्मनों को हलाक
कर। जो भी मुझे तंग कर रहे हैं उन्हें तबाह कर!
क्योंकि मैं तेरा ख़ादिम हूँ।

नजात और ख़ुशहाली की दुआ

144 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरी चटान की हम्द हो, जो
मेरे हाथों को लड़ने और मेरी उँगलियों को जंग
करने की तरबियत देता है।
2वह मेरी शफ़क़त, मेरा क़िला, मेरा
नजातदहिंदा और मेरी ढाल है। उसी में मैं पनाह
लेता हूँ, और वही दीगर अक़वाम को मेरे ताबे कर
देता है।

3ऐ रब, इनसान कौन है कि तू उसका ख़याल
रखे? आदमज़ाद कौन है कि तू उसका लिहाज़
करे?
4इनसान दम-भर का ही है, उसके दिन तेज़ी
से गुज़रनेवाले साये की मानिंद हैं।

5ऐ रब, अपने आसमान को झुकाकर उतर आ!
पहाड़ों को छू ताकि वह धुआँ छोड़ें।
6बिजली भेजकर उन्हें मुंतशिर कर, अपने तीर
चलाकर उन्हें दरहम-बरहम कर।
7अपना हाथ बुलंदियों से नीचे बढ़ा और मुझे
छुड़ाकर पानी की गहराइयों और परदेसियों के
हाथ से बचा,
8जिनका मुँह झूट बोलता और दहना हाथ फ़रेब
देता है।

9ऐ अल्लाह, मैं तेरी तमजीद में नया गीत
गाऊँगा, दस तारों का सितार बजाकर तेरी
मद्हसराई करूँगा।
10क्योंकि तू बादशाहों को नजात देता और
अपने ख़ादिम दाऊद को मोहलक तलवार से
बचाता है।

11मुझे छुड़ाकर परदेसियों के हाथ से बचा,
जिनका मुँह झूट बोलता और दहना हाथ फ़रेब
देता है।
12हमारे बेटे जवानी में फलने-फूलनेवाले पौदों
की मानिंद हों, हमारी बेटियाँ महल को सजाने के
लिए तराशे हुए कोने के सतून की मानिंद हों।
13हमारे गोदाम भरे रहें और हर क़िस्म की
ख़ुराक मुहैया करें। हमारी भेड़-बकरियाँ हमारे
मैदानों में हज़ारों बल्कि बेशुमार बच्चे जन्म दें।
14हमारे गाय-बैल मोटे-ताज़े हों, और न कोई
ज़ाया हो जाए, न किसी को नुक़सान पहुँचे। हमारे
चौकों में आहो-ज़ारी की आवाज़ सुनाई न दे।
15मुबारक है वह क़ौम जिस पर यह सब कुछ
सादिक़ आता है, मुबारक है वह क़ौम जिसका
ख़ुदा रब है!

अल्लाह की अबदी शफ़क़त

145 दाऊद का ज़बूर। हम्दो-सना का गीत।
ऐ मेरे ख़ुदा, मैं तेरी ताज़ीम
करूँगा। ऐ बादशाह, मैं हमेशा तक तेरे नाम की
सताइश करूँगा।
2रोज़ाना मैं तेरी तमजीद करूँगा, हमेशा तक
तेरे नाम की हम्द करूँगा।
3रब अज़ीम और बड़ी तारीफ़ के लायक़ है।
उस की अज़मत इनसान की समझ से बाहर है।
4एक पुश्त अगली पुश्त के सामने वह कुछ
सराहे जो तूने किया है, वह दूसरों को तेरे
ज़बरदस्त काम सुनाएँ।
5मैं तेरे शानदार जलाल की अज़मत और तेरे
मोजिज़ों में महवे-ख़याल रहूँगा।

6लोग तेरे हैबतनाक कामों की क़ुदरत पेश करें,
और मैं भी तेरी अज़मत बयान करूँगा।
7वह जोश से तेरी बड़ी भलाई को सराहें और
ख़ुशी से तेरी रास्ती की मद्हसराई करें।
8रब मेहरबान और रहीम है। वह तहम्मुल और
शफ़क़त से भरपूर है।
9रब सबके साथ भलाई करता है, वह अपनी
तमाम मख़लूक़ात पर रहम करता है।

10ऐ रब, तेरी तमाम मख़लूक़ात तेरा शुक्र करें।
तेरे ईमानदार तेरी तमजीद करें।
11वह तेरी बादशाही के जलाल पर फ़ख़र करें
और तेरी क़ुदरत बयान करें
12ताकि आदमज़ाद तेरे क़वी कामों और तेरी
बादशाही की जलाली शानो-शौकत से आगाह हो
जाएँ।
13तेरी बादशाही की कोई इंतहा नहीं, और
तेरी सलतनत पुश्त-दर-पुश्त हमेशा तक क़ायम
रहेगी।

14रब तमाम गिरनेवालों का सहारा है। जो भी
दब जाए उसे वह उठा खड़ा करता है।
15सबकी आँखें तेरे इंतज़ार में रहती हैं, और तू
हर एक को वक़्त पर उसका खाना मुहैया करता
है।
16तू अपनी मुट्ठी खोलकर हर जानदार की
ख़ाहिश पूरी करता है।
17रब अपनी तमाम राहों में रास्त और अपने
तमाम कामों में वफ़ादार है।
18रब उन सबके क़रीब है जो उसे पुकारते हैं,
जो दियानतदारी से उसे पुकारते हैं।
19जो उसका ख़ौफ़ मानें उनकी आरज़ू वह पूरी
करता है। वह उनकी फ़रियादें सुनकर उनकी मदद
करता है।
20रब उन सबको महफ़ूज़ रखता है जो उसे
प्यार करते हैं, लेकिन बेदीनों को वह हलाक
करता है।
21मेरा मुँह रब की तारीफ़ बयान करे, तमाम
मख़लूक़ात हमेशा तक उसके मुक़द्दस नाम की
सताइश करें।

अल्लाह की अबदी वफ़ादारी

146 रब की हम्द हो! ऐ मेरी जान, रब
की हम्द कर।
2जीते-जी मैं रब की सताइश करूँगा, उम्र-भर
अपने ख़ुदा की मद्हसराई करूँगा।

3शुरफ़ा पर भरोसा न रखो, न आदमज़ाद पर
जो नजात नहीं दे सकता।
4जब उस की रूह निकल जाए तो वह दुबारा
ख़ाक में मिल जाता है, उसी वक़्त उसके मनसूबे
अधूरे रह जाते हैं।

5मुबारक है वह जिसका सहारा याक़ूब का
ख़ुदा है, जो रब अपने ख़ुदा के इंतज़ार में रहता
है।
6क्योंकि उसने आसमानो-ज़मीन, समुंदर और
जो कुछ उनमें है बनाया है। वह हमेशा तक
वफ़ादार है।
7वह मज़लूमों का इनसाफ़ करता और भूकों
को रोटी खिलाता है। रब क़ैदियों को आज़ाद
करता है।
8रब अंधों की आँखें बहाल करता और ख़ाक
में दबे हुओं को उठा खड़ा करता है, रब रास्तबाज़
को प्यार करता है।
9रब परदेसियों की देख-भाल करता, यतीमों
और बेवाओं को क़ायम रखता है। लेकिन वह
बेदीनों की राह को टेढ़ा बनाकर कामयाब होने
नहीं देता।

10रब अबद तक हुकूमत करेगा। ऐ सिय्यून,
तेरा ख़ुदा पुश्त-दर-पुश्त बादशाह रहेगा। रब की
हम्द हो।

कायनात और तारीख़ में रब का बंदोबस्त

147 रब की हम्द हो! अपने ख़ुदा की मद्हसराई करना कितना भला है, उस की तमजीद करना कितना प्यारा और ख़ूबसूरत है।

2रब यरूशलम को तामीर करता और इसराईल के मुंतशिर जिलावतनों को जमा करता है।

3वह दिलशिकस्तों को शफ़ा देकर उनके ज़ख़्मों पर मरहम-पट्टी लगाता है।

4वह सितारों की तादाद गिन लेता और हर एक का नाम लेकर उन्हें बुलाता है।

5हमारा रब अज़ीम है, और उस की क़ुदरत ज़बरदस्त है। उस की हिकमत की कोई इंतहा नहीं।

6रब मुसीबतज़दों को उठा खड़ा करता लेकिन बदकारों को ख़ाक में मिला देता है।

7रब की तमजीद में शुक्र का गीत गाओ, हमारे ख़ुदा की ख़ुशी में सरोद बजाओ।

8क्योंकि वह आसमान पर बादल छाने देता, ज़मीन को बारिश मुहैया करता और पहाड़ों पर घास फूटने देता है।

9वह मवेशी को चारा और कौवे के बच्चों को वह कुछ खिलाता है जो वह शोर मचाकर माँगते हैं।

10न वह घोड़े की ताक़त से लुत्फ़अंदोज़ होता, न आदमी की मज़बूत टाँगों से ख़ुश होता है।

11रब उन्हीं से ख़ुश होता है जो उसका ख़ौफ़ मानते और उस की शफ़क़त के इंतज़ार में रहते हैं।

12ऐ यरूशलम, रब की मद्हसराई कर! ऐ सिय्यून, अपने ख़ुदा की हम्द कर!

13क्योंकि उसने तेरे दरवाज़ों के कुंडे मज़बूत करके तेरे दरमियान बसनेवाली औलाद को बरकत दी है।

14वही तेरे इलाक़े में अमन और सुकून क़ायम रखता और तुझे बेहतरीन गंदुम से सेर करता है।

15वह अपना फ़रमान ज़मीन पर भेजता है तो उसका कलाम तेज़ी से पहुँचता है।

16वह ऊन जैसी बर्फ़ मुहैया करता और पाला राख की तरह चारों तरफ़ बिखेर देता है।

17वह अपने ओले कंकरों की तरह ज़मीन पर फेंक देता है। कौन उस की शदीद सर्दी बरदाश्त कर सकता है?

18वह एक बार फिर अपना फ़रमान भेजता है तो बर्फ़ पिघल जाती है। वह अपनी हवा चलने देता है तो पानी टपकने लगता है।

19उसने याक़ूब को अपना कलाम सुनाया, इसराईल पर अपने अहकाम और आईन ज़ाहिर किए हैं।

20ऐसा सुलूक उसने किसी और क़ौम से नहीं किया। दीगर अक़वाम तो तेरे अहकाम नहीं जानतीं। रब की हम्द हो!

आसमानो-ज़मीन पर अल्लाह की तमजीद

148 रब की हम्द हो! आसमान से रब की सताइश करो, बुलंदियों पर उस की तमजीद करो!

2ऐ उसके तमाम फ़रिश्तो, उस की हम्द करो! ऐ उसके तमाम लशकरो, उस की तारीफ़ करो!

3ऐ सूरज और चाँद, उस की हम्द करो! ऐ तमाम चमकदार सितारो, उस की सताइश करो!

4ऐ बुलंदतरीन आसमानो और आसमान के ऊपर के पानी, उस की हम्द करो!

5वह रब के नाम की सताइश करें, क्योंकि उसने फ़रमाया तो वह वुजूद में आए।

6उसने नाक़ाबिले-मनसूख़ फ़रमान जारी करके उन्हें हमेशा के लिए क़ायम किया है।

7ऐ समुंदर के अज़दहाओ और तमाम गहराइयो, ज़मीन से रब की तमजीद करो!

8ऐ आग, ओलो, बर्फ़, धुंध और उसके हुक्म
पर चलनेवाली आँधियो, उस की हम्द करो!
9ऐ पहाड़ो और पहाड़ियो, फलदार दरख़तो
और तमाम देवदारो, उस की तारीफ़ करो!
10ऐ जंगली जानवरो, मवीशियो, रेंगने-
वाली मख़लूक़ात और परिंदो, उस की हम्द करो!
11ऐ ज़मीन के बादशाहो और तमाम क़ौमो,
सरदारो और ज़मीन के तमाम हुक्मरानो, उस की
तमजीद करो!
12ऐ नौजवानो और कुँवारियो, बुज़ुर्गो और
बच्चो, उस की हम्द करो!

13सब रब के नाम की सताइश करें, क्योंकि
सिर्फ़ उसी का नाम अज़ीम है, उस की अज़मत
आसमानो-ज़मीन से आला है।
14उसने अपनी क़ौम को सरफ़राज़ करके[a]
अपने तमाम ईमानदारों की शोहरत बढ़ाई है, यानी
इसराईलियों की शोहरत, उस क़ौम की जो उसके
क़रीब रहती है। रब की हम्द हो!

सिय्यून रब की हम्द करे!

149 रब की हम्द हो! रब की तमजीद
में नया गीत गाओ, ईमानदारों की
जमात में उस की तारीफ़ करो।
2इसराईल अपने ख़ालिक़ से ख़ुश हो, सिय्यून
के फ़रज़ंद अपने बादशाह की ख़ुशी मनाएँ।
3वह नाचकर उसके नाम की सताइश करें, दफ़
और सरोद से उस की मद्हसराई करें।

4क्योंकि रब अपनी क़ौम से ख़ुश है। वह
मुसीबतज़दों को अपनी नजात की शानो-शौकत
से आरास्ता करता है।
5ईमानदार इस शानो-शौकत के बाइस ख़ुशी
मनाएँ, वह अपने बिस्तरों पर शादमानी के नारे
लगाएँ।
6उनके मुँह में अल्लाह की हम्दो-सना और
उनके हाथों में दोधारी तलवार हो
7ताकि दीगर अक़वाम से इंतक़ाम लें और
उम्मतों को सज़ा दें।
8वह उनके बादशाहों को ज़ंजीरों में और उनके
शुरफ़ा को बेड़ियों में जकड़ लेंगे
9ताकि उन्हें वह सज़ा दें जिसका फ़ैसला
क़लमबंद हो चुका है। यह इज़्ज़त अल्लाह के
तमाम ईमानदारों को हासिल है। रब की हम्द हो!

रब की हम्दो-सना

150 रब की हम्द हो! अल्लाह के
मक़दिस में उस की सताइश
करो। उस की क़ुदरत के बने हुए आसमानी गुंबद
में उस की तमजीद करो।
2उसके अज़ीम कामों के बाइस उस की हम्द
करो। उस की ज़बरदस्त अज़मत के बाइस उस
की सताइश करो।
3नरसिंगा फूँककर उस की हम्द करो, सितार
और सरोद बजाकर उस की तमजीद करो।
4दफ़ और लोकनाच से उस की हम्द करो।
तारदार साज़ और बाँसरी बजाकर उस की
सताइश करो।
5झाँझों की झंकारती आवाज़ से उस की हम्द
करो, गूँजती झाँझ से उस की तारीफ़ करो।
6जिसमें भी साँस है वह रब की सताइश करे।
रब की हम्द हो!।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : अपनी क़ौम का सींग बुलंद करके।

अमसाल

किताब का मक़सद

1 ज़ैल में इसराईल के बादशाह सुलेमान बिन
दाऊद की अमसाल क़लमबंद हैं।
2इनसे तू हिकमत और तरबियत हासिल
करेगा, बसीरत के अलफ़ाज़ समझने के
क़ाबिल हो जाएगा, 3और दानाई दिलाने-
वाली तरबियत, रास्ती, इनसाफ़ और दिया-
नतदारी अपनाएगा। 4यह अमसाल सादा-
लौह को होशियारी और नौजवान को इल्म और
तमीज़ सिखाती हैं। 5जो दाना है वह सुनकर
अपने इल्म में इज़ाफ़ा करे, जो समझदार है
वह राहनुमाई करने का फ़न सीख ले। 6तब वह
अमसाल और तमसीलें, दानिशमंदों की बातें और
उनके मुअम्मे समझ लेगा।
7हिकमत इससे शुरू होती है कि हम रब का
ख़ौफ़ मानें। सिर्फ़ अहमक़ हिकमत और तरबियत
को हक़ीर जानते हैं।

ग़लत साथियों से ख़बरदार

8मेरे बेटे, अपने बाप की तरबियत के ताबे
रह, और अपनी माँ की हिदायत मुस्तरद न कर।
9क्योंकि यह तेरे सर पर दिलकश सेहरा और तेरे
गले में गुलूबंद हैं। 10मेरे बेटे, जब ख़ताकार तुझे
फुसलाने की कोशिश करें तो उनके पीछे न हो ले।
11उनकी बात न मान जब वह कहें, “आ, हमारे
साथ चल! हम ताक में बैठकर किसी को क़त्ल
करें, बिलावजह किसी बेक़ुसूर की घात लगाएँ।
12हम उन्हें पाताल की तरह ज़िंदा निगल लें, उन्हें
मौत के गढ़े में उतरनेवालों की तरह एकदम हड़प
कर लें। 13हम हर क़िस्म की क़ीमती चीज़ हासिल
करेंगे, अपने घरों को लूट के माल से भर लेंगे।
14आ, जुर्रत करके हममें शरीक हो जा, हम लूट
का तमाम माल बराबर तक़सीम करेंगे।”
15मेरे बेटे, उनके साथ मत जाना, अपना पाँव
उनकी राहों पर रखने से रोक लेना। 16क्योंकि
उनके पाँव ग़लत काम के पीछे दौड़ते, ख़ून बहाने
के लिए भागते हैं। 17जब चिड़ीमार अपना जाल
लगाकर उस पर परिंदों को फाँसने के लिए रोटी
के टुकड़े बिखेर देता है तो परिंदों की नज़र में
यह बेमक़सद है। 18यह लोग भी एक दिन फँस
जाएंगे। जब ताक में बैठ जाते हैं तो अपने आपको
तबाह करते हैं, जब दूसरों की घात लगाते हैं तो
अपनी ही जान को नुक़सान पहुँचाते हैं। 19यही
उन सबका अंजाम है जो नारवा नफ़ा के पीछे
भागते हैं। नाजायज़ नफ़ा अपने मालिक की जान
छीन लेता है।

हिक्मत की पुकार

20हिकमत गली में ज़ोर से आवाज़ देती, चौकों
में बुलंद आवाज़ से पुकारती है। 21जहाँ सबसे
ज़्यादा शोर-शराबा है वहाँ वह चिल्ला चिल्लाकर
बोलती, शहर के दरवाज़ों पर ही अपनी तक़रीर
करती है, 22“ऐ सादालौह लोगो, तुम कब तक
अपनी सादालौही से मुहब्बत रखोगे? मज़ाक़

उड़ानेवाले कब तक अपने मज़ाक़ से लुत्फ़ उठाएँगे, अहमक़ कब तक इल्म से नफ़रत करेंगे?
23आओ, मेरी सरज़निश पर ध्यान दो। तब मैं अपनी रूह का चश्मा तुम पर फूटने दूँगी, तुम्हें अपनी बातें सुनाऊँगी।

24लेकिन जब मैंने आवाज़ दी तो तुमने इनकार किया, जब मैंने अपना हाथ तुम्हारी तरफ़ बढ़ाया तो किसी ने भी तवज्जुह न दी। 25तुमने मेरे किसी मशवरे की परवा न की, मेरी मलामत तुम्हारे नज़दीक क़ाबिले-क़बूल नहीं थी। 26इसलिए जब तुम पर आफ़त आएगी तो मैं क़हक़हा लगाऊँगी, जब तुम हौलनाक मुसीबत में फँस जाओगे तो तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाऊँगी। 27उस वक़्त तुम पर दहशतनाक आँधी टूट पड़ेगी, आफ़त तूफ़ान की तरह तुम पर आएगी, और तुम मुसीबत और तकलीफ़ के सैलाब में डूब जाओगे। 28तब वह मुझे आवाज़ देंगे, लेकिन मैं उनकी नहीं सुनूँगी, वह मुझे ढूँडेंगे पर पाएँगे नहीं।

29क्योंकि वह इल्म से नफ़रत करके रब का ख़ौफ़ मानने के लिए तैयार नहीं थे। 30मेरा मशवरा उन्हें क़बूल नहीं था बल्कि वह मेरी हर सरज़निश को हक़ीर जानते थे। 31चुनाँचे अब वह अपने चाल-चलन का फल खाएँ, अपने मनसूबों की फ़सल खा खाकर सेर हो जाएँ।

32क्योंकि सहीह राह से दूर होने का अमल सादालौह को मार डालता है, और अहमक़ों की बेपरवाई उन्हें तबाह करती है। 33लेकिन जो मेरी सुने वह सुकून से बसेगा, हौलनाक मुसीबत उसे परेशान नहीं करेगी।”

हिक्मत की अहमियत

2 मेरे बेटे, मेरी बात क़बूल करके मेरे अहकाम अपने दिल में महफ़ूज़ रख। 2अपना कान हिकमत पर धर, अपना दिल समझ की तरफ़ मायल कर। 3बसीरत के लिए आवाज़ दे, चिल्लाकर समझ माँग। 4उसे यों तलाश कर गोया चाँदी हो, उसका यों खोज लगा गोया पोशीदा ख़ज़ाना हो। 5अगर तू ऐसा करे तो तुझे रब के ख़ौफ़ की समझ आएगी और अल्लाह का इरफ़ान हासिल होगा। 6क्योंकि रब ही हिकमत अता करता, उसी के मुँह से इरफ़ान और समझ निकलती है। 7वह सीधी राह पर चलनेवालों को कामयाबी फ़राहम करता और बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारनेवालों की ढाल बना रहता है। 8क्योंकि वह इनसाफ़ पसंदों की राहों की पहरादारी करता है। जहाँ भी उसके ईमानदार चलते हैं वहाँ वह उनकी हिफ़ाज़त करता है।

9तब तुझे रास्ती, इनसाफ़, दियानतदारी और हर अच्छी राह की समझ आएगी। 10क्योंकि तेरे दिल में हिकमत दाख़िल हो जाएगी, और इल्मो-इरफ़ान तेरी जान को प्यारा हो जाएगा। 11तमीज़ तेरी हिफ़ाज़त और समझ तेरी चौकीदारी करेगी। 12हिकमत तुझे ग़लत राह और कजरौ बातें करनेवाले से बचाए रखेगी। 13ऐसे लोग सीधी राह को छोड़ देते हैं ताकि तारीक रास्तों पर चलें, 14वह बुरी हरकतें करने से ख़ुश हो जाते हैं, ग़लत काम की कजरवी देखकर जशन मनाते हैं। 15उनकी राहें टेढ़ी हैं, और वह जहाँ भी चलें आवारा फिरते हैं।

16हिकमत तुझे नाजायज़ औरत से छुड़ाती है, उस अजनबी औरत से जो चिकनी-चुपड़ी बातें करती, 17जो अपने जीवनसाथी को तर्क करके अपने ख़ुदा का अहद भूल जाती है। 18क्योंकि उसके घर में दाख़िल होने का अंजाम मौत, उस की राहों की मनज़िले-मक़सूद पाताल है। 19जो भी उसके पास जाए वह वापस नहीं आएगा, वह ज़िंदगीबख़्श राहों पर दुबारा नहीं पहुँचेगा।

20चुनाँचे अच्छे लोगों की राह पर चल-फिर, ध्यान दे कि तेरे क़दम रास्तबाज़ों के रास्ते पर रहें। 21क्योंकि सीधी राह पर चलनेवाले मुल्क में आबाद होंगे, आख़िरकार बेइलज़ाम ही उसमें बाक़ी रहेंगे। 22लेकिन बेदीन मुल्क से मिट

जाएंगे, और बेवफ़ाओं को उखाड़कर मुल्क से ख़ारिज कर दिया जाएगा।

अल्लाह के ख़ौफ़ और हिकमत की बरकत

3 मेरे बेटे, मेरी हिदायत मत भूलना। मेरे अहकाम तेरे दिल में महफ़ूज़ रहें। 2क्योंकि इन्हीं से तेरी ज़िंदगी के दिनों और सालों में इज़ाफ़ा होगा और तेरी ख़ुशहाली बढ़ेगी। 3शफ़क़त और वफ़ा तेरा दामन न छोड़ें। उन्हें अपने गले से बाँधना, अपने दिल की तख़्ती पर कंदा करना। 4तब तुझे अल्लाह और इनसान के सामने मेहरबानी और क़बूलियत हासिल होगी।

5पूरे दिल से रब पर भरोसा रख, और अपनी अक़्ल पर तकिया न कर। 6जहाँ भी तू चले सिर्फ़ उसी को जान ले, फिर वह ख़ुद तेरी राहों को हमवार करेगा। 7अपने आपको दानिशमंद मत समझना बल्कि रब का ख़ौफ़ मानकर बुराई से दूर रह। 8इससे तेरा बदन सेहत पाएगा और तेरी हड्डियाँ तरो-ताज़ा हो जाएँगी। 9अपनी मिलकियत और अपनी तमाम पैदावार के पहले फल से रब का एहतराम कर, 10फिर तेरे गोदाम अनाज से भर जाएंगे और तेरे बरतन मै से छलक उठेंगे।

11मेरे बेटे, रब की तरबियत को रद्द न कर, जब वह तुझे डाँटे तो रंजीदा न हो। 12क्योंकि जो रब को प्यारा है उस की वह तादीब करता है, जिस तरह बाप उस बेटे को तंबीह करता है जो उसे पसंद है।

हक़ीक़ी दौलत

13मुबारक है वह जो हिकमत पाता है, जिसे समझ हासिल होती है। 14क्योंकि हिकमत चाँदी से कहीं ज़्यादा सूदमंद है, और उससे सोने से कहीं ज़्यादा क़ीमती चीज़ें हासिल होती हैं। 15हिकमत मोतियों से ज़्यादा नफ़ीस है, तेरे तमाम ख़ज़ाने उसका मुक़ाबला नहीं कर सकते। 16उसके दहने हाथ में उम्र की दराज़ी और बाएँ हाथ में दौलत और इज़्ज़त है। 17उस की राहें ख़ुशगवार, उसके तमाम रास्ते पुरअमन हैं। 18जो उसका दामन पकड़ ले उसके लिए वह ज़िंदगी का दरख़्त है। मुबारक है वह जो उससे लिपटा रहे। 19रब ने हिकमत के वसीले से ही ज़मीन की बुनियाद रखी, समझ के ज़रीए ही आसमान को मज़बूती से लगाया। 20उसके इरफ़ान से ही गहराइयों का पानी फूट निकला और आसमान से शबनम टपककर ज़मीन पर पड़ती है।

21मेरे बेटे, दानाई और तमीज़ अपने पास महफ़ूज़ रख और उन्हें अपनी नज़र से दूर न होने दे। 22उनसे तेरी जान तरो-ताज़ा और तेरा गला आरास्ता रहेगा। 23तब तू चलते वक़्त महफ़ूज़ रहेगा, और तेरा पाँव ठोकर नहीं खाएगा। 24तू पाँव फैलाकर सो सकेगा, कोई सदमा तुझे नहीं पहुँचेगा बल्कि तू लेटकर गहरी नींद सोएगा। 25नागहाँ आफ़त से मत डरना, न उस तबाही से जो बेदीन पर ग़ालिब आती है, 26क्योंकि रब पर तेरा एतमाद है, वही तेरे पाँवों को फँस जाने से महफ़ूज़ रखेगा।

दूसरों की मदद करने की नसीहत

27अगर कोई ज़रूरतमंद हो और तू उस की मदद कर सके तो उसके साथ भलाई करने से इनकार न कर। 28अगर तू आज कुछ दे सके तो अपने पड़ोसी से मत कहना, “कल आना तो मैं आपको कुछ दे दूँगा।” 29जो पड़ोसी बेफ़िकर तेरे साथ रहता है उसके ख़िलाफ़ बुरे मनसूबे मत बाँधना। 30जिसने तुझे नुक़सान नहीं पहुँचाया अदालत में उस पर बेबुनियाद इलज़ाम न लगाना।

31न ज़ालिम से हसद कर, न उस की कोई राह इख़्तियार कर। 32क्योंकि बुरी राह पर चलनेवाले से रब घिन खाता है जबकि सीधी राह पर चलनेवालों को वह अपने राज़ों से आगाह करता है। 33बेदीन के घर पर रब की लानत आती जबकि रास्तबाज़ के घर को वह बरकत देता है। 34मज़ाक़ उड़ानेवालों का वह मज़ाक़ उड़ाता, लेकिन फ़रोतनों पर मेहरबानी करता

है। 35दानिशमंद मीरास में इज़्ज़त पाएँगे जबकि
अहमक़ के नसीब में शरमिंदगी होगी।

बाप की नसीहत

4 ऐ बेटो, बाप की नसीहत सुनो, ध्यान दो
ताकि तुम सीखकर समझ हासिल कर
सको। 2मैं तुम्हें अच्छी तालीम देता हूँ, इसलिए
मेरी हिदायत को तर्क न करो। 3मैं अभी अपने
बाप के घर में नाज़ुक लड़का था, अपनी माँ का
वाहिद बच्चा, 4तो मेरे बाप ने मुझे तालीम देकर
कहा,

"पूरे दिल से मेरे अलफ़ाज़ अपना ले और हर
वक़्त मेरे अहकाम पर अमल कर तो तू जीता
रहेगा। 5हिकमत हासिल कर, समझ अपना ले!
यह चीज़ें मत भूलना, मेरे मुँह के अलफ़ाज़ से
दूर न होना। 6हिकमत तर्क न कर तो वह तुझे
महफ़ूज़ रखेगी। उससे मुहब्बत रख तो वह तेरी
देख-भाल करेगी। 7हिकमत इससे शुरू होती है
कि तू हिकमत अपना ले। समझ हासिल करने
के लिए बाक़ी तमाम मिलकियत क़ुरबान करने
के लिए तैयार हो। 8उसे अज़ीज़ रख तो वह
तुझे सरफ़राज़ करेगी, उसे गले लगा तो वह तुझे
इज़्ज़त बख़्शेगी। 9तब वह तेरे सर को ख़ूबसूरत
सेहरे से आरास्ता करेगी और तुझे शानदार ताज
से नवाज़ेगी।"

10मेरे बेटे, मेरी सुन! मेरी बातें अपना ले तो
तेरी उम्र दराज़ होगी। 11मैं तुझे हिकमत की राह
पर चलने की हिदायत देता, तुझे सीधी राहों पर
फिरने देता हूँ। 12जब तू चलेगा तो तेरे क़दमों
को किसी भी चीज़ से रोका नहीं जाएगा, और
दौड़ते वक़्त तू ठोकर नहीं खाएगा। 13तरबियत
का दामन थामे रह! उसे न छोड़ बल्कि महफ़ूज़
रख, क्योंकि वह तेरी ज़िंदगी है।

14बेदीनों की राह पर क़दम न रख, शरीरों के
रास्ते पर मत जा। 15उससे गुरेज़ कर, उस पर
सफ़र न कर बल्कि उससे कतराकर आगे निकल
जा। 16क्योंकि जब तक उनसे बुरा काम सरज़द
न हो जाए वह सो ही नहीं सकते, जब तक उन्होंने
किसी को ठोकर खिलाकर ख़ाक में मिला न दिया
हो वह नींद से महरूम रहते हैं। 17वह बेदीनी की
रोटी खाते और ज़ुल्म की मै पीते हैं। 18लेकिन
रास्तबाज़ की राह तुलूए-सुबह की पहली रौशनी
की मानिंद है जो दिन के उरूज तक बढ़ती रहती
है। 19इसके मुक़ाबले में बेदीन का रास्ता गहरी
तारीकी की मानिंद है, उन्हें पता ही नहीं चलता
कि किस चीज़ से ठोकर खाकर गिर गए हैं।

20मेरे बेटे, मेरी बातों पर ध्यान दे, मेरे
अलफ़ाज़ पर कान धर। 21उन्हें अपनी नज़र से
ओझल न होने दे बल्कि अपने दिल में महफ़ूज़
रख। 22क्योंकि जो यह बातें अपनाएँ वह ज़िंदगी
और पूरे जिस्म के लिए शफ़ा पाते हैं। 23तमाम
चीज़ों से पहले अपने दिल की हिफ़ाज़त कर,
क्योंकि यही ज़िंदगी का सरचश्मा है। 24अपने
मुँह से झूट और अपने होंटों से कजगोई दूर कर।
25ध्यान दे कि तेरी आँखें सीधा आगे की तरफ़
देखें, कि तेरी नज़र उस रास्ते पर लगी रहे जो
सीधा है। 26अपने पाँवों का रास्ता चलने के
क़ाबिल बना दे, ध्यान दे कि तेरी राहें मज़बूत हैं।
27न दाईं, न बाईं तरफ़ मुड़ बल्कि अपने पाँवों को
ग़लत क़दम उठाने से बाज़ रख।

ज़िनाकारी से ख़बरदार

5 मेरे बेटे, मेरी हिकमत पर ध्यान दे, मेरी
समझ की बातों पर कान धर। 2फिर
तू तमीज़ का दामन थामे रहेगा, और तेरे होंट
इल्मो-इरफ़ान महफ़ूज़ रखेंगे। 3क्योंकि ज़िनाकार
औरत के होंटों से शहद टपकता है, उस की बातें
तेल की तरह चिकनी-चुपड़ी होती हैं। 4लेकिन
अंजाम में वह ज़हर जैसी कड़वी और दोधारी
तलवार जैसी तेज़ साबित होती है। 5उसके पाँव
मौत की तरफ़ उतरते, उसके क़दम पाताल की
जानिब बढ़ते जाते हैं। 6उसके रास्ते कभी इधर
कभी इधर फिरते हैं ताकि तू ज़िंदगी की राह पर
तवज्जुह न दे और उस की आवारगी को जान न
ले।

7चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो और मेरे मुँह की
बातों से दूर न हो जाओ। 8अपने रास्ते उससे
दूर रख, उसके घर के दरवाज़े के क़रीब भी न
जा। 9ऐसा न हो कि तू अपनी ताक़त किसी
और के लिए सर्फ़ करे और अपने साल ज़ालिम
के लिए ज़ाया करे। 10ऐसा न हो कि परदेसी
तेरी मिलकियत से सेर हो जाएँ, कि जो कुछ
तूने मेहनत-मशक़्क़त से हासिल किया वह किसी
और के घर में आए। 11तब आख़िरकार तेरा बदन
और गोश्त घुल जाएंगे, और तू आहें भर भरकर
12कहेगा, “हाय, मैंने क्यों तरबियत से नफ़रत
की, मेरे दिल ने क्यों सरज़निश को हक़ीर जाना?
13हिदायत करनेवालों की मैंने न सुनी, अपने
उस्तादों की बातों पर कान न धरा। 14जमात के
दरमियान ही रहते हुए मुझ पर ऐसी आफ़त आई
कि मैं तबाही के दहाने तक पहुँच गया हूँ।”

15अपने ही हौज़ का पानी और अपने ही कुएँ
से फूटनेवाला पानी पी ले। 16क्या मुनासिब है
कि तेरे चश्मे गलियों में और तेरी नदियाँ चौकों में
बह निकलें? 17जो पानी तेरा अपना है वह तुझ
तक महदूद रहे, अजनबी उसमें शरीक न हो जाए।
18तेरा चश्मा मुबारक हो। हाँ, अपनी बीवी से ख़ुश
रह। 19वही तेरी मनमोहन हिरनी और दिलरुबा
ग़ज़ाल[a] है। उसी का प्यार तुझे तरो-ताज़ा करे,
उसी की मुहब्बत तुझे हमेशा मस्त रखे।

20मेरे बेटे, तू अजनबी औरत से क्यों मस्त
हो जाए, किसी दूसरे की बीवी से क्यों लिपट
जाए? 21ख़याल रख, इनसान की राहें रब को
साफ़ दिखाई देती हैं, जहाँ भी वह चले उस पर वह
तवज्जुह देता है। 22बेदीन की अपनी ही हरकतें
उसे फँसा देती हैं, वह अपने ही गुनाह के रस्सों
में जकड़ा रहता है। 23वह तरबियत की कमी के
सबब से हलाक हो जाएगा, अपनी बड़ी हमाक़त
के बाइस डगमगाते हुए अपने अंजाम को पहुँचेगा।

ज़मानत देने, काहिली और झूट से ख़बरदार

6 मेरे बेटे, क्या तू अपने पड़ोसी का ज़ामिन
बना है? क्या तूने हाथ मिलाकर वादा
किया है कि मैं किसी दूसरे का ज़िम्मेदार ठहरूँगा?
2क्या तू अपने वादे से बँधा हुआ, अपने मुँह के
अलफ़ाज़ से फँसा हुआ है? 3ऐसा करने से तू
अपने पड़ोसी के हाथ में आ गया है, इसलिए
अपनी जान को छुड़ाने के लिए उसके सामने
औंधे मुँह होकर उसे अपनी मिन्नत-समाजत से
तंग कर। 4अपनी आँखों को सोने न दे, अपने
पपोटों को ऊँघने न दे जब तक तू इस ज़िम्मेदारी
से फ़ारिग़ न हो जाए। 5जिस तरह ग़ज़ाल शिकारी
के हाथ से और परिंदा चिड़ीमार के हाथ से छूट
जाता है उसी तरह सिर-तोड़ कोशिश कर ताकि
तेरी जान छूट जाए।

6ऐ काहिल, चियूँटी के पास जाकर उस की
राहों पर ग़ौर कर! उसके नमूने से हिकमत सीख
ले। 7उस पर न सरदार, न अफ़सर या हुक्मरान
मुक़र्रर है, 8तो भी वह गरमियों में सर्दियों के लिए
खाने का ज़ख़ीरा कर रखती, फ़सल के दिनों
में ख़ूब ख़ुराक इकट्ठी करती है। 9ऐ काहिल, तू
मज़ीद कब तक सोया रहेगा, कब जाग उठेगा?
10तू कहता है, “मुझे थोड़ी देर सोने दे, थोड़ी
देर ऊँघने दे, थोड़ी देर हाथ पर हाथ धरे बैठने
दे ताकि आराम कर सकूँ।” 11लेकिन ख़बरदार,
जल्द ही ग़ुरबत राहज़न की तरह तुझ पर आएगी,
मुफ़लिसी हथियार से लैस डाकू की तरह तुझ पर
टूट पड़ेगी।

12बदमाश और कमीना किस तरह पह-
चाना जाता है? वह मुँह में झूट लिए फिरता है,
13अपनी आँखों, पाँवों और उँगलियों से इशारा
करके तुझे फ़रेब के जाल में फँसाने की कोशिश
करता है। 14उसके दिल में कजी है, और वह हर
वक़्त बुरे मनसूबे बाँधने में लगा रहता है। जहाँ
भी जाए वहाँ झगड़े छिड़ जाते हैं। 15लेकिन ऐसे
शख़्स पर अचानक ही आफ़त आएगी। एक ही

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : पहाड़ी बकरी।

लमहे में वह पाश पाश हो जाएगा। तब उसका इलाज नामुमकिन होगा।

16रब छः चीज़ों से नफ़रत बल्कि सात चीज़ों से घिन खाता है,

17वह आँखें जो ग़ुरूर से देखती हैं, वह ज़बान जो झूट बोलती है, वह हाथ जो बेगुनाहों को क़त्ल करते हैं, 18वह दिल जो बुरे मनसूबे बाँधता है, वह पाँव जो दूसरों को नुक़सान पहुँचाने के लिए भागते हैं, 19वह गवाह जो अदालत में झूट बोलता और वह जो भाइयों में झगड़ा पैदा करता है।

ज़िना करने से ख़बरदार

20मेरे बेटे, अपने बाप के हुक्म से लिपटा रह, और अपनी माँ की हिदायत नज़रंदाज़ न कर। 21उन्हें यों अपने दिल के साथ बाँधे रख कि कभी दूर न हो जाएँ। उन्हें हार की तरह अपने गले में डाल ले। 22चलते वक़्त वह तेरी राहनुमाई करें, आराम करते वक़्त तेरी पहरादारी करें, जागते वक़्त तुझसे हमकलाम हों। 23क्योंकि बाप का हुक्म चराग़ और माँ की हिदायत रौशनी है, तरबियत की डाँट-डपट ज़िंदगीबख़्श राह है। 24यों तू बदकार औरत और दूसरे की ज़िनाकार बीवी की चिकनी-चुपड़ी बातों से महफ़ूज़ रहेगा। 25दिल में उसके हुस्न का लालच न कर, ऐसा न हो कि वह पलक मार मारकर तुझे पकड़ ले। 26क्योंकि गो कसबी आदमी को उसके पैसे से महरूम करती है, लेकिन दूसरे की ज़िनाकार बीवी उस की क़ीमती जान का शिकार करती है।

27क्या इनसान अपनी झोली में भड़कती आग यों उठाकर फिर सकता है कि उसके कपड़े न जलें? 28या क्या कोई दहकते कोयलों पर यों फिर सकता है कि उसके पाँव झुलस न जाएँ? 29इसी तरह जो किसी दूसरे की बीवी से हमबिसतर हो जाए उसका अंजाम बुरा है, जो भी दूसरे की बीवी को छेड़े उसे सज़ा मिलेगी। 30जो भूक के मारे अपना पेट भरने के लिए चोरी करे उसे लोग हद से ज़्यादा हक़ीर नहीं जानते, 31हालाँकि उसे चोरी किए हुए माल को सात गुना वापस करना है और उसके घर की दौलत जाती रहेगी। 32लेकिन जो किसी दूसरे की बीवी के साथ ज़िना करे वह बेअक़्ल है। जो अपनी जान को तबाह करना चाहे वही ऐसा करता है। 33उस की पिटाई और बेइज़्ज़ती की जाएगी, और उस की शरमिंदगी कभी नहीं मिटेगी। 34क्योंकि शौहर ग़ैरत खाकर और तैश में आकर बेरहमी से बदला लेगा। 35न वह कोई मुआवज़ा क़बूल करेगा, न रिश्वत लेगा, ख़ाह कितनी ज़्यादा क्यों न हो।

बेवफ़ा बीवी

7 मेरे बेटे, मेरे अलफ़ाज़ की पैरवी कर, मेरे अहकाम अपने अंदर महफ़ूज़ रख। 2मेरे अहकाम के ताबे रह तो जीता रहेगा। अपनी आँख की पुतली की तरह मेरी हिदायत की हिफ़ाज़त कर। 3उन्हें अपनी उँगली के साथ बाँध, अपने दिल की तख़्ती पर कंदा कर। 4हिकमत से कह, “तू मेरी बहन है,” और समझ से, “तू मेरी क़रीबी रिश्तेदार है।” 5यही तुझे ज़िनाकार औरत से महफ़ूज़ रखेंगी, दूसरे की उस बीवी से जो अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से तुझे फुसलाने की कोशिश करती है।

6एक दिन मैंने अपने घर की खिड़की[a] में से बाहर झाँका 7तो क्या देखता हूँ कि वहाँ कुछ सादालौह नौजवान खड़े हैं। उनमें से एक बेअक़्ल जवान नज़र आया। 8वह गली में से गुज़रकर ज़िनाकार औरत के कोने की तरफ़ टहलने लगा। चलते चलते वह उस रास्ते पर आ गया जो औरत के घर तक ले जाता है। 9शाम का धुँधलका था, दिन ढलने और रात का अंधेरा छाने लगा था। 10तब एक औरत कसबी का लिबास पहने हुए चालाकी से उससे मिलने आई। 11यह औरत इतनी बेलगाम और ख़ुदसर है कि उसके पाँव उसके घर में नहीं टिकते। 12कभी वह गली में, कभी चौकों में होती है, हर कोने पर वह ताक में बैठी रहती है।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : घर की खिड़की के जंगले।

13अब उसने नौजवान को पकड़कर उसे बोसा
दिया। बेहया नज़र उस पर डालकर उसने कहा,
14"मुझे सलामती की क़ुरबानियाँ पेश करनी
थीं, और आज ही मैंने अपनी मन्नतें पूरी कीं।
15इसलिए मैं निकलकर तुझसे मिलने आई, मैंने
तेरा पता किया और अब तू मुझे मिल गया है।
16मैंने अपने बिस्तर पर मिसर के रंगीन कम्बल
बिछाए, 17उस पर मुर, ऊद और दारचीनी की
ख़ुशबू छिड़की है। 18आओ, हम सुबह तक
मुहब्बत का प्याला तह तक पी लें, हम इश्क़बाज़ी
से लुत्फ़अंदोज़ हों! 19क्योंकि मेरा ख़ाविंद घर में
नहीं है, वह लंबे सफ़र के लिए रवाना हुआ है।
20वह बटवे में पैसे डालकर चला गया है और पूरे
चाँद तक वापस नहीं आएगा।"

21ऐसी बातें करते करते औरत ने नौजवान
को तरग़ीब देकर अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से
वरग़लाया। 22नौजवान सीधा उसके पीछे यों हो
लिया जिस तरह बैल ज़बह होने के लिए जाता या
हिरन उछलकर फंदे में फँस जाता है। 23क्योंकि
एक वक़्त आएगा कि तीर उसका दिल चीर
डालेगा। लेकिन फ़िलहाल उस की हालत उस
चिड़िया की मानिंद है जो उड़कर जाल में आ जाती
और ख़याल तक नहीं करती कि मेरी जान ख़तरे
में है।

24चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो, मेरे मुँह की बातों
पर ध्यान दो! 25तेरा दिल भटककर उस तरफ़
रुख़ न करे जहाँ ज़िनाकार औरत फिरती है, ऐसा
न हो कि तू आवारा होकर उस की राहों में उलझ
जाए। 26क्योंकि उनकी तादाद बड़ी है जिन्हें उसने
गिराकर मौत के घाट उतारा है, उसने मुतअद्दिद
लोगों को मार डाला है। 27उसका घर पाताल का
रास्ता है जो लोगों को मौत की कोठड़ियों तक
पहुँचाता है।

हिक्मत की दावत और वादा

8 सुनो! क्या हिकमत आवाज़ नहीं देती?
हाँ, समझ ऊँची आवाज़ से एलान करती
है। 2वह बुलंदियों पर खड़ी है, उस जगह जहाँ
तमाम रास्ते एक दूसरे से मिलते हैं। 3शहर के
दरवाज़ों पर जहाँ लोग निकलते और दाख़िल होते
हैं वहाँ हिकमत ज़ोरदार आवाज़ से पुकारती है,

4"ऐ मर्दो, मैं तुम्हीं को पुकारती हूँ, तमाम
इनसानों को आवाज़ देती हूँ।
5ऐ सादालौहो, होशियारी सीख लो! ऐ
अहमक़ो, समझ अपना लो!
6सुनो, क्योंकि मैं शराफ़त की बातें करती हूँ,
और मेरे होंट सच्चाई पेश करते हैं।
7मेरा मुँह सच बोलता है, क्योंकि मेरे होंट
बेदीनी से घिन खाते हैं।
8जो भी बात मेरे मुँह से निकले वह रास्त है,
एक भी पेचदार या टेढ़ी नहीं है।
9समझदार जानता है कि मेरी बातें सब दुरुस्त
हैं, इल्म रखनेवाले को मालूम है कि वह सहीह हैं।
10चाँदी की जगह मेरी तरबियत और ख़ा-
लिस सोने के बजाए इल्मो-इरफ़ान अपना लो।
11क्योंकि हिकमत मोतियों से कहीं बेहतर
है, कोई भी ख़ज़ाना उसका मुक़ाबला नहीं कर
सकता।

12मैं जो हिकमत हूँ होशियारी के साथ बसती
हूँ, और मैं तमीज़ का इल्म रखती हूँ।
13जो रब का ख़ौफ़ मानता है वह बुराई से
नफ़रत करता है। मुझे ग़ुरूर, तकब्बुर, ग़लत
चाल-चलन और टेढ़ी बातों से नफ़रत है।
14मेरे पास अच्छा मशवरा और कामयाबी है।
मेरा दूसरा नाम समझ है, और मुझे क़ुव्वत हासिल
है।
15मेरे वसीले से बादशाह सलतनत और
हुक्मरान रास्त फ़ैसले करते हैं।
16मेरे ज़रीए रईस और शुरफ़ा बल्कि तमाम
आदिल मुंसिफ़ हुकूमत करते हैं।
17जो मुझे प्यार करते हैं उन्हें मैं प्यार करती
हूँ, और जो मुझे ढूँडते हैं वह मुझे पा लेते हैं।
18मेरे पास इज़्ज़तो-दौलत, शानदार माल और
रास्ती है।

19मेरा फल सोने बल्कि ख़ालिस सोने से कहीं
बेहतर है, मेरी पैदावार ख़ालिस चाँदी पर सबक़त
रखती है।
20मैं रास्ती की राह पर ही चलती हूँ, वहीं जहाँ
इनसाफ़ है।
21जो मुझसे मुहब्बत रखते हैं उन्हें मैं मीरास में
दौलत मुहैया करती हूँ। उनके गोदाम भरे रहते हैं।

हिक्मत का तख़लीक़ में हिस्सा

22जब रब तख़लीक़ का सिलसिला अमल में
लाया तो पहले उसने मुझे ही बनाया। क़दीम
ज़माने में मैं उसके दीगर कामों से पहले ही वुजूद
में आई।
23मुझे अज़ल से मुक़र्रर किया गया, इब्तिदा
ही से जब दुनिया अभी पैदा नहीं हुई थी।
24न समुंदर की गहराइयाँ, न कसरत से
फूटनेवाले चश्मे थे जब मैंने जन्म लिया।
25न पहाड़ अपनी अपनी जगह पर क़ायम हुए
थे, न पहाड़ियाँ थीं जब मैं पैदा हुई।
26उस वक़्त अल्लाह ने न ज़मीन, न उसके
मैदान, और न दुनिया के पहले ढेले बनाए थे।
27जब उसने आसमान को उस की जगह पर
लगाया और समुंदर की गहराइयों पर ज़मीन का
इलाक़ा मुक़र्रर किया तो मैं साथ थी।
28जब उसने आसमान पर बादलों और
गहराइयों में सरचश्मों का इंतज़ाम मज़बूत किया
तो मैं साथ थी।
29जब उसने समुंदर की हद्दें मुक़र्रर कीं और
हुक्म दिया कि पानी उनसे तजावुज़ न करे, जब
उसने ज़मीन की बुनियादें अपनी अपनी जगह पर
रखीं
30तो मैं माहिर कारीगर की हैसियत से उसके
साथ थी। रोज़ बरोज़ मैं लुत्फ़ का बाइस थी, हर
वक़्त उसके हुज़ूर रंगरलियाँ मनाती रही।
31मैं उस की ज़मीन की सतह पर रंग-
रलियाँ मनाती और इनसान से लुत्फ़अंदोज़ होती
रही।
32चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो, क्योंकि मुबारक
हैं वह जो मेरी राहों पर चलते हैं।
33मेरी तरबियत मानकर दानिशमंद बन जाओ,
उसे नज़रंदाज़ मत करना।
34मुबारक है वह जो मेरी सुने, जो रोज़ बरोज़
मेरे दरवाज़े पर चौकस खड़ा रहे, रोज़ाना मेरी
चौखट पर हाज़िर रहे।
35क्योंकि जो मुझे पाए वह ज़िंदगी और रब
की मंज़ूरी पाता है।
36लेकिन जो मुझे पाने से क़ासिर रहे वह
अपनी जान पर ज़ुल्म करता है, जो भी मुझसे
नफ़रत करे उसे मौत प्यारी है।”

हिक्मत की ज़ियाफ़त

9 हिकमत ने अपना घर तामीर करके अपने
लिए सात सतून तराश लिए हैं।
2अपने जानवरों को ज़बह करने और अप-
नी मै तैयार करने के बाद उसने अपनी मेज़ बिछाई
है। 3अब उसने अपनी नौकरानियों को भेजा है,
और ख़ुद भी लोगों को शहर की बुलंदियों से
ज़ियाफ़त करने की दावत देती है,
4“जो सादालौह है, वह मेरे पास आए।”
नासमझ लोगों से वह कहती है, 5“आओ, मेरी
रोटी खाओ, वह मै पियो जो मैंने तैयार कर रखी
है। 6अपनी सादालौह राहों से बाज़ आओ तो जीते
रहोगे, समझ की राह पर चल पड़ो।”

7जो लान-तान करनेवाले को तालीम दे उस की
अपनी रुसवाई हो जाएगी, और जो बेदीन को डाँटे
उसे नुक़सान पहुँचेगा। 8लान-तान करनेवाले की
मलामत न कर वरना वह तुझसे नफ़रत करेगा।
दानिशमंद की मलामत कर तो वह तुझसे मुहब्बत
करेगा। 9दानिशमंद को हिदायत दे तो उस की
हिकमत मज़ीद बढ़ेगी, रास्तबाज़ को तालीम दे
तो वह अपने इल्म में इज़ाफ़ा करेगा।
10रब का ख़ौफ़ मानने से ही हिकमत शुरू होती
है, क़ुद्दूस ख़ुदा को जानने से ही समझ हासिल
होती है। 11मुझसे ही तेरी उम्र के दिनों और

सालों में इज़ाफ़ा होगा। 12अगर तू दानिशमंद हो
तो ख़ुद इससे फ़ायदा उठाएगा, अगर लान-तान
करनेवाला हो तो तुझे ही इसका नुक़सान झेलना
पड़ेगा।

हमाक़त बीबी की ज़ियाफ़त

13हमाक़त बीबी बेलगाम और नासमझ है, वह
कुछ नहीं जानती। 14उसका घर शहर की बुलंदी
पर वाक़े है। दरवाज़े के पास कुरसी पर बैठी 15वह
गुज़रनेवालों को जो सीधी राह पर चलते हैं ऊँची
आवाज़ से दावत देती है, 16"जो सादालौह है वह
मेरे पास आए।"

जो नासमझ हैं उनसे वह कहती है, 17"चोरी
का पानी मीठा और पोशीदगी में खाई गई रोटी
लज़ीज़ होती है।"

18लेकिन उन्हें मालूम नहीं कि हमाक़त बीबी
के घर में सिर्फ़ मुरदों की रूहें बसती हैं, कि उसके
मेहमान पाताल की गहराइयों में रहते हैं।

सुलेमान की हिकमत भरी हिदायात

10 ज़ैल में सुलेमान की अमसाल
क़लमबंद हैं।

ज़िंदगीबख़्श बातें

दानिशमंद बेटा अपने बाप को ख़ुशी दिलाता
जबकि अहमक़ बेटा अपनी माँ को दुख पहुँचाता
है।

2ख़ज़ानों का कोई फ़ायदा नहीं अगर वह बेदीन
तरीक़ों से जमा हो गए हों, लेकिन रास्तबाज़ी मौत
से बचाए रखती है।

3रब रास्तबाज़ को भूके मरने नहीं देता, लेकिन
बेदीनों का लालच रोक देता है।

4ढीले हाथ ग़ुरबत और मेहनती हाथ दौलत की
तरफ़ ले जाते हैं।

5जो गरमियों में फ़सल जमा करता है वह
दानिशमंद बेटा है जबकि जो फ़सल की कटाई
के वक़्त सोया रहता है वह वालिदैन के लिए शर्म
का बाइस है।

6रास्तबाज़ का सर बरकत के ताज से आरास्ता
रहता है जबकि बेदीनों के मुँह पर ज़ुल्म का परदा
पड़ा रहता है।

7लोग रास्तबाज़ को याद करके उसे मुबारक
कहते हैं, लेकिन बेदीन का नाम सड़कर मिट
जाएगा।

8जो दिल से दानिशमंद है वह अहकाम क़बूल
करता है, लेकिन बकवासी तबाह हो जाएगा।

9जिसका चाल-चलन बेइलज़ाम है वह सुकून
से ज़िंदगी गुज़ारता है, लेकिन जो टेढ़ा रास्ता
इख़्तियार करे उसे पकड़ा जाएगा।

10आँख मारनेवाला दुख पहुँचाता है, और
बकवासी तबाह हो जाएगा।

11रास्तबाज़ का मुँह ज़िंदगी का सरचश्मा है,
लेकिन बेदीन के मुँह पर ज़ुल्म का परदा पड़ा रहता
है।

12नफ़रत झगड़े छेड़ती रहती जबकि मुहब्बत
तमाम ख़ताओं पर परदा डाल देती है।

13समझदार के होंटों पर हिकमत पाई जाती
है, लेकिन नासमझ सिर्फ़ डंडे का पैग़ाम समझता
है।

14दानिशमंद अपना इल्म महफ़ूज़ रखते हैं,
लेकिन अहमक़ का मुँह जल्द ही तबाही की तरफ़
ले जाता है।

15अमीर की दौलत क़िलाबंद शहर है जिसमें
वह महफ़ूज़ है जबकि ग़रीब की ग़ुरबत उस की
तबाही का बाइस है।

16जो कुछ रास्तबाज़ कमा लेता है वह ज़िंदगी
का बाइस है, लेकिन बेदीन अपनी रोज़ी गुनाह
करने के लिए इस्तेमाल करता है।

17जो तरबियत क़बूल करे वह दूसरों को
ज़िंदगी की राह पर लाता है, जो नसीहत नज़रंदाज़
करे वह दूसरों को सहीह राह से दूर ले जाता है।

18जो अपनी नफ़रत छुपाए रखे वह झूट
बोलता है, जो दूसरों के बारे में ग़लत ख़बरें फैलाए
वह अहमक़ है।

19जहाँ बहुत बातें की जाती हैं वहाँ गुनाह भी
आ मौजूद होता है, जो अपनी ज़बान को क़ाबू में
रखे वह दानिशमंद है।
20रास्तबाज़ की ज़बान उम्दा चाँदी है जबकि
बेदीन के दिल की कोई क़दर नहीं।
21रास्तबाज़ की ज़बान बहुतों की परवरिश
करती है,[a] लेकिन अहमक़ अपनी बेअक़्ली के
बाइस हलाक हो जाते हैं।
22रब की बरकत दौलत का बाइस है,
हमारी अपनी मेहनत-मशक़्क़त इसमें इज़ा-
फ़ा नहीं करती।
23अहमक़ ग़लत काम से अपना दिल
बहलाता, लेकिन समझदार हिकमत से
लुत्फ़अंदोज़ होता है।
24जिस चीज़ से बेदीन दहशत खाता है वही उस
पर आएगी, लेकिन रास्तबाज़ की आरज़ू पूरी हो
जाएगी।
25जब तूफ़ान आते हैं तो बेदीन का नामो-
निशान मिट जाता जबकि रास्तबाज़ हमेशा तक
क़ायम रहता है।
26जिस तरह दाँत सिरके से और आँखें धुएँ से
तंग आ जाती हैं उसी तरह वह तंग आ जाता है
जो सुस्त आदमी से काम करवाता है।
27जो रब का ख़ौफ़ माने उस की ज़िंदगी के
दिनों में इज़ाफ़ा होता है जबकि बेदीन की ज़िंदगी
वक़्त से पहले ही ख़त्म हो जाती है।
28रास्तबाज़ आख़िरकार ख़ुशी मनाएँगे,
क्योंकि उनकी उम्मीद बर आएगी। लेकिन बेदीनों
की उम्मीद जाती रहेगी।
29रब की राह बेइलज़ाम शख़्स के लिए
पनाहगाह, लेकिन बदकार के लिए तबाही का
बाइस है।
30रास्तबाज़ कभी डाँवाँडोल नहीं होगा, लेकिन
बेदीन मुल्क में आबाद नहीं रहेंगे।
31रास्तबाज़ का मुँह हिकमत का फल लाता
रहता है, लेकिन कजगो ज़बान को काट डाला
जाएगा।
32रास्तबाज़ के होंट जानते हैं कि अल्लाह को
क्या पसंद है, लेकिन बेदीन का मुँह टेढ़ी बातें ही
जानता है।

11 रब ग़लत तराज़ू से घिन खाता है, वह
सहीह तराज़ू ही से ख़ुश होता है।
2जहाँ तकब्बुर है वहाँ बदनामी भी क़रीब ही
रहती है, लेकिन जो हलीम है उसके दामन में
हिकमत रहती है।
3सीधी राह पर चलनेवालों की दिया-
नतदारी उनकी राहनुमाई करती जबकि बेवफ़ाओं
की नमकहरामी उन्हें तबाह करती है।
4ग़ज़ब के दिन दौलत का कोई फ़ायदा नहीं
जबकि रास्तबाज़ी लोगों की जान को छुड़ाती है।
5बेइलज़ाम की रास्तबाज़ी उसका रास्ता
हमवार बना देती है जबकि बेदीन की बुरी हरकतें
उसे गिरा देती हैं।
6सीधी राह पर चलनेवालों की रास्तबाज़ी उन्हें
छुड़ा देती जबकि बेवफ़ाओं का लालच उन्हें फँसा
देता है।
7दम तोड़ते वक़्त बेदीन की सारी उम्मीद जाती
रहती है, जिस दौलत की तवक़्क़ो उसने की वह
जाती रहती है।
8रास्तबाज़ की जान मुसीबत से छूट जाती है,
और उस की जगह बेदीन फँस जाता है।
9काफ़िर अपने मुँह से अपने पड़ोसी को तबाह
करता है, लेकिन रास्तबाज़ों का इल्म उन्हें छुड़ाता
है।
10जब रास्तबाज़ कामयाब हों तो पूरा शहर
जशन मनाता है, जब बेदीन हलाक हों तो ख़ुशी
के नारे बुलंद हो जाते हैं।
11सीधी राह पर चलनेवालों की बरकत से शहर
तरक़्क़ी करता है, लेकिन बेदीन के मुँह से वह
मिसमार हो जाता है।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : रास्तबाज़ के होंट बहुतों को चराते हैं।

12नासमझ आदमी अपने पड़ोसी को हक़ीर
जानता है जबकि समझदार आदमी ख़ामोश रहता
है।
13तोहमत लगानेवाला दूसरों के राज़ फ़ाश
करता है, लेकिन क़ाबिले-एतमाद शख़्स वह भेद
पोशीदा रखता है जो उसके सुपुर्द किया गया हो।
14जहाँ क़ियादत की कमी है वहाँ क़ौम का
तनज़्ज़ुल यक़ीनी है, जहाँ मुशीरों की कसरत है
वहाँ क़ौम फ़तहयाब रहेगी।
15जो अजनबी का ज़ामिन हो जाए उसे
यक़ीनन नुक़सान पहुँचेगा, जो ज़ामिन बनने से
इनकार करे वह महफ़ूज़ रहेगा।
16नेक औरत इज़्ज़त से और ज़ालिम आदमी
दौलत से लिपटे रहते हैं।
17शफ़ीक़ का अच्छा सुलूक उसी के लिए
फ़ायदामंद है जबकि ज़ालिम का बुरा सुलूक उसी
के लिए नुक़सानदेह है।
18जो कुछ बेदीन कमाता है वह फ़रेबदेह है,
लेकिन जो रास्ती का बीज बोए उसका अज्र
यक़ीनी है।
19रास्तबाज़ी का फल ज़िंदगी है जबकि बुराई
के पीछे भागनेवाले का अंजाम मौत है।
20रब कजदिलों से घिन खाता है, वह
बेइलज़ाम राह पर चलनेवालों ही से ख़ुश होता
है।
21यक़ीन करो, बदकार सज़ा से नहीं बचेगा
जबकि रास्तबाज़ों के फ़रज़ंद छूट जाएंगे।
22जिस तरह सुअर की थूथनी में सोने का
छल्ला खटकता है उसी तरह ख़ूबसूरत औरत की
बेतमीज़ी खटकती है।
23अल्लाह रास्तबाज़ों की आरज़ू अच्छी चीज़ों
से पूरी करता है, लेकिन उसका ग़ज़ब बेदीनों की
उम्मीद पर नाज़िल होता है।
24एक आदमी की दौलत में इज़ाफ़ा होता है,
गो वह फ़ैयाज़दिली से तक़सीम करता है। दूसरे
की ग़ुरबत में इज़ाफ़ा होता है, गो वह हद से ज़्यादा
कंजूस है।
25फ़ैयाज़दिल ख़ुशहाल रहेगा, जो दूसरों को
तरो-ताज़ा करे वह ख़ुद ताज़ादम रहेगा।
26लोग गंदुम के ज़ख़ीराअंदोज़ पर लानत
भेजते हैं, लेकिन जो गंदुम को बाज़ार में आने
देता है उसके सर पर बरकत आती है।
27जो भलाई की तलाश में रहे वह अल्लाह की
मंज़ूरी चाहता है, लेकिन जो बुराई की तलाश में
रहे वह ख़ुद बुराई के फंदे में फँस जाएगा।
28जो अपनी दौलत पर भरोसा रखे वह गिर
जाएगा, लेकिन रास्तबाज़ हरे-भरे पत्तों की तरह
फलें-फूलेंगे।
29जो अपने घर में गड़बड़ पैदा करे वह मीरास
में हवा ही पाएगा। अहमक़ दानिशमंद का नौकर
बनेगा।
30रास्तबाज़ का फल ज़िंदगी का दरख़्त है,
और दानिशमंद आदमी जानें जीतता है।
31रास्तबाज़ को ज़मीन पर ही अज्र मिलता है।
तो फिर बेदीन और गुनाहगार सज़ा क्यों न पाएँ?

12 जिसे इल्मो-इरफ़ान प्यारा है उसे
तरबियत भी प्यारी है, जिसे नसीहत
से नफ़रत है वह बेअक़्ल है।
2रब अच्छे आदमी से ख़ुश होता है जबकि वह
साज़िश करनेवाले को क़ुसूरवार ठहराता है।
3इनसान बेदीनी की बुनियाद पर क़ायम नहीं
रह सकता जबकि रास्तबाज़ की जड़ें उखाड़ी नहीं
जा सकतीं।
4सुघड़ बीवी अपने शौहर का ताज है, लेकिन
जो शौहर की रुसवाई का बाइस है वह उस की
हड्डियों में सड़ाहट की मानिंद है।
5रास्तबाज़ के ख़यालात मुंसिफ़ाना हैं जबकि
बेदीनों के मनसूबे फ़रेबदेह हैं।
6बेदीनों के अलफ़ाज़ लोगों को क़त्ल करने की
ताक में रहते हैं जबकि सीधी राह पर चलनेवालों
की बातें लोगों को छुड़ा लेती हैं।
7बेदीनों को ख़ाक में यों मिलाया जाता है
कि उनका नामो-निशान तक नहीं रहता, लेकिन
रास्तबाज़ का घर क़ायम रहता है।

8किसी की जितनी अक़्लो-समझ है उतना ही
लोग उस की तारीफ़ करते हैं, लेकिन जिसके
ज़हन में फ़ुतूर है उसे हक़ीर जाना जाता है।
9निचले तबक़े का जो आदमी अपनी
ज़िम्मेदारियाँ अदा करता है वह उस आदमी से
कहीं बेहतर है जो नख़रा बघारता है गो उसके
पास रोटी भी नहीं है।
10रास्तबाज़ अपने मवेशी का भी ख़याल
करता है जबकि बेदीन का दिल ज़ालिम ही
ज़ालिम है।
11जो अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी करे उसके
पास कसरत का खाना होगा, लेकिन जो फ़ज़ूल
चीज़ों के पीछे पड़ जाए वह नासमझ है।
12बेदीन दूसरों को जाल में फँसाने से अपना
दिल बहलाता है, लेकिन रास्तबाज़ की जड़
फलदार होती है।
13शरीर अपनी ग़लत बातों के जाल में उलझ
जाता जबकि रास्तबाज़ मुसीबत से बच जाता है।
14इनसान अपने मुँह के फल से ख़ूब सेर हो
जाता है, और जो काम उसके हाथों ने किया
उसका अज्र उसे ज़रूर मिलेगा।
15अहमक़ की नज़र में उस की अपनी राह ठीक
है, लेकिन दानिशमंद दूसरों के मशवरे पर ध्यान
देता है।
16अहमक़ एकदम अपनी नाराज़ी का इज़हार
करता है, लेकिन दाना अपनी बदनामी छुपाए
रखता है।
17दियानतदार गवाह खुले तौर पर सच्चाई
बयान करता है जबकि झूटा गवाह धोका ही धोका
पेश करता है।
18गप्पें हाँकनेवाले की बातें तलवार की तरह
ज़ख़मी कर देती हैं जबकि दानिशमंद की ज़बान
शफ़ा देती है।
19सच्चे होंट हमेशा तक क़ायम रहते हैं जबकि
झूटी ज़बान एक ही लमहे के बाद ख़त्म हो जाती
है।
20बुरे मनसूबे बाँधनेवाले का दिल धोके से भरा
रहता जबकि सलामती के मशवरे देनेवाले का
दिल ख़ुशी से छलकता है।
21कोई भी आफ़त रास्तबाज़ पर नहीं आएगी
जबकि दुख तकलीफ़ बेदीनों का दामन कभी नहीं
छोड़ेगी।
22रब फ़रेबदेह होंटों से घिन खाता है, लेकिन
जो वफ़ादारी से ज़िंदगी गुज़ारते हैं उनसे वह ख़ुश
होता है।
23समझदार अपना इल्म छुपाए रखता जबकि
अहमक़ अपने दिल की हमाक़त बुलंद आवाज़ से
सबको पेश करता है।
24जिसके हाथ मेहनती हैं वह हुकूमत करेगा,
लेकिन जिसके हाथ ढीले हैं उसे बेगार में काम
करना पड़ेगा।
25जिसके दिल में परेशानी है वह दबा रहता है,
लेकिन कोई भी अच्छी बात उसे ख़ुशी दिलाती
है।
26रास्तबाज़ अपनी चरागाह मालूम कर लेता
है, लेकिन बेदीनों की राह उन्हें आवारा फिरने देती
है।
27ढीला आदमी अपना शिकार नहीं पकड़
सकता जबकि मेहनती शख़्स कसरत का माल
हासिल कर लेता है।
28रास्ती की राह में ज़िंदगी है, लेकिन ग़लत
राह मौत तक पहुँचाती है।

13 दानिशमंद बेटा अपने बाप की
तरबियत क़बूल करता है, लेकिन
तानाज़न परवा ही नहीं करता अगर कोई उसे
डाँटे।
2इनसान अपने मुँह के अच्छे फल से ख़ूब सेर
हो जाता है, लेकिन बेवफ़ा के दिल में ज़ुल्म का
लालच रहता है।
3जो अपनी ज़बान क़ाबू में रखे वह अपनी
ज़िंदगी महफ़ूज़ रखता है, जो अपनी ज़बान को
बेलगाम छोड़ दे वह तबाह हो जाएगा।

4काहिल आदमी लालच करता है, लेकिन उसे
कुछ नहीं मिलता जबकि मेहनती शख़्स की आरज़ू
पूरी हो जाती है।
5रास्तबाज़ झूट से नफ़रत करता है, लेकिन
बेदीन शर्म और रुसवाई का बाइस है।
6रास्ती बेइलज़ाम की हिफ़ाज़त करती जबकि
बेदीनी गुनाहगार को तबाह कर देती है।
7कुछ लोग अमीर का रूप भरकर फिरते हैं गो
ग़रीब हैं। दूसरे ग़रीब का रूप भरकर फिरते हैं गो
अमीरतरीन हैं।
8कभी अमीर को अपनी जान छुड़ाने के लिए
ऐसा तावान देना पड़ता है कि तमाम दौलत जाती
रहती है, लेकिन ग़रीब की जान इस क़िस्म की
धमकी से बची रहती है।
9रास्तबाज़ की रौशनी चमकती रहती[a] जबकि
बेदीन का चराग़ बुझ जाता है।
10मग़रूरों में हमेशा झगड़ा होता है जबकि
दानिशमंद सलाह-मशवरे के मुताबिक़ ही चलते
हैं।
11जल्दबाज़ी से हासिलशुदा दौलत जल्द ही
ख़त्म हो जाती है जबकि जो रफ़्ता रफ़्ता अपना
माल जमा करे वह उसे बढ़ाता रहेगा।
12जो उम्मीद वक़्त पर पूरी न हो जाए वह दिल
को बीमार कर देती है, लेकिन जो आरज़ू पूरी हो
जाए वह ज़िंदगी का दरख़्त है।
13जो अच्छी हिदायत को हक़ीर जाने उसे
नुक़सान पहुँचेगा, लेकिन जो हुक्म माने उसे अज्र
मिलेगा।
14दानिशमंद की हिदायत ज़िंदगी का सरचश्मा
है जो इनसान को मोहलक फंदों से बचाए रखती
है।
15अच्छी समझ मंज़ूरी अता करती है, लेकिन
बेवफ़ा की राह अबदी तबाही का बाइस है।
16ज़हीन हर काम सोच-समझकर करता,
लेकिन अहमक़ तमाम नज़रों के सामने ही अपनी
हमाक़त की नुमाइश करता है।
17बेदीन क़ासिद मुसीबत में फँस जाता जबकि
वफ़ादार क़ासिद शफ़ा का बाइस है।
18जो तरबियत की परवा न करे उसे ग़ुरबत
और शरमिंदगी हासिल होगी, लेकिन जो दूसरे
की नसीहत मान जाए उसका एहतराम किया
जाएगा।
19जो आरज़ू पूरी हो जाए वह दिल को तरो-
ताज़ा करती है, लेकिन अहमक़ बुराई से दरेग़
करने से घिन खाता है।
20जो दानिशमंदों के साथ चले वह ख़ुद
दानिशमंद हो जाएगा, लेकिन जो अहमक़ों के
साथ चले उसे नुक़सान पहुँचेगा।
21मुसीबत गुनाहगार का पीछा करती है जबकि
रास्तबाज़ों का अज्र ख़ुशहाली है।
22नेक आदमी के बेटे और पोते उस की मीरास
पाएँगे, लेकिन गुनाहगार की दौलत रास्तबाज़ के
लिए महफ़ूज़ रखी जाएगी।
23ग़रीब का खेत कसरत की फ़सलें मुहैया कर
सकता है, लेकिन जहाँ इनसाफ़ नहीं वहाँ सब
कुछ छीन लिया जाता है।
24जो अपने बेटे को तंबीह नहीं करता वह
उससे नफ़रत करता है। जो उससे मुहब्बत रखे
वह वक़्त पर उस की तरबियत करता है।
25रास्तबाज़ जी भरकर खाना खाता है, लेकिन
बेदीन का पेट ख़ाली रहता है।

14 हिकमत बीबी अपना घर तामीर
करती है, लेकिन हमाक़त बीबी अपने
ही हाथों से उसे ढा देती है।
2जो सीधी राह पर चलता है वह अल्लाह का
ख़ौफ़ मानता है, लेकिन जो ग़लत राह पर चलता
है वह उसे हक़ीर जानता है।
3अहमक़ की बातों से वह डंडा निकलता है
जो उसे उसके तकब्बुर की सज़ा देता है, लेकिन
दानिशमंद के होंट उसे महफ़ूज़ रखते हैं।
4जहाँ बैल नहीं वहाँ चरनी ख़ाली रहती है, बैल
की ताक़त ही से कसरत की फ़सलें पैदा होती हैं।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : ख़ुशी मनाती।

5वफ़ादार गवाह झूट नहीं बोलता, लेकिन झूटे
गवाह के मुँह से झूट निकलता है।
6तानाज़न हिकमत को ढूँडता है, लेकिन
बेफ़ायदा। समझदार के इल्म में आसानी से
इज़ाफ़ा होता है।
7अहमक़ से दूर रह, क्योंकि तू उस की बातों
में इल्म नहीं पाएगा।
8ज़हीन की हिकमत इसमें है कि वह सोच-
समझकर अपनी राह पर चले, लेकिन अहमक़
की हमाक़त सरासर धोका ही है।
9अहमक़ अपने क़ुसूर का मज़ाक़ उड़ाते हैं,
लेकिन सीधी राह पर चलनेवाले रब को मंज़ूर हैं।
10हर दिल की अपनी ही तलख़ी होती है
जिससे सिर्फ़ वही वाक़िफ़ है, और उस की ख़ुशी
में भी कोई और शरीक नहीं हो सकता।
11बेदीन का घर तबाह हो जाएगा, लेकिन
सीधी राह पर चलनेवाले का ख़ैमा फले-फूलेगा।
12ऐसी राह भी होती है जो देखने में ठीक तो
लगती है गो उसका अंजाम मौत है।
13दिल हँसते वक़्त भी रंजीदा हो सकता है,
और ख़ुशी के इख़्तिताम पर दुख ही बाक़ी रह
जाता है।
14जिसका दिल बेवफ़ा है वह जी भरकर अपने
चाल-चलन का कड़वा फल खाएगा जबकि नेक
आदमी अपने आमाल के मीठे फल से सेर हो
जाएगा।
15सादालौह हर एक की बात मान लेता है
जबकि ज़हीन आदमी अपना हर क़दम सोच-
समझकर उठाता है।
16दानिशमंद डरते डरते ग़लत काम से दरेग़
करता है, लेकिन अहमक़ ख़ुदएतमाद है और
एकदम मुश्तइल हो जाता है।
17ग़ुसीला आदमी अहमक़ाना हरकतें कर-
ता है, और लोग साज़िशी शख़्स से नफ़रत करते
हैं।
18सादालौह मीरास में हमाक़त पाता है जबकि
ज़हीन आदमी का सर इल्म के ताज से आरास्ता
रहता है।
19शरीरों को नेकों के सामने झुकना पड़ेगा,
और बेदीनों को रास्तबाज़ के दरवाज़े पर औंधे
मुँह होना पड़ेगा।
20ग़रीब के हमसाये भी उससे नफ़रत करते हैं
जबकि अमीर के बेशुमार दोस्त होते हैं।
21जो अपने पड़ोसी को हक़ीर जाने वह गुनाह
करता है। मुबारक है वह जो ज़रूरतमंद पर तरस
खाता है।
22बुरे मनसूबे बाँधनेवाले सब आवारा फिरते
हैं। लेकिन अच्छे मनसूबे बाँधनेवाले शफ़क़त और
वफ़ा पाएँगे।
23मेहनत-मशक़्क़त करने में हमेशा फ़ाय-
दा होता है, जबकि ख़ाली बातें करने से लोग ग़रीब
हो जाते हैं।
24दानिशमंदों का अज्र दौलत का ताज है
जबकि अहमक़ों का अज्र हमाक़त ही है।
25सच्चा गवाह जानें बचाता है जबकि झूटा
गवाह फ़रेबदेह है।
26जो रब का ख़ौफ़ माने उसके पास महफ़ूज़
क़िला है जिसमें उस की औलाद भी पनाह ले
सकती है।
27रब का ख़ौफ़ ज़िंदगी का सरचश्मा है जो
इनसान को मोहलक फंदों से बचाए रखता है।
28जितनी आबादी मुल्क में है उतनी ही
बादशाह की शानो-शौकत है। रिआया की कमी
हुक्मरान के तनज़्ज़ुल का बाइस है।
29तहम्मुल करनेवाला बड़ी समझदारी का
मालिक है, लेकिन ग़ुसीला आदमी अपनी
हमाक़त का इज़हार करता है।
30पुरसुकून दिल जिस्म को ज़िंदगी दिला-
ता जबकि हसद हड्डियों को गलने देता है।
31जो पस्तहाल पर ज़ुल्म करे वह उसके
ख़ालिक़ की तहक़ीर करता है जबकि जो
ज़रूरतमंद पर तरस खाए वह अल्लाह का
एहतराम करता है।
32बेदीन की बुराई उसे ख़ाक में मिला देती है,
लेकिन रास्तबाज़ मरते वक़्त भी अल्लाह में पनाह
लेता है।

33हिकमत समझदार के दिल में आराम करती
है, और वह अहमक़ों के दरमियान भी ज़ाहिर हो
जाती है।
34रास्ती से हर क़ौम सरफ़राज़ होती है जबकि
गुनाह से उम्मतें रुसवा हो जाती हैं।
35बादशाह दानिशमंद मुलाज़िम से ख़ुश होता
है, लेकिन शर्मनाक काम करनेवाला मुलाज़िम
उसके ग़ुस्से का निशाना बन जाता है।

15 नरम जवाब ग़ुस्सा ठंडा करता,
लेकिन तुरश बात तैश दिलाती है।
2दानिशमंदों की ज़बान इल्मो-इरफ़ान फैलाती
है जबकि अहमक़ का मुँह हमाक़त का ज़ोर से
उबलनेवाला चश्मा है।
3रब की आँखें हर जगह मौजूद हैं, वह बुरे और
भले सब पर ध्यान देती हैं।
4नरम ज़बान ज़िंदगी का दरख़्त है जबकि
फ़रेबदेह ज़बान शिकस्तादिल कर देती है।
5अहमक़ अपने बाप की तरबियत को हक़ीर
जानता है, लेकिन जो नसीहत माने वह दानिशमंद
है।
6रास्तबाज़ के घर में बड़ा ख़ज़ाना होता है,
लेकिन जो कुछ बेदीन हासिल करता है वह तबाही
का बाइस है।
7दानिशमंदों के होंट इल्मो-इरफ़ान का बीज
बिखेर देते हैं, लेकिन अहमक़ों का दिल ऐसा नहीं
करता।
8रब बेदीनों की क़ुरबानी से घिन खाता, लेकिन
सीधी राह पर चलनेवालों की दुआ से ख़ुश होता
है।
9रब बेदीन की राह से घिन खाता, लेकिन
रास्ती का पीछा करनेवाले से प्यार करता है।
10जो सहीह राह को तर्क करे उस की सख़्त
तादीब की जाएगी, जो नसीहत से नफ़रत करे
वह मर जाएगा।
11पाताल और आलमे-अरवाह रब को साफ़
नज़र आते हैं। तो फिर इनसानों के दिल उसे क्यों
न साफ़ दिखाई दें?
12तानाज़न को दूसरों की नसीहत पसंद नहीं
आती, इसलिए वह दानिशमंदों के पास नहीं
जाता।
13जिसका दिल ख़ुश है उसका चेहरा खुला
रहता है, लेकिन जिसका दिल परेशान है उस की
रूह शिकस्ता रहती है।
14समझदार का दिल इल्मो-इरफ़ान की तलाश
में रहता, लेकिन अहमक़ हमाक़त की चरागाह में
चरता रहता है।
15मुसीबतज़दा के तमाम दिन बुरे हैं, लेकिन
जिसका दिल ख़ुश है वह रोज़ाना जशन मनाता
है।
16जो ग़रीब रब का ख़ौफ़ मानता है उसका हाल
उस करोड़पति से कहीं बेहतर है जो बड़ी बेचैनी
से ज़िंदगी गुज़ारता है।
17जहाँ मुहब्बत है वहाँ सब्ज़ी का सालन बहुत
है, जहाँ नफ़रत है वहाँ मोटे-ताज़े बछड़े की
ज़ियाफ़त भी बेफ़ायदा है।
18ग़ुसीला आदमी झगड़े छेड़ता रहता जबकि
तहम्मुल करनेवाला लोगों के ग़ुस्से को ठंडा कर
देता है।
19काहिल का रास्ता काँटेदार बाड़ की मानिंद
है, लेकिन दियानतदारों की राह पक्की सड़क ही
है।
20दानिशमंद बेटा अपने बाप के लिए ख़ुशी का
बाइस है, लेकिन अहमक़ अपनी माँ को हक़ीर
जानता है।
21नासमझ आदमी हमाक़त से लुत्फ़-
अंदोज़ होता, लेकिन समझदार आदमी सीधी
राह पर चलता है।
22जहाँ सलाह-मशवरा नहीं होता वहाँ मनसूबे
नाकाम रह जाते हैं, जहाँ बहुत-से मुशीर होते हैं
वहाँ कामयाबी होती है।
23इनसान मौज़ूँ जवाब देने से ख़ुश हो जाता है,
वक़्त पर मुनासिब बात कितनी अच्छी होती है।
24ज़िंदगी की राह चढ़ती रहती है ताकि
समझदार उस पर चलते हुए पाताल में उतरने से
बच जाए।

25रब मुतकब्बिर का घर ढा देता, लेकिन बेवा
की ज़मीन की हुदूद महफ़ूज़ रखता है।
26रब बुरे मनसूबों से घिन खाता है, और
मेहरबान अलफ़ाज़ उसके नज़दीक पाक हैं।
27जो नाजायज़ नफ़ा कमाए वह अपने घर पर
आफ़त लाता है, लेकिन जो रिश्वत से नफ़रत रखे
वह जीता रहेगा।
28रास्तबाज़ का दिल सोच-समझकर जवाब
देता है, लेकिन बेदीन का मुँह ज़ोर से उबलनेवाला
चश्मा है जिससे बुरी बातें निकलती रहती हैं।
29रब बेदीनों से दूर रहता, लेकिन रास्त-
बाज़ की दुआ सुनता है।
30चमकती आँखें दिल को ख़ुशी दिलाती हैं,
अच्छी ख़बर पूरे जिस्म को तरो-ताज़ा कर देती
है।
31जो ज़िंदगीबख़्श नसीहत पर ध्यान दे वह
दानिशमंदों के दरमियान ही सुकूनत करेगा।
32जो तरबियत की परवा न करे वह अपने
आपको हक़ीर जानता है, लेकिन जो नसीहत पर
ध्यान दे उस की समझ में इज़ाफ़ा होता है।
33रब का ख़ौफ़ ही वह तरबियत है जिससे
इनसान हिकमत सीखता है। पहले फ़रोतनी
अपना ले, क्योंकि यही इज़्ज़त पाने का पहला
क़दम है।

16 इनसान दिल में मनसूबे बाँधता है,
लेकिन ज़बान का जवाब रब की तरफ़
से आता है।
2इनसान की नज़र में उस की तमाम राहें पाक-
साफ़ हैं, लेकिन रब ही रूहों की जाँच-पड़ताल
करता है।
3जो कुछ भी तू करना चाहे उसे रब के सुपुर्द
कर। तब ही तेरे मनसूबे कामयाब होंगे।
4रब ने सब कुछ अपने ही मक़ासिद पूरे करने
के लिए बनाया है। वह दिन भी पहले से मुक़र्रर है
जब बेदीन पर आफ़त आएगी।
5रब हर मग़रूर दिल से घिन खाता है। यक़ीनन
वह सज़ा से नहीं बचेगा।
6शफ़क़त और वफ़ादारी गुनाह का कफ़्फ़ारा
देती हैं। रब का ख़ौफ़ मानने से इनसान बुराई से
दूर रहता है।
7अगर रब किसी इनसान की राहों से ख़ुश हो
तो वह उसके दुश्मनों को भी उससे सुलह कराने
देता है।
8इनसाफ़ से थोड़ा-बहुत कमाना नाइन-
साफ़ी से बहुत दौलत जमा करने से कहीं बेहतर
है।
9इनसान अपने दिल में मनसूबे बाँधता रहता है,
लेकिन रब ही मुक़र्रर करता है कि वह आख़िरकार
किस राह पर चल पड़े।
10बादशाह के होंट गोया इलाही फ़ैसले पेश
करते हैं, उसका मुँह अदालत करते वक़्त बेवफ़ा
नहीं होता।
11रब दुरुस्त तराज़ू का मालिक है, उसी ने
तमाम बाटों का इंतज़ाम क़ायम किया।
12बादशाह बेदीनी से घिन खाता है, क्योंकि
उसका तख़्त रास्तबाज़ी की बुनियाद पर मज़बूत
रहता है।
13बादशाह रास्तबाज़ होंटों से ख़ुश होता और
साफ़ बात करनेवाले से मुहब्बत रखता है।
14बादशाह का ग़ुस्सा मौत का पेशख़ैमा है,
लेकिन दानिशमंद उसे ठंडा करने के तरीक़े
जानता है।
15जब बादशाह का चेहरा खिल उठे तो मतलब
ज़िंदगी है। उस की मंज़ूरी मौसमे-बहार के तरो-
ताज़ा करनेवाले बादल की मानिंद है।
16हिकमत का हुसूल सोने से कहीं बेहतर और
समझ पाना चाँदी से कहीं बढ़कर है।
17दियानतदार की मज़बूत राह बुरे काम से दूर
रहती है, जो अपनी राह की पहरादारी करे वह
अपनी जान बचाए रखता है।
18तबाही से पहले ग़ुरूर और गिरने से पहले
तकब्बुर आता है।
19फ़रोतनी से ज़रूरतमंदों के दरमियान बसना
घमंडियों के लूटे हुए माल में शरीक होने से कहीं
बेहतर है।

20जो कलाम पर ध्यान दे वह ख़ुशहाल होगा,
मुबारक है वह जो रब पर भरोसा रखे।
21जो दिल से दानिशमंद है उसे समझदार
क़रार दिया जाता है, और मीठे अलफ़ाज़ तालीम
में इज़ाफ़ा करते हैं।
22फ़हम अपने मालिक के लिए ज़िंदगी का
सरचश्मा है, लेकिन अहमक़ की अपनी ही
हमाक़त उसे सज़ा देती है।
23दानिशमंद का दिल समझ की बातें ज़बान
पर लाता और तालीम देने में होंटों का सहारा
बनता है।
24मेहरबान अलफ़ाज़ ख़ालिस शहद हैं, वह
जान के लिए शीरीं और पूरे जिस्म को तरो-ताज़ा
कर देते हैं।
25ऐसी राह भी होती है जो देखने में तो ठीक
लगती है गो उसका अंजाम मौत है।
26मज़दूर का ख़ाली पेट उसे काम करने पर
मजबूर करता, उस की भूक उसे हाँकती रहती
है।
27शरीर कुरेद कुरेदकर ग़लत काम नि-
काल लेता, उसके होंटों पर झुलसानेवाली आग
रहती है।
28कजरौ आदमी झगड़े छेड़ता रहता, और
तोहमत लगानेवाला दिली दोस्तों में भी रख़ना
डालता है।
29ज़ालिम अपने पड़ोसी को वरग़लाकर ग़लत
राह पर ले जाता है।
30जो आँख मारे वह ग़लत मनसूबे बाँध रहा
है, जो अपने होंट चबाए वह ग़लत काम करने पर
तुला हुआ है।
31सफ़ेद बाल एक शानदार ताज हैं जो
रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारने से हासिल होते हैं।
32तहम्मुल करनेवाला सूरमे से सबक़त लेता
है, जो अपने आपको क़ाबू में रखे वह शहर को
शिकस्त देनेवाले से बरतर है।
33इनसान तो क़ुरा डालता है, लेकिन उसका
हर फ़ैसला रब की तरफ़ से है।

17 जिस घर में रोटी का बासी टुकड़ा
सुकून के साथ खाया जाए वह उस घर
से कहीं बेहतर है जिसमें लड़ाई-झगड़ा है, ख़ाह
उसमें कितनी शानदार ज़ियाफ़त क्यों न हो रही
हो।
2समझदार मुलाज़िम मालिक के उस बेटे पर
क़ाबू पाएगा जो शर्म का बाइस है, और जब
भाइयों में मौरूसी मिलकियत तक़सीम की जाए
तो उसे भी हिस्सा मिलेगा।
3सोना-चाँदी कुठाली में पिघलाकर पाक-साफ़
की जाती है, लेकिन रब ही दिल की जाँच-पड़ताल
करता है।
4बदकार शरीर होंटों पर ध्यान और धोके-
बाज़ तबाहकुन ज़बान पर तवज्जुह देता है।
5जो ग़रीब का मज़ाक़ उड़ाए वह उसके
ख़ालिक़ की तहक़ीर करता है, जो दूसरे की
मुसीबत देखकर ख़ुश हो जाए वह सज़ा से नहीं
बचेगा।
6पोते बूढ़ों का ताज और वालिदैन अपने बच्चों
के ज़ेवर हैं।
7अहमक़ के लिए बड़ी बड़ी बातें करना मौज़ूँ
नहीं, लेकिन शरीफ़ होंटों पर फ़रेब कहीं ज़्यादा
ग़ैरमुनासिब है।
8रिश्वत देनेवाले की नज़र में रिश्वत जादू की
मानिंद है। जिस दरवाज़े पर भी खटखटाए वह
खुल जाता है।
9जो दूसरे की ग़लती को दरगुज़र करे वह
मुहब्बत को फ़रोग़ देता है, लेकिन जो माज़ी
की ग़लतियाँ दोहराता रहे वह क़रीबी दोस्तों में
निफ़ाक़ पैदा करता है।
10अगर समझदार को डाँटा जाए तो वह ख़ूब
सीख लेता है, लेकिन अगर अहमक़ को सौ बार
मारा जाए तो भी वह इतना नहीं सीखता।
11शरीर सरकशी पर तुला रहता है, लेकिन
उसके ख़िलाफ़ ज़ालिम क़ासिद भेजा जाएगा।

12जो अहमक़ अपनी हमाक़त में उलझा हुआ
हो उससे दरेग़ कर, क्योंकि उससे मिलने से बेहतर
यह है कि तेरा उस रीछनी से वास्ता पड़े जिसके
बच्चे उससे छीन लिए गए हों।
13जो भलाई के एवज़ बुराई करे उसके घर से
बुराई कभी दूर नहीं होगी।
14लड़ाई-झगड़ा छेड़ना बंद में रख़ना डालने के
बराबर है। इससे पहले कि मुक़दमाबाज़ी शुरू हो
उससे बाज़ आ।
15जो बेदीन को बेक़ुसूर और रास्तबाज़ को
मुजरिम ठहराए उससे रब घिन खाता है।
16अहमक़ के हाथ में पैसों का क्या फ़ायदा है?
क्या वह हिकमत ख़रीद सकता है जबकि उसमें
अक़्ल नहीं? हरगिज़ नहीं!
17पड़ोसी वह है जो हर वक़्त मुहब्बत रखता
है, भाई वह है जो मुसीबत में सहारा देने के लिए
पैदा हुआ है।
18जो हाथ मिलाकर अपने पड़ोसी का ज़ामिन
होने का वादा करे वह नासमझ है।
19जो लड़ाई-झगड़े से मुहब्बत रखे वह गुनाह
से मुहब्बत रखता है, जो अपना दरवाज़ा हद से
ज़्यादा बड़ा बनाए वह तबाही को दाख़िल होने की
दावत देता है।
20जिसका दिल टेढ़ा है वह ख़ुशहाली नहीं
पाएगा, और जिसकी ज़बान चालाक है वह
मुसीबत में उलझ जाएगा।
21जिसके हाँ अहमक़ बेटा पैदा हो जाए उसे
दुख पहुँचता है, और अक़्ल से ख़ाली बेटा बाप के
लिए ख़ुशी का बाइस नहीं होता।
22ख़ुशबाश दिल पूरे जिस्म को शफ़ा देता है,
लेकिन शिकस्ता रूह हड्डियों को ख़ुश्क कर देती
है।
23बेदीन चुपके से रिश्वत लेकर इनसाफ़ की
राहों को बिगाड़ देता है।
24समझदार अपनी नज़र के सामने हिक-
मत रखता है, लेकिन अहमक़ की नज़रें दुनिया
की इंतहा तक आवारा फिरती हैं।
25अहमक़ बेटा बाप के लिए रंज का बाइस
और माँ के लिए तलख़ी का सबब है।
26बेक़ुसूर पर जुरमाना लगाना ग़लत है, और
शरीफ़ को उस की दियानतदारी के सबब से कोड़े
लगाना बुरा है।
27जो अपनी ज़बान को क़ाबू में रखे वह इल्मो-
इरफ़ान का मालिक है, जो ठंडे दिल से बात करे
वह समझदार है।
28अगर अहमक़ ख़ामोश रहे तो वह भी
दानिशमंद लगता है। जब तक वह बात न करे
लोग उसे समझदार क़रार देते हैं।

18 जो दूसरों से अलग हो जाए वह अपने
ज़ाती मक़ासिद पूरे करना चाहता और
समझ की हर बात पर झगड़ने लगता है।
2अहमक़ समझ से लुत्फ़अंदोज़ नहीं होता
बल्कि सिर्फ़ अपने दिल की बातें दूसरों पर ज़ाहिर
करने से।
3जहाँ बेदीन आए वहाँ हिक़ारत भी आ मौजूद
होती, और जहाँ रुसवाई हो वहाँ तानाज़नी भी
होती है।
4इनसान के अलफ़ाज़ गहरा पानी हैं, हिकमत
का सरचश्मा बहती हुई नदी है।
5बेदीन की जानिबदारी करके रास्तबाज़ का
हक़ मारना ग़लत है।
6अहमक़ के होंट लड़ाई-झगड़ा पैदा करते हैं,
उसका मुँह ज़ोर से पिटाई का मुतालबा करता है।
7अहमक़ का मुँह उस की तबाही का बाइस है,
उसके होंट ऐसा फंदा हैं जिसमें उस की अपनी
जान उलझ जाती है।
8तोहमत लगानेवाले की बातें लज़ीज़ खाने के
लुक़मों की मानिंद हैं, वह दिल की तह तक उतर
जाती हैं।
9जो अपने काम में ज़रा भी ढीला हो जाए, उसे
याद रहे कि ढीलेपन का भाई तबाही है।
10रब का नाम मज़बूत बुर्ज है जिसमें रास्तबाज़
भागकर महफ़ूज़ रहता है।

11अमीर समझता है कि मेरी दौलत मेरा क़िलाबंद शहर और मेरी ऊँची चारदीवारी है जिसमें मैं महफ़ूज़ हूँ।

12तबाह होने से पहले इनसान का दिल मग़रूर हो जाता है, इज़्ज़त मिलने से पहले लाज़िम है कि वह फ़रोतन हो जाए।

13दूसरे की बात सुनने से पहले जवाब देना हमाक़त है। जो ऐसा करे उस की रुसवाई हो जाएगी।

14बीमार होते वक़्त इनसान की रूह जिस्म की परवरिश करती है, लेकिन अगर रूह शिकस्ता हो तो फिर कौन उसको सहारा देगा?

15समझदार का दिल इल्म अपनाता और दानिशमंद का कान इरफ़ान का खोज लगाता रहता है।

16तोह्फ़ा रास्ता खोलकर देनेवाले को बड़ों तक पहुँचा देता है।

17जो अदालत में पहले अपना मौक़िफ़ पेश करे वह उस वक़्त तक हक़-बजानिब लगता है जब तक दूसरा फ़रीक़ सामने आकर उस की हर बात की तहक़ीक़ न करे।

18क़ुरा डालने से झगड़े ख़त्म हो जाते और बड़ों का एक दूसरे से लड़ने का ख़तरा दूर हो जाता है।

19जिस भाई को एक दफ़ा मायूस कर दिया जाए उसे दुबारा जीत लेना क़िलाबंद शहर पर फ़तह पाने से ज़्यादा दुश्वार है। झगड़े हल करना बुर्ज के कुंडे तोड़ने की तरह मुश्किल है।

20इनसान अपने मुँह के फल से सेर हो जाएगा, वह अपने होंटों की पैदावार को जी भरकर खाएगा।

21ज़बान का ज़िंदगी और मौत पर इख़्तियार है, जो उसे प्यार करे वह उसका फल भी खाएगा।

22जिसे बीवी मिली उसे अच्छी नेमत मिली, और उसे रब की मंज़ूरी हासिल हुई।

23ग़रीब मिन्नत करते करते अपना मामला पेश करता है, लेकिन अमीर का जवाब सख़्त होता है।

24कई दोस्त तुझे तबाह करते हैं, लेकिन ऐसे भी हैं जो तुझसे भाई से ज़्यादा लिपटे रहते हैं।

19 जो ग़रीब बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारे वह टेढ़ी बातें करनेवाले अहमक़ से कहीं बेहतर है।

2अगर इल्म साथ न हो तो सरगरमी का कोई फ़ायदा नहीं। जल्दबाज़ ग़लत राह पर आता रहता है।

3गो इनसान की अपनी हमाक़त उसे भटका देती है तो भी उसका दिल रब से नाराज़ होता है।

4दौलतमंद के दोस्तों में इज़ाफ़ा होता है, लेकिन ग़रीब का एक दोस्त भी उससे अलग हो जाता है।

5झूटा गवाह सज़ा से नहीं बचेगा, जो झूटी गवाही दे उस की जान नहीं छूटेगी।

6मुतअद्दिद लोग बड़े आदमी की ख़ुशामद करते हैं, और हर एक उस आदमी का दोस्त है जो तोह्फ़े देता है।

7ग़रीब के तमाम भाई उससे नफ़रत करते हैं, तो फिर उसके दोस्त उससे क्यों दूर न रहें। वह बातें करते करते उनका पीछा करता है, लेकिन वह ग़ायब हो जाते हैं।

8जो हिकमत अपना ले वह अपनी जान से मुहब्बत रखता है, जो समझ की परवरिश करे उसे कामयाबी होगी।

9झूटा गवाह सज़ा से नहीं बचेगा, झूटी गवाही देनेवाला तबाह हो जाएगा।

10अहमक़ के लिए ऐशो-इशरत से ज़िंदगी गुज़ारना मौज़ूँ नहीं, लेकिन ग़ुलाम की हुक्मरानों पर हुकूमत कहीं ज़्यादा ग़ैर-मुनासिब है।

11इनसान की हिकमत उसे तहम्मुल सिखाती है, और दूसरों के जरायम से दरगुज़र करना उसका फ़ख़र है।

12बादशाह का तैश जवान शेरबबर की दहाड़ों की मानिंद है जबकि उस की मंज़ूरी घास पर शबनम की तरह तरो-ताज़ा करती है।

13अहमक़ बेटा बाप की तबाही और झगड़ालू
बीवी मुसलसल टपकनेवाली छत है।
14मौरूसी घर और मिलकियत बापदादा की
तरफ़ से मिलती है, लेकिन समझदार बीवी रब
की तरफ़ से है।
15सुस्त होने से इनसान गहरी नींद सो जाता
है, लेकिन ढीला शख़्स भूके मरेगा।
16जो वफ़ादारी से हुक्म पर अमल करे वह
अपनी जान महफ़ूज़ रखता है, लेकिन जो अपनी
राहों की परवा न करे वह मर जाएगा।
17जो ग़रीब पर मेहरबानी करे वह रब को उधार
देता है, वही उसे अज्र देगा।
18जब तक उम्मीद की किरण बाक़ी हो अपने
बेटे की तादीब कर, लेकिन इतने जोश में न आ
कि वह मर जाए।
19जो हद से ज़्यादा तैश में आए उसे जुरमाना
देना पड़ेगा। उसे बचाने की कोशिश मत कर वरना
उसका तैश और बढ़ेगा।
20अच्छा मशवरा अपना और तरबियत क़बूल
कर ताकि आइंदा दानिशमंद हो।
21इनसान दिल में मुतअद्दिद मनसूबे बाँधता
रहता है, लेकिन रब का इरादा हमेशा पूरा हो जाता
है।
22इनसान का लालच उस की रुसवाई का
बाइस है, और ग़रीब दरोग़गो से बेहतर है।
23रब का ख़ौफ़ ज़िंदगी का मंबा है। ख़ुदातरस
आदमी सेर होकर सुकून से सो जाता और
मुसीबत से महफ़ूज़ रहता है।
24काहिल अपना हाथ खाने के बरतन में
डालकर उसे मुँह तक नहीं ला सकता।
25तानाज़न को मार तो सादालौह सबक़
सीखेगा, समझदार को डाँट तो उसके इल्म में
इज़ाफ़ा होगा।
26जो अपने बाप पर ज़ुल्म करे और अपनी
माँ को निकाल दे वह वालिदैन के लिए शर्म और
रुसवाई का बाइस है।
27मेरे बेटे, तरबियत पर ध्यान देने से बाज़
न आ, वरना तू इल्मो-इरफ़ान की राह से भटक
जाएगा।
28शरीर गवाह इनसाफ़ का मज़ाक़ उड़ाता है,
और बेदीन का मुँह आफ़त की ख़बरें फैलाता है।
29तानाज़न के लिए सज़ा और अहमक़ की
पीठ के लिए कोड़ा तैयार है।

20 मै तानाज़न का बाप और शराब शोर-
शराबा की माँ है। जो यह पी पीकर
डगमगाने लगे वह दानिशमंद नहीं।
2बादशाह का क़हर जवान शेरबबर की दहाड़ों
की मानिंद है, जो उसे तैश दिलाए वह अपनी जान
पर खेलता है।
3लड़ाई-झगड़े से बाज़ रहना इज़्ज़त का तुर्राए-
इम्तियाज़ है जबकि हर अहमक़ झगड़ने के लिए
तैयार रहता है।
4काहिल वक़्त पर हल नहीं चलाता, चुनाँचे
जब वह फ़सल पकते वक़्त अपने खेत पर निगाह
करे तो कुछ नज़र नहीं आएगा।
5इनसान के दिल का मनसूबा गहरे पानी
की मानिंद है, लेकिन समझदार आदमी उसे
निकालकर अमल में लाता है।
6बहुत-से लोग अपनी वफ़ादारी पर फ़ख़र
करते हैं, लेकिन क़ाबिले-एतमाद शख़्स कहाँ
पाया जाता है?
7जो रास्तबाज़ बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारे उस
की औलाद मुबारक है।
8जब बादशाह तख़्ते-अदालत पर बैठ जाए तो
वह अपनी आँखों से सब कुछ छानकर हर ग़लत
बात एक तरफ़ कर लेता है।
9कौन कह सकता है, “मैंने अपने दिल को
पाक-साफ़ कर रखा है, मैं अपने गुनाह से पाक
हो गया हूँ”?
10ग़लत बाट और ग़लत पैमाइश, रब दोनों से
घिन खाता है।
11लड़के का किरदार उसके सुलूक से मालूम
होता है। इससे पता चलता है कि उसका चाल-
चलन पाक और रास्त है या नहीं।

12सुननेवाले कान और देखनेवाली आँखें दोनों
ही रब ने बनाई हैं।
13नींद को प्यार न कर वरना ग़रीब हो जाएगा।
अपनी आँखों को खुला रख तो जी भरकर खाना
खाएगा।
14गाहक दुकानदार से कहता है, "यह कैसी
नाक़िस चीज़ है!" लेकिन फिर जाकर दूसरों के
सामने अपने सौदे पर शेख़ी मारता है।
15सोना और कसरत के मोती पाए जा सकते
हैं, लेकिन समझदार होंट उनसे कहीं ज़्यादा
क़ीमती हैं।
16ज़मानत का वह लिबास वापस न कर जो
किसी ने परदेसी का ज़ामिन बनकर दिया है। अगर
वह अजनबी का ज़ामिन हो तो उस ज़मानत पर
ज़रूर क़ब्ज़ा कर जो उसने दी थी।
17धोके से हासिल की हुई रोटी आदमी को
मीठी लगती है, लेकिन उसका अंजाम कंकरों से
भरा मुँह है।
18मनसूबे सलाह-मशवरे से मज़बूत हो जाते
हैं, और जंग करने से पहले दूसरों की हिदायात
पर ध्यान दे।
19अगर तू बुहतान लगानेवाले को हमराज़
बनाए तो वह इधर-उधर फिरकर बात फैलाएगा।
चुनाँचे बातूनी से गुरेज़ कर।
20जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसका
चराग़ घने अंधेरे में बुझ जाएगा।
21जो मीरास शुरू में बड़ी जल्दी से मिल जाए
वह आख़िर में बरकत का बाइस नहीं होगी।
22मत कहना, "मैं ग़लत काम का इंतक़ाम
लूँगा।" रब के इंतज़ार में रह तो वही तेरी मदद
करेगा।
23रब झूटे बाटों से घिन खाता है, और ग़लत
तराज़ू उसे अच्छा नहीं लगता।
24रब हर एक के क़दम मुक़र्रर करता है। तो
फिर इनसान किस तरह अपनी राह समझ सकता
है?
25इनसान अपने लिए फंदा तैयार करता है जब
वह जल्दबाज़ी से मन्नत मानता और बाद में ही
मन्नत के नतायज पर ग़ौर करने लगता है।
26दानिशमंद बादशाह बेदीनों को छान छानकर
उड़ा लेता है, हाँ वह गाहने का आला ही उन पर
से गुज़रने देता है।
27आदमज़ाद की रूह रब का चराग़ है जो
इनसान के बातिन की तह तक सब कुछ की
तहक़ीक़ करता है।
28शफ़क़त और वफ़ा बादशाह को मह-
फ़ूज़ रखती हैं, शफ़क़त से वह अपना तख़्त
मुस्तहकम कर लेता है।
29नौजवानों का फ़ख़र उनकी ताक़त और
बुज़ुर्गों की शान उनके सफ़ेद बाल हैं।
30ज़ख़म और चोटें बुराई को दूर कर देती हैं,
ज़रबें बातिन की तह तक सब कुछ साफ़ कर देती
हैं।

21 बादशाह का दिल रब के हाथ में नहर
की मानिंद है। वह जिधर चाहे उसका
रुख़ फेर देता है।
2हर आदमी की राह उस की अपनी नज़र में
ठीक लगती है, लेकिन रब ही दिलों की जाँच-
पड़ताल करता है।
3रास्तबाज़ी और इनसाफ़ करना रब को ज़बह
की क़ुरबानियों से कहीं ज़्यादा पसंद है।
4मग़रूर आँखें और मुतकब्बिर दिल जो बेदीनों
का चराग़ हैं गुनाह हैं।
5मेहनती शख़्स के मनसूबे नफ़ा का बाइस हैं,
लेकिन जल्दबाज़ी ग़ुरबत तक पहुँचा देती है।
6फ़रेबदेह ज़बान से जमा किया हुआ
ख़ज़ाना बिखर जानेवाला धुआँ और मोह-
लक फंदा है।
7बेदीनों का ज़ुल्म ही उन्हें घसीटकर ले जाता
है, क्योंकि वह इनसाफ़ करने से इनकार करते
हैं।
8क़ुसूरवार की राह पेचदार है जबकि पाक
शख़्स सीधी राह पर चलता है।

9झगड़ालू बीवी के साथ एक ही घर में रहने
की निसबत छत के किसी कोने में गुज़ारा करना
बेहतर है।
10बेदीन ग़लत काम करने के लालच में रहता है
और अपने किसी भी पड़ोसी पर तरस नहीं खाता।
11तानाज़न पर जुरमाना लगा तो सादा-
लौह सबक़ सीखेगा, दानिशमंद को तालीम दे तो
उसके इल्म में इज़ाफ़ा होगा।
12अल्लाह जो रास्त है बेदीन के घर को ध्यान
में रखता है, वही बेदीन को ख़ाक में मिला देता
है।
13जो कान में उँगली डालकर ग़रीब की मदद
के लिए चीख़ें नहीं सुनता वह भी एक दिन चीख़ें
मारेगा, और उस की भी सुनी नहीं जाएगी।
14पोशीदगी में सिला देने से दूसरे का ग़ुस्सा
ठंडा हो जाता, किसी की जेब गरम करने से
उसका सख़्त तैश दूर हो जाता है।
15जब इनसाफ़ किया जाए तो रास्तबाज़ ख़ुश
हो जाता, लेकिन बदकार दहशत खाने लगता है।
16जो समझ की राह से भटक जाए वह एक
दिन मुरदों की जमात में आराम करेगा।
17जो ऐशो-इशरत की ज़िंदगी पसंद करे वह
ग़रीब हो जाएगा, जिसे मै और तेल प्यारा हो वह
अमीर नहीं हो जाएगा।
18जब रास्तबाज़ का फ़िद्या देना है तो बेदीन को
दिया जाएगा, और दियानतदार की जगह बेवफ़ा
को दिया जाएगा।
19झगड़ालू और तंग करनेवाली बीवी के साथ
बसने की निसबत रेगिस्तान में गुज़ारा करना
बेहतर है।
20दानिशमंद के घर में उम्दा ख़ज़ाना और तेल
होता है, लेकिन अहमक़ अपना सारा माल हड़प
कर लेता है।
21जो इनसाफ़ और शफ़क़त का ताक़्क़ुब
करता रहे वह ज़िंदगी, रास्ती और इज़्ज़त पाएगा।
22दानिशमंद आदमी ताक़तवर फ़ौजियों के
शहर पर हमला करके वह क़िलाबंदी ढा देता है
जिस पर उनका पूरा एतमाद था।
23जो अपने मुँह और ज़बान की पहरादारी करे
वह अपनी जान को मुसीबत से बचाए रखता है।
24मग़रूर और घमंडी का नाम 'तानाज़न' है,
हर काम वह बेहद तकब्बुर के साथ करता है।
25काहिल का लालच उसे मौत के घाट उतार
देता है, क्योंकि उसके हाथ काम करने से इनकार
करते हैं।
26लालची पूरा दिन लालच करता रहता है,
लेकिन रास्तबाज़ फ़ैयाज़दिली से देता है।
27बेदीनों की क़ुरबानी क़ाबिले-घिन है,
ख़ासकर जब उसे बुरे मक़सद से पेश किया
जाए।
28झूटा गवाह तबाह हो जाएगा, लेकिन जो
दूसरे की ध्यान से सुने उस की बात हमेशा तक
क़ायम रहेगी।
29बेदीन आदमी गुस्ताख़ अंदाज़ से पेश आता
है, लेकिन सीधी राह पर चलनेवाला सोच-
समझकर अपनी राह पर चलता है।
30किसी की भी हिकमत, समझ या मनसूबा
रब का सामना नहीं कर सकता।
31घोड़े को जंग के दिन के लिए तैयार तो किया
जाता है, लेकिन फ़तह रब के हाथ में है।

22 नेक नाम बड़ी दौलत से क़ीमती, और
मंज़ूरे-नज़र होना सोने-चाँदी से बेहतर
है।
2अमीर और ग़रीब एक दूसरे से मिलते-जुलते
हैं, रब उन सबका ख़ालिक़ है।
3ज़हीन आदमी ख़तरा पहले से भाँपकर छुप
जाता है, जबकि सादालौह आगे बढ़कर उस की
लपेट में आ जाता है।
4फ़रोतनी और रब का ख़ौफ़ मानने का फल
दौलत, एहतराम और ज़िंदगी है।
5बेदीन की राह में काँटे और फंदे होते हैं। जो
अपनी जान महफ़ूज़ रखना चाहे वह उनसे दूर
रहता है।
6छोटे बच्चे को सहीह राह पर चलने की
तरबियत कर तो वह बूढ़ा होकर भी उससे नहीं
हटेगा।

7अमीर ग़रीब पर हुकूमत करता, और क़र्ज़दार
क़र्ज़ख़ाह का ग़ुलाम होता है।
8जो नाइनसाफ़ी का बीज बोए वह आफ़त की
फ़सल काटेगा, तब उस की ज़्यादती की लाठी
टूट जाएगी।
9फ़ैयाज़दिल को बरकत मिलेगी, क्योंकि वह
पस्तहाल को अपने खाने में शरीक करता है।
10तानाज़न को भगा दे तो लड़ाई-झगड़ा घर
से निकल जाएगा, तू तू मैं मैं और एक दूसरे की
बेइज़्ज़ती करने का सिलसिला ख़त्म हो जाएगा।
11जो दिल की पाकीज़गी को प्यार करे और
मेहरबान ज़बान का मालिक हो वह बादशाह का
दोस्त बनेगा।
12रब की आँखें इल्मो-इरफ़ान की देख-भाल
करती हैं, लेकिन वह बेवफ़ा की बातों को तबाह
होने देता है।
13काहिल कहता है, “गली में शेर है, अगर
बाहर जाऊँ तो मुझे किसी चौक में फाड़ खाएगा।”
14ज़िनाकार औरत का मुँह गहरा गढ़ा है।
जिससे रब नाराज़ हो वह उसमें गिर जाता है।
15बच्चे के दिल में हमाक़त टिकती है, लेकिन
तरबियत की छड़ी उसे भगा देती है।
16एक पस्तहाल पर ज़ुल्म करता है ताकि
दौलत पाए, दूसरा अमीर को तोह्फ़े देता है लेकिन
ग़रीब हो जाता है।

दानिशमंदों की 30 कहावतें

17कान लगाकर दानाओं की बातों पर ध्यान
दे, दिल से मेरी तालीम अपना ले! 18क्योंकि
अच्छा है कि तू उन्हें अपने दिल में महफ़ूज़ रखे,
वह सब तेरे होंटों पर मुस्तैद रहें। 19आज मैं तुझे,
हाँ तुझे ही तालीम दे रहा हूँ ताकि तेरा भरोसा रब
पर रहे। 20मैंने तेरे लिए 30 कहावतें क़लमबंद
की हैं, ऐसी बातें जो मशवरों और इल्म से भरी हुई
हैं। 21क्योंकि मैं तुझे सच्चाई की क़ाबिले-एतमाद
बातें सिखाना चाहता हूँ ताकि तू उन्हें क़ाबिले-
एतमाद जवाब दे सके जिन्होंने तुझे भेजा है।

-1-

22पस्तहाल को इसलिए न लूट कि वह
पस्तहाल है, मुसीबतज़दा को अदालत में मत
कुचलना। 23क्योंकि रब ख़ुद उनका दिफ़ा करके
उन्हें लूट लेगा जो उन्हें लूट रहे हैं।

-2-

24ग़ुसीले शख़्स का दोस्त न बन, न उससे
ज़्यादा ताल्लुक़ रख जो जल्दी से आग-बगूला हो
जाता है। 25ऐसा न हो कि तू उसका चाल-चलन
अपनाकर अपनी जान के लिए फंदा लगाए।

-3-

26कभी हाथ मिलाकर वादा न कर कि मैं दूसरे
के कर्ज़े का ज़ामिन हूँगा। 27क़र्ज़दार के पैसे
वापस न करने पर अगर तू भी पैसे अदा न कर
सके तो तेरी चारपाई भी तेरे नीचे से छीन ली
जाएगी।

-4-

28ज़मीन की जो हुदूद तेरे बापदादा ने मुक़र्रर
कीं उन्हें आगे पीछे मत करना।

-5-

29क्या तुझे ऐसा आदमी नज़र आता है जो
अपने काम में माहिर है? वह निचले तबक़े के
लोगों की ख़िदमत नहीं करेगा बल्कि बादशाहों
की।

-6-

23 अगर तू किसी हुक्मरान के खाने में
शरीक हो जाए तो ख़ूब ध्यान दे कि तू
किसके हुज़ूर है। 2अगर तू पेटू हो तो अपने गले
पर छुरी रख। 3उस की उम्दा चीज़ों का लालच
मत कर, क्योंकि यह खाना फ़रेबदेह है।

-7-

4अपनी पूरी ताक़त अमीर बनने में सर्फ़ न
कर, अपनी हिकमत ऐसी कोशिशों से ज़ाया मत

कर। 5एक नज़र दौलत पर डाल तो वह ओझल
हो जाती है, और पर लगाकर उक़ाब की तरह
आसमान की तरफ़ उड़ जाती है।

-8-

6जलनेवाले की रोटी मत खा, उसके लज़ीज़
खानों का लालच न कर। 7क्योंकि यह गले में
बाल की तरह होगा। वह तुझसे कहेगा, "खाओ,
पियो!" लेकिन उसका दिल तेरे साथ नहीं है।
8जो लुक़मा तूने खा लिया उससे तुझे क़ै आएगी,
और तेरी उससे दोस्ताना बातें ज़ाया हो जाएँगी।

-9-

9अहमक़ से बात न कर, क्योंकि वह तेरी
दानिशमंद बातें हक़ीर जानेगा।

-10-

10ज़मीन की जो हुदूद क़दीम ज़माने में मुक़र्रर
हुईं उन्हें आगे पीछे मत करना, और यतीमों
के खेतों पर क़ब्ज़ा न कर। 11क्योंकि उनका
छुड़ानेवाला क़वी है, वह उनके हक़ में ख़ुद तेरे
ख़िलाफ़ लड़ेगा।

-11-

12अपना दिल तरबियत के हवाले कर और
अपने कान इल्म की बातों पर लगा।

-12-

13बच्चे को तरबियत से महरूम न रख, छड़ी से
उसे सज़ा देने से वह नहीं मरेगा। 14छड़ी से उसे
सज़ा दे तो उस की जान मौत से छूट जाएगी।

-13-

15मेरे बेटे, अगर तेरा दिल दानिशमंद हो तो
मेरा दिल भी ख़ुश होगा। 16मैं अंदर ही अंदर ख़ुशी
मनाऊँगा जब तेरे होंट दियानतदार बातें करेंगे।

-14-

17तेरा दिल गुनाहगारों को देखकर कुढ़ता न रहे
बल्कि पूरे दिन रब का ख़ौफ़ रखने में सरगरम रहे।
18क्योंकि तेरी उम्मीद जाती नहीं रहेगी बल्कि
तेरा मुस्तक़बिल यक़ीनन अच्छा होगा।

-15-

19मेरे बेटे, सुनकर दानिशमंद हो जा और सहीह
राह पर अपने दिल की राहनुमाई कर। 20शराबी
और पेटू से दरेग़ कर, 21क्योंकि शराबी और
पेटू ग़रीब हो जाएंगे, और काहिली उन्हें चीथड़े
पहनाएगी।

-16-

22अपने बाप की सुन जिसने तुझे पैदा किया,
और अपनी माँ को हक़ीर न जान जब बूढ़ी हो
जाए।

23सच्चाई ख़रीद ले और कभी फ़रोख़्त न कर,
उसमें शामिल हिकमत, तरबियत और समझ
अपना ले।

24रास्तबाज़ का बाप बड़ी ख़ुशी मनाता है, और
दानिशमंद बेटे का वालिद उससे लुत्फ़अंदोज़ होता
है।

25चुनाँचे अपने माँ-बाप के लिए ख़ुशी का
बाइस हो, ऐसी ज़िंदगी गुज़ार कि तेरी माँ जशन
मना सके।

-17-

26मेरे बेटे, अपना दिल मेरे हवाले कर, तेरी
आँखें मेरी राहें पसंद करें। 27क्योंकि कसबी गहरा
गढ़ा और ज़िनाकार औरत तंग कुआँ है, 28डाकू
की तरह वह ताक लगाए बैठकर मर्दों में बेवफ़ाओं
का इज़ाफ़ा करती है।

-18-

29कौन आहें भरता है? कौन हाय हाय करता
और लड़ाई-झगड़े में मुलव्वस रहता है? किस को
बिलावजह चोटें लगती, किसकी आँखें धुँधली-
सी रहती हैं? 30वह जो रात गए तक मै पीने

और मसालेदार मै से मज़ा लेने में मसरूफ़ रहता
है। 31मै को तकता न रह, ख़ाह उसका सुर्ख़ रंग
कितनी ख़ूबसूरती से प्याले में क्यों न चमके, ख़ाह
उसे बड़े मज़े से क्यों न पिया जाए। 32अंजामकार
वह तुझे साँप की तरह काटेगी, नाग की तरह
डसेगी। 33तेरी आँखें अजीबो-ग़रीब मंज़र देखेंगी
और तेरा दिल बेतुकी बातें हकलाएगा। 34तू
समुंदर के बीच में लेटनेवाले की मानिंद होगा, उस
जैसा जो मस्तूल पर चढ़कर लेट गया हो। 35तू
कहेगा, “मेरी पिटाई हुई लेकिन दर्द महसूस न
हुआ, मुझे मारा गया लेकिन मालूम न हुआ। मैं
कब जाग उठूँगा ताकि दुबारा शराब की तरफ़ रुख़
कर सकूँ?”

-19-

24 शरीरों से हसद न कर, न उनसे
सोहबत रखने की आरज़ू रख,
2क्योंकि उनका दिल ज़ुल्म करने पर तुला रहता
है, उनके होंट दूसरों को दुख पहुँचाते हैं।

-20-

3हिकमत घर को तामीर करती, समझ उसे
मज़बूत बुनियाद पर खड़ा कर देती, 4और
इल्मो-इरफ़ान उसके कमरों को बेशक़ीमत और
मनमोहन चीज़ों से भर देता है।

-21-

5दानिशमंद को ताक़त हासिल होती और इल्म
रखनेवाले की क़ुव्वत बढ़ती रहती है, 6क्योंकि
जंग करने के लिए हिदायत और फ़तह पाने के
लिए मुतअद्दिद मुशीरों की ज़रूरत होती है।

-22-

7हिकमत इतनी बुलंदो-बाला है कि अह-
मक़ उसे पा नहीं सकता। जब बुज़ुर्ग शहर के
दरवाज़े में फ़ैसला करने के लिए जमा होते हैं तो
वह कुछ नहीं कह सकता।

-23-

8बुरे मनसूबे बाँधनेवाला साज़िशी कह-
लाता है। 9अहमक़ की चालाकियाँ गुनाह हैं, और
लोग तानाज़न से घिन खाते हैं।

-24-

10अगर तू मुसीबत के दिन हिम्मत हारकर
ढीला हो जाए तो तेरी ताक़त जाती रहेगी।

-25-

11जिन्हें मौत के हवाले किया जा रहा है उन्हें
छुड़ा, जो क़साई की तरफ़ डगमगाते हुए जा रहे हैं
उन्हें रोक दे। 12शायद तू कहे, “हमें तो इसके बारे
में इल्म नहीं था।” लेकिन यक़ीन जान, जो दिल
की जाँच-पड़ताल करता है वह बात समझता है,
जो तेरी जान की देख-भाल करता है उसे मालूम
है। वह इनसान को उसके आमाल का बदला देता
है।

-26-

13मेरे बेटे, शहद खा क्योंकि वह अच्छा है,
छत्ते का ख़ालिस शहद मीठा है। 14जान ले कि
हिकमत इसी तरह तेरी जान के लिए मीठी है।
अगर तू उसे पाए तो तेरी उम्मीद जाती नहीं रहेगी
बल्कि तेरा मुस्तक़बिल अच्छा होगा।

-27-

15ऐ बेदीन, रास्तबाज़ के घर की ताक लगाए
मत बैठना, उस की रिहाइशगाह तबाह न कर।
16क्योंकि गो रास्तबाज़ सात बार गिर जाए तो
भी हर बार दुबारा उठ खड़ा होगा जबकि बेदीन
एक बार ठोकर खाकर मुसीबत में फँसा रहेगा।

-28-

17अगर तेरा दुश्मन गिर जाए तो ख़ुश न हो,
अगर वह ठोकर खाए तो तेरा दिल जशन न
मनाए। 18ऐसा न हो कि रब यह देखकर तेरा
रवैया पसंद न करे और अपना ग़ुस्सा दुश्मन पर
उतारने से बाज़ आए।

-29-

19बदकारों को देखकर मुश्तइल न हो जा,
बेदीनों के बाइस कुढ़ता न रह। 20क्योंकि शरीरों
का कोई मुस्तक़बिल नहीं, बेदीनों का चराग़ बुझ
जाएगा।

-30-

21मेरे बेटे, रब और बादशाह का ख़ौफ़ मान,
और सरकशों में शरीक न हो। 22क्योंकि अचानक
ही उन पर आफ़त आएगी, किसी को पता ही नहीं
चलेगा जब दोनों उन पर हमला करके उन्हें तबाह
कर देंगे।

दानिशमंदों की मज़ीद कहावतें

23ज़ैल में दानिशमंदों की मज़ीद कहावतें
क़लमबंद हैं।

अदालत में जानिबदारी दिखाना बुरी बात है।
24जो क़ुसूरवार से कहे, "तू बेक़ुसूर है" उस पर
क़ौमें लानत भेजेंगी, उस की सरज़निश उम्मतें
करेंगी। 25लेकिन जो क़ुसूरवार को मुजरिम
ठहराए वह ख़ुशहाल होगा, उसे कसरत की
बरकत मिलेगी।

26सच्चा जवाब दोस्त के बोसे की मानिंद है।

27पहले बाहर का काम मुकम्मल करके अपने
खेतों को तैयार कर, फिर ही अपना घर तामीर
कर।

28बिलावजह अपने पड़ोसी के ख़िलाफ़ गवाही
मत दे। या क्या तू अपने होंटों से धोका देना चाहता
है?

29मत कहना, "जिस तरह उसने मेरे साथ
किया उसी तरह मैं उसके साथ करूँगा, मैं उसके
हर फ़ेल का मुनासिब जवाब दूँगा।"

30एक दिन मैं सुस्त और नासमझ आदमी के
खेत और अंगूर के बाग़ में से गुज़रा। 31हर जगह
काँटेदार झाड़ियाँ फैली हुई थीं, ख़ुदरौ पौदे पूरी
ज़मीन पर छा गए थे। उस की चारदीवारी भी गिर
गई थी। 32यह देखकर मैंने दिल से ध्यान दिया
और सबक़ सीख लिया,

33अगर तू कहे, "मुझे थोड़ी देर सोने दे, थोड़ी
देर ऊँघने दे, थोड़ी देर हाथ पर हाथ धरे बैठने
दे ताकि मैं आराम कर सकूँ" 34तो ख़बरदार,
जल्द ही ग़ुरबत राहज़न की तरह तुझ पर आएगी,
मुफ़लिसी हथियार से लैस डाकू की तरह तुझ पर
आ पड़ेगी।

सुलेमान की मज़ीद कहावतें

25 ज़ैल में सुलेमान की मज़ीद कहावतें
दर्ज हैं जिन्हें यहूदाह के बादशाह
हिज़क़ियाह के लोगों ने जमा किया।

2अल्लाह का जलाल इसमें ज़ाहिर होता है कि
वह मामला पोशीदा रखता है, बादशाह का जलाल
इसमें कि वह मामले की तहक़ीक़ करता है।

3जितना आसमान बुलंद और ज़मीन गहरी है
उतना ही बादशाहों के दिल का खोज नहीं लगाया
जा सकता।

4चाँदी से मैल दूर करो तो सुनार बरतन बनाने में
कामयाब हो जाएगा, 5बेदीन को बादशाह के हुज़ूर
से दूर करो तो उसका तख़्त रास्ती की बुनियाद पर
क़ायम रहेगा।

6बादशाह के हुज़ूर अपने आप पर फ़ख़र न कर,
न इज़्ज़त की उस जगह पर खड़ा हो जा जो बुज़ुर्गों
के लिए मख़सूस है। 7इससे पहले कि शुरफ़ा के
सामने ही तेरी बेइज़्ज़ती हो जाए बेहतर है कि तू
पीछे खड़ा हो जा और बाद में कोई तुझसे कहे,
"यहाँ सामने आ जाएँ।"

जो कुछ तेरी आँखों ने देखा उसे अदालत में
पेश करने में 8जल्दबाज़ी न कर, क्योंकि तू क्या
करेगा अगर तेरा पड़ोसी तेरे मामले को झुटलाकर
तुझे शरमिंदा करे?

9अदालत में अपने पड़ोसी से लड़ते वक़्त
वह बात बयान न कर जो किसी ने पोशीदगी
में तेरे सुपुर्द की, 10ऐसा न हो कि सुननेवाला

तेरी बेइज़्ज़ती करे। तब तेरी बदनामी कभी नहीं मिटेगी।

11वक़्त पर मौज़ूँ बात चाँदी के बरतन में सोने के सेब की मानिंद है। 12दानिशमंद की नसीहत क़बूल करनेवाले के लिए सोने की बाली और ख़ालिस सोने के गुलूबंद की मानिंद है।

13क़ाबिले-एतमाद क़ासिद भेजनेवाले के लिए फ़सल काटते वक़्त बर्फ़ की ठंडक जैसा है, इस तरह वह अपने मालिक की जान को तरो-ताज़ा कर देता है।

14जो शेख़ी मारकर तोह्फ़ों का वादा करे लेकिन कुछ न दे वह उन तूफ़ानी बादलों की मानिंद है जो बरसे बग़ैर गुज़र जाते हैं।

15हुक्मरान को तहम्मुल से क़ायल किया जा सकता, और नरम ज़बान हड्डियाँ तोड़ने के क़ाबिल है।

16अगर शहद मिल जाए तो ज़रूरत से ज़्यादा मत खा, हद से ज़्यादा खाने से तुझे क़ै आएगी।

17अपने पड़ोसी के घर में बार बार जाने से अपने क़दमों को रोक, वरना वह तंग आकर तुझसे नफ़रत करने लगेगा।

18जो अपने पड़ोसी के ख़िलाफ़ झूटी गवाही दे वह हथौड़े, तलवार और तेज़ तीर जैसा नुक़सानदेह है।

19मुसीबत के वक़्त बेवफ़ा पर एतबार करना ख़राब दाँत या डगमगाते पाँवों की तरह तकलीफ़देह है।

20दुखते दिल के लिए गीत गाना उतना ही ग़ैरमौज़ूँ है जितना सर्दियों के मौसम में क़मीस उतारना या सोडे पर सिरका डालना।

21अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो उसे खाना खिला, अगर प्यासा हो तो पानी पिला। 22क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सर पर जलते हुए कोयलों का ढेर लगाएगा, और रब तुझे अज्र देगा।

23जिस तरह काले बादल लानेवाली हवा बारिश पैदा करती है उसी तरह बातूनी की चुपके से की गई बातों से लोगों के मुँह बिगड़ जाते हैं।

24झगड़ालू बीवी के साथ एक ही घर में रहने की निसबत छत के किसी कोने में गुज़ारा करना बेहतर है।

25दूर-दराज़ मुल्क की ख़ुशख़बरी प्यासे गले में ठंडा पानी है।

26जो रास्तबाज़ बेदीन के सामने डगमगाने लगे, वह गदला चश्मा और आलूदा कुआँ है।

27ज़्यादा शहद खाना अच्छा नहीं, और न ही ज़्यादा अपनी इज़्ज़त की फ़िकर करना।

28जो अपने आप पर क़ाबू न पा सके वह उस शहर की मानिंद है जिसकी फ़सील ढा दी गई है।

26 अहमक़ की इज़्ज़त करना उतना ही ग़ैरमौज़ूँ है जितना मौसमे-गरमा में बर्फ़ या फ़सल काटते वक़्त बारिश।

2बिलावजह भेजी हुई लानत फड़फड़ाती चिड़िया या उड़ती हुई अबाबील की तरह ओझल होकर बेअसर रह जाती है।

3घोड़े को छड़ी से, गधे को लगाम से और अहमक़ की पीठ को लाठी से तरबियत दे।

4जब अहमक़ अहमक़ाना बातें करे तो उसे जवाब न दे, वरना तू उसी के बराबर हो जाएगा।

5जब अहमक़ अहमक़ाना बातें करे तो उसे जवाब दे, वरना वह अपनी नज़र में दानिशमंद ठहरेगा।

6जो अहमक़ के हाथ पैग़ाम भेजे वह उस की मानिंद है जो अपने पाँवों पर कुल्हाड़ी मारकर अपने आपसे ज़्यादती करता है।[a]

7अहमक़ के मुँह में हिकमत की बात मफ़लूज की बेहरकत लटकती टाँगों की तरह बेकार है।

8अहमक़ का एहतराम करना फ़लाख़न के साथ पत्थर बाँधने के बराबर है।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : ज़्यादती का प्याला पीता है।

9अहमक़ के मुँह में हिकमत की बात नशे में
धुत शराबी के हाथ में काँटेदार झाड़ी की मानिंद
है।
10जो अहमक़ या हर किसी गुज़रनेवाले को
काम पर लगाए वह सबको ज़ख़मी करनेवाले
तीरअंदाज़ की मानिंद है।
11जो अहमक़ अपनी हमाक़त दोहराए वह
अपनी क़ै के पास वापस आनेवाले कुत्ते की
मानिंद है।
12क्या कोई दिखाई देता है जो अपने आपको
दानिशमंद समझता है? उस की निसबत अहमक़
के सुधरने की ज़्यादा उम्मीद है।
13काहिल कहता है, "रास्ते में शेर है, हाँ चौकों
में शेर फिर रहा है!"
14जिस तरह दरवाज़ा क़ब्ज़े पर घूमता है उसी
तरह काहिल अपने बिस्तर पर करवटें बदलता है।
15जब काहिल अपना हाथ खाने के बरतन में
डाल दे तो वह इतना सुस्त है कि उसे मुँह तक
वापस नहीं ला सकता।
16काहिल अपनी नज़र में हिकमत से जवाब
देनेवाले सात आदमियों से कहीं ज़्यादा दानिशमंद
है।
17जो गुज़रते वक़्त दूसरों के झगड़े में
मुदाख़लत करे वह उस आदमी की मानिंद है जो
कुत्ते को कानों से पकड़ ले।
18-19जो अपने पड़ोसी को फ़रेब देकर बाद
में कहे, "मैं सिर्फ़ मज़ाक़ कर रहा था" वह उस
दीवाने की मानिंद है जो लोगों पर जलते हुए और
मोहलक तीर बरसाता है।
20लकड़ी के ख़त्म होने पर आग बुझ जाती है,
तोहमत लगानेवाले के चले जाने पर झगड़ा बंद
हो जाता है।
21अंगारों में कोयले और आग में लकड़ी डाल
तो आग भड़क उठेगी। झगड़ालू को कहीं भी खड़ा
कर तो लोग मुश्तइल हो जाएंगे।
22तोहमत लगानेवाले की बातें लज़ीज़ खाने के
लुक़मों जैसी हैं, वह दिल की तह तक उतर जाती
हैं।
23जलनेवाले होंट और शरीर दिल मिट्टी के उस
बरतन की मानिंद हैं जिसे चमकदार बनाया गया
हो।
24नफ़रत करनेवाला अपने होंटों से अपना
असली रूप छुपा लेता है, लेकिन उसका दिल
फ़रेब से भरा रहता है। 25जब वह मेहरबान बातें
करे तो उस पर यक़ीन न कर, क्योंकि उसके
दिल में सात मकरूह बातें हैं। 26गो उस की
नफ़रत फ़िलहाल फ़रेब से छुपी रहे, लेकिन एक
दिन उसका ग़लत किरदार पूरी जमात के सामने
ज़ाहिर हो जाएगा।
27जो दूसरों को फँसाने के लिए गढ़ा खोदे
वह उसमें ख़ुद गिर जाएगा, जो पत्थर लुढ़काकर
दूसरों पर फेंकना चाहे उस पर ही पत्थर वापस
लुढ़क आएगा।
28झूटी ज़बान उनसे नफ़रत करती है जिन्हें वह
कुचल देती है, ख़ुशामद करनेवाला मुँह तबाही
मचा देता है।

27 उस पर शेख़ी न मार जो तू कल
करेगा, तुझे क्या मालूम कि कल का
दिन क्या कुछ फ़राहम करेगा?
2तेरा अपना मुँह और अपने होंट तेरी तारीफ़ न
करें बल्कि वह जो तुझसे वाक़िफ़ भी न हो।
3पत्थर भारी और रेत वज़नी है, लेकिन जो
अहमक़ तुझे तंग करे वह ज़्यादा नाक़ाबिले-
बरदाश्त है।
4ग़ुस्सा ज़ालिम होता और तैश सैलाब की तरह
इनसान पर आ जाता है, लेकिन कौन हसद का
मुक़ाबला कर सकता है?
5खुली मलामत छुपी हुई मुहब्बत से बेहतर है।
6प्यार करनेवाले की ज़रबें वफ़ा का सबूत हैं,
लेकिन नफ़रत करनेवाले के मुतअद्दिद बोसों से
ख़बरदार रह।
7जो सेर है वह शहद को भी पाँवों तले रौंद देता
है, लेकिन भूके को कड़वी चीज़ें भी मीठी लगती
हैं।
8जो आदमी अपने घर से निकलकर मारा मारा
फिरे वह उस परिंदे की मानिंद है जो अपने घोंसले

से भागकर कभी इधर कभी इधर फड़फड़ाता रहता है।

9तेल और बख़ूर दिल को ख़ुश करते हैं, लेकिन दोस्त अपने अच्छे मशवरों से ख़ुशी दिलाता है।

10अपने दोस्तों को कभी न छोड़, न अपने ज़ाती दोस्तों को न अपने बाप के दोस्तों को। तब तुझे मुसीबत के दिन अपने भाई से मदद नहीं माँगनी पड़ेगी। क्योंकि क़रीब का पड़ोसी दूर के भाई से बेहतर है।

11मेरे बेटे, दानिशमंद बनकर मेरे दिल को ख़ुश कर ताकि मैं अपने हक़ीर जाननेवाले को जवाब दे सकूँ।

12ज़हीन आदमी ख़तरा पहले से भाँपकर छुप जाता है, जबकि सादालौह आगे बढ़कर उस की लपेट में आ जाता है।

13ज़मानत का वह लिबास वापस न कर जो किसी ने परदेसी का ज़ामिन बनकर दिया है। अगर वह अजनबी औरत का ज़ामिन हो तो उस ज़मानत पर ज़रूर क़ब्ज़ा कर जो उसने दी थी।

14जो सुबह-सवेरे बुलंद आवाज़ से अपने पड़ोसी को बरकत दे उस की बरकत लानत ठहराई जाएगी।

15झगड़ालू बीवी मूसलाधार बारिश के बाइस मुसलसल टपकनेवाली छत की मानिंद है। 16उसे रोकना हवा को रोकने या तेल को पकड़ने के बराबर है।

17लोहा लोहे को और इनसान इनसान के ज़हन को तेज़ करता है।

18जो अंजीर के दरख़्त की देख-भाल करे वह उसका फल खाएगा, जो अपने मालिक की वफ़ादारी से ख़िदमत करे उसका एहतराम किया जाएगा।

19जिस तरह पानी चेहरे को मुनअकिस करता है उसी तरह इनसान का दिल इनसान को मुनअकिस करता है।

20न मौत और न पाताल कभी सेर होते हैं, न इनसान की आँखें।

21सोना और चाँदी कुठाली में पिघलाकर पाक-साफ़ कर, लेकिन इनसान का किरदार इससे मालूम कर कि लोग उस की कितनी क़दर करते हैं।

22अगर अहमक़ को अनाज की तरह ओखली और मूसल से कूटा भी जाए तो भी उस की हमाक़त दूर नहीं हो जाएगी।

23एहतियात से अपनी भेड़-बकरियों की हालत पर ध्यान दे, अपने रेवड़ों पर ख़ूब तवज्जुह दे। 24क्योंकि कोई भी दौलत हमेशा तक क़ायम नहीं रहती, कोई भी ताज नसल-दर-नसल बरक़रार नहीं रहता। 25खुले मैदान में घास काटकर जमा कर ताकि नई घास उग सके, चारा पहाड़ों से भी इकट्ठा कर। 26तब तू भेड़ों की ऊन से कपड़े बना सकेगा, बकरों की फ़रोख़्त से खेत ख़रीद सकेगा, 27और बकरियाँ इतना दूध देंगी कि तेरे, तेरे ख़ानदान और तेरे नौकर-चाकरों के लिए काफ़ी होगा।

28 बेदीन फ़रार हो जाता है हालाँकि ताक़्क़ुब करनेवाला कोई नहीं होता, लेकिन रास्तबाज़ अपने आपको जवान शेरबबर की तरह महफ़ूज़ समझता है।

2मुल्क की ख़ताकारी के सबब से उस की हुकूमत की यगांगत क़ायम नहीं रहेगी, लेकिन समझदार और दानिशमंद आदमी उसे बड़ी देर तक क़ायम रखेगा।

3जो ग़रीब ग़रीबों पर ज़ुल्म करे वह उस मूसलाधार बारिश की मानिंद है जो सैलाब लाकर फ़सलों को तबाह कर देती है।

4जिसने शरीअत को तर्क किया वह बेदीन की तारीफ़ करता है, लेकिन जो शरीअत के ताबे रहता है वह उस की मुख़ालफ़त करता है।

5शरीर इनसाफ़ नहीं समझते, लेकिन रब के तालिब सब कुछ समझते हैं।

6बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारनेवाला ग़रीब टेढ़ी राहों पर चलनेवाले अमीर से बेहतर है।

7जो शरीअत की पैरवी करे वह समझदार
बेटा है, लेकिन ऐयाशों का साथी अपने बाप की
बेइज़्ज़ती करता है।
8जो अपनी दौलत नाजायज़ सूद से बढ़ाए वह
उसे किसी और के लिए जमा कर रहा है, ऐसे
शख़्स के लिए जो ग़रीबों पर रहम करेगा।
9जो अपने कान में उँगली डाले ताकि शरीअत
की बातें न सुने उस की दुआएँ भी क़ाबिले-घिन
हैं।
10जो सीधी राह पर चलनेवालों को ग़लत राह
पर लाए वह अपने ही गढ़े में गिर जाएगा, लेकिन
बेइलज़ाम अच्छी मीरास पाएँगे।
11अमीर अपने आपको दानिशमंद समझ-
ता है, लेकिन जो ज़रूरतमंद समझदार है वह
उसका असली किरदार मालूम कर लेता है।
12जब रास्तबाज़ फ़तहयाब हों तो मुल्क की
शानो-शौकत बढ़ जाती है, लेकिन जब बेदीन उठ
खड़े हों तो लोग छुप जाते हैं।
13जो अपने गुनाह छुपाए वह नाकाम रहेगा,
लेकिन जो उन्हें तसलीम करके तर्क करे वह रहम
पाएगा।
14मुबारक है वह जो हर वक़्त रब का ख़ौफ़
माने, लेकिन जो अपना दिल सख़्त करे वह
मुसीबत में फँस जाएगा।
15पस्तहाल क़ौम पर हुकूमत करनेवाला बेदीन
ग़ुर्राते हुए शेरबबर और हमलाआवर रीछ की
मानिंद है।
16जहाँ नासमझ हुक्मरान है वहाँ ज़ुल्म होता
है, लेकिन जिसे ग़लत नफ़ा से नफ़रत हो उस की
उम्र दराज़ होगी।
17जो किसी को क़त्ल करे वह मौत तक अपने
क़ुसूर के नीचे दबा हुआ मारा मारा फिरेगा। ऐसे
शख़्स का सहारा न बन!
18जो बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारे वह बचा रहेगा,
लेकिन जो टेढ़ी राह पर चले वह अचानक ही गिर
जाएगा।
19जो अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी करे वह जी
भरकर रोटी खाएगा, लेकिन जो फ़ज़ूल चीज़ों के
पीछे पड़ जाए वह ग़ुरबत से सेर हो जाएगा।
20क़ाबिले-एतमाद आदमी को कसरत की
बरकतें हासिल होंगी, लेकिन जो भाग भागकर
दौलत जमा करने में मसरूफ़ रहे वह सज़ा से नहीं
बचेगा।
21जानिबदारी बुरी बात है, लेकिन इनसान
रोटी का टुकड़ा हासिल करने के लिए मुजरिम
बन जाता है।
22लालची भाग भागकर दौलत जमा करता है,
उसे मालूम ही नहीं कि इसका अंजाम ग़ुरबत ही
है।
23आख़िरकार नसीहत देनेवाला चापलूसी
करनेवाले से ज़्यादा मंज़ूर होता है।
24जो अपने बाप या माँ को लूटकर कहे, "यह
जुर्म नहीं है" वह मोहलक क़ातिल का शरीके-
कार होता है।
25लालची झगड़ों का मंबा रहता है, लेकिन जो
रब पर भरोसा रखे वह ख़ुशहाल रहेगा।
26जो अपने दिल पर भरोसा रखे वह बेवुक़ूफ़
है, लेकिन जो हिकमत की राह पर चले वह
महफ़ूज़ रहेगा।
27ग़रीबों को देनेवाला ज़रूरतमंद नहीं होगा,
लेकिन जो अपनी आँखें बंद करके उन्हें नज़रंदाज़
करे उस पर बहुत लानतें आएँगी।
28जब बेदीन उठ खड़े हों तो लोग छुप जाते
हैं, लेकिन जब हलाक हो जाएँ तो रास्तबाज़ों की
तादाद बढ़ जाती है।

29 जो मुतअद्दिद नसीहतों के बा-
वुजूद हटधर्म रहे वह अचानक ही
बरबाद हो जाएगा, और शफ़ा का इमकान ही नहीं
होगा।
2जब रास्तबाज़ बहुत हैं तो क़ौम ख़ुश होती,
लेकिन जब बेदीन हुकूमत करे तो क़ौम आहें
भरती है।

3जिसे हिकमत प्यारी हो वह अपने बाप को
ख़ुशी दिलाता है, लेकिन कसबियों का साथी
अपनी दौलत उड़ा देता है।
4बादशाह इनसाफ़ से मुल्क को मुस्तहकम
करता, लेकिन हद से ज़्यादा टैक्स लेने से उसे
तबाह करता है।
5जो अपने पड़ोसी की चापलूसी करे वह उसके
क़दमों के आगे जाल बिछाता है।
6शरीर जुर्म करते वक़्त अपने आपको फँसा
देता, लेकिन रास्तबाज़ ख़ुशी मनाकर शादमान
रहता है।
7रास्तबाज़ पस्तहालों के हुक़ूक़ का ख़याल
रखता है, लेकिन बेदीन परवा ही नहीं करता।
8तानाज़न शहर में अफ़रा-तफ़री मचा देते
जबकि दानिशमंद ग़ुस्सा ठंडा कर देते हैं।
9जब दानिशमंद आदमी अदालत में अहमक़
से लड़े तो अहमक़ तैश में आ जाता या क़हक़हा
लगाता है, सुकून का इमकान ही नहीं होता।
10ख़ूनख़ार आदमी बेइलज़ाम शख़्स से
नफ़रत करता, लेकिन सीधी राह पर चलने-
वाला उस की बेहतरी चाहता है।
11अहमक़ अपना पूरा ग़ुस्सा उतारता, लेकिन
दानिशमंद उसे रोककर क़ाबू में रखता है।
12जो हुक्मरान झूट पर ध्यान दे उसके तमाम
मुलाज़िम बेदीन होंगे।
13जब ग़रीब और ज़ालिम की मुलाक़ात होती
है तो दोनों की आँखों को रौशन करनेवाला रब ही
है।
14जो बादशाह दियानतदारी से ज़रूरतमंद की
अदालत करे उसका तख़्त हमेशा तक क़ायम
रहेगा।
15छड़ी और नसीहत हिकमत पैदा करती हैं।
जिसे बेलगाम छोड़ा जाए वह अपनी माँ के लिए
शरमिंदगी का बाइस होगा।
16जब बेदीन फलें-फूलें तो गुनाह भी फलता-
फूलता है, लेकिन रास्तबाज़ उनकी शिकस्त के
गवाह होंगे।
17अपने बेटे की तरबियत कर तो वह तुझे
सुकून और ख़ुशी दिलाएगा।
18जहाँ रोया नहीं वहाँ क़ौम बेलगाम हो जाती
है, लेकिन मुबारक है वह जो शरीअत के ताबे
रहता है।
19नौकर सिर्फ़ अलफ़ाज़ से नहीं सुधरता।
अगर वह बात समझे भी तो भी ध्यान नहीं देगा।
20क्या कोई दिखाई देता है जो बात करने में
जल्दबाज़ है? उस की निसबत अहमक़ के सुधरने
की ज़्यादा उम्मीद है।
21जो ग़ुलाम जवानी से नाज़ो-नेमत में पलकर
बिगड़ जाए उसका बुरा अंजाम होगा।
22ग़ज़बआलूद आदमी झगड़े छेड़ता रहता है,
ग़ुसीले शख़्स से मुतअद्दिद गुनाह सरज़द होते हैं।
23तकब्बुर अपने मालिक को पस्त कर देगा
जबकि फ़रोतन शख़्स इज़्ज़त पाएगा।
24जो चोर का साथी हो वह अपनी जान से
नफ़रत रखता है। गो उससे हलफ़ उठवाया जाए
कि चोरी के बारे में गवाही दे तो भी कुछ नहीं
बताता बल्कि हलफ़ की लानत की ज़द में आ
जाता है।
25जो इनसान से ख़ौफ़ खाए वह फंदे में फँस
जाएगा, लेकिन जो रब का ख़ौफ़ माने वह महफ़ूज़
रहेगा।
26बहुत लोग हुक्मरान की मंज़ूरी के तालिब
रहते हैं, लेकिन इनसाफ़ रब ही की तरफ़ से
मिलता है।
27रास्तबाज़ बदकार से और बेदीन सीधी राह
पर चलनेवाले से घिन खाता है।

अजूर की कहावतें

30 ज़ैल में अजूर बिन याक़ा की
कहावतें हैं। वह मस्सा का रहने-
वाला था। उसने फ़रमाया,
ऐ अल्लाह, मैं थक गया हूँ, ऐ अल्लाह, मैं
थक गया हूँ, यह मेरे बस की बात नहीं रही।
2यक़ीनन मैं इनसानों में सबसे ज़्यादा नादान हूँ,
मुझे इनसान की समझ हासिल नहीं। 3न मैंने

हिकमत सीखी, न क़ुद्दूस ख़ुदा के बारे में इल्म रखता हूँ।

4कौन आसमान पर चढ़कर वापस उतर आया? किसने हवा को अपने हाथों में जमा किया? किसने गहरे पानी को चादर में लपेट लिया? किसने ज़मीन की हुदूद को अपनी अपनी जगह पर क़ायम किया है? उसका नाम क्या है, उसके बेटे का क्या नाम है? अगर तुझे मालूम हो तो मुझे बता!

5अल्लाह की हर बात आज़मूदा है, जो उसमें पनाह ले उसके लिए वह ढाल है।
6उस की बातों में इज़ाफ़ा मत कर, वरना वह तुझे डाँटेगा और तू झूटा ठहरेगा।

7ऐ रब, मैं तुझसे दो चीज़ें माँगता हूँ, मेरे मरने से पहले इनसे इनकार न कर। 8पहले, दरोग़गोई और झूट मुझसे दूर रख। दूसरे, न ग़ुरबत न दौलत मुझे दे बल्कि उतनी ही रोटी जितनी मेरा हक़ है, 9ऐसा न हो कि मैं दौलत के बाइस सेर होकर तेरा इनकार करूँ और कहूँ, “रब कौन है?” ऐसा भी न हो कि मैं ग़ुरबत के बाइस चोरी करके अपने ख़ुदा के नाम की बेहुरमती करूँ।
10मालिक के सामने मुलाज़िम पर तोहमत न लगा, ऐसा न हो कि वह तुझ पर लानत भेजे और तुझे इसका बुरा नतीजा भुगतना पड़े।

11ऐसी नसल भी है जो अपने बाप पर लानत करती और अपनी माँ को बरकत नहीं देती।
12ऐसी नसल भी है जो अपनी नज़र में पाक-साफ़ है, गो उस की ग़िलाज़त दूर नहीं हुई।
13ऐसी नसल भी है जिसकी आँखें बड़े तकब्बुर से देखती हैं, जो अपनी पलकें बड़े घमंड से मारती है।

14ऐसी नसल भी है जिसके दाँत तलवारें और जबड़े छुरियाँ हैं ताकि दुनिया के मुसीबतज़दों को खा जाएँ, मुआशरे के ज़रूरतमंदों को हड़प कर लें।

15जोंक की दो बेटियाँ हैं, चूसने के दो आज़ा जो चीख़ते रहते हैं, “और दो, और दो।”
तीन चीज़ें हैं जो कभी सेर नहीं होतीं बल्कि चार हैं जो कभी नहीं कहतीं, “अब बस करो, अब काफ़ी है,” 16पाताल, बाँझ का रहम, ज़मीन जिसकी प्यास कभी नहीं बुझती और आग जो कभी नहीं कहती, “अब बस करो, अब काफ़ी है।”

17जो आँख बाप का मज़ाक़ उड़ाए और माँ की हिदायत को हक़ीर जाने उसे वादी के कौवे अपनी चोंचों से निकालेंगे और गिद्ध के बच्चे खा जाएंगे।
18तीन बातें मुझे हैरतज़दा करती हैं बल्कि चार हैं जिनकी मुझे समझ नहीं आती, 19आसमान की बुलंदियों पर उक़ाब की राह, चटान पर साँप की राह, समुंदर के बीच में जहाज़ की राह और वह राह जो मर्द कुँवारी के साथ चलता है।

20ज़िनाकार औरत की यह राह है, वह खा लेती और फिर अपना मुँह पोंछकर कहती है, “मुझसे कोई ग़लती नहीं हुई।”

21ज़मीन तीन चीज़ों से लरज़ उठती है बल्कि चार चीज़ें बरदाश्त नहीं कर सकती, 22वह ग़ुलाम जो बादशाह बन जाए, वह अहमक़ जो जी भरकर खाना खा सके, 23वह नफ़रतअंगेज़[a] औरत जिसकी शादी हो जाए और वह नौकरानी जो अपनी मालिकन की मिलकियत पर क़ब्ज़ा करे।

24ज़मीन की चार मख़लूक़ात निहायत ही दानिशमंद हैं हालाँकि छोटी हैं। 25चियूँटियाँ कमज़ोर नसल हैं लेकिन गरमियों के मौसम में सर्दियों के लिए ख़ुराक जमा करती हैं, 26बिज्जू कमज़ोर नसल हैं लेकिन चटानों में ही अपने घर बना लेते हैं, 27टिड्डियों का बादशाह

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : जिससे नफ़रत की जाती है।

नहीं होता ताहम सब परे बाँधकर निकलती हैं,
28छिपकलियाँ गो हाथ से पकड़ी जाती हैं, ताहम
शाही महलों में पाई जाती हैं।
29तीन बल्कि चार जानदार पुरवक़ार अंदाज़
में चलते हैं। 30पहले, शेरबबर जो जानवरों में
ज़ोरावर है और किसी से भी पीछे नहीं हटता,
31दूसरे, मुरग़ा जो अकड़कर चलता है, तीसरे,
बकरा और चौथे अपनी फ़ौज के साथ चलनेवाला
बादशाह।
32अगर तूने मग़रूर होकर हमाक़त की या
बुरे मनसूबे बाँधे तो अपने मुँह पर हाथ रखकर
ख़ामोश हो जा, 33क्योंकि दूध बिलोने से मक्खन,
नाक को मरोड़ने[a] से ख़ून और किसी को ग़ुस्सा
दिलाने से लड़ाई-झगड़ा पैदा होता है।

लमुएल की कहावतें

31 ज़ैल में मस्सा के बादशाह लमु-
एल की कहावतें हैं। उस की माँ ने
उसे यह तालीम दी,
2ऐ मेरे बेटे, मेरे पेट के फल, जो मेरी मन्नतों
से पैदा हुआ, मैं तुझे क्या बताऊँ? 3अपनी
पूरी ताक़त औरतों पर ज़ाया न कर, उन पर जो
बादशाहों की तबाही का बाइस हैं।
4ऐ लमुएल, बादशाहों के लिए मै पीना
मुनासिब नहीं, हुक्मरानों के लिए शराब की आरज़ू
रखना मौज़ूँ नहीं। 5ऐसा न हो कि वह पी पीकर
क़वानीन भूल जाएँ और तमाम मज़लूमों का हक़
मारें। 6शराब उन्हें पिला जो तबाह होनेवाले हैं, मै
उन्हें पिला जो ग़म खाते हैं, 7ऐसे ही पी पीकर
अपनी ग़ुरबत और मुसीबत भूल जाएँ।
8अपना मुँह उनके लिए खोल जो बोल नहीं
सकते, उनके हक़ में जो ज़रूरतमंद हैं। 9अपना
मुँह खोलकर इनसाफ़ से अदालत कर और
मुसीबतज़दा और ग़रीबों के हुक़ूक़ महफ़ूज़ रख।

सुघड़ बीवी की तारीफ़

10सुघड़ बीवी कौन पा सकता है? ऐसी औरत
मोतियों से कहीं ज़्यादा बेशक़ीमत है। 11उस पर
उसके शौहर को पूरा एतमाद है, और वह नफ़ा से
महरूम नहीं रहेगा। 12उम्र-भर वह उसे नुक़सान
नहीं पहुँचाएगी बल्कि बरकत का बाइस होगी।
13वह ऊन और सन चुनकर बड़ी मेहनत से
धागा बना लेती है। 14तिजारती जहाज़ों की तरह
वह दूर-दराज़ इलाक़ों से अपनी रोटी ले आती है।
15वह पौ फटने से पहले ही जाग उठती है
ताकि अपने घरवालों के लिए खाना और अपनी
नौकरानियों के पहले उनका हिस्सा तैयार करे।
16सोच-बिचार के बाद वह खेत ख़रीद लेती,
अपने कमाए हुए पैसों से अंगूर का बाग़ लगा लेती
है।
17ताक़त से कमरबस्ता होकर वह अपने
बाज़ुओं को मज़बूत करती है। 18वह महसूस
करती है, "मेरा कारोबार फ़ायदामंद है," इसलिए
उसका चराग़ रात के वक़्त भी नहीं बुझता।
19उसके हाथ हर वक़्त ऊन और कतान कातने में
मसरूफ़ रहते हैं। 20वह अपनी मुट्ठी मुसीबतज़दों
और ग़रीबों के लिए खोलकर उनकी मदद करती
है। 21जब बर्फ़ पड़े तो उसे घरवालों के बारे में कोई
डर नहीं, क्योंकि सब गरम गरम कपड़े पहने हुए
हैं। 22अपने बिस्तर के लिए वह अच्छे कम्बल बना
लेती, और ख़ुद वह बारीक कतान और अरग़वानी
रंग के लिबास पहने फिरती है।
23शहर के दरवाज़े में बैठे मुल्क के बुज़ुर्ग उसके
शौहर से ख़ूब वाक़िफ़ हैं, और जब कभी कोई
फ़ैसला करना हो तो वह भी शूरा में शरीक होता
है।
24बीवी कपड़ों की सिलाई करके उन्हें फ़रोख़्त
करती है, सौदागर उसके कमरबंद ख़रीद लेते हैं।
25वह ताक़त और वक़ार से मुलब्बस रहती
और हँसकर आनेवाले दिनों का सामना करती
है। 26वह हिकमत से बात करती, और उस की

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : दबाव डालने।

ज़बान पर शफ़ीक़ तालीम रहती है। 27वह सुस्ती
की रोटी नहीं खाती बल्कि अपने घर में हर मामले
की देख-भाल करती है।

28उसके बेटे खड़े होकर उसे मुबारक कहते हैं,
उसका शौहर भी उस की तारीफ़ करके कहता है,
29“बहुत-सी औरतें सुघड़ साबित हुई हैं, लेकिन
तू उन सब पर सबक़त रखती है!”

30दिलफ़रेबी, धोका और हुस्न पल-भर का है,
लेकिन जो औरत अल्लाह का ख़ौफ़ माने वह
क़ाबिले-तारीफ़ है। 31उसे उस की मेहनत का
अज्र दो! शहर के दरवाज़ों में उसके काम उस
की सताइश करें!।

वाइज़

हर दुनियावी चीज़ बातिल है

1 ज़ैल में वाइज़ के अलफ़ाज़ क़लमबंद हैं,
उसके जो दाऊद का बेटा और यरूशलम
में बादशाह है,

2वाइज़ फ़रमाता है, “बातिल ही बातिल,
बातिल ही बातिल, सब कुछ बातिल ही बातिल
है!” 3सूरज तले जो मेहनत-मशक़्क़त इनसान
करे उसका क्या फ़ायदा है? कुछ नहीं! 4एक
पुश्त आती और दूसरी जाती है, लेकिन ज़मीन
हमेशा तक क़ायम रहती है। 5सूरज तुलू और
ग़ुरूब हो जाता है, फिर सुरअत से उसी जगह
वापस चला जाता है जहाँ से दुबारा तुलू होता
है। 6हवा जुनूब की तरफ़ चलती, फिर मुड़कर
शिमाल की तरफ़ चलने लगती है। यों चक्कर
काट काटकर वह बार बार नुक़ताए-आग़ाज़ पर
वापस आती है। 7तमाम दरिया समुंदर में जा
मिलते हैं, तो भी समुंदर की सतह वही रहती
है, क्योंकि दरियाओं का पानी मुसलसल उन
सरचश्मों के पास वापस आता है जहाँ से बह
निकला है। 8इनसान बातें करते करते थक जाता
है और सहीह तौर से कुछ बयान नहीं कर सकता।
आँख कभी इतना नहीं देखती कि कहे, “अब बस
करो, काफ़ी है।” कान कभी इतना नहीं सुनता
कि और न सुनना चाहे। 9जो कुछ पेश आया
वही दुबारा पेश आएगा, जो कुछ किया गया वही
दुबारा किया जाएगा। सूरज तले कोई भी बात नई
नहीं। 10क्या कोई बात है जिसके बारे में कहा
जा सके, “देखो, यह नई है”? हरगिज़ नहीं, यह
भी हमसे बहुत देर पहले ही मौजूद थी। 11जो
पहले ज़िंदा थे उन्हें कोई याद नहीं करता, और
जो आनेवाले हैं उन्हें भी वह याद नहीं करेंगे जो
उनके बाद आएँगे।

हिक्मत हासिल करना बातिल है

12मैं जो वाइज़ हूँ यरूशलम में इसराईल का
बादशाह था। 13मैंने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त
इस पर लगाई कि जो कुछ आसमान तले किया
जाता है उस की हिकमत के ज़रीए तफ़तीशो-
तहक़ीक़ करूँ। यह काम ना-गवार है गो अल्लाह
ने ख़ुद इनसान को इसमें मेहनत-मशक़्क़त करने
की ज़िम्मेदारी दी है।

14मैंने तमाम कामों का मुलाहज़ा किया जो
सूरज तले होते हैं, तो नतीजा यह निकला कि
सब कुछ बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर
है। 15जो पेचदार है वह सीधा नहीं हो सकता,
जिसकी कमी है उसे गिना नहीं जा सकता।

16मैंने दिल में कहा, “हिक्मत में मैंने इतना
इज़ाफ़ा किया और इतनी तरक़्क़ी की कि उन
सबसे सबक़त ले गया जो मुझसे पहले यरूशलम
पर हुकूमत करते थे। मेरे दिल ने बहुत हिकमत
और इल्म अपना लिया है।” 17मैंने अपनी पूरी
ज़हनी ताक़त इस पर लगाई कि हिकमत समझूँ,
नीज़ कि मुझे दीवानगी और हमाक़त की समझ
भी आए। लेकिन मुझे मालूम हुआ कि यह भी

हवा को पकड़ने के बराबर है। 18क्योंकि जहाँ
हिकमत बहुत है वहाँ रंजीदगी भी बहुत है। जो
इल्मो-इरफ़ान में इज़ाफ़ा करे, वह दुख में इज़ाफ़ा
करता है।

दुनिया की ख़ुशियाँ बातिल हैं

2 मैंने अपने आपसे कहा, "आ, ख़ुशी
को आज़माकर अच्छी चीज़ों का तजरबा
कर!" लेकिन यह भी बातिल ही निकला। 2मैं
बोला, "हँसना बेहूदा है, और ख़ुशी से क्या
हासिल होता है?" 3मैंने दिल में अपना जिस्म
मै से तरो-ताज़ा करने और हमाक़त अपनाने के
तरीक़े ढूँड निकाले। इसके पीछे भी मेरी हिकमत
मालूम करने की कोशिश थी, क्योंकि मैं देखना
चाहता था कि जब तक इनसान आसमान तले
जीता रहे उसके लिए क्या कुछ करना मुफ़ीद है।

4मैंने बड़े बड़े काम अंजाम दिए, अपने
लिए मकान तामीर किए, ताकिस्तान लगाए,
5मुतअद्दिद बाग़ और पार्क लगाकर उनमें
मुख़्तलिफ़ क़िस्म के फलदार दरख़्त लगाए।
6फलने-फूलनेवाले जंगल की आबपाशी के लिए
मैंने तालाब बनवाए। 7मैंने ग़ुलाम और लौंडियाँ
ख़रीद लीं। ऐसे ग़ुलाम भी बहुत थे जो घर में पैदा
हुए थे। मुझे उतने गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ
मिलीं जितनी मुझसे पहले यरूशलम में किसी को
हासिल न थीं। 8मैंने अपने लिए सोना-चाँदी और
बादशाहों और सूबों के ख़ज़ाने जमा किए। मैंने
गुलूकार मर्दो-ख़वातीन हासिल किए, साथ साथ
कसरत की ऐसी चीज़ें जिनसे इनसान अपना दिल
बहलाता है।

9यों मैंने बहुत तरक़्क़ी करके उन सब पर
सबक़त हासिल की जो मुझसे पहले यरूशलम
में थे। और हर काम में मेरी हिकमत मेरे दिल में
क़ायम रही। 10जो कुछ भी मेरी आँखें चाहती थीं
वह मैंने उनके लिए मुहैया किया, मैंने अपने दिल
से किसी भी ख़ुशी का इनकार न किया। मेरे दिल
ने मेरे हर काम से लुत्फ़ उठाया, और यह मेरी
तमाम मेहनत-मशक़्क़त का अज्र रहा।

11लेकिन जब मैंने अपने हाथों के तमाम कामों
का जायज़ा लिया, उस मेहनत-मशक़्क़त का जो
मैंने की थी तो नतीजा यही निकला कि सब कुछ
बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है। सूरज
तले किसी भी काम का फ़ायदा नहीं होता।

सबका एक ही अंजाम है

12फिर मैं हिकमत, बेहुदगी और हमाक़त पर
ग़ौर करने लगा। मैंने सोचा, जो आदमी बादशाह
की वफ़ात पर तख़्तनशीन होगा वह क्या करेगा?
वही कुछ जो पहले भी किया जा चुका है!

13मैंने देखा कि जिस तरह रौशनी अंधेरे से
बेहतर है उसी तरह हिकमत हमाक़त से बेहतर है।
14दानिशमंद के सर में आँखें हैं जबकि अहमक़
अंधेरे ही में चलता है। लेकिन मैंने यह भी जान
लिया कि दोनों का एक ही अंजाम है। 15मैंने दिल
में कहा, "अहमक़ का-सा अंजाम मेरा भी होगा।
तो फिर इतनी ज़्यादा हिकमत हासिल करने का
क्या फ़ायदा है? यह भी बातिल है।" 16क्योंकि
अहमक़ की तरह दानिशमंद की याद भी हमेशा
तक नहीं रहेगी। आनेवाले दिनों में सबकी याद
मिट जाएगी। अहमक़ की तरह दानिशमंद को भी
मरना ही है!

17यों सोचते सोचते मैं ज़िंदगी से नफ़रत करने
लगा। जो भी काम सूरज तले किया जाता है वह
मुझे बुरा लगा, क्योंकि सब कुछ बातिल और हवा
को पकड़ने के बराबर है। 18सूरज तले मैंने जो
कुछ भी मेहनत-मशक़्क़त से हासिल किया था
उससे मुझे नफ़रत हो गई, क्योंकि मुझे यह सब
कुछ उसके लिए छोड़ना है जो मेरे बाद मेरी जगह
आएगा। 19और क्या मालूम कि वह दानिशमंद
या अहमक़ होगा? लेकिन जो भी हो, वह उन
तमाम चीज़ों का मालिक होगा जो हासिल करने
के लिए मैंने सूरज तले अपनी पूरी ताक़त और
हिकमत सर्फ़ की है। यह भी बातिल है।

20तब मेरा दिल मायूस होकर हिम्मत हारने
लगा, क्योंकि जो भी मेहनत-मशक़्क़त मैंने सूरज
तले की थी वह बेकार-सी लगी। 21क्योंकि ख़ाह

इनसान अपना काम हिकमत, इल्म और महारत से क्यों न करे, आख़िरकार उसे सब कुछ किसी के लिए छोड़ना है जिसने उसके लिए एक उँगली भी नहीं हिलाई। यह भी बातिल और बड़ी मुसीबत है। 22क्योंकि आख़िर में इनसान के लिए क्या कुछ क़ायम रहता है, जबकि उसने सूरज तले इतनी मेहनत-मशक़्क़त और कोशिशों के साथ सब कुछ हासिल कर लिया है? 23उसके तमाम दिन दुख और रंजीदगी से भरे रहते हैं, रात को भी उसका दिल आराम नहीं पाता। यह भी बातिल ही है।

24इनसान के लिए सबसे अच्छी बात यह है कि खाए-पिए और अपनी मेहनत-मशक़्क़त के फल से लुत्फ़अंदोज़ हो। लेकिन मैंने यह भी जान लिया कि अल्लाह ही यह सब कुछ मुहैया करता है। 25क्योंकि उसके बग़ैर कौन खाकर ख़ुश हो सकता है? कोई नहीं! 26जो इनसान अल्लाह को मंज़ूर हो उसे वह हिकमत, इल्मो-इरफ़ान और ख़ुशी अता करता है, लेकिन गुनाहगार को वह जमा करने और ज़ख़ीरा करने की ज़िम्मेदारी देता है ताकि बाद में यह दौलत अल्लाह को मंज़ूर शख़्स के हवाले की जाए। यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

हर बात का अपना वक़्त है

3 हर चीज़ की अपनी घड़ी होती, आसमान
तले हर मामले का अपना वक़्त होता है,
2जन्म लेने और मरने का,
पौदा लगाने और उखाड़ने का,
3मार देने और शफ़ा देने का,
ढा देने और तामीर करने का,
4रोने और हँसने का,
आहें भरने और रक़्स करने का,
5पत्थर फेंकने और पत्थर जमा करने का,
गले मिलने और इससे बाज़ रहने का,
6तलाश करने और खो देने का,
महफ़ूज़ रखने और फेंकने का,
7फाड़ने और सीकर जोड़ने का,
ख़ामोश रहने और बोलने का,
8प्यार करने और नफ़रत करने का,
जंग लड़ने और सलामती से ज़िंदगी गुज़ारने का,

9चुनाँचे क्या फ़ायदा है कि काम करने-वाला मेहनत-मशक़्क़त करे?

10मैंने वह तकलीफ़देह काम-काज देखा जो अल्लाह ने इनसान के सुपुर्द किया ताकि वह उसमें उलझा रहे। 11उसने हर चीज़ को यों बनाया है कि वह अपने वक़्त के लिए ख़ूबसूरत और मुनासिब हो। उसने इनसान के दिल में जाविदानी भी डाली है, गो वह शुरू से लेकर आख़िर तक उस काम की तह तक नहीं पहुँच सकता जो अल्लाह ने किया है। 12मैंने जान लिया कि इनसान के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं है कि वह ख़ुश रहे और जीते-जी ज़िंदगी का मज़ा ले। 13क्योंकि अगर कोई खाए-पिए और तमाम मेहनत-मशक़्क़त के साथ साथ ख़ुशहाल भी हो तो यह अल्लाह की बख़्शिश है।

14मुझे समझ आई कि जो कुछ अल्लाह करे वह अबद तक क़ायम रहेगा। उसमें न इज़ाफ़ा हो सकता है न कमी। अल्लाह यह सब कुछ इसलिए करता है कि इनसान उसका ख़ौफ़ माने। 15जो हाल में पेश आ रहा है वह माज़ी में पेश आ चुका है, और जो मुस्तक़बिल में पेश आएगा वह भी पेश आ चुका है। हाँ, जो कुछ गुज़र चुका है उसे अल्लाह दुबारा वापस लाता है।

इनसान फ़ानी है

16मैंने सूरज तले मज़ीद देखा, जहाँ अदालत करनी है वहाँ नाइनसाफ़ी है, जहाँ इनसाफ़ करना है वहाँ बेदीनी है। 17लेकिन मैं दिल में बोला, “अल्लाह रास्तबाज़ और बेदीन दोनों की अदालत करेगा, क्योंकि हर मामले और काम का अपना वक़्त होता है।”

18मैंने यह भी सोचा, “जहाँ तक इनसानों का ताल्लुक़ है अल्लाह उनकी जाँच-पड़ताल करता

है ताकि उन्हें पता चले कि वह जानवरों की मानिंद
हैं। 19क्योंकि इनसानो-हैवान का एक ही अंजाम
है। दोनों दम छोड़ते, दोनों में एक-सा दम है,
इसलिए इनसान को हैवान की निसबत ज़्यादा
फ़ायदा हासिल नहीं होता। सब कुछ बातिल ही
है। 20सब कुछ एक ही जगह चला जाता है, सब
कुछ ख़ाक से बना है और सब कुछ दुबारा ख़ाक
में मिल जाएगा। 21कौन यक़ीन से कह सकता
है कि इनसान की रूह ऊपर की तरफ़ जाती और
हैवान की रूह नीचे ज़मीन में उतरती है?"

22ग़रज़ मैंने जान लिया कि इनसान के लिए
इससे बेहतर कुछ नहीं है कि वह अपने कामों में
ख़ुश रहे, यही उसके नसीब में है। क्योंकि कौन
उसे वह देखने के क़ाबिल बनाएगा जो उसके बाद
पेश आएगा? कोई नहीं!

मुरदों का हाल बेहतर है

4 मैंने एक बार फिर नज़र डाली तो मुझे
वह तमाम ज़ुल्म नज़र आया जो सूरज
तले होता है। मज़लूमों के आँसू बहते हैं, और
तसल्ली देनेवाला कोई नहीं होता। ज़ालिम उनसे
ज़्यादती करते हैं, और तसल्ली देनेवाला कोई
नहीं होता। 2यह देखकर मैंने मुरदों को मुबारक
कहा, हालाँकि वह अरसे से वफ़ात पा चुके थे।
मैंने कहा, "वह हाल के ज़िंदा लोगों से कहीं
मुबारक हैं। 3लेकिन इनसे ज़्यादा मुबारक वह
है जो अब तक वुजूद में नहीं आया, जिसने वह
तमाम बुराइयाँ नहीं देखीं जो सूरज तले होती हैं।"

ग़ुरबत में सुकून बेहतर है

4मैंने यह भी देखा कि सब लोग इसलिए
मेहनत-मशक़्क़त और महारत से काम करते हैं
कि एक दूसरे से हसद करते हैं। यह भी बातिल
और हवा को पकड़ने के बराबर है। 5एक तरफ़ तो
अहमक़ हाथ पर हाथ धरे बैठने के बाइस अपने
आपको तबाही तक पहुँचाता है। 6लेकिन दूसरी
तरफ़ अगर कोई मुट्ठी-भर रोज़ी कमाकर सुकून
के साथ ज़िंदगी गुज़ार सके तो यह इससे बेहतर
है कि दोनों मुट्ठियाँ सिर-तोड़ मेहनत और हवा को
पकड़ने की कोशिशों के बाद ही भरें।

तनहाई की निसबत मिलकर रहना बेहतर है

7मैंने सूरज तले मज़ीद कुछ देखा जो बातिल
है। 8एक आदमी अकेला ही था। न उसके बेटा
था, न भाई। वह बेहद मेहनत-मशक़्क़त करता
रहा, लेकिन उस की आँखें कभी अपनी दौलत
से मुतमइन न थीं। सवाल यह रहा, "मैं इतनी
सिर-तोड़ कोशिश किसके लिए कर रहा हूँ? मैं
अपनी जान को ज़िंदगी के मज़े लेने से क्यों
महरूम रख रहा हूँ?" यह भी बातिल और ना-
गवार मामला है।

9दो एक से बेहतर हैं, क्योंकि उन्हें अपने काम-
काज का अच्छा अज्र मिलेगा। 10अगर एक गिर
जाए तो उसका साथी उसे दुबारा खड़ा करेगा।
लेकिन उस पर अफ़सोस जो गिर जाए और कोई
साथी न हो जो उसे दुबारा खड़ा करे। 11नीज़,
जब दो सर्दियों के मौसम में मिलकर बिस्तर पर
लेट जाएँ तो वह गरम रहते हैं। जो तनहा है
वह किस तरह गरम हो जाएगा? 12एक शख़्स
पर क़ाबू पाया जा सकता है जबकि दो मिलकर
अपना दिफ़ा कर सकते हैं। तीन लड़ियोंवाली
रस्सी जल्दी से नहीं टूटती।

क़ौम की क़बूलियत फ़ज़ूल है

13जो लड़का ग़रीब लेकिन दानिशमंद है वह
उस बुज़ुर्ग लेकिन अहमक़ बादशाह से कहीं बेहतर
है जो तंबीह मानने से इनकार करे। 14क्योंकि
गो वह बूढ़े बादशाह की हुकूमत के दौरान ग़ुरबत
में पैदा हुआ था तो भी वह जेल से निकलकर
बादशाह बन गया। 15लेकिन फिर मैंने देखा कि
सूरज तले तमाम लोग एक और लड़के के पीछे हो
लिए जिसे पहले की जगह तख़्तनशीन होना था।
16उन तमाम लोगों की इंतहा नहीं थी जिनकी
क़ियादत वह करता था। तो भी जो बाद में आएँगे
वह उससे ख़ुश नहीं होंगे। यह भी बातिल और
हवा को पकड़ने के बराबर है।

अल्लाह का ख़ौफ़ मानना

5 अल्लाह के घर में जाते वक़्त अपने क़दमों
का ख़याल रख और सुनने के लिए तैयार
रह। यह अहमक़ों की क़ुरबानियों से कहीं बेहतर
है, क्योंकि वह जानते ही नहीं कि ग़लत काम कर
रहे हैं।

2बोलने में जल्दबाज़ी न कर, तेरा दिल अल्लाह
के हुज़ूर कुछ बयान करने में जल्दी न करे।
अल्लाह आसमान पर है जबकि तू ज़मीन पर
ही है। लिहाज़ा बेहतर है कि तू कम बातें
करे। 3क्योंकि जिस तरह हद से ज़्यादा मेहनत-
मशक़्क़त से ख़ाब आने लगते हैं उसी तरह बहुत
बातें करने से आदमी की हमाक़त ज़ाहिर होती है।

4अगर तू अल्लाह के हुज़ूर मन्नत माने तो उसे
पूरा करने में देर मत कर। वह अहमक़ों से ख़ुश
नहीं होता, चुनाँचे अपनी मन्नत पूरी कर। 5मन्नत
न मानना मन्नत मानकर उसे पूरा न करने से
बेहतर है।

6अपने मुँह को इजाज़त न दे कि वह तुझे गुनाह
में फँसाए, और अल्लाह के पैग़ंबर के सामने
न कह, “मुझसे ग़ैरइरादी ग़लती हुई है।” क्या
ज़रूरत है कि अल्लाह तेरी बात से नाराज़ होकर
तेरी मेहनत का काम तबाह करे?

7जहाँ बहुत ख़ाब देखे जाते हैं वहाँ फ़ज़ूल बातें
और बेशुमार अलफ़ाज़ होते हैं। चुनाँचे अल्लाह
का ख़ौफ़ मान!

ज़ालिमों का ज़ुल्म

8क्या तुझे सूबे में ऐसे लोग नज़र आते हैं जो
ग़रीबों पर ज़ुल्म करते, उनका हक़ मारते और
उन्हें इनसाफ़ से महरूम रखते हैं? ताज्जुब न
कर, क्योंकि एक सरकारी मुलाज़िम दूसरे की
निगहबानी करता है, और उन पर मज़ीद मुलाज़िम
मुक़र्रर होते हैं। 9चुनाँचे मुल्क के लिए हर लिहाज़
से फ़ायदा इसमें है कि ऐसा बादशाह उस पर
हुकूमत करे जो काश्तकारी की फ़िकर करता है।

दौलत ख़ुशहाली की ज़मानत नहीं दे सकती

10जिसे पैसे प्यारे हों वह कभी मुतमइन नहीं
होगा, ख़ाह उसके पास कितने ही पैसे क्यों न
हों। जो ज़रदोस्त हो वह कभी आसूदा नहीं होगा,
ख़ाह उसके पास कितनी ही दौलत क्यों न हो।
यह भी बातिल ही है। 11जितना माल में इज़ाफ़ा
हो उतना ही उनकी तादाद बढ़ती है जो उसे खा
जाते हैं। उसके मालिक को उसका क्या फ़ायदा
है सिवाए इसके कि वह उसे देख देखकर मज़ा
ले? 12काम-काज करनेवाले की नींद मीठी होती
है, ख़ाह उसने कम या ज़्यादा खाना खाया हो,
लेकिन अमीर की दौलत उसे सोने नहीं देती।

13मुझे सूरज तले एक निहायत बुरी बात नज़र
आई। जो दौलत किसी ने अपने लिए महफ़ूज़
रखी वह उसके लिए नुक़सान का बाइस बन
गई। 14क्योंकि जब यह दौलत किसी मुसीबत
के बाइस तबाह हो गई और आदमी के हाँ बेटा
पैदा हुआ तो उसके हाथ में कुछ नहीं था। 15माँ
के पेट से निकलते वक़्त वह नंगा था, और इसी
तरह कूच करके चला भी जाएगा। उस की मेहनत
का कोई फल नहीं होगा जिसे वह अपने साथ ले
जा सके।

16यह भी बहुत बुरी बात है कि जिस तरह
इनसान आया उसी तरह कूच करके चला भी
जाता है। उसे क्या फ़ायदा हुआ है कि उसने हवा
के लिए मेहनत-मशक़्क़त की हो? 17जीते-जी
वह हर दिन तारीकी में खाना खाते हुए गुज़ारता,
ज़िंदगी-भर वह बड़ी रंजीदगी, बीमारी और ग़ुस्से
में मुब्तला रहता है।

18तब मैंने जान लिया कि इनसान के लिए
अच्छा और मुनासिब है कि वह जितने दिन
अल्लाह ने उसे दिए हैं खाए-पिए और सूरज
तले अपनी मेहनत-मशक़्क़त के फल का मज़ा
ले, क्योंकि यही उसके नसीब में है। 19क्योंकि
जब अल्लाह किसी शख़्स को मालो-मता अता
करके उसे इस क़ाबिल बनाए कि उसका मज़ा ले
सके, अपना नसीब क़बूल कर सके और मेहनत-

मशक़्क़त के साथ साथ ख़ुश भी हो सके तो यह अल्लाह की बख़्शिश है। 20ऐसे शख़्स को ज़िंदगी के दिनों पर ग़ौरो-ख़ौज़ करने का कम ही वक़्त मिलता है, क्योंकि अल्लाह उसे दिल में ख़ुशी दिलाकर मसरूफ़ रखता है।

6 मुझे सूरज तले एक और बुरी बात नज़र आई जो इनसान को अपने बोझ तले दबाए रखती है।

2अल्लाह किसी आदमी को मालो-मता और इज़्ज़त अता करता है। ग़रज़ उसके पास सब कुछ है जो उसका दिल चाहे। लेकिन अल्लाह उसे इन चीज़ों से लुत्फ़ उठाने नहीं देता बल्कि कोई अजनबी उसका मज़ा लेता है। यह बातिल और एक बड़ी मुसीबत है। 3हो सकता है कि किसी आदमी के सौ बच्चे पैदा हों और वह उम्ररसीदा भी हो जाए, लेकिन ख़ाह वह कितना बूढ़ा क्यों न हो जाए, अगर अपनी ख़ुशहाली का मज़ा न ले सके और आख़िरकार सहीह रसूमात के साथ दफ़नाया न जाए तो इसका क्या फ़ायदा? मैं कहता हूँ कि उस की निसबत माँ के पेट में ज़ाया हो गए बच्चे का हाल बेहतर है। 4बेशक ऐसे बच्चे का आना बेमानी है, और वह अंधेरे में ही कूच करके चला जाता बल्कि उसका नाम तक अंधेरे में छुपा रहता है। 5लेकिन गो उसने न कभी सूरज देखा, न उसे कभी मालूम हुआ कि ऐसी चीज़ है ताहम उसे मज़कूरा आदमी से कहीं ज़्यादा आरामो-सुकून हासिल है। 6और अगर वह दो हज़ार साल तक जीता रहे, लेकिन अपनी ख़ुशहाली से लुत्फ़अंदोज़ न हो सके तो क्या फ़ायदा है? सबको तो एक ही जगह जाना है।

7इनसान की तमाम मेहनत-मशक़्क़त का यह मक़सद है कि पेट भर जाए, तो भी उस की भूक कभी नहीं मिटती। 8दानिशमंद को क्या हासिल है जिसके बाइस वह अहमक़ से बरतर है? इसका क्या फ़ायदा है कि ग़रीब आदमी ज़िंदों के साथ मुनासिब सुलूक करने का फ़न सीख ले? 9दूर-दराज़ चीज़ों के आरज़ूमंद रहने की निसबत बेहतर यह है कि इनसान उन चीज़ों से लुत्फ़ उठाए जो आँखों के सामने ही हैं। यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

अल्लाह का मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता

10जो कुछ भी पेश आता है उसका नाम पहले ही रखा गया है, जो भी इनसान वुजूद में आता है वह पहले ही मालूम था। कोई भी इनसान उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता जो उससे ताक़तवर है। 11क्योंकि जितनी भी बातें इनसान करे उतना ही ज़्यादा मालूम होगा कि बातिल हैं। इनसान के लिए इसका क्या फ़ायदा?

12किस को मालूम है कि उन थोड़े और बेकार दिनों के दौरान जो साये की तरह गुज़र जाते हैं इनसान के लिए क्या कुछ फ़ायदामंद है? कौन उसे बता सकता है कि उसके चले जाने पर सूरज तले क्या कुछ पेश आएगा?

अच्छा क्या है?

7 अच्छा नाम ख़ुशबूदार तेल से और मौत का दिन पैदाइश के दिन से बेहतर है।

2ज़ियाफ़त करनेवालों के घर में जाने की निसबत मातम करनेवालों के घर में जाना बेहतर है, क्योंकि हर इनसान का अंजाम मौत ही है। जो ज़िंदा हैं वह इस बात पर ख़ूब ध्यान दें। 3दुख हँसी से बेहतर है, उतरा हुआ चेहरा दिल की बेहतरी का बाइस है। 4दानिशमंद का दिल मातम करनेवालों के घर में ठहरता जबकि अहमक़ का दिल ऐशो-इशरत करनेवालों के घर में टिक जाता है।

5अहमक़ों के गीत सुनने की निसबत दानिशमंद की झिड़कियों पर ध्यान देना बेहतर है। 6अहमक़ के क़हक़हे देगची तले चटख़नेवाले काँटों की आग की मानिंद हैं। यह भी बातिल ही है।

7नारवा नफ़ा दानिशमंद को अहमक़ बना देता, रिश्वत दिल को बिगाड़ देती है।

8किसी मामले का अंजाम उस की इब्तिदा से बेहतर है, सब्र करना मग़रूर होने से बेहतर है।

9ग़ुस्सा करने में जल्दी न कर, क्योंकि ग़ुस्सा
अहमक़ों की गोद में ही आराम करता है।
10यह न पूछ कि आज की निसबत पुराना
ज़माना बेहतर क्यों था, क्योंकि यह हिकमत की
बात नहीं।
11अगर हिकमत के अलावा मीरास में
मिलकियत भी मिल जाए तो यह अच्छी बात
है, यह उनके लिए सूदमंद है जो सूरज देखते हैं।
12क्योंकि हिकमत पैसों की तरह पनाह देती है,
लेकिन हिकमत का ख़ास फ़ायदा यह है कि वह
अपने मालिक की जान बचाए रखती है।
13अल्लाह के काम का मुलाहज़ा कर। जो कुछ
उसने पेचदार बनाया कौन उसे सुलझा सकता है?
14ख़ुशी के दिन ख़ुश हो, लेकिन मुसीबत के
दिन ख़याल रख कि अल्लाह ने यह दिन भी
बनाया और वह भी इसलिए कि इनसान अपने
मुस्तक़बिल के बारे में कुछ मालूम न कर सके।

इंतहापसंदों से दरेग़ कर

15अपनी अबस ज़िंदगी के दौरान मैंने दो बातें
देखी हैं। एक तरफ़ रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी
के बावुजूद तबाह हो जाता जबकि दूसरी तरफ़
बेदीन अपनी बेदीनी के बावुजूद उम्ररसीदा हो
जाता है। 16न हद से ज़्यादा रास्तबाज़ी दिखा,
न हद से ज़्यादा दानिशमंदी। अपने आपको तबाह
करने की क्या ज़रूरत है? 17न हद से ज़्यादा
बेदीनी, न हद से ज़्यादा हमाक़त दिखा। मुक़र्ररा
वक़्त से पहले मरने की क्या ज़रूरत है? 18अच्छा
है कि तू यह बात थामे रखे और दूसरी भी न छोड़े।
जो अल्लाह का ख़ौफ़ माने वह दोनों ख़तरों से बच
निकलेगा।
19हिकमत दानिशमंद को शहर के दस
हुक्मरानों से ज़्यादा ताक़तवर बना देती है।
20दुनिया में कोई भी इनसान इतना रास्तबाज़
नहीं कि हमेशा अच्छा काम करे और कभी गुनाह
न करे।
21लोगों की हर बात पर ध्यान न दे, ऐसा न हो
कि तू नौकर की लानत भी सुन ले जो वह तुझ
पर करता है। 22क्योंकि दिल में तू जानता है कि
तूने ख़ुद मुतअद्दिद बार दूसरों पर लानत भेजी है।

कौन दानिशमंद है?

23हिकमत के ज़रीए मैंने इन तमाम बातों की
जाँच-पड़ताल की। मैं बोला, "मैं दानिशमंद बनना
चाहता हूँ," लेकिन हिकमत मुझसे दूर रही। 24जो
कुछ मौजूद है वह दूर और निहायत गहरा है।
कौन उस की तह तक पहुँच सकता है? 25चुनाँचे
मैं रुख़ बदलकर पूरे ध्यान से इसकी तहक़ीक़ो-
तफ़तीश करने लगा कि हिकमत और मुख़्तलिफ़
बातों के सहीह नतायज क्या हैं। नीज़, मैं बेदीनी
की हमाक़त और बेहुदगी की दीवानगी मालूम
करना चाहता था।
26मुझे मालूम हुआ कि मौत से कहीं तलख़
वह औरत है जो फंदा है, जिसका दिल जाल और
हाथ ज़ंजीरें हैं। जो आदमी अल्लाह को मंज़ूर हो
वह बच निकलेगा, लेकिन गुनाहगार उसके जाल
में उलझ जाएगा।
27वाइज़ फ़रमाता है, "यह सब कुछ मुझे
मालूम हुआ जब मैंने मुख़्तलिफ़ बातें एक दूसरे
के साथ मुंसलिक कीं ताकि सहीह नतायज
तक पहुँचूँ। 28लेकिन जिसे मैं ढूँडता रहा वह
न मिला। हज़ार अफ़राद में से मुझे सिर्फ़ एक
ही दियानतदार मर्द मिला, लेकिन एक भी
दियानतदार औरत नहीं।[a]
29मुझे सिर्फ़ इतना ही मालूम हुआ कि गो
अल्लाह ने इनसानों को दियानतदार बनाया,
लेकिन वह कई क़िस्म की चालाकियाँ ढूँड
निकालते हैं।"

8 कौन दानिशमंद की मानिंद है? कौन बातों
की सहीह तशरीह करने का इल्म रखता
है? हिकमत इनसान का चेहरा रौशन और उसके
मुँह का सख़्त अंदाज़ नरम कर देती है।

[a] 'दियानतदार' इज़ाफ़ा है ताकि आयत का जो ग़ालिबन
मतलब है वह साफ़ हो जाए।

हुक्मरान का इख़्तियार

2मैं कहता हूँ, बादशाह के हुक्म पर चल,
क्योंकि तूने अल्लाह के सामने हलफ़ उठाया
है। 3बादशाह के हुज़ूर से दूर होने में जल्दबाज़ी
न कर। किसी बुरे मामले में मुब्तला न हो जा,
क्योंकि उसी की मरज़ी चलती है। 4बादशाह के
फ़रमान के पीछे उसका इख़्तियार है, इसलिए
कौन उससे पूछे, "तू क्या कर रहा है?" 5जो
उसके हुक्म पर चले उसका किसी बुरे मामले
से वास्ता नहीं पड़ेगा, क्योंकि दानिशमंद दिल
मुनासिब वक़्त और इनसाफ़ की राह जानता है।
6क्योंकि हर मामले के लिए मुनासिब वक़्त
और इनसाफ़ की राह होती है। लेकिन मुसीबत
इनसान को दबाए रखती है, 7क्योंकि वह नहीं
जानता कि मुस्तक़बिल कैसा होगा। कोई उसे
यह नहीं बता सकता है। 8कोई भी इनसान हवा
को बंद रखने के क़ाबिल नहीं।[a] इसी तरह किसी
को भी अपनी मौत का दिन मुक़र्रर करने का
इख़्तियार नहीं। यह उतना यक़ीनी है जितना यह
कि फ़ौजियों को जंग के दौरान फ़ारिग़ नहीं किया
जाता और बेदीनी बेदीन को नहीं बचाती।
9मैंने यह सब कुछ देखा जब पूरे दिल से उन
तमाम बातों पर ध्यान दिया जो सूरज तले होती
हैं, जहाँ इस वक़्त एक आदमी दूसरे को नुक़सान
पहुँचाने का इख़्तियार रखता है।

दुनिया में नाइनसाफ़ी

10फिर मैंने देखा कि बेदीनों को इज़्ज़त के साथ
दफ़नाया गया। यह लोग मक़दिस के पास आते-
जाते थे! लेकिन जो रास्तबाज़ थे उनकी याद
शहर में मिट गई। यह भी बातिल ही है।
11मुजरिमों को जल्दी से सज़ा नहीं दी जाती,
इसलिए लोगों के दिल बुरे काम करने के मनसूबों
से भर जाते हैं। 12गुनाहगार से सौ गुनाह सरज़द
होते हैं, तो भी उम्ररसीदा हो जाता है।
बेशक मैं यह भी जानता हूँ कि ख़ुदातरस लोगों
की ख़ैर होगी, उनकी जो अल्लाह के चेहरे से
डरते हैं। 13बेदीन की ख़ैर नहीं होगी, क्योंकि वह
अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं मानता। उस की ज़िंदगी के
दिन ज़्यादा नहीं बल्कि साये जैसे आरिज़ी होंगे।
14तो भी एक और बात दुनिया में पेश आती है
जो बातिल है, रास्तबाज़ों को वह सज़ा मिलती है
जो बेदीनों को मिलनी चाहिए, और बेदीनों को वह
अज्र मिलता है जो रास्तबाज़ों को मिलना चाहिए।
यह देखकर मैं बोला, "यह भी बातिल ही है।"
15चुनाँचे मैंने ख़ुशी की तारीफ़ की, क्योंकि
सूरज तले इनसान के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं
है कि वह खाए-पिए और ख़ुश रहे। फिर मेहनत-
मशक़्क़त करते वक़्त ख़ुशी उतने ही दिन उसके
साथ रहेगी जितने अल्लाह ने सूरज तले उसके
लिए मुक़र्रर किए हैं।

जो कुछ अल्लाह करता है वह नाक़ाबिले-फ़हम है

16मैंने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त इस पर लगाई
कि हिकमत जान लूँ और ज़मीन पर इनसान की
मेहनतों का मुआयना कर लूँ, ऐसी मेहनतें कि उसे
दिन-रात नींद नहीं आती। 17तब मैंने अल्लाह का
सारा काम देखकर जान लिया कि इनसान उस
तमाम काम की तह तक नहीं पहुँच सकता जो
सूरज तले होता है। ख़ाह वह उस की कितनी
तहक़ीक़ क्यों न करे तो भी वह तह तक नहीं
पहुँच सकता। हो सकता है कोई दानिशमंद दावा
करे, "मुझे इसकी पूरी समझ आई है," लेकिन
ऐसा नहीं है, वह तह तक नहीं पहुँच सकता।
9 इन तमाम बातों पर मैंने दिल से ग़ौर
किया। इनके मुआयने के बाद मैंने नतीजा
निकाला कि रास्तबाज़ और दानिशमंद और जो
कुछ वह करें अल्लाह के हाथ में हैं। ख़ाह मुहब्बत
हो ख़ाह नफ़रत, इसकी भी समझ इनसान को
नहीं आती, दोनों की जड़ें उससे पहले माज़ी में

[a]एक और मुमकिना तरजुमा : कोई भी इनसान अपनी जान को निकलने से नहीं रोक सकता।

हैं। 2सबके नसीब में एक ही अंजाम है, रास्तबाज़
और बेदीन के, नेक और बद के, पाक और नापाक
के, क़ुरबानियाँ पेश करनेवाले के और उसके जो
कुछ नहीं पेश करता। अच्छे शख़्स और गुनाहगार
का एक ही अंजाम है, हलफ़ उठानेवाले और
इससे डरकर गुरेज़ करनेवाले की एक ही मनज़िल
है।

3सूरज तले हर काम की यही मुसीबत है कि हर
एक के नसीब में एक ही अंजाम है। इनसान का
मुलाहज़ा कर। उसका दिल बुराई से भरा रहता
बल्कि उम्र-भर उसके दिल में बेहुदगी रहती है।
लेकिन आख़िरकार उसे मुरदों में ही जा मिलना
है।

4जो अब तक ज़िंदों में शरीक है उसे उम्मीद है।
क्योंकि ज़िंदा कुत्ते का हाल मुरदा शेर से बेहतर है।
5कम अज़ कम जो ज़िंदा हैं वह जानते हैं कि हम
मरेंगे। लेकिन मुरदे कुछ नहीं जानते, उन्हें मज़ीद
कोई अज्र नहीं मिलना है। उनकी यादें भी मिट
जाती हैं। 6उनकी मुहब्बत, नफ़रत और ग़ैरत सब
कुछ बड़ी देर से जाती रही है। अब वह कभी भी
उन कामों में हिस्सा नहीं लेंगे जो सूरज तले होते
हैं।

ज़िंदगी के मज़े ले!

7चुनाँचे जाकर अपना खाना ख़ुशी के साथ
खा, अपनी मै ज़िंदादिली से पी, क्योंकि अल्लाह
काफ़ी देर से तेरे कामों से ख़ुश है। 8तेरे कपड़े
हर वक़्त सफ़ेद[a] हों, तेरा सर तेल से महरूम न
रहे। 9अपने जीवनसाथी के साथ जो तुझे प्यारा
है ज़िंदगी के मज़े लेता रह। सूरज तले की बातिल
ज़िंदगी के जितने दिन अल्लाह ने तुझे बख़्श दिए
हैं उन्हें इसी तरह गुज़ार! क्योंकि ज़िंदगी में और
सूरज तले तेरी मेहनत-मशक़्क़त में यही कुछ तेरे
नसीब में है। 10जिस काम को भी हाथ लगाए
उसे पूरे जोशो-ख़ुरोश से कर, क्योंकि पाताल में
जहाँ तू जा रहा है न कोई काम है, न मनसूबा, न
इल्म और न हिकमत।

[a]यानी ख़ुशी मनाने के कपड़े।

दुनिया में हिकमत की क़दर नहीं की जाती

11मैंने सूरज तले मज़ीद कुछ देखा। यक़ीनी
बात नहीं कि मुक़ाबले में सबसे तेज़ दौड़नेवाला
जीत जाए, कि जंग में पहलवान फ़तह पाए, कि
दानिशमंद को ख़ुराक हासिल हो, कि समझदार
को दौलत मिले या कि आलिम मंज़ूरी पाए। नहीं,
सब कुछ मौक़े और इत्तफ़ाक़ पर मुनहसिर होता
है। 12नीज़, कोई भी इनसान नहीं जानता कि
मुसीबत का वक़्त कब उस पर आएगा। जिस तरह
मछलियाँ ज़ालिम जाल में उलझ जाती या परिंदे
फंदे में फँस जाते हैं उसी तरह इनसान मुसीबत में
फँस जाता है। मुसीबत अचानक ही उस पर आ
जाती है।

13सूरज तले मैंने हिकमत की एक और मिसाल
देखी जो मुझे अहम लगी।

14कहीं कोई छोटा शहर था जिसमें थोड़े-
से अफ़राद बसते थे। एक दिन एक ताक़तवर
बादशाह उससे लड़ने आया। उसने उसका
मुहासरा किया और इस मक़सद से उसके इर्दगिर्द
बड़े बड़े बुर्ज खड़े किए। 15शहर में एक आदमी
रहता था जो दानिशमंद अलबत्ता ग़रीब था। इस
शख़्स ने अपनी हिकमत से शहर को बचा लिया।
लेकिन बाद में किसी ने भी ग़रीब को याद न
किया। 16यह देखकर मैं बोला, “हिक्मत ताक़त
से बेहतर है,” लेकिन ग़रीब की हिकमत हक़ीर
जानी जाती है। कोई भी उस की बातों पर ध्यान
नहीं देता। 17दानिशमंद की जो बातें आराम से
सुनी जाएँ वह अहमक़ों के दरमियान रहनेवाले
हुक्मरान के ज़ोरदार एलानात से कहीं बेहतर हैं।
18हिकमत जंग के हथियारों से बेहतर है, लेकिन
एक ही गुनाहगार बहुत कुछ जो अच्छा है तबाह
करता है।

मुख़्तलिफ़ हिदायात

10 मरी हुई मक्खियाँ ख़ुशबूदार तेल
ख़राब करती हैं, और हिकमत और

इज़्ज़त की निसबत थोड़ी-सी हमाक़त का ज़्यादा असर होता है।

2दानिशमंद का दिल सहीह राह चुन लेता है जबकि अहमक़ का दिल ग़लत राह पर आ जाता है। 3रास्ते पर चलते वक़्त भी अहमक़ समझ से ख़ाली है, जिससे भी मिले उसे बताता है कि वह बेवुक़ूफ़ है।[a]

4अगर हुक्मरान तुझसे नाराज़ हो जाए तो अपनी जगह मत छोड़, क्योंकि पुरसुकून रवैया बड़ी बड़ी ग़लतियाँ दूर कर देता है।

5मुझे सूरज तले एक ऐसी बुरी बात नज़र आई जो अकसर हुक्मरानों से सरज़द होती है। 6अहमक़ को बड़े ओहदों पर फ़ायज़ किया जाता है जबकि अमीर छोटे ओहदों पर ही रहते हैं। 7मैंने ग़ुलामों को घोड़े पर सवार और हुक्मरानों को ग़ुलामों की तरह पैदल चलते देखा है।

8जो गढ़ा खोदे वह ख़ुद उसमें गिर सकता है, जो दीवार गिरा दे हो सकता है कि साँप उसे डसे। 9जो कान से पत्थर निकाले उसे चोट लग सकती है, जो लकड़ी चीर डाले वह ज़ख़मी हो जाने के ख़तरे में है।

10अगर कुल्हाड़ी कुंद हो और कोई उसे तेज़ न करे तो ज़्यादा ताक़त दरकार है। लिहाज़ा हिकमत को सहीह तौर से अमल में ला, तब ही कामयाबी हासिल होगी।

11अगर इससे पहले कि सपेरा साँप पर क़ाबू पाए वह उसे डसे तो फिर सपेरा होने का क्या फ़ायदा?

12दानिशमंद अपने मुँह की बातों से दूसरों की मेहरबानी हासिल करता है, लेकिन अहमक़ के अपने ही होंट उसे हड़प कर लेते हैं। 13उसका बयान अहमक़ाना बातों से शुरू और ख़तरनाक बेवुक़ूफ़ियों से ख़त्म होता है। 14ऐसा शख़्स बातें करने से बाज़ नहीं आता, गो इनसान मुस्तक़बिल के बारे में कुछ नहीं जानता। कौन उसे बता सकता है कि उसके बाद क्या कुछ होगा? 15अहमक़ का काम उसे थका देता है, और वह शहर का रास्ता भी नहीं जानता।

16उस मुल्क पर अफ़सोस जिसका बादशाह बच्चा है और जिसके बुज़ुर्ग सुबह ही ज़ियाफ़त करने लगते हैं। 17मुबारक है वह मुल्क जिसका बादशाह शरीफ़ है और जिसके बुज़ुर्ग नशे में धुत नहीं रहते बल्कि मुनासिब वक़्त पर और नज़मो-ज़ब्त के साथ खाना खाते हैं।

18जो सुस्त है उसके घर के शहतीर झुकने लगते हैं, जिसके हाथ ढीले हैं उस की छत से पानी टपकने लगता है।

19ज़ियाफ़त करने से हँसी-ख़ुशी और मै पीने से ज़िंदादिली पैदा होती है, लेकिन पैसा ही सब कुछ मुहैया करता है।

20ख़यालों में भी बादशाह पर लानत न कर, अपने सोने के कमरे में भी अमीर पर लानत न भेज, ऐसा न हो कि कोई परिंदा तेरे अलफ़ाज़ लेकर उस तक पहुँचाए।

मेहनत का फ़ायदा

11 अपनी रोटी पानी पर फेंककर जाने दे तो मुतअद्दिद दिनों के बाद वह तुझे फिर मिल जाएगी। 2अपनी मिलकियत सात बल्कि आठ मुख़्तलिफ़ कामों में लगा दे, क्योंकि तुझे क्या मालूम कि मुल्क किस किस मुसीबत से दोचार होगा।

3अगर बादल पानी से भरे हों तो ज़मीन पर बारिश ज़रूर होगी। दरख़्त जुनूब या शिमाल की तरफ़ गिर जाए तो उसी तरफ़ पड़ा रहेगा।

4जो हर वक़्त हवा का रुख़ देखता रहे वह कभी बीज नहीं बोएगा। जो बादलों को तकता रहे वह कभी फ़सल की कटाई नहीं करेगा।

5जिस तरह न तुझे हवा के चक्कर मालूम हैं, न यह कि माँ के पेट में बच्चा किस तरह तश्कील पाता है उसी तरह तू अल्लाह का काम नहीं समझ सकता, जो सब कुछ अमल में लाता है।

[a]इबरानी ज़ूमानी है। दूसरा मतलब 'कि मैं बेवुक़ूफ़ हूँ' हो सकता है।

6सुबह के वक़्त अपना बीज बो और शाम को
भी काम में लगा रह, क्योंकि क्या मालूम कि
किस काम में कामयाबी होगी, इसमें, उसमें या
दोनों में।

अपनी जवानी से लुत्फ़अंदोज़ हो

7रौशनी कितनी भली है, और सूरज आँखों
के लिए कितना ख़ुशगवार है। 8जितने भी साल
इनसान ज़िंदा रहे उतने साल वह ख़ुशबाश रहे।
साथ साथ उसे याद रहे कि तारीक दिन भी
आनेवाले हैं, और कि उनकी बड़ी तादाद होगी।
जो कुछ आनेवाला है वह बातिल ही है।

9ऐ नौजवान, जब तक तू जवान है ख़ुश रह और
जवानी के मज़े लेता रह। जो कुछ तेरा दिल चाहे
और तेरी आँखों को पसंद आए वह कर, लेकिन
याद रहे कि जो कुछ भी तू करे उसका जवाब
अल्लाह तुझसे तलब करेगा। 10चुनाँचे अपने दिल
से रंजीदगी और अपने जिस्म से दुख-दर्द दूर रख,
क्योंकि जवानी और काले बाल दम-भर के ही हैं।

12 जवानी में ही अपने ख़ालिक़ को याद
रख, इससे पहले कि मुसीबत के दिन
आएँ, वह साल क़रीब आएँ जिनके बारे में तू
कहेगा, “यह मुझे पसंद नहीं।” 2उसे याद रख
इससे पहले कि रौशनी तेरे लिए ख़त्म हो जाए,
सूरज, चाँद और सितारे अंधेरे हो जाएँ और
बारिश के बाद बादल लौट आएँ। 3उसे याद
रख, इससे पहले कि घर के पहरेदार थरथराने
लगें, ताक़तवर आदमी कुबड़े हो जाएँ, गंदुम
पीसनेवाली नौकरानियाँ कम होने के बाइस काम
करना छोड़ दें और खिड़कियों में से देखनेवाली
ख़वातीन धुँधला जाएँ। 4उसे याद रख, इससे
पहले कि गली में पहुँचानेवाला दरवाज़ा बंद हो
जाए और चक्की की आवाज़ आहिस्ता हो जाए।
जब चिड़ियाँ चहचहाने लगेंगी तो तू जाग उठेगा,
लेकिन तमाम गीतों की आवाज़ दबी-सी सुनाई
देगी। 5उसे याद रख, इससे पहले कि तू ऊँची
जगहों और गलियों के ख़तरों से डरने लगे। गो
बादाम का फूल खिल जाए, टिड्डी बोझ तले दब
जाए और करीर का फूल फूट निकले, लेकिन तू
कूच करके अपने अबदी घर में चला जाएगा, और
मातम करनेवाले गलियों में घूमते फिरेंगे।

6अल्लाह को याद रख, इससे पहले कि चाँदी
का रस्सा टूट जाए, सोने का बरतन टुकड़े टुकड़े
हो जाए, चश्मे के पास घड़ा पाश पाश हो जाए
और कुएँ का पानी निकालनेवाला पहिया टूटकर
उसमें गिर जाए। 7तब तेरी ख़ाक दुबारा उस ख़ाक
में मिल जाएगी जिससे निकल आई और तेरी रूह
उस ख़ुदा के पास लौट जाएगी जिसने उसे बख़्शा
था।

8वाइज़ फ़रमाता है, “बातिल ही बातिल! सब
कुछ बातिल ही बातिल है!”

ख़ातमा

9दानिशमंद होने के अलावा वाइज़ क़ौम
को इल्मो-इरफ़ान की तालीम देता रहा।
उसने मुतअद्दिद अमसाल को सहीह वज़न
देकर उनकी जाँच-पड़ताल की और उन्हें
तरतीबवार जमा किया। 10वाइज़ की को-
शिश थी कि मुनासिब अलफ़ाज़ इस्तेमाल करे
और दियानतदारी से सच्ची बातें लिखे।

11दानिशमंदों के अलफ़ाज़ आँकुस की मानिंद
हैं, तरतीब से जमाशुदा अमसाल लकड़ी में
मज़बूती से ठोंकी गई कीलों जैसी हैं। यह एक
ही गल्लाबान की दी हुई हैं।

12मेरे बेटे, इसके अलावा ख़बरदार रह। किताबें
लिखने का सिलसिला कभी ख़त्म नहीं हो
जाएगा, और हद से ज़्यादा कुतुबबीनी से जिस्म
थक जाता है।

13आओ, इख़्तिताम पर हम तमाम तालीम के
ख़ुलासे पर ध्यान दें। रब का ख़ौफ़ मान और
उसके अहकाम की पैरवी कर। यह हर इनसान
का फ़र्ज़ है। 14क्योंकि अल्लाह हर काम को ख़ाह
वह छुपा ही हो, ख़ाह बुरा या भला हो अदालत में
लाएगा।

ग़ज़लुल-ग़ज़लात

तू मेरा बादशाह है

1 सुलेमान की ग़ज़लुल-ग़ज़लात। 2वह मुझे
अपने मुँह से बोसे दे, क्योंकि तेरी मुहब्बत
मै से कहीं ज़्यादा राहतबख़्श है।

3तेरी इत्र की ख़ुशबू कितनी मनमोहन है, तेरा
नाम छिड़का गया महकदार तेल ही है। इसलिए
कुँवारियाँ तुझे प्यार करती हैं।

4आ, मुझे खींचकर अपने साथ ले जा! आ,
हम दौड़कर चले जाएँ! बादशाह मुझे अपने कमरों
में ले जाए, और हम बाग़ बाग़ होकर तेरी ख़ुशी
मनाएँ। हम मै की निसबत तेरे प्यार की ज़्यादा
तारीफ़ करें। मुनासिब है कि लोग तुझसे मुहब्बत
करें।

मुझे हक़ीर न जानो

5ऐ यरूशलम की बेटियो, मैं स्याहफ़ाम लेकिन
मनमोहन हूँ, मैं क़ीदार के ख़ैमों जैसी, सुलेमान
के ख़ैमों के परदों जैसी ख़ूबसूरत हूँ। 6इसलिए
मुझे हक़ीर न जानो कि मैं स्याहफ़ाम हूँ, कि मेरी
जिल्द धूप से झुलस गई है। मेरे सगे भाई मुझसे
नाराज़ थे, इसलिए उन्होंने मुझे अंगूर के बाग़ों की
देख-भाल करने की ज़िम्मेदारी दी, अंगूर के अपने
ज़ाती बाग़ की देख-भाल मैं कर न सकी।

तू कहाँ है?

7ऐ तू जो मेरी जान का प्यारा है, मुझे बता कि
भेड़-बकरियाँ कहाँ चरा रहा है? तू उन्हें दोपहर
के वक़्त कहाँ आराम करने बिठाता है? मैं क्यों
निक़ाबपोश की तरह तेरे साथियों के रेवड़ों के
पास ठहरी रहूँ?

8क्या तू नहीं जानती, तू जो औरतों में सबसे
ख़ूबसूरत है? फिर घर से निकलकर खोज लगा
कि मेरी भेड़-बकरियाँ किस तरफ़ चली गई हैं,
अपने मेमनों को गल्लाबानों के ख़ैमों के पास
चरा।

तू कितनी ख़ूबसूरत है

9मेरी महबूबा, मैं तुझे किस चीज़ से तशबीह
दूँ? तू फ़िरौन का शानदार रथ खींचनेवाली घोड़ी
है!

10तेरे गाल बालियों से कितने आरास्ता, तेरी
गरदन मोती के गुलूबंद से कितनी दिलफ़रेब
लगती है।

11हम तेरे लिए सोने का ऐसा हार बनवा लेंगे
जिसमें चाँदी के मोती लगे होंगे।

12जितनी देर बादशाह ज़ियाफ़त में शरीक था
मेरे बालछड़ की ख़ुशबू चारों तरफ़ फैलती रही।
13मेरा महबूब गोया मुर की डिबिया है, जो मेरी
छातियों के दरमियान पड़ी रहती है।

14मेरा महबूब मेरे लिए मेहँदी के फूलों का
गुच्छा है, जो ऐन-जदी के अंगूर के बाग़ों से लाया
गया है।

15मेरी महबूबा, तू कितनी ख़ूबसूरत है, कितनी
हसीन! तेरी आँखें कबूतर ही हैं।

16मेरे महबूब, तू कितना ख़ूबसूरत है, कितना
दिलरुबा! सायादार हरियाली हमारा बिस्तर
17और देवदार के दरख़्त हमारे घर के शहतीर हैं।
जूनीपर के दरख़्त तख़्तों का काम देते हैं।

तू लासानी है

2 मैं मैदाने-शारून का फूल और वा-
दियों की सोसन हूँ।

2लड़कियों के दरमियान मेरी महबूबा काँटेदार
पौदों में सोसन की मानिंद है।

3जवान आदमियों में मेरा महबूब जंगल में सेब
के दरख़्त की मानिंद है। मैं उसके साये में बैठने
की कितनी आरज़ूमंद हूँ, उसका फल मुझे कितना
मीठा लगता है।

मैं इश्क़ के मारे बीमार हो गई हूँ

4वह मुझे मैकदे[a] में लाया है, मेरे ऊपर उसका
झंडा मुहब्बत है।
5किशमिश की टिक्कियों से मुझे तरो-ताज़ा
करो, सेबों से मुझे तक़वियत दो, क्योंकि मैं इश्क़
के मारे बीमार हो गई हूँ।
6उसका बायाँ बाज़ू मेरे सर के नीचे होता और
दहना बाज़ू मुझे गले लगाता है।
7ऐ यरूशलम की बेटियो, ग़ज़ालों और खुले
मैदान की हिरनियों की क़सम खाओ कि जब तक
मुहब्बत ख़ुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न
बेदार करोगी।

बहार आ गई है

8सुनो, मेरा महबूब आ रहा है। वह देखो, वह
पहाड़ों पर फलाँगता और टीलों पर से उछलता-
कूदता आ रहा है।
9मेरा महबूब ग़ज़ाल या जवान हिरन की मानिंद
है। अब वह हमारे घर की दीवार के सामने रुककर
खिड़कियों में से झाँक रहा, जंगले में से तक रहा
है।

10वह मुझसे कहता है, “ऐ मेरी ख़ूबसूरत
महबूबा, उठकर मेरे साथ चल!
11देख, सर्दियों का मौसम गुज़र गया है, बारिशें
भी ख़त्म हो गई हैं।
12ज़मीन से फूल फूट निकले हैं और गीत का
वक़्त आ गया है, कबूतरों की ग़ूँ ग़ूँ हमारे मुल्क में
सुनाई देती है।
13अंजीर के दरख़्तों पर पहली फ़सल का फल
पक रहा है, और अंगूर की बेलों के फूल ख़ुशबू
फैला रहे हैं। चुनाँचे आ मेरी हसीन महबूबा,
उठकर आ जा!
14ऐ मेरी कबूतरी, चटान की दराड़ों में छुपी न
रह, पहाड़ी पत्थरों में पोशीदा न रह बल्कि मुझे
अपनी शक्ल दिखा, मुझे अपनी आवाज़ सुनने दे,
क्योंकि तेरी आवाज़ शीरीं, तेरी शक्ल ख़ूबसूरत
है।”

15हमारे लिए लोमड़ियों को पकड़ लो, उन
छोटी लोमड़ियों को जो अंगूर के बाग़ों को तबाह
करती हैं। क्योंकि हमारी बेलों से फूल फूट निकले
हैं।

16मेरा महबूब मेरा ही है, और मैं उसी की हूँ,
उसी की जो सोसनों में चरता है।
17ऐ मेरे महबूब, इससे पहले कि शाम की हवा
चले और साये लंबे होकर फ़रार हो जाएँ ग़ज़ाल

[a]मैकदे से मुराद ग़ालिबन महल का वह हिस्सा है जिसमें
बादशाह ज़ियाफ़त करता था।

या जवान हिरन की तरह संगलाख़ पहाड़ों का रुख़ कर!

रात को महबूब की आरज़ू

3 रात को जब मैं बिस्तर पर लेटी थी तो मैंने
उसे ढूँडा जो मेरी जान का प्यारा है, मैंने
उसे ढूँडा लेकिन न पाया।
2मैं बोली, “अब मैं उठकर शहर में घूमती, उस
की गलियों और चौकों में फिरकर उसे तलाश
करती हूँ जो मेरी जान का प्यारा है।” मैं ढूँडती
रही लेकिन वह न मिला।
3जो चौकीदार शहर में गश्त करते हैं उन्होंने
मुझे देखा। मैंने पूछा, “क्या आपने उसे देखा है
जो मेरी जान का प्यारा है?”
4आगे निकलते ही मुझे वह मिल गया जो मेरी
जान का प्यारा है। मैंने उसे पकड़ लिया। अब मैं
उसे नहीं छोड़ूँगी जब तक उसे अपनी माँ के घर
में न ले जाऊँ, उसके कमरे में न पहुँचाऊँ जिसने
मुझे जन्म दिया था।

5ऐ यरूशलम की बेटियो, ग़ज़ालों और खुले
मैदान की हिरनियों की क़सम खाओ कि जब तक
मुहब्बत ख़ुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न
बेदार करोगी।

दूल्हा अपने लोगों के साथ आता है

6यह कौन है जो धुएँ के सतून की तरह सीधा
हमारे पास चला आ रहा है? उससे चारों तरफ़
मुर, बख़ूर और ताजिर की तमाम ख़ुशबुएँ फैल
रही हैं।
7यह तो सुलेमान की पालकी है जो इसराईल
के 60 पहलवानों से घिरी हुई है।
8सब तलवार से लैस और तजरबाकार फ़ौजी
हैं। हर एक ने अपनी तलवार को रात के हौलनाक
ख़तरों का सामना करने के लिए तैयार कर रखा
है।
9सुलेमान बादशाह ने ख़ुद यह पालकी लुबनान
के देवदार की लकड़ी से बनवाई।
10उसने उसके पाए चाँदी से, पुश्त सोने से,
और निशस्त अरग़वानी रंग के कपड़े से बनवाई।
यरूशलम की बेटियों ने बड़े प्यार से उसका
अंदरूनी हिस्सा मुरस्साकारी से आरास्ता किया
है।

11ऐ सिय्यून की बेटियो, निकल आओ और
सुलेमान बादशाह को देखो। उसके सर पर वह
ताज है जो उस की माँ ने उस की शादी के दिन
उसके सर पर पहनाया, उस दिन जब उसका दिल
बाग़ बाग़ हुआ।

तू कितनी हसीन है!

4 मेरी महबूबा, तू कितनी ख़ूबसूरत, कितनी
हसीन है! निक़ाब के पीछे तेरी आँखों
की झलक कबूतरों की मानिंद है। तेरे बाल उन
बकरियों की मानिंद हैं जो उछलती-कूदती कोहे-
जिलियाद से उतरती हैं।
2तेरे दाँत अभी अभी कतरी और नहलाई हुई
भेड़ों जैसे सफ़ेद हैं। हर दाँत का जुड़वाँ है, एक
भी गुम नहीं हुआ।
3तेरे होंट क़िरमिज़ी रंग का डोरा हैं, तेरा मुँह
कितना प्यारा है। निक़ाब के पीछे तेरे गालों की
झलक अनार के टुकड़ों की मानिंद दिखाई देती
है।
4तेरी गरदन दाऊद के बुर्ज जैसी दिलरुबा
है। जिस तरह इस गोल और मज़बूत बुर्ज से
पहलवानों की हज़ार ढालें लटकी हैं उस तरह तेरी
गरदन भी ज़ेवरात से आरास्ता है।
5तेरी छातियाँ सोसनों में चरनेवाले ग़ज़ाल के
जुड़वाँ बच्चों की मानिंद हैं।
6इससे पहले कि शाम की हवा चले और साये
लंबे होकर फ़रार हो जाएँ मैं मुर के पहाड़ और
बख़ूर की पहाड़ी के पास चलूँगा।
7मेरी महबूबा, तेरा हुस्न कामिल है, तुझमें कोई
नुक़्स नहीं है।

दुलहन का जादू

8आ मेरी दुलहन, लुबनान से मेरे साथ आ!
हम कोहे-अमाना की चोटी से, सनीर और हरमून
की चोटियों से उतरें, शेरों की माँदों और चीतों के
पहाड़ों से उतरें।

9मेरी बहन, मेरी दुलहन, तूने मेरा दिल चुरा
लिया है, अपनी आँखों की एक ही नज़र से, अपने
गुलूबंद के एक ही जौहर से तूने मेरा दिल चुरा
लिया है।

10मेरी बहन, मेरी दुलहन, तेरी मुहब्बत कितनी
मनमोहन है! तेरा प्यार मै से कहीं ज़्यादा पसंदीदा
है। बलसान की कोई भी ख़ुशबू तेरी महक का
मुक़ाबला नहीं कर सकती।

11मेरी दुलहन, जिस तरह शहद छत्ते से
टपकता है उसी तरह तेरे होंटों से मिठास टपकती
है। दूध और शहद तेरी ज़बान तले रहते हैं। तेरे
कपड़ों की ख़ुशबू सूँघकर लुबनान की ख़ुशबू याद
आती है।

दुलहन नफ़ीस बाग़ है

12मेरी बहन, मेरी दुलहन, तू एक बाग़ है
जिसकी चारदीवारी किसी और को अंदर आने
नहीं देती, एक बंद किया गया चश्मा जिस पर
मुहर लगी है।

13बाग़ में अनार के दरख़्त लगे हैं जिन पर
लज़ीज़ फल पक रहा है। मेहँदी के पौदे भी उग
रहे हैं।

14बालछड़, ज़ाफ़रान, ख़ुशबूदार बेद,
दारचीनी, बख़ूर की हर क़िस्म का दरख़्त, मुर,
ऊद और हर क़िस्म का बलसान बाग़ में फलता-
फूलता है।

15तू बाग़ का उबलता चश्मा है, एक ऐसा मंबा
जिसका ताज़ा पानी लुबनान से बहकर आता है।

16ऐ शिमाली हवा, जाग उठ! ऐ जुनूबी हवा,
आ! मेरे बाग़ में से गुज़र जा ताकि वहाँ से चारों
तरफ़ बलसान की ख़ुशबू फैल जाए। मेरा महबूब
अपने बाग़ में आकर उसके लज़ीज़ फलों से खाए।

5 मेरी बहन, मेरी दुलहन, अब मैं अपने बाग़
में दाख़िल हो गया हूँ। मैंने अपना मुर अपने
बलसान समेत चुन लिया, अपना छत्ता शहद
समेत खा लिया, अपनी मै अपने दूध समेत पी ली
है। खाओ, मेरे दोस्तो, खाओ और पियो, मुहब्बत
से सरशार हो जाओ!

रात को महबूब की तलाश

2मैं सो रही थी, लेकिन मेरा दिल बेदार रहा।
सुन! मेरा महबूब दस्तक दे रहा है,
"ऐ मेरी बहन, मेरी साथी, मेरे लिए दरवाज़ा
खोल दे! ऐ मेरी कबूतरी, मेरी कामिल साथी,
मेरा सर ओस से तर हो गया है, मेरी ज़ुल्फ़ें रात
की शबनम से भीग गई हैं।"

3"मैं अपना लिबास उतार चुकी हूँ, अब मैं
किस तरह उसे दुबारा पहन लूँ? मैं अपने पाँव
धो चुकी हूँ, अब मैं उन्हें किस तरह दुबारा मैला
करूँ?"

4मेरे महबूब ने अपना हाथ दीवार के सूराख़ में
से अंदर डाल दिया। तब मेरा दिल तड़प उठा।
5मैं उठी ताकि अपने महबूब के लिए दरवाज़ा
खोलूँ। मेरे हाथ मुर से, मेरी उँगलियाँ मुर की
ख़ुशबू से टपक रही थीं जब मैं कुंडी खोलने आई।
6मैंने अपने महबूब के लिए दरवाज़ा खोल
दिया, लेकिन वह मुड़कर चला गया था। मुझे
सख़्त सदमा हुआ। मैंने उसे तलाश किया लेकिन
न मिला। मैंने उसे आवाज़ दी, लेकिन जवाब न
मिला।
7जो चौकीदार शहर में गश्त करते हैं उनसे मेरा
वास्ता पड़ा, उन्होंने मेरी पिटाई करके मुझे ज़ख़मी
कर दिया। फ़सील के चौकीदारों ने मेरी चादर भी
छीन ली।

8ऐ यरूशलम की बेटियो, क़सम खाओ कि
अगर मेरा महबूब मिला तो उसे इत्तला दोगी, मैं
मुहब्बत के मारे बीमार हो गई हूँ।
9तू जो औरतों में सबसे हसीन है, हमें बता, तेरे
महबूब की क्या ख़ासियत है जो दूसरों में नहीं है?
तेरा महबूब दूसरों से किस तरह सबक़त रखता है
कि तू हमें ऐसी क़सम खिलाना चाहती है?
10मेरे महबूब की जिल्द गुलाबी और सफ़ेद है।
हज़ारों के साथ उसका मुक़ाबला करो तो उसका
आला किरदार नुमायाँ तौर पर नज़र आएगा।
11उसका सर ख़ालिस सोने का है, उसके बाल
खजूर के फूलदार गुच्छों[a] की मानिंद और कौवे
की तरह स्याह हैं।
12उस की आँखें नदियों के किनारे के कबूतरों
की मानिंद हैं, जो दूध में नहलाए और कसरत के
पानी के पास बैठे हैं।
13उसके गाल बलसान की क्यारी की मानिंद,
उसके होंट मुर से टपकते सोसन के फूलों जैसे
हैं।
14उसके बाज़ू सोने की सलाखें हैं जिनमें
पुखराज[b] जड़े हुए हैं, उसका जिस्म हाथी-
दाँत का शाहकार है जिसमें संगे-लाजवर्द[c] के
पत्थर लगे हैं।
15उस की रानें मरमर के सतून हैं जो ख़ालिस
सोने के पाइयों पर लगे हैं। उसका हुलिया लुबनान
और देवदार के दरख़्तों जैसा उम्दा है।
16उसका मुँह मिठास ही है, ग़रज़ वह हर
लिहाज़ से पसंदीदा है।

ऐ यरूशलम की बेटियो, यह है मेरा महबूब, मेरा
दोस्त।

6 ऐ तू जो औरतों में सबसे ख़ूबसूरत है, तेरा
महबूब किधर चला गया है? उसने कौन-
सी सिम्त इख़्तियार की ताकि हम तेरे साथ उसका
खोज लगाएँ?

2मेरा महबूब यहाँ से उतरकर अपने बाग़ में
चला गया है, वह बलसान की क्यारियों के पास
गया है ताकि बाग़ों में चरे और सोसन के फूल
चुने।
3मैं अपने महबूब की ही हूँ, और वह मेरा ही है,
वह जो सोसनों में चरता है।

तू कितनी ख़ूबसूरत है

4मेरी महबूबा, तू तिरज़ा शहर जैसी हसीन,
यरूशलम जैसी ख़ूबसूरत और अलमबरदार दस्तों
जैसी रोबदार है।

5अपनी नज़रों को मुझसे हटा ले, क्योंकि वह
मुझमें उलझन पैदा कर रही हैं।

तेरे बाल उन बकरियों की मानिंद हैं जो
उछलती-कूदती कोहे-जिलियाद से उतरती हैं।
6तेरे दाँत अभी अभी नहलाई हुई भेड़ों जैसे
सफ़ेद हैं। हर दाँत का जुड़वाँ है, एक भी गुम नहीं
हुआ।
7निक़ाब के पीछे तेरे गालों की झलक अनार
के टुकड़ों की मानिंद दिखाई देती है।

8गो बादशाह की 60 बीवियाँ, 80 दाश्ताएँ
और बेशुमार कुँवारियाँ हों 9लेकिन मेरी कबूतरी,
मेरी कामिल साथी लासानी है। वह अपनी माँ
की वाहिद बेटी है, जिसने उसे जन्म दिया उस
की पाक लाडली है। बेटियों ने उसे देखकर उसे
मुबारक कहा, रानियों और दाश्ताओं ने उस की
तारीफ़ की,
10"यह कौन है जो तुलूए-सुबह की तरह चमक
उठी, जो चाँद जैसी ख़ूबसूरत, आफ़ताब जैसी
पाक और अलमबरदार दस्तों जैसी रोबदार है?"

[a] इबरानी लफ़्ज़ का मतलब मुबहम-सा है।
[b] topas
[c] lapis lazuli

महबूबा के लिए आरज़ू

11मैं अख़रोट के बाग़ में उतर आया ताकि वादी
में फूटनेवाले पौदों का मुआयना करूँ। मैं यह भी
मालूम करना चाहता था कि क्या अंगूर की कोंपलें
निकल आई या अनार के फूल लग गए हैं।
12लेकिन चलते चलते न जाने क्या हुआ, मेरी
आरज़ू ने मुझे मेरी शरीफ़ क़ौम के रथों के पास
पहुँचाया।

महबूबा की दिलकशी

13ऐ शूलम्मीत, लौट आ, लौट आ! मुड़-
कर लौट आ ताकि हम तुझ पर नज़र करें।

तुम शूलम्मीत को क्यों देखना चाहती हो? हम
लशकरगाह का लोकनाच देखना चाहती हैं!

7 ऐ रईस की बेटी, जूतों में चलने का तेरा
अंदाज़ कितना मनमोहन है! तेरी ख़ुशवज़ा
रानें माहिर कारीगर के ज़ेवरात की मानिंद हैं।
2तेरी नाफ़ प्याला है जो मै से कभी नहीं महरूम
रहती। तेरा जिस्म गंदुम का ढेर है जिसका इहाता
सोसन के फूलों से किया गया है।
3तेरी छातियाँ ग़ज़ाल के जुड़वाँ बच्चों की
मानिंद हैं।
4तेरी गरदन हाथीदाँत का मीनार, तेरी आँखें
हसबोन शहर के तालाब हैं, वह जो बत-रब्बीम के
दरवाज़े के पास हैं। तेरी नाक मीनारे-लुबनान की
मानिंद है जिसका मुँह दमिश्क़ की तरफ़ है।
5तेरा सर कोहे-करमिल की मानिंद है, तेरे खुले
बाल अरग़वान की तरह क़ीमती और दिलकश हैं।
बादशाह तेरी ज़ुल्फ़ों की ज़ंजीरों में जकड़ा रहता
है।

महबूबा के लिए आरज़ू

6ऐ ख़ुशियों से लबरेज़ मुहब्बत, तू कितनी
हसीन है, कितनी दिलरुबा!
7तेरा क़दो-क़ामत खजूर के दरख़्त सा, तेरी
छातियाँ अंगूर के गुच्छों जैसी हैं।
8मैं बोला, "मैं खजूर के दरख़्त पर चढ़कर
उसके फूलदार गुच्छों[a] पर हाथ लगाऊँगा।" तेरी
छातियाँ अंगूर के गुच्छों की मानिंद हों, तेरे साँस
की ख़ुशबू सेबों की ख़ुशबू जैसी हो।
9तेरा मुँह बेहतरीन मै हो, ऐसी मै जो सीधी मेरे
महबूब के मुँह में जाकर नरमी से होंटों और दाँतों
में से गुज़र जाए।

महबूब के लिए आरज़ू

10मैं अपने महबूब की ही हूँ, और वह मुझे
चाहता है।
11आ, मेरे महबूब, हम शहर से निकलकर
देहात में रात गुज़ारें।
12आ, हम सुबह-सवेरे अंगूर के बाग़ों में जाकर
मालूम करें कि क्या बेलों से कोंपलें निकल आई हैं
और फूल लगे हैं, कि क्या अनार के दरख़्त खिल
रहे हैं। वहाँ मैं तुझ पर अपनी मुहब्बत का इज़हार
करूँगी।
13मर्दुमगयाह[b] की ख़ुशबू फैल रही, और हमारे
दरवाज़े पर हर क़िस्म का लज़ीज़ फल है, नई
फ़सल का भी और गुज़री का भी। क्योंकि मैंने
यह चीज़ें तेरे लिए, अपने महबूब के लिए महफ़ूज़
रखी हैं।

काश हम अकेले हों

8 काश तू मेरा सगा भाई[c] होता, तब अगर
बाहर तुझसे मुलाक़ात होती तो मैं तुझे
बोसा देती और कोई न होता जो यह देखकर मुझे
हक़ीर जानता।
2मैं तेरी राहनुमाई करके तुझे अपनी माँ के घर
में ले जाती, उसके घर में जिसने मुझे तालीम दी।
वहाँ मैं तुझे मसालेदार मै और अपने अनारों का
रस पिलाती।

---

[a] इबरानी लफ़्ज़ का मतलब मुबहम-सा है।
[b] एक पौदा जिसके बारे में सोचा जाता था कि उसे खाकर बाँझ औरत भी बच्चे को जन्म देगी।
[c] लफ़्ज़ी तरजुमा : मेरा भाई होता, जिसे मेरी माँ ने दूध पिलाया होता।

3उसका बायाँ बाज़ू मेरे सर के नीचे होता और
दायाँ बाज़ू मुझे गले लगाता है।
4ऐ यरूशलम की बेटियो, क़सम खाओ कि जब
तक मुहब्बत ख़ुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी,
न बेदार करोगी।

महबूब की आख़िरी बात

5यह कौन है जो अपने महबूब का सहारा लेकर
रेगिस्तान से चढ़ी आ रही है?

सेब के दरख़्त तले मैंने तुझे जगा दिया, वहाँ
जहाँ तेरी माँ ने तुझे जन्म दिया, जहाँ उसने दर्दे-
ज़ह में मुब्तला होकर तुझे पैदा किया।

6मुझे मुहर की तरह अपने दिल पर, अपने
बाज़ू पर लगाए रख! क्योंकि मुहब्बत मौत जैसी
ताक़तवर, और उस की सरगरमी पाताल जैसी
बे-लचक है। वह दहकती आग, रब का भड़कता
शोला है।
7पानी का बड़ा सैलाब भी मुहब्बत को बुझा
नहीं सकता, बड़े दरिया भी उसे बहाकर ले जा
नहीं सकते। और अगर कोई मुहब्बत को पाने के
लिए अपने घर की तमाम दौलत पेश भी करे तो
भी उसे जवाब में हक़ीर ही जाना जाएगा।

महबूबा की आख़िरी बात

8हमारी छोटी बहन की छातियाँ नहीं हैं। हम
अपनी बहन के लिए क्या करें अगर कोई उससे
रिश्ता बाँधने आए?
9अगर वह दीवार हो तो हम उस पर चाँदी का
क़िलाबंद इंतज़ाम बनाएँगे। अगर वह दरवाज़ा हो
तो हम उसे देवदार के तख़्ते से महफ़ूज़ रखेंगे।

10मैं दीवार हूँ, और मेरी छातियाँ मज़बूत मीनार
हैं। अब मैं उस की नज़र में ऐसी ख़ातून बन गई
हूँ जिसे सलामती हासिल हुई है।

सुलेमान से ज़्यादा दौलतमंद

11बाल-हामून में सुलेमान का अंगूर का बाग़
था। इस बाग़ को उसने पहरेदारों के हवाले कर
दिया। हर एक को उस की फ़सल के लिए चाँदी
के हज़ार सिक्के देने थे।

12लेकिन मेरा अपना अंगूर का बाग़ मेरे सामने
ही मौजूद है। ऐ सुलेमान, चाँदी के हज़ार सिक्के
तेरे लिए हैं, और 200 सिक्के उनके लिए जो उस
की फ़सल की पहरादारी करते हैं।

मुझे ही पुकार

13ऐ बाग़ में बसनेवाली, मेरे साथी तेरी आवाज़
पर तवज्जुह दे रहे हैं। मुझे ही अपनी आवाज़ सुनने
दे।

14ऐ मेरे महबूब, ग़ज़ाल या जवान हिरन की
तरह बलसान के पहाड़ों की जानिब भाग जा!।